इंद्रजीत के संग मौत की
सरसराहटें–कागज के सीने
पर–लफ्जों के रूप में

लक्की बास्टर्ड

राज भारती

अपने दोस्त के कातिल को बेनकाब करने के लिए फसादी इंद्रजीत ने अपने सिर पर कफन बांधा ही था कि एकाएक ही सारा 'गोवा' उसका दुश्मन बन गया। एक 'एक्शन-पैक्ड' तेज रफ्तार फिल्मी उपन्यास

Scanned by CamScanner

लक्की बास्टर्ड

गोवा...

सुबह नौ बजे इंद्रजीत ने वास्कोडिगामा के 'डेबोलिम' एयरपोर्ट के बाहर कदम रखा और पार्किंग में खड़ी एक टैक्सी में सवार हो गया। टैक्सी ड्राईवर को उसने पणजी के होटल मयूर का पता बताया।

टैक्सी आगे बढ़ी तो एक सिगरेट सुलगाकर दीपक कामत के बारे में सोचने लगा।

दीपक कामत एक प्राइवेट डिटेक्टिव था। आजकल वो अपनी बीवी के साथ पूना में रह रहा था। इंद्रजीत और उसका याराना बचपन से था। कालेज के दिनों में दीपक ने इंद्रजीत की बुरी माली हालत को देखते हुए उसकी जो मदद की थी, उसी वजह से इंद्रजीत पढ़ लिखने के काबिल बन पाया था। दीपक का वह तहेदिल से एहसानमंद था। उसके लिए उसके जज्ब सच्चे थे। दीपक के लिए वो कुछ भी कर सकता था—खुद को जलती आग में भी झोंक सकता था। दो दिन पहले, अर्से बाद दीपक का फोन दिल्ली में मुकेश मेरठिया के ठीए पर आआ था। उस वक्त इंद्रजीत कहीं बाहर गया हुआ था। दीपक ने इंद्रजीत के लिए यह मैसेज छोड़ा था कि वो जितनी जल्दी हो सके, पणजी के होटल मयूर पहुंच जाए। एक विशेष काम के लिए उसे उसकी सख्त जरूरत है। साथ ही उसने यह भी कहा था कि आने से पहले इंद्रजीत उसे खबर जरूर कर दे।

दीपक का मैसेज मिलते ही इंद्रजीत ने उसे तत्काल फोन किया था, लेकिन फोन खराब होने की वजह से उसकी दीपक से बात नहीं हो पाई थी। तब उसने उसे फौरन एक टेलीग्राम भेज दिया था कि वो एक दिन बाद गोवा पहुंच रहा है।

आज सुबह इंद्रजीत ने अपना जरूरी सामान पैक किया था और सहारा एयरलाइंस की फ्लाईट में सवार हो गया था।

'क्या काम पड़ सकता है दीपक को? एकाएक इंद्रजीत बड़बड़ाया—'क्या वो किसी मुसीबत में है? जान जोखिम में डालने वाले

Scanned by CamScanner

अपने जासूसी के धंधे की वजह से वो किसी मुसीबत का शिकार हो गया है। या उसने किसी से पंगा ले लिया है?'

शराब और शबाव दीपक की वाहिद कमजोरी थी। इसके लिए तो किसी से भी पंगा ले सकता था। हालांकि तो शादी शुदा था—फिर भी रंग-बिरंगी तितलियों के पीछे भागने में वो हमेशा आगे रहता था। खूबसूरत लड़कियों का पीछा करने की वजह से वो कई बार घोर मुसीबत में पड़ने से बाल बाल बचा था।

टैक्सी पणजी के होटल मयूर पहुंची।

'होटल मयूर' की पुराने ढंग से बनी इमारत को सरसरी निगाहों से देखने के बाद इंद्रजीत टैक्सी से उतरा। दीपक से वह ऐसे ही किसी साधारण होटल में ठहरने की उम्मीद रखता था।

तभी होटल से एक वर्दीधारी अटेंडेंट तेजी से बाहर आया और इंद्रजीत का सामान टैक्सी से उतारने लगा।

इंद्रजीत ने टैक्सी का भाड़ा चुकाया, टैक्सी ड्राईवर के सलाम का जवाब सिर हिलाकर दिया, फिर अटेंडेंट के साथ होटल के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ चला।

लाउंज में कदम रखने पर इंद्रजीत ने पाया कि यह एक काफी बड़ी बेंत के फर्नीचर और प्लास्टिक के पौधों से सजी-धजी लाऊंज थी। यहां साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा गया था।

उस घड़ी रिसेप्शन काउंटर पर जो क्लर्क विराजमान था, वह इंद्रजीत को एक फूंक में पछाड़ खाकर गिरने वाला शख्स जान पड़ा।

इंद्रजीत उसके करीब आया तो वह अपने भद्दे दांतों की नुमाइश करते हुए बोला—"यस सर, एनी सर्विस फॉर मी?"

"मिस्टर दीपक कामत ने," इंद्रजीत बोला—"जो कि पिछले कई दिनों से यहां के रूम नम्बर 247 में ठहरे हुए हैं, मेरे नाम से एक रूम बुक करवाया होगा। मेरा नाम इंद्रजीत है।"

"यस सर।" क्लर्क अदब से बोला—"मिस्टर दीपक ने आपके लिए अपनी बगल वाला रूम बुक करवाया हुआ है।"

रजिस्टर पर इंद्रजीत का नाम, पता, आने का उद्देश्य दर्ज करके उसने एक चाबी अटेंडेंट को थमाई और फिर अपने स्वर में मिश्री घोलते हुए बोला—"मैं उम्मीद करता हूं, सर, आपको हमारा होटल जरूर पसंद आएगा। आपको किसी भी चीज की जरूरत पड़े तो...।"

"मिस्टर दीपक इस समय अपने रूम में हैं?" इंद्रजीत उसकी बात पूरी होने से पहले ही बोल उठा।

"नो, सर, थोड़ी देर पहले वे किसी लड़की के साथ यहां से मीरामर बीच की तरफ रवाना हुए थे।"

Scanned by CamScanner

क्लर्क की बात सुनकर इंद्रजीत को कोई अचम्भा नहीं हुआ। शराब और शबाब दीपक की कमजोरी थी। इन दोनों की खातिर वह खुद को किसी भी पंगे में डाल सकता था।

"मिस्टर दीपक जैसे ही आएं..." इंद्रजीत बोला—"आप उन्हें इतला कर देना कि मैं यहां तशरीफ़ ला चुका हूं, ओ०के०?"

"ओ०के०, सर। आई विल।"

रूम नं 245 इंद्रजीत को कतई पसंद नहीं आया। यह खरगोश के बिल जैसा सड़ांध मारने वाला छोटा-सा कमरा था। यहां पड़ा पलंग बेहद छोटा और अन्य फर्नीचर भी खस्ता हाल में था। खिड़की से बाहर का दृश्य तो दिखाई देता था, लेकिन वो जरा भी आकर्षक नहीं था।

इंद्रजीत का सामान मुनासिब जगह पर रखने के बाद अटेंडेंट जैसे ही जाने को हुआ, इंद्रजीत ने उसे एक पचास का नोट थमा दिया।

पचास का नोट हाथ में आते ही वह खुश होते हुए बोला—"साब, किसी चीज की भी जरूरत पड़े तो हमको याद करना। हम आपके लिए हर वक्त मौजूद होगा। हमारा नाम सखाराम है।"

"ओ०के०, मैं तुम्हें ही याद करूंगा। फिलहाल तुम बैट 69 की एक बोतल और कुछ स्नैक्स का इंतजाम करो। इस समय मैं बहुत थका हुआ हूं।"

"बिल्कुल साहब, हम अभी आपके लिए आपकी फेवरिट चीजें लेकर आता है।"

उसके जाने के बाद इंद्रजीत फ्रेश होने के लिए बाथरूम में घुस गया।

लगभग दस मिनट बाद अटेंडेंट उसके सामने उसकी पसंदीदा व्हिस्की और भुने हुए कबाब के साथ मौजूद था।

इस दफा इंद्रजीत ने उसे दस का नोट थमाया और फिर उसके जाने के बाद बड़े इत्मीनान से जाम के घूंट लगाने लगा।

इंद्रजीत ने पहला पैग हलक के हवाले किया ही था कि दरवाजे की घंटी बज उठी।

उसने जैसे ही दरवाजा खोला, एक हट्टे-कट्टे, शक्ल से पुलिसिए दिखाई देने वाले आदमी को देखकर वह सकपकाया, फिर फौरन ही संभलकर बोला—"कहिए?"

"तुम्हारा नाम इंद्रजीत है?" वह कर्कश आवाज में बोला।

"दैट्स राइट!" इंद्रजीत अपने स्वर को जबरन संतुलित बनाते हुए बोला।

Scanned by CamScanner

उसने फौरन अपनी वर्दी पर लगी नेम प्लेट को इशारा किया—"मेरा नाम सदानंद खांडेकर है। मैं गोवा होमिसाइड डिपार्टमेंट से ताल्लुक रखता हूं। तुम किसी दीपक कामत को जानते हो?"

इंद्रजीत को अपनी रीढ़ की हड्डी में सनसनी-सी दौड़ती महसूस हुई। दीपक पुलिस हेटर था। वह कई पुलिस वालों से खामख्वाह पंगा ले चुका था। एक बार तो उसने एक पुलिसिए की घूंसा मारकर नाक ही चटका दी थी। उसे समझते देर न लगी कि दीपक ने इस बार भी पुलसियों से कोई पंगा लिया है, तभी एक पुलसिया उसके सामने खड़ा हुआ है।

"हां, मैं दीपक को जानता हूं।" इंद्रजीत सहज भाव से बोला—"वो मेरा दोस्त है। वो किसी मुसीबत में है?"

"कह सकते हैं।" खांडेकर रूखे स्वर में बोला—"तुम उसे पहचान सकते हो?"

अब की बार इंद्रजीत को एक झटका लगा—"उ...उसके साथ कोई हादसा तो..." बाकी के शब्द उसके गले में अटककर रह गए।

"वह मर चुका है।" खांडेकर हथेली को रूल से ठकठकाकर बोला—"जल्दी से तैयार हो जाओ। इंस्पेक्टर साहब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।"

"द...दीपक मर गया।" इंद्रजीत दहशतनाक स्वर में बोला, "कैसे? कैसे मरा वो?"

"मैं कुछ नहीं जानता।" खांडेकर ने कंधे उचकाए। "मेरे साथ चलो, इंस्पेक्टर साहब तुम्हें सब बता देंगे।"

"ठीक है, मैं तैयार होता हूं।"

कमरे में आकर इंद्रजीत ने जल्दी से कपड़े पहने, बालों में कंघी फिराई, फिर खांडेकर के साथ हो लिया।

लिफ्ट के द्वारा वे नीचे आए।

दोनों ने जैसे ही लॉबी पार की, इंद्रजीत की नजर रिसेप्शन क्लर्क और उसकी बगल में खड़े अटेंडेंट पर पड़े बिना न रह सकी। दोनों शकभरी निगाहों से इंद्रजीत को घूर रहे थे।

होटल से बाहर आकर दोनों पार्किंग लॉट में खड़ी एक पुलिस जिप्सी के पास पहुंचे।

खांडेकर के इशारे पर इंद्रजीत अगली सीट पर बैठा।

ड्राइविंग सीट पर बैठकर खांडेकर ने जिप्सी स्टार्ट की और फिर एक झटके से आगे बढ़ा दी।

कई गलियों से गुजरकर वे मेनरोड पर पहुंचे।

"दीपक की लाश कहां है?" इंद्रजीत ने पूछा।

Scanned by CamScanner

"मीरामर बीच पर।" खांडेकर बोला, "वहां के बॉथिंग स्टेशन के एक केबिन में एक अटेंडेंट ने उसे सबसे पहले पाया।"

एक सवाल जो काफी देर से इंद्रजीत की जुबान पर आने के लिए मचल रहा था, आए बिना न रह सका। वह जल्दी से बोला—कहीं उसे हार्ट अटैक तो नहीं हो गया?"

जवाब देने के बजाए खांडेकर ने एकाएक सामने आई मारुति कार को हार्न बजाकर परे होने का इशार किया, फिर उसके पास से गुजरते हुए उसके ड्राइवर को खा जाने वाली निगाहों से घूरते हुए बोला—"स्साले! अमीर बाप के बिगड़े लड़के सड़कों पर ऐसे चलते हैं, जैसे सड़क इन्हीं के बाप की हो। स्साले हराम के बीज! आई हेट स्पॉइल ब्रैट।"

इंद्रजीत कुछ नहीं बोला।

थोड़ी देर बाद खांडेकर अपने आप बोला—"तुम्हारे दोस्त का कत्ल कर दिया गया है। उसके कातिल को हम अभी ट्रेस नहीं कर पाए हैं। हो सकता है तुम्हारी मदद से हम उस तक पहुंच पाएं। वैसे तुम्हारा दोस्त गोवा में तशरीफ किस सिलसिले में लाया था?"

"मेरा दोस्त एक प्राइवेट डिटेक्टिव था। वो यहां किसी केस के सिलसिले में आया था। केस क्या था, इसकी बाबत मैं भी नहीं जानता।"

खांडेकर ने तत्काल एक लंबी हुंकार भरी।

फिर वह जिप्सी को उस सड़क पर ले आया, जो बीच की तरफ जाती थी।

थोड़ी देर बाद उसने लाल-सफेद रंग से पुते हुए कई केबिनों की पंक्ति के सामने अपनी जिप्सी रोकी और इंद्रजीत को उतरने का इशारा किया।

उस वक्त वहां लोगों की भीड़ जमा थी। ये लोग यकीनन वे पर्यटक थे, जो गोवा में सैरो-तफरीह के लिए तशरीफ लाए थे।

भीड़ को पार करके दोनों केबिनों के करीब पहुंचे तो खांडेकर वहां खड़े एक हट्टे-कट्टे आदमी की तरफ इशारा करते हुए बोला—"वो हमारे साहब इंस्पेक्टर गोविंद गावड़े हैं। कड़क ऑफिसर हैं। उनसे तमीज से बात करना। जो शख्स इनसे तमीज से बात नहीं करता, ये उस पर फौरन राशन पानी लेकर चढ़ जाते हैं।"

इंद्रजीत ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और खांडेकर के साथ चुपचाप चलता रहा।

इंस्पेक्टर गावड़े के सामने पहुंचकर इंद्रजीत ने पाया कि उसकी उम्र चालीस साल के आस-पास, शक्लो सूरत फिल्म चरित्र अभिनेता

Scanned by CamScanner

सदाशिव अमरापुरकर जैसी और रंग भी सदाशिव अमरापुरकर की तरह काला था।

"सर, ये इंद्रजीत है।" खांडेकर अदब से बोला—"मरने वाले का दोस्त।"

गोविंद गांवड़े ने इंद्रजीत को सिर से पांव तक बड़े ध्यान से देखा।

उसके इस तरह देखने से इंद्रजीत विचलित तो जरूर हुआ, लेकिन उसने चेहरे पर परेशानी के भाव नुमायां नहीं होने दिए।

गावड़े ने अपनी जेब से एक कागज का पुर्जा निकाला और उसे इंद्रजीत को दिखाते हुए बोला—"ये कागज तुमने मरने वाले को भेजा था? जवाब सोच समझकर देना। इस पर तुम्हारा नाम और पता दर्ज है।"

इंद्रजीत ने कागज के पुर्जे को गौर से देखा।

यह वो ही टेलीग्राम था जिसे इंद्रजीत ने हाल ही में दीपक कामत को भेजा था, जिस पर यही दर्ज था कि वह जल्दी-से-जल्दी उसके पास पहुंच रहा है।

"हां, ये मैंने ही भेजा था।" इंद्रजीत धीरे से बोला।

"मरने वाला तुम्हारा क्या लगता था?"

"वो मेरा दोस्त था।" इंद्रजीत ने सफेद झूठ बोला—"हम दोनों एक ही धंधे में थे। वो मेरा पार्टनर था।"

इंस्पेक्टर गोविंद गावड़े ने इंद्रजीत को घूरना जारी रखा और काफी देर तक वो उसे घूरता ही रहा।

फिर थोड़ी देर बाद वह अपनी ठोड़ी खुजलाते हुए बोला—"तुम एक नजर अपने दोस्त की डैडबॉडी पर डाल दो। उसके बाद हम तफ्सील से बात करते हैं।'

सहमति में सिर हिलाकर इंद्रजीत उसके साथ हो लिया।

केबिन नं० 5 में पहुंचकर इंद्रजीत ने पाया कि वहां चूहे से दिखाई देने वाले दो टैक्नीशियन जगह-जगह पर पावडर छिड़ककर फिंगर प्रिंट्स तलाश करने की कोशिश कर रहे थे।

दीपक की तलाश में इंद्रजीत ने अपनी निगाहें दौड़ाईं तो उसे उसकी लाश कोने में पड़े एक दीवान पर पड़ी दिखाई दी। उस वक्त उसके जिस्म पर सिर्फ एक अंडरवियर था। बाकी का जिस्म बिल्कुल नंगा था। दाहिने कंधे के पास, गर्दन पर एक सूराख बना हुआ था, जिसमें से लाल खून बाहर निकल रहा था, सूराख के पास की चमड़ी पर जगह-जगह खरोंचें पड़ी हुई थीं।

"पहचानो इसे!" गावड़े बोला—"ये तुम्हारा दोस्त ही है?"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया।

"ओ०के०।" गोविंद गावड़े ब्रश फेर रहे एक टैक्नीशियन से मुखातिब हुआ।

"तुम्हारे काम की क्या पोजिशन है। हो गया या थोड़ी देर और लगेगी?"

"हमारा काम तकरीबन हो ही गया है।" टैक्नीशियन धीरे से बोला—"यह एक ऐसे आदमी का काम है, जो बर्फ के सुए से कत्ल करने में माहिर जान पड़ता है। वह अच्छी तरह से जानता था कि सुए को गर्दन में घुसाकर आदमी को फौरन से पेश्तर हलाक किया जा सकता है। और वो भी बिना किसी जोर आजमाइश के। जहां तक मैं समझता हूं, इसके कत्ल को मुश्किल से एक घंटा हुआ है।"

गोविंद गावड़े ने एक लंबी हुंकार भरी और फिर जल्दी से बोला—"आओ जरा बाहर की सैर करें। यहां मेरा दम-सा घुट रहा है। असल में खून खराबा से दो चार होना मेरे बस की बात नहीं है। मैं अब भी अपने मरे हुए बाप को कोसता हूं, जिसने रिश्वत के दम पर मुझे पुलिस में भर्ती करवाया था।"

इंद्रजीत जैसे ही उसके साथ बाहर की तरफ बढ़ा, एकाएक वह ठिठका और सब इंस्पेक्टर सदानंद खांडेकर से बोला—"मैं इसके साथ इसके होटल जा रहा हूं। तुम यहां देख लेना, जो तुम देख सकते हो। हत्याण का कत्ल एक बर्फ काटने वाले सुए से किया गया है। तुम उस सुए की तलाश करवाओ। हो सकता है, कातिल ने कत्ल करने के बाद उसे आसपास कहीं फेंक दिया हो।" कहने के साथ ही उसने अपनी कलाई घड़ी पर एक निगाह डाली—"इसके बाद ढाई बजे के आसपास मुझे दफ्तर में मिलो, ओ०के०?"

"ओ०के०, सर।" खांडेकर बड़ी तत्परता से बोला।

इसके बाद वो इंद्रजीत को एक इशारा करके कमरे से बाहर निकल गया।

बाहर आकर इंद्रजीत ने महसूस किया वहां खड़े लोग उसे कुछ इस निगाहों से देख रहे थे जैसे मरने वाले का कत्ल उसी ने किया हो।

पार्किंग लॉट के करीब पहुंचकर गावड़े ने वहां खड़ी एक लाल मारूति की तरफ इशारा किया—"ये कार तुम्हारे दोस्त की है। इसका क्या किया जाए?"

"जो आप बेहतर समझें।" इंद्रजीत दबे स्वर में बोला—"आपको परेशानी न हो तो मैं इसे इसके वारिस के पास पहुंचा सकता हूं।"

"ठीक है।" उसने हाथ के इशारे से एक पुलिसिए को पास बुलाया और फिर अ[illegible]पूर्ण स्वर में बोला—"डॉक्टर साहब को

Scanned by CamScanner

बोलना कि यहां से जाने से पहले वो कार में फिंगर प्रिंट तलाश कर लें। इसके बाद तुम ये कार लेकर होटल मयूर में पहुंच जाना।" उसने इंद्रजीत की तरफ देखा, "कोई और सेवा?"

इंद्रजीत सकपकाया—"ब्र...बस बहुत है। थैंक्स।"

फिर वे दोनों एक पुलिस कार में सवार हो गए।

कार में बैठते ही गावड़े ड्राइवर से मुखातिब हुआ—"लम्बे रास्ते से ले जाना और आराम से ड्राइव करना। मुझे होटल पहुंचने की कोई जल्दी नहीं है। मैं इन साहेबान से कुछ प्यार भरी बातें करना चाहता हूं, ओ०के०?"

ड्राइवर ने अदब से सिर झटका, कार को स्टार्ट किया और फिर उसे धीरे से आगे बढ़ा दिया।

गावड़े ने एक सिगार सुलगाया फिर नाक से ढेर सारा धुंआ छोड़ते हुए बोला—"अब तफसील से बताओ कि दीपक क्या बेचता था और तुमने उसे टेलिग्राम क्यों भेजा? आराम से बताना। मेरे पास फुर्सत ही फुर्सत है।"

इंद्रजीत रिकार्ड पर सुई रखने के अंदाज में शुरू हो गया—"दीपक और मैं पूना में स्थित 'ज्वाइंट वेंचर्स' के नाम से एक डिटेक्टिव एजेंसी चलाते हैं। अभी कुछ दिनों पहले जब मैं एक केस के सिलसिले में दिल्ली गया हुआ था, दीपक ने टेलीफोन पर एक मैसेज मेरे नाम से यह छोड़ा था कि मैं जितनी जल्दी हो सके, गोवा के मयूर होटल पहुंच जाऊं और आने से पहले उसे टेलिग्राम डालकर इन्फार्म कर दूं। टेलिग्राम डालने की बजाए मैंने होटल मयूर का किसी तरीके से टेलीफोन नंबर हासिल किया और उस पर फोन किया तो पता चला कि वह फोन कई दिनों से खराब है। दीपक से मेरी बात नहीं हो पाई, इसलिए मैंने उसे तार द्वारा सूचित कर दिया कि मैं बेहद जल्द गोवा पहुंच जाऊंगा। वो मेरे लिए कोई रूम बुक करवाकर रखे। आज जब मैं होटल में पहुंचा तो पता चला कि दीपक किसी लड़की के साथ बीच की तरफ गया है। वो लड़की कौन थी, इसकी बाबत मैं भी नहीं जानता। अपने रूम में इत्मीनान से बैठकर मैं अपनी थकान उतार रहा था कि तभी खांडेकर ने आकर हुक्म दनदनाया कि आप मुझे याद कर रहे हैं, लिहाजा मैं आपके पास पहुंचा दिया गया।"

"तुम्हारे पार्टनर ने तुम्हें क्यों याद किया था?"

"इस बाबत मैं क्या कह सकता हूं। मैं कुछ जानता तो आपको बताता भी। जहां तक मैं समझता हूं कि दीपक को कोई केस मिला होगा और उसी के सिलसिले में उसने मुझे गोवा पहुंचने का मैसेज दिया होगा।"

गावड़े ने लंबी हुंकार भरी, सिगार के ताबड़तोड़ कई कश लगाए, फिर नाक से धुंआ छोड़ते हुए बोला—"जिस लड़की के साथ तुम्हारा दोस्त बीच की तरफ रवाना हुआ था, वो उसकी जान पहचान वाली थी?"

"मैंने बताया न, इस बाबत मुझे कोई जानकारी नहीं है।"

"कहीं ऐसा तो नहीं, यहां उसकी कोई गर्ल फ्रेंड रहती हो और वो उसके साथ..."

"दीपक शादीशुदा था। मैं नहीं समझता कि उसकी यहां कोई गर्ल फ्रेंड..."

".....भई, शादी शुदा लोग ही लाइन मारो कल्चर में ज्यादा यकीन रखते हैं। मेरी बात मानो, वो उसकी कोई गर्लफ्रेंड ही रही होगी, तभी तो उसके साथ बीच की तरफ रवाना हुआ। वो उसकी गर्लफ्रेंड नहीं होती तो वो उसके साथ किसी रेस्टोरेंट में जाता, किसी पब्लिक प्लेस पर जाता। बीच पर हरगिज नहीं जाता। बात को समझ रहे हो न?"

"आप कहते हैं तो मान लेता हूं।" इंद्रजीत अनमने ढंग से बोला।

"और वो लड़की यकीनन शादीशुदा रही होगी।"

"ये बात आप कैसे कह सकते हैं?"

"भई, सीधी-सी बात है। शादीशुदा औरत के पति ने अपनी बीवी को तुम्हारे दोस्त के साथ देखा होगा। उसे अपनी बीवी का तुम्हारे दोस्त की बगल गर्म करने का काम जरा भी रास नहीं आया होगा, तभी उसने मौका देखकर तुम्हारे दोस्त की सुए से हत्या कर दी।"

"अगर ऐसी बात रही होगी तो उस औरत का पति यकीनन कोई प्रोफेशनल किलर रहा होगा, क्योंकि जिस दक्षता से उसने मेरे दोस्त का कत्ल किया है, वो कोई प्रोफेशनल किलर ही कर सकता है। आपके रिकार्ड में कोई ऐसा शख्स है, जो सुए से कत्ल करने की महारत रखता हो?"

"मैं ऐसे किसी शख्स को नहीं जानता।" गावड़े का सिर इंकार करने वाले अंदाज में हिला, "और न ही हमारे रिकार्ड में ऐसे किसी आदमी का नाम दर्ज है। इस शहर में काफी सनकी लोग हैं और लगभग सारे ही मौका पड़ने पर मरने मारने पर उतारू होने वाले लोग हैं। तुम इस बात को छोड़ो और यह बताओ कि तुम्हारा दोस्त किसके लिए काम कर रहा था?"

"जनाब, मैंने अभी बताया था कि..."

"त...तुम्हें कुछ नहीं मालूम। मेरी याददाश्त कमजोर नहीं है।

Scanned by CamScanner

मुझे सब याद है। मेरे पूछने का मतलब है कि वो तुम्हारा दोस्त था। उसकी कथनी करनी से तुम अच्छी तरह से वाकिफ थे। तुम बड़े आराम से अंदाजा लगा सकते हो, उसने किस केस के सिलसिले में यहां कदम रखा था।"

"इस बाबत मैं कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता, क्योंकि मुझे खुद हैरानी हो रही है कि दीपक ने ऐसा कौन-सा केस पकड़ा था जिसकी वजह से उसे यहां आना पड़ा। हम कोई माने हुए जासूस नहीं हैं। हम बेहद मामूली प्राइवेट डिक्स हैं। हमसे बेहतर जासूस गोवा में भरे पड़े होंगे। उसका यहां आना खुद मेरे लिए एक सस्पेंस बना हुआ है।"

गावड़े ने एक लंबी हुंकार भरी, सिगार की राख चुटकी बजाकर कार के फर्श पर गिराई, फिर बड़बड़ाने वाले लहजे में बोला—"उसके कमरे की तलाशी लेने पर शायद यह सस्पेंस खुल जाए। नामदेव, गाड़ी की स्पीड बढ़ाओ और फौरन से पेश्तर होटल पहुंचो। अब मुझे वहां पहुंचने की जल्दी है।"

नामदेव नाम के ड्राइवर ने फौरन सहमति में सिर हिलाया और कार की स्पीड बढ़ा दी।

लाऊंज में कदम रखते ही गावड़े ने रिसेप्शन क्लर्क को अजीब-सी निगाहों से देखा।

फिर वह इंद्रजीत की ओर उन्मुख हुआ—"इसी ने तुम्हारे दोस्त को किसी लड़की के साथ बाहर जाते हुए देखा था?"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

गावड़े ने क्लर्क को अपने आने का मकसद बताया तो वह हलकान परेशान-सा उन्हें काउंटर के पीछे बने एक छोटे से कमरे में ले गया।

गावड़े के बैठते ही वह हाथ बांधकर बड़े अदब से बोला—"इज देयर एनीथिंग रौंग, सर?"

"कोई गड़बड़ नहीं है।" गावड़े कड़े स्वर में बोला, "गड़बड़ होती तो यहां मैं नहीं, मेरे मातहत आते। कुछ समझा?"

रिसेप्शन क्लर्क का सिर फौरन हामी भरने के अंदाज में हिला।

"तुम्हारा नाम?" गावड़े ने पूछा।

"प्रकाश बर्वे। मैं यहां पिछले पांच सालों से काम कर रहा हूं। होटल के मालिक लोग मेरे काम से बहुत खुश हैं। मैंने आज तक उन्हें कोई शिकायत..."

"जो पूछा जाए, उसका जवाब दो। मैंने सिर्फ तुम्हारा नाम पूछा था।"

"ज...जी...।"

"तो तुमने इसके दोस्त को..." उसने इंद्रजीत की तरफ अंगुली उठाकर इशारा किया—"एक लड़की के साथ होटल से जाते हुए देखा था?"

"य...यस सर।"

"उस वक्त क्या बज रहा था?"

"साढ़े दस बज रहे थे। लड़की ने यहां आते ही मुझसे दीपक के कमरे का नंबर पूछा था। मैं उसे मिस्टर दीपक के कमरे का नंबर बताने ही जा रहा था कि तभी मिस्टर दीपक यहां आ गए थे और उसकी कमर में हाथ डालकर उसे होटल से बाहर ले गए थे।"

"इसका मतलब वे दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हो, तभी दीपक ने छूटते ही उसकी कमर में हाथ डाला था?"

"जी।"

"दीपक के कमर में हाथ डालने पर उसने क्या किया था?"

"क...क्या करने से आपका मतलब सर?"

"मेरा मतलब उसके चेहरे पर उभरे भावों से है। उस वक्त उसके चेहरे पर खुशी के भाव नुमायां हुए थे या खुंदक खाने वाले?"

"दीपक ने जब उसकी कमर में हाथ डाला था, तब पलभर के लिए उसके चेहरे पर नाक सिकोड़ने के भाव नुमायां हुए थे, लेकिन अगले ही पल वह खुश दिखाई देने लगी थी। सर, मुझे लगता है कि दीपक ने सबके सामने उसकी कमर में हाथ डाला था, शायद इसी बज से उसे बुरा लगा हो, फिर बाद में..."

"जो पूछा जाए, सिर्फ उसी का जवाब दो। फालतू बातों के लिए मेरे पास बिल्कुल वक्त नहीं है। ओ०के०?"

"ज...जी।"

"लड़की देखने में कैसी थी?"

"खूबसूरत थी। उसका रंग गोरा और शक्ल सूरत विदेशियों जैसी थी।"

"विदेशियों जैसी से तुम्हारा मतलब?"

"सर, सच पूछो तो मैं उसकी शक्ल को भी गौर से नहीं देख पाया था, क्योंकि उसने एक काफी बड़ा हैट सिर पर लगाया हुआ था और बड़े शीशों का गोगल्स पहना हुआ था। इस वजह से वो मुझे कोई विदेशी ही जान पड़ी थी।"

"उसकी उम्र के बारे में कुछ बता सकते हो?"

Scanned by CamScanner

"मैं यकीन के साथ तो नहीं कह सकता, लेकिन अंदाजा जरूर लगा सकता हूं। उसकी उम्र चौबीस-पच्चीस के आस-पास रही होगी।"

"अगर उसे तुम्हारे सामने पेश किया जाए तो तुम उसे पहचान लोगे?"

"क्यों नहीं सर। मैंने उससे बात की थी, मैं उसे जरूर पहचान लूंगा।"

"तुमने उसे हैट और गोगल्स में देखा था। अगर वो तुम्हारे सामने इन दोनों चीजों के बिना पेश की जाए, तो तुम तब भी उसे पहचान लोगे?"

रिसेप्शन क्लर्क के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव आए।

"मेरे ख्याल से" गावड़े उसके चेहरे पर पैनी निगाहें गड़ाते हुए बोला—"तब तुम शायद उसे न पहचान पाओ। आई एम राइट ऑर रांग?"

"य...यू आर एब्सोल्यूटली राइट सर, शायद मैं उसे इस गेट अप के बिना न पहचान पाऊं।"

"वो लड़की यहां किसी कार में आई थी?"

"सॉरी, सर, इस बात-मैं कुछ नहीं बता सकता।"

"वो यहां से दीपक की कार में गयी थी, इस बात तो तुम्हें जानकारी रही होगी।"

"अगेन सॉरी सर। मैं काऊंटर पर कुछ ज्यादा बिजी रहता हूं, इसलिए..."

"ओके, लीव इट। अब मैं दीपक का रूम देखना चाहूंगा। तुम्हारे पास उसके कमरे की स्पेयर चाबी होगी?"

"सर, आप कहें तो मैं होटल के हाऊस डिटेक्टिव जॉनी डिसूजा को बुला लूं?"

गावड़े की भवें फौरन उठीं। वह मुंह बिगाड़कर बोला, "अपने काम में मैं किसी की भी दखलअंदाजी पसंद नहीं करता। भले ही वो मेरा सगा बाप क्यों न हो। जो कहा जा रहा है, उस पर अमल करो, ओके?"

"अ...ओके, सर।"

रिसेप्शन क्लर्क तेजी से कमरे से बाहर निकल गया।

थोड़ी देर बाद वह लौटा तो उसके हाथों में एक चाबी का गुच्छा था।

उसने गुच्छे में से एक चाबी छांटी और फिर उसे गावड़े के हवाले कर दी।

गावड़े ने चाबी को उलट-पुलटकर गौर से देखा, फिर इंद्रजीत

को पीछे आने का इशारा कर दिया।

इंद्रजीत उसके पीछे हो लिया।

दोनों ने जैसे ही लिफ्ट में कदम रखा, इंद्रजीत बोल उठा, "उस लड़की की बाबत आपने बॉथिंग स्टेशन के अटेंडेंट से पूछताछ नहीं की?"

गावडे ने लिफ्ट का बटन दबाया, फिर एक हुंकार भरकर बोला—"हां, उसने भी यही बताया था, जो कलर्क ने बताया है। वहां केबिन के एक चेंजिंग रूम में उसने लड़की के कपड़े, बड़ा-सा हैट और गोगल्स बरामद किए थे। वहां पहुंची लड़की यकीनन वो लड़की थी, जो तुम्हारे दोस्त के साथ थी।"

"अटेंडेंट ने केबिन के चेंजिंग रूम में लड़की के कपड़े भी बरामद किए थे?"

"हां।"

"यानी कि वो लड़की सिर्फ अंडरवियर ब्रेजरी में वहां से रवाना हुई थी?"

"माई डियर, ये गोवा शहर है, यहां लड़कियों का स्विम सूट पहनकर घूमना फिरना आम बात है।"

"उसे किसी ने केबिन से बाहर निकलते नहीं देखा?"

"शायद किसी ने देखा हो, अभी मेरे बंदे जांच पड़ताल कर रहे हैं। अगर उसे किसी ने देखा होगा, तो यह बात हमारे जुहूर में आए बिना नहीं रह सकेगी।"

तभी लिफ्ट रुक गयी।

दोनों लिफ्ट से बाहर निकले और कॉरीडोर में आ गए।

फिर वे रूम नं 247 की तरफ बढ़े।

रूम नं० 247 के सामने पहुंचकर गावड़े ने चाबी की-होल में डाली और फिर बोला—"लड़की का जो हुलिया था, उसकी वजह से मुझे नहीं लगता कि उसकी पहचान मुमकिन हो सकेगी। यहां के लोग शक्लों पर कम, फिगरों पर ज्यादा ध्यान देते हैं।" उसने चाबी घुमाई और फिर दरवाजा खोल दिया।"

दोनों ने भीतर कदम रखा।

भीतर कदम रखते ही दोनों उछले बिना न रह सके।

वहां का हर सामान बेतरतीबी से बिखरा हुआ था। ऐसा जान पडता था जैसे भूचाल आया हो, सारी दराजें खुली हुई थीं। दीपक का सूटकेस खुला हुआ था और उसमें रखे कागजात पलंग पर बिखरे हुए थे। यहां तक कि तकियों और गद्दों को भी नहीं बख्शा गया था। किसी ने उन्हें उधेड़कर रखा हुआ था। ऐसा लगता था जैसे किसी को ऐसे

Scanned by CamScanner

सामान की तलाश थी, जो उसे मौत के शिकंजे में फंसा सकती थी।

"प्रेटी वाइस वर्क!" वहां का नजारा देखकर गावड़े एक सीटी बजाते हुए बोला—"अब हम यहां जो खोजना चाहते थे, कोशिश करके भी नहीं खोज सकते। ये जरूर हत्यारे का काम है। उसे जरूर किसी ऐसी चीज की तलाश थी जो उसके लिए आर०डी०एक्स० बम साबित हो सकती थी। कातिल के दुस्साहस की दाद देनी पड़ेगी।"

"हां, दाद तो देनी ही पड़ेगी।" इंद्रजीत बोला, "लेकिन उसे किस चीज की तलाश रही होगी?"

"ये भी पता चल जाएगा। गावड़े नाम का ये मदारी अच्छे-से-अच्छे बंदरों को नचा चुका है। ये तुम्हारे दोस्त के कातिल बंदर को भी तिगनी का नाच नचा देगा। मैं यहां से फिंगर प्रिंट्स उठवाने का काम करवाता हूं। शायद उस बंदर तक पहुंच जाने का मुझे कोई रास्ता मिल जाए।"

फिर उसके संकेत पर इंद्रजीत कमरे से बाहर निकल गया।

बाहर आते ही उसने दरवाजा बंद करके लॉक किया और फिर जेब से मोबाइल निकालकर कुछ नंबर मिलाने में व्यस्त हो गया।

उसके फोन पर बात करने से इंद्रजीत को बेहद कोफ्त महसूस हुई।

मौका देखकर उसने उससे परवानगी की इजाजत ली और फिर अपने कमरे में आकर धम्म् से बिस्तर पर गिर गया।

दरवाजे की चीखती घंटी ने इंद्रजीत को सोते से जगाया।

बिस्तर से उठकर उसने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली तो पाया कि उस वक्त साढ़े बारह बजे हैं, और उसे सोए हुए मुश्किल से आधा घंटा हुआ है।

उसने दरवाजा खोला।

गावड़े को सामने पाकर वह सकपकाया।

इससे पहले वो कुछ बोल पाता, गावड़े बोल उठा, "मैंने डिस्टर्ब तो नहीं किया?"

"न...नहीं तो।" इंद्रजीत सकपकाया-सा बोला।

"क्या हो रहा था?"

"ऐसे ही आंख लग गयी थी। कातिल की बाबत कुछ पता चला?"

"मेरे बंदे क्लू ढूंढने में लगे हुए हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि

कोई क्लू मिलेगा, अलबत्ता हमने वहां से कुछ फिंगर प्रिंट्स जरूर हासिल किए हैं।"

"उन फिंगर प्रिंट्स से आपको क्या फायदा होगा? उस कमरे में और भी कई लोग ठहरे थे, जहां तक मैं समझता हूं कि आपको कोई फायदा नहीं होगा।"

"बात तो तुम्हारी सौ फीसदी ठीक है, लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"हमें अपनी ड्यूटी भी तो पूरी करनी है। ये समझ लो अंधेरे में तीर चलाकर हम अपना फर्ज पूरा कर रहे हैं?"

"मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताइए।"

"जल्दी में हो?"

"नहीं तो। सोच रहा था कि पेट-पूजा कर ली जाए, भूख के मारे जान निकली जा रही है।"

"मैं तुम्हारा थोड़ा-सा वक्त लूंगा।"

"बिल्कुल लीजिए। आई एम आलवेज एट युअर सर्विस, सर।"

"ठीक है, फिर साइड से हटो। मैं दरवाजे पर खड़ा होकर बातचीत करने का आदी नहीं हूं।"

"लीजिए, सर। हटने में कोई देर लगती है।"

इंद्रजीत फौरन दरवाजे पर से हटा और पलंग पर जा बैठा।

गावड़े उसके पीछे-पीछे आया और वहीं पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

फिर उसने एक सिगार निकालकर सुलगाया।

"इजाजत हो तो" इंद्रजीत हिचकिचाकर बोला—"मैं भी अपना हुक्का सुलगा लूं?"

गावड़े का सिर इजाजत देने वाले अंदाज में हिला।

इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाया और फिर नाक से धुंआ छोड़ते हुए बोला—"हुक्म कीजिए।"

"तुम अपने केसिज की कोई-न-कोई रिपोर्ट तो तैयार जरूर करते होगे?"

"बिल्कुल करते हैं, लेकिन इन्वेस्टीगेशन के बाद। अपनी ओर से केस के सभी पहलुओं को जांचने के बाद।"

"इसका मतलब तुम्हारे दोस्त ने इस केस की रिपोर्ट की तैयारी अभी शुरू नहीं की थी?"

"देयर यू आर। क्योंकि उसने अभी केस पकड़ा ही था। उसका समापन नहीं किया था।"

"फिर भी उसने किसी-न-किसी से केस की बाबत जिक्र तो जरूर किया होगा।"

Scanned by CamScanner

"इस बारे में मैं क्या कह सकता हूं। मैं उससे मिला होता, या मेरी उससे खुलकर बातचीत हुई होती तो शायद मैं कुछ कहने के काबिल भी बनता।"

"तुमने अपने दफ्तर में कोई सेक्रेटरी भी रखी हुई है?"

"सेक्रटरी तो नहीं, अलबत्ता एक रिसेप्शनिस्ट जरूर रखी हुई है, जो सेक्रटरी वाला काम भी करती है।"

"फिर तो वह जरूर जानती होगी कि तुम्हारा दोस्त आजकल किसके लिए काम कर रहा था।"

"मुझे नहीं लगता, इस बाबत वो कुछ जानती होगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो अक्ल से जरा पैदल है, इसलिए हम उससे सेक्रटरी वाला काम नहीं लेते, उससे हम सिर्फ रिसेप्शनिस्ट और कम्प्यूटर ऑपरेटर वाला काम लेते हैं।"

"फिर भी तुम अपने दफ्तर का पता बताओ। मैं अपनी ओर से तसल्ली करना चाहता हूं।"

"जहांपनाह, मैं आपसे सच बोल रहा हूं। आप मेरी बात पर यकीन कीजिए।"

"तुम्हें अपने दफ्तर का पता बताने में हर्ज है?"

"मुझे क्या हर्ज होना। आप मेरे दफ्तर का पता बड़े शौक से नोट कर सकते हैं।"

इंद्रजीत ने दीपक कामत के पुणे में स्थित दफ्तर का पता और टेलीफोन नंबर नोट करवाया।

"इस बाबत कल को मुझे पता लगा कि" गावड़े उठते हुए बोला—"तुमने मुझसे झूठ बोला है तो जानते हो मैं क्या करूंगा?"

"क...क्या करोगे?"

गावड़े ने अपने हाथ में थमा रूल इंद्रजीत के कूल्हों पर ठकठकाया, "ये जो तुम्हारी दुकान है न, इसकी मैं ऐसी धज्जियां उड़ाऊंगा कि तुम कभी भी बैठने के काबिल नहीं रहोगे।"

"ए...ऐसी नौबत नहीं आएगी।" इंद्रजीत सकपकाकर बोला, "मैंने आपसे सिर्फ सच...और सच बोला है।"

"फिर तो कोई बात नहीं, ओके?"

"अ...ओके।"

"एक बात और।"

"कहिए।"

"किसी जरिए से तुम्हें पता लगा कि तुम्हारा दोस्त यहां क्या करने आया था, जानते हो फिर तुमने क्या करना है?"

"क्या करना है?"

"तुमने सीधा मेरे पास आना है।"

"ज...जी।"

"याद रहेगा?"

"बिल्कुल जहांपनाह।"

"मेरा नाम जहांपनाह नहीं, गावड़े है, गोविंद गावड़े। समझे?"

"वो तो जनाब, मुझे भी मालूम है, लेकिन मैं आपको नाम से पुकारने की गुस्ताखी कैसे कर सकता हूं। कहां आप राजा भोज और कहां मैं गंगू तेली...सरसों का तेल बेचने वाला।"

पहली मरतबा गावड़े के होठों पर मुस्कान उभरी।

"नाम लेने की जरूरत नहीं।" वह फौरन सख्ती का लबादा ओढ़कर बोला—"तुम मुझे इंस्पेक्टर साहब भी कह सकते हो।"

"ओके, सर। मैं आपको इंस्पेक्टर साहब कहकर पुकारा करूंगा। खाकसार के लिए कोई और सेवा?"

"फिलहाल नहीं है। लेकिन यहां से गायब मत हो जाना। हमें तुम्हारी जरूरत कभी भी पड़ सकती है।"

"जब तक कातिल सामने नहीं आ जाता, मेरा यहां से कूच करने का कोई इरादा भी नहीं है। मैं कातिल को देखना चाहता हूं और यह जानना चाहता हूं कि उसने मेरे दोस्त कम बिजनेस पार्टनर का कत्ल क्यों किया?"

"दैट्स लाइक ए गुड ब्वाए।"

गावड़े ने रूल से इंद्रजीत का कंधा ठकठकाया और फिर रूम से बाहर निकल गया।

हालांकि इंद्रजीत को जोरों से भूख लगी थी, फिर भी उसने पेट पूजा करने का इरादा जेहन से निकाला और लिफ्ट द्वारा नीचे पहुंचा।

लॉबी में कदम रखते ही उसका सामना अटेंडेंट सखाराम से हुआ।

"साहब, तुम हमारे होटल में क्या आया, पुलिस भी आ गया।" वह शिकायत भरे लहजे में बोला—"क्या चक्कर है?"

"बताना जरूरी है?" इंद्रजीत मुंह सिकोड़कर बोला।

"साहब, पता तो चले कि..."

"तुम पुलिस वालों से क्यों नहीं पूछते कि वो यहां क्यों आए हैं?"

"वो तो हम जानता है। पुलिस तुम्हारे फिरेंड के रूम की तलाशी लेने के लिए यहां आया है।"

Scanned by CamScanner

"जब तुझे सारा चक्कर मालूम है, फिर मेरा भेजा क्यों खा रहा है।"

"साहब, हम आपका भेजा कहां खा रहे हैं। हम तो आपसे सीधे-सीधे एक बात पूछ रहा है।"

"जो बात तू पूछ रहा है, उसका जवाब भी तेरे पास है। तू अपने भेजे का थोड़ा जूस निकालेगा तो तेरे को तेरा जवाब भी मिल जाएगा। समझा?"

इससे पहले सखाराम कुछ कह पाता, इंद्रजीत ने बड़े प्यार से उसके गाल को थपथपाया और फिर लंबे डग भरता होटल से बाहर निकल गया।

बाहर आकर इंद्रजीत थोड़ी दूरी पर स्थित एक पी०सी०ओ० बूथ की तरफ बढ़ा। इधर-उधर देखने के बाद जब उसे यकीन हुआ कि गावड़े का कोई मातहत उसकी निगरानी नहीं कर रहा है, वह बूथ में घुस गया।

उसने फौरन दीपक कामत के दफ्तर का नंबर मिलाया।

फोन फौरन से पेश्तर उठाया गया और उसे उठाने वाली यकीनन एक की रिसेप्शनिस्ट कम पर्सनल असिस्टेंट रिया थी।

रिया से इंद्रजीत पहले भी कई बार मिल चुका था, तब उसके हाव-भाव और बातचीत से उसने यही नतीजा निकाला था कि दीपक के शादी शुदा होते हुए भी वह उसे मन-ही-मन बहुत चाहती थी। दीपक रिया को चाहता था या नहीं, इसका पता इंद्रजीत कोशिश करके भी नहीं लगा पाया था, क्योंकि दीपक अपने चेहरे के हावभाव छिपाने में माहिर था।

रिया को लेकर एक बात जो इंद्रजीत ने गावड़े से कही थी कि वह अक्ल से पैदल है, सरासर गलत कही थी। असल में रिया बहुत ही समझदार और भावुक किस्म की लड़की थी। तभी उसने दीपक के धंधे को बड़ी खूबसूरती से संभाला हुआ था।

"दिस इज दि ज्वाईंट वेंचर्स डिटेक्टिव एजेंसी, गुड आफ्टर नून सर, का स्वर जैसे ही इंद्रजीत के कानों में पड़ा, इंद्रजीत जल्दी से बोला—"रिया, मैं इंद्रजीत बोल रहा हूं। दीपक का खास दोस्त। इस समय मैं गोवा से बोल रहा हूं। यहां मैं दीपक के कहने पर ही आया था। वो यहां किस केस के सिलसिले में आया था, कुछ बता सकती हो?"

"ये बात आप दीपक से भी तो पूछ सकते हैं।"

"फिलहाल नहीं पूछ सकता। क्योंकि इस वक्त वह किसी मुसीबत में है।"

"किस मुसीबत में?"

"फिलहाल मैं जल्दी में हूं। तुम बस इतना बता दो कि वो यहां किस सिलसिले में तशरीफ लाया था?"

"इस बाबत उसने मुझे डिटेल में नहीं बताया था। उसने बस इतना कहा था कि वो किसी माईकल परेरा के काम से गोवा जा रहा है।"

"तुम माईकल परेरा को जानती हो?"

"नहीं, मैं उसे नहीं जानती।"

"तुमने माईकल के बारे में दीपक से पूछा था?"

"हां, पूछा था। उसने उसके बारे में केवल इतना था कि माईकल कोई मामूली हस्ती नहीं है। गोवा से लौटने के बाद वह उसके बारे में डिटेल से बताएगा।"

"ठीक है। मैं माईकल का पता लगाता हूं। तुम बस एक बात का ख्याल रखना। तुम्हारे पास पुलिस का कोई भी बंदा आए तो बिल्कुल मत घबराना और दिखावा करना कि तुम थोड़ी बेवकूफ हो।"

"क्यों?"

"मेरे पास वक्त की कमी है, फुर्सत मिलते ही मैं तुम्हें खुलासा करके बताऊंगा। तुम बस हौंसला रखना।"

"लेकिन पुलिस का क्या चक्कर है? वो मेरे पास..."

"रिया, मैंने कहा न कि तुम ज्यादा सवाल मत करो और मैं जो कह रहा हूं, सिर्फ उस अमल करो। मैंने क्या कहा, तुम्हारी समझ में आया?"

"ठीक है मैं पुलिस वालों के सामने खुद के बेवकूफ होने का दिखावा कर लूंगी। लेकिन उन्होंने मुझसे दीपक के मुतल्लिक कोई सवाल किया तो?"

"तो सिर्फ इतना बताना कि वह गोवा गया हुआ है।"

"यानी कि मैं पुलिस के सामने माईकल का नाम हरगिज न लूं।"

"हां।"

"मुझे दीपक की चिंता हो रही है। वो ठीक तो है न?"

"तुम दीपक की बिल्कुल चिंता मत करो। वो बिल्कुल ठीक है।"

"लेकिन अभी तुम बता रहे थे कि वो किसी मुसीबत..."

"मैं तुम्हें बाद में फोन करता हूं। तुम बस वो करना जो मैंने कहा है। बाई।"

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत ने फोन डिस्कनेक्ट करके दीपक के घर का नम्बर डायल किया।

फोन उसकी बीवी संगीता ने उठाया।

इंद्रजीत संगीता से भी कई बार मिल चुका था।

संगीता के बारे में दीपक ने उसे ढके हुए शब्दों में यह बताया हुआ था कि वह शादी के बाद भी अपने भूतपूर्व प्रेमी से मिलती रहती है, जिसका कत्ल करने का इरादा दीपक रखता था, लेकिन हिम्मत जुटा न पाने के कारण, अपने इरादे को कोई अंजाम नहीं दे पा रहा था।

"भाभी, मैं इंद्रजीत बोल रहा हूं।" संगीता की आवाज कानों में पड़ते ही इंद्रजीत जल्दी से बोला—"आपके लिए एक बुरी खबर है।"

"कहां से बोल रहे हो?" संगीता का उलझन में डूबा स्वर इंद्रजीत के कानों में पड़ा।

"गोवा से।"

"दीपक तुम्हारे साथ है?"

"नहीं, वो मेरे साथ नहीं है।" इंद्रजीत हिचकिचाकर बोला, "असल में थोड़ी देर पहले किसी ने उसका कत्ल कर दिया है।"

"क्या! दीपक का मर्डर हो गया। हे भगवान! ये मैं क्या सुन रही हूं। नहीं! दीपक मुझे छोड़कर नहीं जा सकता। तुम झूठ बोल रहे हो। दीपक नहीं मर सकता। उसने मुझसे..."

"हौंसला रखो, भाभी।" इंद्रजीत दिलजोई करने वाले अंदाज में बोला, "मैं मानता हूं दीपक के कत्ल की खबर आप पर गाज बनकर गिरी। मैं आपको यह खबर नहीं देना चाहता था, लेकिन न चाहते हुए भी मुझे यह काम करना पड़ रहा है।"

तभी इंद्रजीत को संगीता के फूट-फूटकर रोने की आवाज सुनाई दी।

काफी देर तक इंद्रजीत खामोश खड़ा रहा, फिर कुछ पलों बाद वह धीरे से बोला—"दीपक की डैडबॉडी मिलते ही मैं उसका अंतिम संस्कार कर दूंगा और उसका सामान आपके पास भेज दूंगा।"

जवाब में इंद्रजीत को सिसकियों की आवाज सुनाई दी।

"आपको कोई एतराज तो नहीं है?"

"नहीं! मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन मैं दीपक को आखिरी बार..."

"...मैं आपको यही राय दूंगा कि आप यहां मत आइए। दीपक जिस केस पर काम कर रहा था, उसमें काफी अड़चनें हैं। हो सकता है, इसी केस की वजह से उसका मर्डर हुआ हो। आप यहां आईं तो आपकी जान को खतरा हो सकता है।"

"लेकिन इंद्र, मैं दीपक की बीवी हूं। मैं उसे दिलोजान से प्यार करती हूं। कम-से-कम मुझे तो उसे आखिरी बार देखने..."

"हालात ठीक होते तो मैं आपको कभी भी मना नहीं करता। इधर हालात बिल्कुल ठीक नहीं हैं। आप हौंसला रखिए। दीपक के मर्डर की खबर आप उसकी सेक्रटरी रिया को जरूर दे देना। मेरे पास वक्त नहीं है। नहीं तो मैं उसे फोन कर देता।"

"ठीक है। मैं रिया को इनफार्म कर दूंगी।"

"बाई!"

इंद्रजीत ने फोन डिस्कनेक्ट किया और फिर फोन का बिल अदा करके एक रेस्टोरेंट की तरफ बढ़ गया।

लगभग डेढ़ बजे इंद्रजीत होटल में पहुंचा।

दीपक के रूप के बाहर चहलकदमी कर रहे एक हट्टे-कट्टे आदमी को देखकर उसकी आंखें सिकुड़े बिना नहीं रह सकीं।

इंद्रजीत के पास पहुंचने पर उसने चहलकदमी करना बंद कर दिया।

"तुम ही मरने वाले के दोस्त हो?" फिर वह इंद्रजीत से मुखातिब होते हुए बोला।

"जनाब की तारीफ?" इंद्रजीत ने उसे सिर से पांव तक बड़े गौर से देखा।

"पहले तुम मेरे सवाल का जवाब दो। तुम ही मरने वाले के..."

"...हां, मैं ही दीपक का दोस्त इंद्रजीत हूं।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"और तुम?"

"मेरा नाम जॉनी डिसूजा है।" वह अपना दायां हाथ इंद्रजीत की तरफ बढ़ाते हुए दोस्ताना लहजे में बोला—"मैं यहां का हाऊस डिटेक्टिव हूं। मेरे लिए थोड़ा-सा वक्त निकाल सकते हो?"

सहमति में सिर हिलाकर इंद्रजीत ने उससे हाथ मिलाया।

फिर उसे लेकर वह अपने कमरे में आ गया।

मेज पर पड़ी बैट 69 की बोतल देखकर वह लार टपकाते हुए बोला, "इजाजत हो तो मैं इसके कुछ घूंट लगा लूं?"

इंद्रजीत ने इजाजत देने वाले अंदाज में सिर हिलाया और पलंग पर बैठ गया। उसने तत्काल एक जाम बनाया और मरभुखों की तरह हलक में उड़ेलने लगा।

इसी दौरान इंद्रजीत ने उसके चेहरे का जायजा लिया।

उसका चेहरा रफ-टफ था, चेहरे पर जो मूछें थीं, वो फिल्म स्टार

Scanned by CamScanner

। अनिल कपूर जैसी थीं।

"यहां की पुलिस स्याली पागल है।" जाम खाली करने के बाद वह आस्तीन से मुंह पोंछते हुए बोला—"वो उससे जवाबतलबी करती है, जो उसके किसी काम नहीं आ सकता।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?" इंद्रजीत आंखें सिकोड़कर बोला।

"मैं यही कहना चाहता हूं कि वो अगर प्रकाश की जगह मुझसे जवाबतलबी करती तो मैं उसे ढेर सारी काम की बातें बता देता, आखिर में इस होटल का प्राईवेट डिक हूं।"

"इसका मतलब तुमने उस लड़की को देखा था, जो मेरे दोस्त को अपने साथ ले गयी थी?"

"बहुत अच्छी तरह से। बल्कि मैं तो ये भी कहूंगा कि थोड़ी-सी देर में मैंने उसके बारे में वो सब जान लिया था, जो कोई टॉम डिक एंड हैरी किसी भी कीमत पर नहीं जान सकता।"

"जब तुमने उसके बारे में काफी कुछ जान लिया था, फिर तुमने उसके बारे में पुलिस को क्यों नहीं बताया?"

"क्योंकि यहां की पुलिस बड़े होटलों के जासूसों को तरजीह जो देती है। हम जैसों को तो वह नजर उठाकर भी नहीं देखती। वो मुझे कुछ समझती, मेरी काबिलियत को तरजीह देती तो मैं उसकी हेल्प जरूर करता।"

"वैसे अगर कुछ बताने की नौबत आती तो तुम पुलिस को क्या बताते?"

"सबसे पहले मैं उन्हें यही बताता कि उस लड़की ने अपना वेश बदला हुआ था। उसने अपनी पहचान छपाने के लिए नकली बाल, बड़ा हैट और बड़े शीशों वाले चश्मे का सहारा लिया हुआ था।"

"उसने विग लगा रखा था?"

"हां, और वो भी भूरे बालों का।"

"तुम्हें कैसे पता लगा कि उसने विग लगा रखा था?"

जवाब में जॉबी डिसूजा बड़े अंदाज से मुस्कराया—"इजाजत हो तो," वह लार टपकाने वाले अंदाज में बोला, एक पैग और ले लूं?"

"मेरे मना करने पर तुम मान जाओगे?" इंद्रजीत मुंह बिगाड़कर बोला—"तुम ये बोतल ही अपने पास रख लो। मैं दूसरी मंगा लूंगा।"

"अ...ओ थैंक्यू सर। यू ऑर ए वेरी जेनेरस पर्सन। आई लाईक दोज पिपिल, हू केयर अदर पिपिल। आई आल्सो लाईक युअर जेनेरेसिटी। यू आर रियली ए...।"

"...मैं पूछ रहा था, तुम्हें कैसे पता लगा कि लड़की ने विग लगाया हुआ था?"

उसने इंद्रजीत को हाथ के इशारे से सब्र करने का संकेत किया, अपने लिए एक पैग बनाया और फिर उसका तगड़ा घूंट भरकर बोला—"पहली बात उसके हाथों के बालों का रंग काला था।"

"ओह!"

"दूसरी बात...वह या तो किसी शो बिजनेस से वाबस्ता थी, या फिर किसी बड़े बाप की बेटी थी।"

"कैसे?"

"असल में जब वो दीपक का काउंटर पर इंतजार कर रही थी, तब उसकी अंगुलियां पियानो बजाने वाले अंदाज में काउंटर पर चल रही थीं। ये उसकी वो आदत थी, जो जाहिर करती थी कि या तो वो किसी म्यूजिक कंपनी में पियानो बजाती है, या फिर उसने एक पियानो खरीदकर रखा हुआ है।"

"आज के जमाने में पियानो हर कोई खरीद सकता है, क्योंकि सेकंड हैंड पियानो बड़े सस्ते दामों पर मिल जाते हैं। कहीं तुम पियानो की वजह से तो इस नतीजे पर नहीं पहुंचे कि वो किसी बड़े बाप की..."

"मैं पियानो की वजह से नहीं, उसके हाव-भाव को देखकर इस नतीजे पर पहुंचा था कि वो किसी बड़े बाप की बेटी भी हो सकती है।"

"उसके हावभाव के बारे में कुछ बताओगे?"

"उसने जब भीतर कदम रखा था तो दरबान ने सलाम मारने का जवाब देना मुनासिब नहीं समझा था। प्रकाश को उसने यूं देखा था, जैसे वो मोरी का कीड़ा हो और प्रकाश के कहने पर भी वो लॉन में पड़ी कुर्सियों पर नहीं बैठी थी, बल्कि काउंटर पर खड़ी-खड़ी उसने दीपक का इंतजार करने की जहमत उठाई थी।"

"तुम्हारी बातों में थोड़ा बहुत दम तो है, लेकिन उन्हें पुख्ता तौर पर नहीं माना जा सकता, क्योंकि ऐसी बातें कोई अभिनय करके भी जाहिर कर सकता है। ऐनी वे, उसने कपड़े किस ढंग के पहने हुए थे?"

"उसने एक लैगिंग और बस्टिरनुमा टी शर्ट पहनी हुई थी।"

"बस्टिरनुमा टी शर्ट से तुम्हारा मतलब?"

"ये ब्लाऊज जैसी होती है।"

"ओह!" इंद्रजीत के मुंह से बरबस निकला, फिर वह धीमे स्वर में बोला—"उस लड़की के बारे में तुम पुलिस को बताओगे?"

"नहीं। मैंने बताया न कि पुलिस मेरे जैसे टुच्चे बंदों की बातों को कोई तरजीह नहीं देगी। अगर मैं किसी फाईव स्टार होटल का हाउस डिक होता तो यकीनन उनके पास जाता और उस लड़की की बाबत सब कुछ बता देता।"

Scanned by CamScanner

"दीपक के कमरे की तलाशी किस शख्स ने ली, इस बाबत तभ अपनी कोई राय कायम कर सकते हो?"

"जाहिर है, उसके कमरे की तलाशी उसी लड़की ने ली होगी, जिसने उसका कत्ल किया है।"

"दीपक का कत्ल उसी लड़की ने किया है?"

"जहां तक मैं समझता हूं, तुम्हारे दोस्त की कातिल वो ही है। असल में लड़कियां लोग ही बर्फ काटने वाले सुए को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करती हैं।"

"ये कोई पैट रूल तो नहीं है कि लड़कियां ही बर्फ काटने वाले सुए को..."

"तुम्हारे दोस्त का कत्ल किसी लड़की ने किया है, ये बात मैं दावे से कह सकता हूं।" इंद्रजीत चौंके बिना नहीं रह सका।

"कैसे?" उसके मुंह से बरबस निकला।

"भई, सीधी-सी बात है। वो लड़की तुम्हारे दोस्त को अपने साथ बीच की तरफ ले जाती है। फिर वो अपने कपड़े केबिन के चेंजिंग रूम में उतारकर उसे अभिसार के लिए आमंत्रित करती है। तुम्हारा दोस्त उस लड़की को अंगवस्त्रों में देखकर उत्तेजित हो जाता है वो उससे लिपटता है, फिर उसे पलंग पर लिटा देता है। चूंकि लड़की ने उसे पहले से ही हलाक करने का मंसूबा बांधा हुआ है, इसलिए वो मौका देखकर तकिए के नीचे से आईसपिक निकालती है और तुम्हारे दोस्त की गर्दन में घोंप देती है। तुम्हारा दोस्त तड़प-तड़पकर दम तोड़ देता है। इसके बाद तो लड़की चुपके से मौकाए-वारदात से खिसक जाती है। फिर वो मौका देखकर होटल में आती है और तुम्हारे दोस्त के कमरे की तलाशी लेकर अपनी मनचाही चीज हासिल करके चलती बनती है।"

"तुम्हारी थ्योरी काफी हद तक ठीक है, लेकिन एक बात मुझे हजम नहीं हो रही।"

"कौन-सी बात?"

"मेरे दोस्त को गोवा में कदम रखे मुश्किल से चंद दिन हुए थे। जहां तक मैं समझता हूं कि यहां उसकी किसी से दुश्मनी भी नहीं थी, फिर वो लड़की उसका कत्ल क्यों करने लगी?"

"हो सकता है उसने ब्लैकमेलिंग से निजात पाने के लिए तुम्हारे दोस्त को हलाक किया हो। अब तुम ये मत कहना कि प्राईवेट डिटेक्टिव ब्लैकमेलर नहीं होते। मैं खुद एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूं, इसलिए मैं प्राईवेट डिटेक्टिवों की जात-औकात से अच्छी तरह से वाकिफ हूं। मैं दावे से कह सकता हूं, तुम्हारा दोस्त उस लड़की को ब्लैकमेल कर रहा होगा, तभी उसने उसका कत्ल किया और फिर

ब्लैकमेलिंग का सामान उसके कमरे से बटोरकर चलती बनी। अब तुम ये मत पूछना कि तुम्हारे दोस्त के कमरे की चाबी उसके पास कैसे आई होगी?"

"मेरा दोस्त उसके साथ था। चाबी मेरे दोस्त के पास थी। जाहिर है, तभी वो चाबी लड़की के पास पहुंची होगी।"

"अब तुम मेरी थ्योरी से सैटिस्फाई हो?"

"नहीं।"

"नहीं!" वह फौरन चिहुंका– "मेरी थ्योरी में क्या खराबी है?"

"एक नहीं कई खराबियां हैं।"

"मसलन।"

"मसलन, मेरा दोस्त थोड़ा फ्लर्ट किस्म का जरूर था, लेकिन वो ब्लैकमेलर नहीं था, खासकर वो लड़कियों को तो ब्लैकमेल कर ही नहीं सकता था। लड़कियां उसकी शुरू से ही कमजोरियां रही थीं। वह एक खूबसूरत लड़की की खातिर किसी आदमी को जरूर ब्लैकमेल कर सकता था, लेकिन उस लड़की को वह किसी भी कीमत पर ब्लैकमेल नहीं कर सकता था।"

"ये भी तो हो सकता है, उसने किसी लड़की की खातिर ही उस लड़की को ब्लैकमेल किया हो।"

"नहीं, ये भी नहीं हो सकता।"

"वैसे तुम्हारा दोस्त मैरिड था या बैचलर?"

"वो शादी शुदा था।"

"उसकी बीवी से उसकी बनती थी?" इंद्रजीत खिलखिलाया।

"ओ, कम ऑन। तुम्हारी खिलखिलाहट बता रही है कि तुम्हारे दोस्त की अपनी बीवी से नहीं बनती थी। तब तो मामला आईने की तरह साफ है। जरूर तुम्हारे दोस्त की बीवी का कोई यार रहा होगा और उसके यार ने तुम्हारे दोस्त की बीवी को हासिल करने के लिए कत्लोगारत का ये खेल खेला होगा। आई एम राईट?"

"ऐसी कोई बात नहीं है।" इंद्रजीत कमजोर स्वर में बोला।

"भाई डियर, मानो या न मानो, देख लेना तुम्हारे दोस्त के कत्ल की वजह उसकी बीवी ही रही होगी।"

"मैंने कहा न, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"आप कहते हैं तो मैं मान लेता हूं। इस समय मैं आपकी दारू पी रहा हूं, मैं आपके खिलाफ कैसे जा सकता हूं। लेकिन तुम्हारे दोस्त का कत्ल उसकी बीवी ने नहीं करवाया, ये बात तुम साबित कर सकोगे?"

Scanned by CamScanner

"मतलब?" इंद्रजीत की आंखें सिकुड़ीं–"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मैं यही कहना चाहता हूं कि होमिसाईड ब्रांच का जो ए०सी०पी० है, वो बहुत ही खंडूस और सनकी आदमी है। इस केस की तहकीकात के लिए वह तुम्हारे दोस्त की बीवी से पूछताछ जरूर करेगा। पूछताछ के दौरान जब उसे लगा कि तुम्हारे दोस्त की बीवी उससे कुछ छुपा रही है, तो वह उसके औरत होने का जरा भी लिहाज नहीं करेगा और उसे अपनी कस्टडी में ले लेगा।"

"अगर उससे पहले कातिल सामने आ जाए तो?" इंद्रजीत बोला–"वो तब भी मेरे दोस्त की बीवी की मिट्टी पलीद करेगा?"

"तब शायद नहीं करेगा। लेकिन माई डियर, कातिल को सामने कौन लाएगा।"

"मैं लाऊंगा।"

"तुम्म!"

"हां।" इंद्रजीत दृढ़ स्वर में बोला, "मेरे दोस्त का कत्ल हुआ है और वो भी मेरे गोवा में कदम रखने से थोड़ी देर पहले। एक दोस्त होने के नाते मेरा फर्ज बनता है कि मैं उसके कातिल को सामने लाऊं।"

"हां, तुम्हारा फर्ज तो बनता ही है, एक दोस्त होने के नाते भी और प्राईवेट डिटेक्टिव होने के नाते भी। मुझे पता चला था कि तुम एक प्राईवेट डिटेक्टिव भी हो।" एक पल ठिठककर वो फिर बोला--"एक बात का ख्याल रखना। ये जो ए०सी०पी० चंद्रकांत बांदेकर है न, ये काफी पागल किस्म का है। जब उसे लगे कि कोई उसके काम में रोड़ा अटका रहा है, तो वो उसे गोली मारने से भी नहीं चूकता। अभी कुछ दिनों पहले की बात है, मुंबई से एक प्राईवेट डिटेक्टिव एक सुसाइड केस की इन्वेस्टीगेशन करने के लिए गोवा आया था, उसके क्लाइंट का कहना था कि उसकी बीवी का मर्डर किया गया है, उसने सुसाइड नहीं की। उस प्राईवेट डिटेक्टिव ने यह बात गोवा पुलिस के सामने साबित करने की कोशिश की तो, जानते हो क्या हुआ?"

"क्या हुआ?"

"पहले तो ए०सी०पी० ने उसे बड़े प्यार से समझाया, लेकिन जब वो नहीं माना तो एक दिन उसकी कार पुलिस की पैट्रोल कार से जा टकराई और वो सीधा अस्पताल जा पहुंचा। वहां वो पूरे छः हफ्ते रहा, ठीक होने के बाद उसने गोवा से कब किनारा किया, किसी को पता भी नहीं चला। यकीनन उसकी यह हालत उसकी जिद की

वजह से हुई थी, जो कि चंद्रकांत बांदेकर को जरा भी पसंद नहीं आई थी।"

"चंद्रकांत की बाबत तुमने जो टिप थी, उसके लिए शुक्रिया।"

"इसमें शुक्रिया की क्या बात है।" वह एक झटके से जाम खाली करते हुए बोला, "हमपेशा लोगों में नो शुक्रिया और नो सॉरी वाला रूल चलता है। फिलहाल मुझे चलना चाहिए।"

"एक बात और है।"

"पूछो।"

"तुम यहां किसलिए आए थे?"

"म...मैं तो बस यहां यूं ही आ गया था।" वह सकपकाकर बोला, "मुझे प्रकाश से पता चला था कि तुम भी एक प्राईवेट डिटेक्टिव हो, इसलिए मैं तुम्हारे दर्शन करने चला आया।"

इंद्रजीत ने उसे जायजा लेने वाली निगाहों से देखा, "सच बोल रहे हो?"

"ये लो, मुझे झूठ बोलकर क्या मिलेगा।"

"ओके, तुम कहते हो मान लेता हूं। एक बात का जवाब और दो।"

"पूछो।"

"तुम किसी माईकल परेरा को जानते हो?"

"क...क्या कहा। जरा फिर से तो कहना।"

"मैंने कहा है कि तुम किसी माईकल परेरा को जानते हो?"

"बिल्कुल जानता हूं। लेकिन तुम उसके बारे में क्यों पूछ रहे हो?"

"ऐसे ही!"

"मुझे नहीं लगता कि तुम उसके बारे में ऐसे ही पूछ रहे हो। ऐनी वे, तुम नहीं बताना चाहते हो तो मत बताओ। ये समझ लो माईकल परेरा वो शख्स है, जो तकरीबन आधे गोवा पर राज करता है। वो कोई मामूली शख्स नहीं। बहुत बड़ी तोप है। उसकी ग्रीन स्टार नाम से शिपिंग कंपनी है, जिसके जहाज गोवा से मुंबई ढेर सारे मुसाफिरों को लेकर डेली जाते हैं। वह तीन लोकल अखबारों का मालिक है। उसकी गोवा में नहीं, पूरे देश में इलैक्ट्रिकल एप्लायंसिज बनाने की दर्जनों फैक्ट्रिया हैं, जिसमें लगभग दस हजार आदमी काम करते हैं। उसके गोवा में दो फाईव स्टार होटल हैं। परेरा हाऊस नाम से एक नाईट क्लब है, जिसमें केवल वे ही लोग जा सकते हैं, जिनकी महाना आमदनी पचास लाख से ऊपर हो। उसकी अपनी एक एस्टेट है, जहां उसका शानदार महल और एक चिड़ियाघर है। पचास नौकरों

Scanned by CamScanner

का बेड़ा और एक छोटा-सा शबर है, जहां कि उसका शानदार वाट हर वक्त उसकी सेवा में हाजिर रहता है। अब बोलो क्या बोलते हो?"

"बोलने लायक तुमने कुछ छोड़ा हो तो बोलूं भी। वैसे वो शादी शुदा है?"

"हां, तुमने प्रसिद्ध अभिनेत्री टीना घई का नाम तो जरूर सुना होगा।"

"वही टीना घई जिसकी छः सात साल पहले घई फिल्में आई थीं जिनमें से एक भी नहीं चली थी। जिस पर फ्लॉप हीरोइन का ठप्पा लग गया था?"

"मैं उसी टीना घई की बात कर रहा हूं। आजकल वो माईकल परेरा की शरीके हयात बनी हुई है। मजे की बात तो यह है कि जहां माईकल पचास के पेटे में पहुंचा है, वहीं टीना तीस साल रही होगी। फिर भी दोनों में गाढ़ी छन रही है। गाढ़ी छनने से मेरा मतलब यही है कि उनके बीच कुत्ते बिल्ली वाला बैर नहीं है। टीना माईकल का तो हुक्का भरती है, साथ-साथ उसकी जवान लड़की रवीना की चम्पी भी करती है।"

"इस रवीना की उम्र कितनी होगी?"

"मुश्किल से बाईस साल। पूरे गोवा में उसकी खूबसूरती के चर्चे हैं, सैक्सी बम है वो! आखिर वो एक अरबों खरबोंपति बाप की इकलौती बेटी जो है। तुम मिलना चाहोगे उससे?"

"मैं उससे मिलकर क्या करूंगा?"

"मैं तो मजाक कर रहा था। मैं खुद उसके दीदार को तरसता हूं। मैं तुम्हें उससे मिलाना तो दूर, उसकी शक्ल भी नहीं दिखा सकता।"

"तुम्हारा मजाक मुझे पसंद आया। आई लाईक युअर कॉर्नी जोक।"

जॉनी डिसूजा ने खींसे निपौरी—"तो अब इस यसमैन को इजाजत है।"

"बोतल तो खत्म करते जाओ।" इंद्रजीत ने बोतल में बची थोड़ी-सी शराब की तरफ इशारा किया, "जहां इतनी पी है, वहां थोड़ी-सी और सही।"

"नहीं। बस बहुत है। मैं दिन में एक पैग से ज्यादा नहीं लेता जबकि आज तो मैं दो हैवी-हैवी पैग सटका चुका हूं। तुमने इस मैन फ्राईडे को शराब पिलाने की जहमत उठाई इसके लिए [illegible] शुक्रिया। मेरी जरूरत कभी भी पड़े, याद कर लेना।"

उसने इंद्रजीत से हाथ मिलाया।

फिर वह नशे में झूमता हुआ रूम से बाहर निकल गया।

इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई और पलंग पर जा बैठा।

जॉनी डिसूजा द्वारा उसे माईकल परेरा के बारे में जो पता चला था, उसे जानने के बाद वह कशमकश के दरिए में गोते लगाने लगा था।

एक आदमी जो अरबों-खरबोंपति हो, जिसके खिदमत में सैकड़ों चमचे तैनात हो, उसका दीपक को किसी काम के लिए बुलाना बड़ी ही अजीब बात थी।

उसे दीपक की जरूरत क्यों पड़ी थी?

यही एक सवाल इंद्रजीत के जेहन में उथल-पुथल मचा रहा था।

एकाएक उसने अपने सिर को झटका और टेलीफोन उठाकर पलंग पर रखा।

फिर उसने रिसेप्शन से माईकल परेरा का नम्बर मिलाने को कहा, थोड़ी देर बाद लाईन मिली तो उसे कानों में एक औरत का मधुर स्वर सुनाई पड़ा, "दिस इज मिस्टर माईकल परेरा रेजीडेंस।"

"प्लीज पुट मी थ्रू टू मिस्टर माईकल।" इंद्रजीत जल्दी से बोला।

"इफ यू विल गिव मी युअर नेम, सर, आई विल पुट यू थ्रू टू मिस्टर माईकल'स सेक्रेटरी।"

"माई नेम इज इंद्रजीत। आई डोंट वांट मिस्टर माईकल'स सेक्रेटरी। आई वांट टॉक टू मिस्टर माईकल परेरा।"

"प्लीज होल्ड ऑन।"

फिर इंद्रजीत को पॉप म्यूजिक की आवाज सुनाई देने लगी।

थोड़ी देर बाद म्यूजिक अपने आप बंद हुआ और एक मर्दाना आवाज जोकि बेहद सर्द थी, इंद्रजीत के कानों में पड़ी, "हू इज टॉकिंग?"

"आर यू माईकल परेरा?" इंद्रजीत बोला।

"नहीं, मैं उनका बटलर बोल रहा हूं।" सर्द स्वर का मालिक भावहीन स्वर में बोला, "आपकी तारीफ?"

"मेरे बारे में तुम अपने आलमपनाह से पूछोगे तो बेहतर होगा। मैं उनका खासुलखास हूं।"

"फिर भी अपने बारे में बताओ।"

"मैंने कहा न मेरे बारे में तुम..."

"मिस्टर, जब तक तुम अपने बारे में नहीं बताओगे, तुम्हारी माईकल साहब से बात नहीं हो सकती। तुम अपने बारे में बता रहे हो या मैं फोन रखूं?"

इंद्रजीत हड़बड़ाया—"ऐसे कैसे फोन रख दोगे।"

Scanned by CamScanner

"तो फिर अपने बारे में बताओ।"

"ठीक है, बताता हूं।" एकाएक इंद्रजीत अपने स्वर में रहस्य का पुट लाते हुए बोला, "मैं 'ज्वाईंट वेंचर्स डिटेक्टिव एजेंसी' का सीनियर पार्टनर हूं। तुम्हारे साहब ने कुछ दिनों पहले एक केस हमारी कंपनी को सौंपा था। अपने साहब को कहो कि उनके केस की मुकम्मल रिपोर्ट तैयार हो चुकी है।"

"ठीक है, मैं उन्हें तुम्हारे बारे में बताता हूं। तुम्हारा कोई फोन नम्बर?"

इंद्रजीत ने होटल का फोन नंबर बताया।

"आप वेट कीजिए। थोड़ी देर में मैं आपको इन्फार्म करता हूं कि माईकल साहब आपसे मिलना चाहते हैं, या नहीं।"

फोन कट गया।

एक गहरी सांस छोड़कर इंद्रजीत ने फोन रखा, फिर हाथों का तकिया बनाकर छत की ओर घूरने लगा।

थोड़ी ही देर में उसकी पलकें भारी होने लगीं।

फिर वह एकदम से नींद के आगोश में समा गया।

फोन की चीखती घंटी ने इंद्रजीत को नींद से जगाया।

हड़बड़ाकर उसने कलाई घड़ी पर नजर डाली।

उसे सोए हुए मुश्किल से पंद्रह मिनट हुए थे।

हाथ बढ़ाकर उसने रिसीवर उठाया और कान से सटाया।

"मिस्टर इंद्रजीत!" उसे रिसेप्शन क्लर्क प्रकाश बर्वे की आवाज सुनाई दी—"आपके लिए फोन है, आप बात करना चाहेंगे?"

"हां।" इंद्रजीत ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

तभी इंद्रजीत को वो ही सर्द आवाज सुनाई दी, जो थोड़ी देर पहले उसके कानों में सुनाई पड़ी थी—"मिस्टर इंद्रजीत, माईकल साहब आपसे तीन बजे मिलेंगे। ठीक तीन बजे। अगर तुम लेट हुए तो..."

"जनाब।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"मैं पौने तीन बजे पहुंच जाऊंगा।"

फोन कट गया।

इंद्रजीत ने रिसीवर क्रेडल पर रखा और फिर तैयार होने के लिए बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

माईकल परेरा की स्टेट पणजी से लगभग 13 किमी० दूरी पर

स्थित मपुसा सिटी में थी। इंद्रजीत को यहां पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा।

पुलिस वाले दीपक की मारूति कार होटल के बाहर छोड़ गए थे, जिसकी बदौलत ही इंद्रजीत यहां बड़ी आसानी से पहुंच गया था।

मारकर परेरा की महलनुमा कोठी एक पहाड़ी इलाके पर स्थित थी।

इस तक पहुंचने के लिए एक प्राईवेट रोड था, जिस पर 'यह आम रास्ता नहीं है' का बड़ा सा बोर्ड लगा हुआ था।

बोर्ड के करीब पहुंचकर इंद्रजीत ने कार रोकी और पहाड़ी पर बने माईकल परेरा के शाही महल को प्रभावित निगाहों से देखने लगा।

माईकल परेरा की महलनुमा कोठी संगमरमरी पत्थरों से बनी हुई थी और तिमंजला थी। जगह-जगह पर चढ़ी हुई बॉगनवेलिया की बेलें इसकी खूबसूरती में चार चांद लगा रही थीं।

एक सिग्रेट सुलगाकर इंद्रजीत ने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

कुछ दूरी तय करने के बाद उसका सामना एक बैरियर से हुआ जिसके पास दो सिक्योरिटी गार्ड मुस्तैदी से खड़े हुए थे।

बैरियर के करीब पहुंचकर इंद्रजीत ने कार को ब्रेक लगाई थी कि एक सिक्योरिटी गार्ड लपककर उसके करीब पहुंचा।

"परेरा साहब से मेरी अप्वायमेंट फिक्स है।" कार की खिड़की से मुंह निकालकर इंद्रजीत उससे मुखातिब हुआ—"खाकसार इंद्रजीत के नाम से जाना जाता है।"

उसने हाथ में थमी नोटबुक में कुछ देखा फिर बैरियर के पास खड़े सिक्योरिटी गार्ड को बैरियर उठाने का संकेत कर दिया।

बैरियर के उठते ही इंद्रजीत ने कार गियर में डाली और आगे बढ़ा दी।

थोड़ी दूरी तय करने के बाद उसका सामना रोड पर बने एक लोहे के गेट से हुआ, जिसके पास उस घड़ी दो सिक्योरिटी गार्ड तैनात थे।

इंद्रजीत का नाम वगैरह जानने के बाद उन्होंने बैरियर उठा दिया।

इंद्रजीत ने कार आगे बढ़ाई।

थोड़ी दूर जाने पर उसने खुद को एक काफी बड़े प्रांगण में पाया, जहां कई कारें खड़ी थीं।

इंद्रजीत ने अपनी मारूति कार कारों के पीछे खड़ी की और बाहर निकल गया। तभी उसकी नजर एक शेड पर पड़ी जिसके नीचे उस

Scanned by CamScanner

घड़ी दो मर्सडीज कारें खड़ी थीं। इंद्रजीत ने कार के पास लगी तख्ती पर नजर डाली तो उसे मालूम हुआ कि वे कारें मिस्टर एंड मिसेज माईकल परेरा की थीं।

अपनी टाई की नॉट दुरुस्त करने के बाद इंद्रजीत पत्थरों की उस राहदारी की ओर बढ़ा जो कि महल की तरफ जाती थी।

राहदारी पर कदम रखने के बाद वह लॉन की खूबसूरती की तारीफ किए बिना नहीं रह सका।

लॉन की खूबसूरती लाजवाब थी। सलीके से लगाए कीमती पौधे, मखमली घास और तरह-तरह के झूले इसकी खूबसूरती में इजाफा कर रहे थे।

राहदारी पार करके इंद्रजीत कोठी की इमारत के सामने पहुंचा तो उसकी आंखें चुंधियाकर रह गयीं।

सफेद पत्थरों से बनी परेरा की महलनुमा कोठी वास्तुकला की अनोखी मिसाल थी। उस पल उस पर गिर रही सूर्य की किरणें उसे चमकदार बना रही थीं।

संगमरमर की चंद सीढ़ियां तय करने के बाद इंद्रजीत कोठी के मुख्य द्वार पर पहुंचा, जो कि शीशम की लकड़ी से बना हुआ था, जिस जगह-जगह नक्काशी की हुई थी।

इससे पहले वो दरवाजे की घंटी बजा पाता, उसकी नजर कोठी के पृष्ठ भाग से निकलकर उसकी ओर बढ़ते एक गार्ड पर पड़ी।

इंद्रजीत ने उसका जायजा लिया तो पाया कि उसकी उम्र साठ साल के आस-पास थी। जिस्म तंदुरुस्त था, लेकिन बुढ़ापे की अलामत उसके चेहरे की झुर्रियों से साफ जाहिर हो रही थी।

वह गार्ड इंद्रजीत के पास पहुंचा तो उसके मुंह से शराब की फूटती गंध ने इंद्रजीत को यकीन दिला दिया कि वह उन शराबियों में से है जो चौबीस घंटे शराब के नशे में धुत रहना पसंद करते हैं।

"क्यों बरखुदार!" वह नशे में झूमते हुए बोला—"परेरा साहब से मिलने जा रहे हो?"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

"मेरी मानो तो उससे मत मिलो।" वह तल्ख लहजे में बोला, "वह हरामजादा मिलने लायक नहीं है।"

"बड़े मियां, एक पुरानी कहावत है। जिसकी गोदी में बैठो उसकी दाढ़ी कभी न नोचो। जिस पेड़ की छांव में बैठो, उसकी जड़ कभी न काटो। जिस मुंह से पान चबाओ, उस मुंह से कोयले कभी न चबाओ।"

"माई डियर, कहावतें होती हैं दूसरों को सुनाने के लिए। तुम्हारी

कहावतों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ने वाला। मैं वो काला कंबल हूं जिस पर कोई और रंग नहीं चढ़ता। मुझे समझाकर तुम एक तरह से पानी को लाठी से पीटने का काम करोगे। मैं अगर तुम्हें परेरा से न मिलने की सलाह दे रहा हूं तो तुम्हारे फायदे के लिए ही दे रहा हूं। वो वो कमीना है जिसकी आंखों में सूअर का बाल है। वह इंसान नहीं है हैवान है। आदमी नहीं दरिंदा है। उस कमीने से मिलकर तुम्हें कोई फायदा नहीं पहुंचने वाला।"

इंद्रजीत को भांपते देर न लगी कि वह माईकल परेरा से खता खाया हुआ था, तभी तो उसकी शान में कसीदे पढ़ रहा था।

"बड़े मिया।" इंद्रजीत अपने लहजे को जरा खींचते हुए बोला, "सख्त खार खाए लगते हो परेरा साहब से। उन्होंने तुम्हारी बकरियां चुरा लीं जो तुम उन्हें पानी पी-पीकर कोस रहे हो?"

"मेरे पास बकरियां होतीं तो वो हरामजादा मेरी बकरियां चुराने से भी बाज नहीं आता। भगवान का शुक्र है कि उसने मुझे बकरियां नहीं दीं। मेरे पास बकरियां होतीं तो आज मैं कहीं का नहीं रहता।"

"फिर उससे खंदक खाने की कोई खास वजह?"

"मैं आज रिटायर्ड होने जा रहा हूं। कमीने ने कहा था जिस दिन मैं रिटायर्ड होऊंगा, वो एक बढ़िया-सी पार्टी देगा। आज मैंने उससे पार्टी का जिक्र किया तो जानते हो कमीने ने क्या कहा?"

"क्या कहा?" इंद्रजीत के मुंह से निकला।

"उस हरामजादे ने कहा कि मुझे अपनी औकात में रहना चाहिए। टाट का लंगोटा पहनकर मुझे नवाब से शादी नहीं करनी चाहिए।"

"उसकी इस बात का तुम बुरा मान गए।"

"नहीं। मैं इस बात पर आपे से बाहर नहीं हुआ। मेरे आपा खोने की अहम वजह यही है कि उसने वायदा किया था कि जिस दिन मैं उसकी मुलाजमत से रिटायर्ड होऊंगा, वो मुझे गुजर बसर करने के लिए एक लाख की एकमुश्त रकम देगा। आज सुबह एक लाख रुपए मिलने की खुशी में मेरे पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। अब जब कमीने ने मेरे पचास हजार रुपए दबा लिए तो मैं खुद को दलदल में धंसता महसूस कर रहा हूं।"

"उसने तुम्हारे पचास हजार रुपए क्यों दबा लिए?"

"उसका कहना था कि उसके पास बस इतनी रकम देने की गुंजाईश है। कीड़े पड़ें कमीने के। झूठ बोलते कुत्ते को शरम भी नहीं आई! जरा सोचो! जिसके कुत्ते महीने भर में हजारों का मीट खा जाएं, जिसकी बीवी जुए में लाखों की रकम एक मिनट में उड़ा दे, उस कमीने

Scanned by CamScanner

के पास मुझ गरीब को देने के लिए पचास हजार रुपए नहीं हैं। मेरी जगह तुम होते तो उसकी बात का यकीन करते?"

"बिल्कुल नहीं करता। मैं तो पूरे लाख रुपए लेकर ही रहता।"

"तुम नौजवान हो। तुम में उसका मुकाबला करने का हौंसला है, इसलिए तुम ऐसी बात कह रहे हो। मैं तुम्हारी उम्र का होता तो मैं भी स्याले से पूरे लाख रुपए ही झटककर रहता। अब मैं बूढ़ा हो चुका हूं। अब मेरी हड्डियों में उसका मुकाबला करने की ताकत नहीं रही। अब मैं कमजोर हो गया हूं। मैं कमजोर नहीं होता, मेरी नसों में पहले वाली ताकत होती तो मैं स्याले की ईंट-से-ईंट बजा देता।" एक पल रुककर एक गहरी सांस छोड़कर वो फिर बोला, "खैर, छोड़ो! जिसकी तकदीर पहले से ही फूटी हो, वह कुछ अच्छा होने की उम्मीद कैसे कर सकता है। ऊपर वाला जब मेरी तकदीर लिख रहा होगा, तब वह अपनी बीवी से झगड़ा करके बैठा होगा, तभी उसने मेरे नसीब में दुनिया जहान की मुसीबतें दर्ज कर दीं, ताकि मैं इन मुसीबतों से उलझकर अपनी जान दे दूं।"

"बड़े मियां, किसी ने कहा है कि गिरते हैं शाहसवार ही मैदाने जंग में, वो तिफ्ल क्या गिरेंगे, जो घुटनों के बल चले। आपको हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, आपको ये कभी नहीं भूलना चाहिए कि जो लोग अपने सीने में दुख छुपाकर हरदम मुस्कराते रहते हैं, हकीकत में वे ही बहादुर होते हैं। और बहादुर लोग टुकड़ा नहीं लेते, वे सब लेते हैं या फिर छोड़ देते हैं।"

"तुम ठीक कहते हो।" एकाएक उसके चेहरे पर दृढ़ता के भाव नुमाया हुए। "बहादुर लोग या तो सब लेते हैं या फिर सब कुछ छोड़ देते हैं। इस मामले में मैं परेरा से खुलकर बात करूंगा। वह मेरा बाकी का पैसा देने को तैयार हुआ तो ठीक, वरना मैं वो भी उसे लौटा दूंगा, जो उसने मुझे भिखारी समझ कर दिया है।"

"ये हुई न बहादुरों वाली बात।" इंद्रजीत ने उसके कंधे पर धौल जमाई—"वैसे आज शाम को तुम क्या कर रहे हो?"

"मैंने क्या करना! आज गुस्से में मैंने आधी बोलत चढ़ा ली थी। अब रात के दस बजे तक पीता ही रहूंगा। स्याले मेरे बॉस ने मेरा ऐसा मूड खराब किया कि मुझे दिन में भी पीनी पड़ी। वरना दिन में मैं शराब को हाथ भी नहीं लगाता।"

"यानी कि आज सुबह को तुम्हारा पीने का ही इरादा है?"

"हां।"

"तो फिर तुम मेरे साथ क्यों नहीं पीते?"

"तुम्हारे साथ?"

"हां, हां मेरे साथ।"

"क...किस खुशी में?"

"ये समझ लो जो पार्टी तुम्हारा कमीना बॉस आज देने जा रहा था, जिससे वो मुकर गया, अब मेरी तरफ से।"

"देख लो बरखुरदार! मुझे कोई दिक्कत नहीं। अलबत्ता दिक्कत तुम्हें हो सकती है। शराब के साथ-साथ मैं कवाब का भी शौकीन हूं।"

"मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी। भगवान ने इस खाकसार को काफी कुछ दिया है। दमड़ी के मामले में ये नाचीज खुशकिस्मत है।"

"फिर ठीक है। शाम के सात बजे तुम मुझे पास्कल के बार में मिलना, मैं तुम्हें वहीं मिलूंगा।"

"ठीक है, मैं पहुंच जाऊंगा।"

इंद्रजीत घंटी बजाने को हुआ, वह पूछा बैठा—"तुमने अपना नाम तो बताया नहीं?"

"ये नाचीज" इंद्रजीत बड़ी अदा से बोला, 'इंद्रजीत के नाम से जाना जाता है।"

"और मैं शिवराम के नाम से।" कहने के साथ ही उसने अपना दाहिना हाथ इंद्रजीत की तरफ बढ़ा दिया।

इंद्रजीत ने उसका हाथ थामा, गर्मजोशी से हिलाया, फिर उसके जाने के बाद घंटी की ओर आकर्षित हो गया।

उसने घंटी बजाई।

दरवाजा खुलने में थोड़ी देर हुई।

दरवाजा जिस आदमी ने खोला, वह छः फुट का दुबला-पतला, बटलरों वाला सूट पहने हुए एक उम्रदराज शख्स था। उसने इंद्रजीत का अभिवादन किया, फिर भीतर आने का संकेत किया।

इंद्रजीत ने भीतर कदम रखा।

यह एक काफी बड़ा हॉल था, जिसकी खिड़कियों से सूर्य की रोशनी छनकर भीतर आ रही थी और इसकी शानो शौकत को और बढ़ा रही थी।

इसके घुटने तक धंसने वाले कालीन पर चलकर इंद्रजीत उम्रदराज शख्स के पीछे-पीछे इमारत के पिछले भाग की तरफ पहुंचा, जहां माईकल परेरा घर आए मिलने वालों से मिला करता था।

शानो शौकत के मुकाबले में यह हाल भी कॉफी आगे था, घुटनों तक धंसने वाला कालीन, जगह-जगह रखे हुए कीमती शोपीस, दीवारों पर टंगी कलाकृतियां, रेशमी पर्दे, उम्दा फर्नीचर और शाइस्तगी झलक इसकी शान में चार चांद लगा रहे थे।

तभी इंद्रजीत की नजर एक बंद दरवाजे के बाहर गुदगुदाते सोफे

Scanned by CamScanner

पर बैठे तीन आदमियों पर पड़ी। शक्ल सूरत से ही वे इंद्रजीत को बिजनेसमैन जान पड़े। इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि वे माईकल परेरा के हुक्के में तंबाकू भरकर अपना काम निकालने के इरादे से वहां मौजूद थे।

"परेरा साहब, आपसे थोड़ी देर में मिलेंगे।" उमदराज शख्स ने एक सोफे की तरफ इशारा किया—"आप तशरीफ रखिए।"

इंद्रजीत के बैठते ही वो वहां से ऐसे रुखसत हुआ जैसे उसके जूतों में पहिए लगे हों।

ठीक तीन मिनट बाद बंद दरवाजा खुला और हाल में एक हट्टे-कट्टे, शक्ल से ही बॉक्सर दिखाई देने वाले आदमी ने कदम रखा।

उसके वहां कदम रखते ही माईकल परेरा का हुक्का भरने आए आदमी मुस्तैदी से खड़े हो गए, जबकि इंद्रजीत शान से बैठा रहा।

उसने इंद्रजीत को पैनी निगाहों से देखा और फिर पूछा, "आप ही इंद्रजीत हैं?"

"दट्स राइट।" इंद्रजीत ने अपने सिर को श्रद्धा से झटका, "ये नाचीज इंद्रजीत के नाम से ही जाना जाता है।"

"परेरा साहब आपसे मिलना चाहते हैं।" वह बोला।

इंद्रजीत जैसे ही खड़ा हुआ, एक आदमी हट्टे-कट्टे शख्स से बोला—"यू विल पार्डन मी, मिस्टर टोनी, मैं एक बजे से परेरा साहब से मिलने के लिए बैठा हुआ हूं। आपको चाहिए कि इन साहेबान से पहले आप मेरी मुलाकात परेरा साहब से कराएं।"

टोनी नाम के शख्स ने उस आदमी को कड़ी निगाहों से देखा—"जो मैं सोचता हूं" वह कठोर स्वर में बोल, "वैसा परेरा साहब नहीं सोचते। परेरा साहब ने मुझे जो हुक्म दिया, मैं उस पर अमल कर रहा हूं। अगर आप बैठे-बैठे बोर हो गए हैं, तो आप यहां से तशरीफ ले जा सकते हैं।"

उस आदमी को लताड़ने के बाद टोनी ने इंद्रजीत को पीछे आने का इशारा किया।

इंद्रजीत उसके पीछे हो लिया।

माईकल परेरा के चैम्बर में कदम रखने के बाद इंद्रजीत ने वहां का जायजा लिया तो वहां की चमक-दमक देखकर उसकी आंखें चुंधियाकर रह गयीं।

दीवारों पर लगे तैलीय चित्र, सोने की बनी तलवारें और ढालें, नटराज की कीमती मूर्ति, रेशमी पर्दे और ईरानी कालीन इसकी शानो

शौकत बढ़ाने में अहम रोल अदा कर रहे थे।

तभी इंद्रजीत की निगाह काफी बड़ी कांच की मेज के पीछे बैठे माईकल परेरा पर पड़ी।

इंद्रजीत ने अपनी पैनी निगाहों से उसका जायजा लिया तो पाया कि वह पचास पचपन के पेटे में पहुंचा हुआ, दुबला-पतला शख्स था, जिसके खोपड़ी के बाल आगे से उड़े हुए थे। उस घड़ी उसके मुंह में एक पाईप दबा हुआ था।

उसने इंद्रजीत को सिर से पांव तक गौर से देखा, फिर मुंह में दबा पाईप दाहिने हाथ में लेते हुए बोला—"मेरे पास तुम्हारे लिए ज्यादा वक्त नहीं है। इसलिए बिना किसी भूमिका के बताओ कि तुम मुझसे क्यों मिलना चाहते थे?"

"इजाजत हो तो," इंद्रजीत विजिटर चेयर्स की तरफ इशारा करते हुए बोला—"मैं इन कुर्सियों में से किसी एक पर बैठ जाऊं?"

माईकल ने हामी में सिर हिलाया।

उसने जिस ढंग से सिर हिलाया था, उसे देखकर इंद्रजीत को साफ-साफ लगा था कि वह अपनी मर्जी के बरखिलाफ इंद्रजीत को बैठने की इजाजत दे रहा है।

"मेरा नाम इंद्रजीत है।" एक कुर्सी पर बैठकर इंद्रजीत बोला—"मैं ज्वाईंट वेंचर्स डिटेक्टिव एजेंसी का सीनियर पार्टनर हूं। कुछ दिनों पहले आपने मेरे पार्टनर को एक केस सौंपा था। उसी केस के सिलसिले में मैं आपसे मिलना चाहता था।"

"तुम्हें किसने बताया" माईकल आंखें सिकोड़कर बोला, "कि मैंने तुम्हारे पार्टनर को कोई केस सौंपा था?"

"हमारे दफ्तर में हमारे क्लाईंटस का पूरा रिकॉर्ड रखा जाता है।" इंद्रजीत धीरज से बोला—"आपके केस पर काम करने से पहले मेरे पार्टनर दीपक ने एक तहरीर अपनी नोट बुक में दर्ज की थी। उसी तहरीर की वजह से मुझे पता लगा था कि वो आपके लिए काम कर रहा है।"

माईकल के चेहरे पर अजीब से भाव नुमायां हुए। हाथ में थमा पाईप उसने एक ओर रखा और फिर ठोड़ी खुजाने का उपक्रम करने लगा।

"अपने काम के लिए मैं हफ्ते में कई लोगों को हायर करता हूं।" वह सपाट लहजे में बोला, "मुझे याद नहीं कि मैंने दीपक नाम के किसी आदमी को अपने काम के लिए हायर किया था। असल मकसद पर आओ।"

"जनाब, आज सुबह गोवा पुलिस ने मेरे दोस्त की लाश मीरामर

Scanned by CamScanner

बीच के बॉथिंग स्टेशन से बरामद की है। वो अब इस दुनिया में नहीं है। मैं चाहता हूं कि उसके काम को मैं अंजाम दे दूं।"

"तुम्हारा दोस्त मेरे लिए क्या काम कर रहा था, इसका जिक्र तो उसने तुमसे किया था?"

"नहीं।"

"हूं।" माईकल ने एक लंबी हुंकार भरी, खुद को कुर्सी की पुश्त पर ढीला छोड़ा और फिर हाथों की अंगुलियों को आपस में जकड़ते हुए कुछ सोचने का उपक्रम करने लगा।

कुछ पलों तक वह सोचता रहा, फिर उसने रिमोट बेल बजाई।

उसके घंटी बजाने की देर थी कि टोनी वहां छलावे की तरह नुमायां हो गया।

"इस आदमी को गौर से देख लो।" वह मुंह बिगाड़कर बोला, "इसकी शक्ल दिलो दिमाग में बैठा लो। आने वाले दिनों में तुम्हें इसका इलाज करना पड़ेगा। जानते हो क्यों?"

"क्यों?" टोनी के मुंह से बरबस निकला।

"क्योंकि ये मुझे उन लोगों में से एक दिखाई दे रहा है जो चारे की बजाए चाबुक से काबू में जाते हैं, जो बातों से नहीं लातों से सही राह पर आते हैं।"

टोनी ने इंद्रजीत को घूरा, अपना सिर हिलाया, फिर परेरा से मुखातिब हुआ, "इसे राह पर कब लाना होगा, आप हुक्म कर देना। इसका चेहरा मैंने अपने जेहन में अच्छी तरह से बैठा लिया है।"

"गुड! अब तुम जा सकते हो।"

टोनी किसी पहलवान की चाल चलकर चैम्बर से बाहर निकल गया। उसके पीछे दरवाजा अपने आप बंद हो गया।

कुछ पलों तक खामोशी छाई रही।

"आपका ये गुर्गा मुझे अच्छा लगा।" खामोशी इंद्रजीत ने भंग की, "इसने मुझे अच्छी तरह से पहचान लिया, आप इस बात की खुशी मत मनाईए। आप इस बात पर रंज कीजिए कि इसे मैंने अच्छी तरह से पहचान लिया।"

माईकल ने लापरवाही से अपनी छोटी नाक पर टिका चश्मा उतारा, उसे रूमाल से साफ किया, फिर इंद्रजीत के चेहरे पर अपनी निगाहें गड़ाते हुए बोला—"आई डोंट लाईक प्राईवेट डिक। प्राईवेट जासूसों से मैं नफरत करता हूं। क्योंकि प्राईवेट जासूस, जासूस कम ब्लैकमेलर ज्यादा होते हैं। और ब्लैकमेलरों से मैं कोसों दूर रहता हूं। तुम अपने जिस जासूस दोस्त का जिक्र कर रहे हो, न तो मैंने उसे कभी देखा और न ही कोई केस उसके हवाले किया। मैं तुम्हें यही राय दूंगा

कि जितनी जल्दी हो सके, तुम ये शहर छोड़ दो।"

"आपको हुक्म सिर आंखों पर।" इंद्रजीत अपने पैरों पर खड़ा हुआ, उसने अपने दोनों हाथ मेज पर रखे और फिर माईकल की ओर अपना चेहरा करके बोला, "लेकिन जाने से पहले मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि दीपक आपके केस पर काम कर रहा था, ये बात आप अच्छी तरह से जानते हैं। यहां आने से पहले मैंने जब तुम्हें फोन किया था और मिलने की इच्छा जाहिर की थी, तो तुम छूटते ही मुझसे मिलने के लिए तैयार हो गए थे। क्यों तैयार हुए थे? अगर दीपक नाम का शख्स तुम्हारे लिए बिल्कुल अजनबी था, फिर तुमने उसके पार्टनर, यानी कि मुझसे मिलने की जहमत क्यों उठाई? आप मुझ नाचीज से क्यों मिले, जबकि आपकी निगाहों में मेरी हस्ती एक चींटी जैसी है, जिसे आप जब चाहें, किसी ऐरे गैरे नत्थू खैरे टोनी से मसलवा सकते हैं।"

माईकल कुछ कहने को हुआ, इन्द्रजीत ने उसे हाथ के इशारे से चुप होने को कहा और फिर अपने शब्दों को अच्छी तरह से चबाते हुए बोला, "इंद्रजीत वो जानवर है जो अपनी पर आ जाए तो अपने शिकार के गले में अपने नुकीले दांत गड़ाकर जब तक उसका पूरा खून नहीं पी लेता, चैन से नहीं बैठता। रही बात शहर छोड़ने की तो जब तक मैं अपने दोस्त के कातिल को बेनकाब नहीं कर दूंगा, मैं यह शहर छोड़कर हरगिज नहीं जाऊंगा। माईकल साहब, एक बात कान खोलकर सुन लीजिए। इंद्रजीत को अपनी हार बिल्कुल पसंद नहीं। ये हमेशा जीतता आया है और इस बार भी जीतकर दिखाएगा। तुम से जो बन पड़े कर लेना। अंडरस्टैंड?"

माईकल का चेहरा लाल भभूका हो गया। वह चिंघाड़ते हुए बोला—"गैट आऊट फ्राम हियर। आई डांट वोट सी युअर अग्ली फेस।"

"आलीजाह, मुझे यहां टिकने का कोई शौक भी नहीं है। थोड़ी देर में मैं यहां से दफा होऊंगा ही होऊंगा, लेकिन दफा होने से पहले एक बात आपके कानों में जरूर डालूंगा। मेरा दोस्त यकीनन आपके लिए काम कर रहा था। काम करने के दौरान उसके हाथों जरूर ऐसी चीजें लगी थीं, जो कि किसी के लिए घातक साबित हो सकती थीं। तभी वो मारा गया। मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि आप उसके हत्यारों को जानते हैं, लेकिन किसी वजह से आप उन्हें नष्ट कर रहे हैं। दीपक मेरा बहुत ही अच्छा दोस्त था। उसके कातिल को सामने लाने के लिए मैं जमीन आसमान एक कर दूंगा। कुछ सुना तुमने! अपने दोस्त के कातिल को सामने लाने के लिए मैं खून की नदियां बहाने से भी नहीं

Scanned by CamScanner

हिचकूंगा।" कहने के साथ ही इंद्रजीत सीधा हुआ, घूमा, चंद कदम चला, फिर एकाएक ठिठकते हुए बोला, "टोनी नाम के जिस गुंडे को तुमने मेरी शक्ल दिखायी थी, मुझे उसका जबड़ा अच्छा लगा। अगर आपको भी उसका जबड़ा पसंद है तो उससे कहना कि वो मेरे रास्ते में नहीं आए। कल को वो मेरे रास्ते में आ गया तो उसका जबड़ा हमेशा-हमेशा के लिए उसके मुंह से गायब हो जाएगा।"

इंद्रजीत ने तर्जनी अंगुली से पेशानी को छुआ। "अब ये नाचीज आपसे इजाजत लेता है, इस उम्मीद से कि एक दिन आपको अक्ल जरूर आएगी और आप अपनी बंद जुबान हर हाल खोलेंगे।"

फिर इंद्रजीत वहां नहीं रुका।

लंबे डग भरता किसी ड्रामे के अहम किरदार की तरह वह वहां से रुखसत हो गया।

और माईकल फोन पर झपटे बिना न रह सका।

कार की ड्राइविंग सीट पर बैठने के बाद इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई और फिर कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी। उसे होटल पहुंचने की कोई जल्दी नहीं थी, इसलिए वह कार मध्यम गति से चला रहा था।

माईकल से मिलने के बाद, उससे बहसा-बहसी करने के बाद उसे यकीन हो गया था कि दीपक को माईकल परेरा ने ही अपने किसी काम के लिए हायर किया था।

'माईकल ने दीपक का कत्ल करवाया है।' एकाएक वह बड़बड़ा उठा, 'हर तीसरी लड़की के साथ अभिसार करना दीपक की अदद ख्वाहिश सी थी। इसी ख्वाहिश की वजह से वो उस लड़की के चक्कर में फंसा, जो उसे अपने साथ बीच की तरफ ले गयी थी। शिवराम नाम का गार्ड जरूर कुछ जानता होगा। अच्छा हुआ मैंने उससे पास्कल के बारे में मिलने का प्रोग्राम बना लिया। वो इस गुत्थी को सुलझाने में काफी मदद कर सकता है।"

थोड़ी देर बाद जब वह होटल पहुंचा, और उसकी निगाह जिप्सी के पास खड़े सदानंद खांडेकर पर पड़ी तो उसके माथे पर बल पड़ते चले गए।

खांडेकर का आना उसे खटक-सा रहा था।

अपनी कार उसकी जिप्सी के पास खड़ी करके इंद्रजीत कार से बाहर आया और उसे लॉक करके खांडेकर की तरफ बढ़ गया।

उस पल खांडेकर सादा वस्त्रों में था। उसका मुंह गाय की तरह

Scanned by CamScanner

जुगाली कर रहा था। यकीनन वह च्युंगम चबा रहा था।

"कहिए इंस्पेक्टर साहब।" उसके करीब पहुंचकर इंद्रजीत बोला, "कैसे तकलीफ की?"

"ए०सी०पी० साहब ने तुम्हें याद किया है।" खांडेकर सपाट लहजे में बोला, "अभी चलना पसंद करोगे या फ्रेश होने के बाद।"

"जान सकता हूं, तुम्हारे ए०सी०पी० साहब ने मुझ क्यों याद किया है?"

"इस बाबत तुम्हें ए०सी०पी० साहब ही बेहतर बता पाएंगे।"

"अगर मैं जाने से इंकार करूं, तो?"

खांडेकर के चेहरे पर एक क्रूर मुस्कराहट नुमायां हुई। वह मुंह बिगाड़कर बोला, "पुलिस वालों से पंगा वो लोग लेते हैं, जो पुलिस वालों का मुंह अपने नोटों की थैली से बंद करने की हैसियत रखते हैं। तुम्हारे पास ऐसी थैलियां तादाद में हैं तो कोई बात नहीं। मैं ए०सी०पी० साहब को कह दूंगा कि आप फुर्सत मिलते ही उनका मुंह अपने पैसों की थैलियों से भर देंगे।"

"जनाबे मोहतरम, मेरे पास पैसों की थैलियां होतीं तो मैं एक जासूस होता? मैं दौलत से खेलने वाला तगड़ा बिजनेसमैन नहीं होता।"

"फिर तो तुम्हें मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। तुम चलने से इंकार करोगे, तो मुझे जबरदस्ती करनी पड़ेगी। और जबरदस्ती करने के दौरान मैं भूल जाता हूं कि मेरी लातें सामने वाले के मुंह पर पड़ रही हैं या कूल्हों पर। कुछ समझ में आया?"

इंद्रजीत सहमने का दिखावा करते हुए बोला—"सब कुछ समझ में आ गया।" कहने के साथ ही वह जिप्सी के पिछले हिस्से की तरफ बढ़ गया।

खांडेकर के चेहरे पर तत्काल विजय के भाव नुमाया हुए। वह जिप्सी की पैसेंजर सीट पर बैठा, फिर उसके इशारे पर वर्दीधारी ड्राईवर ने जिप्सी स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

ए०सी०पी० चंद्रकांत बादेकर लगभग पचास साल का, शक्ल से ही खंडूस दिखाई देने वाला, कड़क पुलिस ऑफिसर था। उसने इंद्रजीत को कुछ इस अंदाज से देखा, मानो इंद्रजीत की पुलिस को बरसों से तलाश रही हो।

"तो ये है वो रिंग मास्टर!" वह खांडेकर से मुखातिब हुआ, जिसके गोवा में कदम रखते ही कत्लोगारत का खेल शुरू हो गया।"

खांडेकर ने अपने अफसर के सवाल का जवाब अपने सिर को

Scanned by CamScanner

तत्परता से, हामी के अंदाज में हिलाकर दिया।

चंद्रकात ने इंद्रजीत को कड़ी निगाहों से घूरा—"जानते हो, तुम्हें यहां क्यों लाया गया है?"

"जानता तो नहीं हूं, लेकिन अंदाजा जरूर लगा सकता हूं।" इंद्रजीत बोला।

"क्यों लाया गया है?"

"धमकाने के लिए।"

"धमकाने के लिए?"

"हां, ताकि मैं यहां से कूच कर जाऊं।"

"तुमसे इतनी समझदारी की उम्मीद नहीं थी। तो गोवा कब छोड़ रहे हो?"

"अपना मकसद पूरा होने के बाद।"

"मकसद! कौन-सा मकसद?"

"आप अच्छी तरह से जानते हैं।"

"नहीं जानता। बताने की जहमत उठाओगे?"

"अपने पार्टनर के कातिल को बेनकाब किए बिना मैं यहां से जाने का इरादा नहीं रखता।"

"इसका मतलब तुम पुलिस के काम में रोड़े अटकाओगे, दखलअंदाजी करोगे?"

"नहीं। पुलिस के काम में दखलअंदाजी करके मैं अपनी शामत नहीं बुलवाना चाहता। मैं अपने बलबूते पर अपने दोस्त के कातिल को सामने लाने का ख्वाहिशमंद हूं।"

"जबकि ये काम पुलिस का है।"

"पुलिस अपना काम करती रहे। मैं अपने तौर पर कातिल की खोज करूंगा।"

"पुलिस जब तुम्हारे दोस्त के कातिल की खोज कर रही है, फिर तुम अपना कीमती वक्त क्यों जाया कर रहे हो? तुम्हें हम पर यकीन नहीं, या तुम्हारी नजर में हम निठल्ले हैं, बैठकर तंखाह खाने वाले हैं।"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"तुम्हारी बातों से ऐसा ही जाहिर हो रहा है। तुम हमें निकम्मा, निठल्ला, बैठकर तंखाह खाने वाला समझ रहे हो, तभी तुम हमारे काम में दखलअंदाजी कर रहे हो?"

"इस दखलअंदाजी को मैं अपने तौर पर कोपरेशन समझता हूं। आपको तो मेरी पीठ ठोंकनी चाहिए, मुझे शबासी देनी चाहिए। मैं आपका बोझ कम कर रहा हूं।"

"हमें नकारा करार करके।"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। सीधे-सीधे बताओ। यहां से कब जा रहे हो?"

"मैंने बताया न, अपना मकसद पूरा होने से पहले..."

"...तेरे मकसद की ऐसी की तैसी।" चंद्रकांत ने गुस्से से मेज पीटी, एक झटके से कुर्सी छोड़ी, फिर इंद्रजीत का गिरेबान थामकर उसे कच्चा चबा जाने वाली निगाहों से घूरते हुए बोला, "मुझे चाहिए था कि तेरे यहां कदम रखते ही मैं तेरी पिछाड़ी पर दो डंडे जमाता, फिर तुझसे बात करता। लेकिन तू बातों का नहीं, लातों का यार है। जल्दी से बता, यहां से कब जा रहा है?"

इंद्रजीत का खून खौलकर रह गया।

"कब जा रहा है यहां से?" चंद्रकात ने उसके गिरेबान को और उमेठा।

"गिरेबान छोड़ो। ये कोई तरीका नहीं है किसी शरीफ आदमी से बातचीत करने का।"

"हरामजादे! अभी मैंने तुझसे अपने तरीके से बातचीत कहां की है। मैं अपने तरीके से बातचीत करता तो तू इस वक्त अपने पैरों पर नहीं खड़ा होता। बता, कब जा रहा है यहां से?"

"एक हफ्ते बाद।"

"एक हफ्ते बाद क्यों? अभी क्यों नहीं?"

"मैं सैरो तफरीह करना चाहता हूं। और सैरो तफरीह के लिए मुझे कम-से-कम सात दिन चाहिए।"

"सच बोल रहा है?"

"मेरा गिरेबान आपके हाथ में है, आपके सामने मेरी हैसियत मच्छर जैसी है। मैं आपसे झूठ बोल सकता हूं?"

"कल को मुझे पता चला कि तूने हमारे काम में दखलअंदाजी की है तो?"

"तो आप अपने तरीके से बातचीत करने के लिए आजाद हैं।"

"सोच ले। मेरा बातचीत करने का तरीका पत्थरों को भी आह आह करने को मजबूर कर देता है।"

"सोचने समझने के बाद ही मैं जाने के लिए एक हफ्ते का वक्त मांग रहा हूं।"

"एक बात कान खोलकर सुन ले। इस दौरान तूने कोई गलत हरकत की तो मैं तुझे सीधा, बिना कोई इल्जाम लगाए हवालात में ठूंस दूंगा। हवालात में मेरे बंदे तेरी ऐसी धुनाई करेंगे कि तू सीधा हॉस्पिटल पहुंचेगा।"

Scanned by CamScanner

"मुझे अपनी खाल प्यारी है। मैं कोई गलत हरकत नहीं करूंगा।"

चंद्रकांत ने इंद्रजीत का गिरेबान इस अंदाज में छोड़ा मानों कि उसने इंद्रजीत की जानबख्शी की हो।

वह अपनी कुर्सी पर दुबारा बैठा तो इंद्रजीत धीरे से बोला, "एक सवाल का जवाब मिलेगा?"

"बोल।"

"माईकल परेरा के कहने पर मुझे यह शहर छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है?"

"खांडेकर," चंद्रकात आपे से बाहर होता दिखाई देने लगा, "इस हरामजादे को समझा दे कि यह चुपचाप यहां से दफा हो जाए। मैंने अपना आपा खो दिया तो मेरे हाथों बेमौत मारा जाएगा।"

खांडेकर ने फौरन इंद्रजीत की बांह पकड़ी और उसे बाहर ले आया।

इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई और नाक से धुंआ छोड़ते हुए बोला—"लगता है, माईकल की इस शहर में अच्छी खासी चलती है। तभी तुम्हारा ए०सी०पी० भी उसका हुक्का भरने से पीछे हटता नहीं दिखाई दे रहा है।"

"यहां के कमिश्नर साहब भी" खांडेकर मुंह बिगाड़कर बोला, "माईकल के तलवे चाटने से पीछे नहीं हटते, फिर ए०सी०पी० की क्या मजाल कि वो माईकल के हुक्म की उदूली करे।"

"यानी कि तुम मानते हो माईकल ने ए०सी०पी० को फोन करके मुझे धमकाने का हुक्म दिया था।"

"मेरे मानने न मानने से क्या होता है। तुम बस अपनी चमड़ी की परवाह करो। एक हफ्ता शराफत से तफरीह करो और फिर अपना खाट खटोला उठाकर यहां से कूच कर जाओ। इसी में तुम्हारी भलाई है। कुछ समझे?"

"हां। समझ रहा हूं। यहां से कूच बोलने में ही मेरी भलाई है।"

पास्कल का बार ओल्ड गोवा में, एक गंदे से इलाके में स्थित था।

यहां आकर इंद्रजीत ने अपनी कार खड़ी की ही थी कि उसे एक ओर से शिवराम आता दिखाई दिया। उस वक्त उसने ढीली-ढाली पैंट, शर्ट पहनी हुई थी, और सिर पर स्पोर्ट्स कैप लगाई हुई थी।

"तुम तो सच में यहां आ गए।" इंद्रजीत के कार से बाहर

निकलते ही वह उसके करीब आकर बोला, "मैं समझा तुमने गोली दी थी।"

"जनाबे मोहतरम, इंद्रजीत गोली उन लोगों को देता है जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं आते। तुम मुझे पहली ही नजर में भा गए थे। फिर गोली किस बात की।"

"गुड! गाई। रियली यू आर ए गुड गाई।"

"भीतर जाम छलकाकर इत्मीनान से बात करते हैं।"

शिवराम का सिर हामी के अंदाज में हिला।

दोनों ने बॉर में कदम रखा।

कोने में पड़ी एक मेज पर उनके बैठते ही एक वेटर लपककर उनके पास पहुंचा।

"क्या चलेगा?" इंद्रजीत बोला।

"कुछ भी मंगा लो।" शिवराम बोला।

"व्हिस्की चलेगी या रम?"

"रम मैं बड़े शौक से पीता हूं। रम का तो मैं दीवाना हूं, लेकिन मेजबान तुम हो, इसलिए मैं रम मंगाने की जिद नहीं करूंगा। तुम जो मंगाना चाहो, मंगवा लो।"

"वो मेजबान ही क्या जो अपने मेहमान को खुश न कर सके। मैं रम ही मंगवाता हूं।"

इंद्रजीत ने वेटर को ओल्ड मोंक की रम और भूने हुए कवाब लाने को कहा।

वेटर तत्काल वहां से हटा।

इंद्रजीत ने जेब से सिग्रेट का पैकेट निकाला। पैकिट शिवराम की तरफ बढ़ाया। फिर उसके एक सिग्रेट हासिल करने के बाद उसने एक सिग्रेट अपने होठों से लगा लिया।

दोनों सिग्रेट जलाने के बाद इंद्रजीत बोला—"ए०सी०पी० चंद्रकांत खांडेकर को जानते हो?"

"क्यों पूछा?" शिवराम तनिक चिहुंककर बोला।

"थोड़ी देर पहले मैं उसी के हुजूर में पेश हुआ था। मेरा जुर्म इतना था कि मैं गोवा शहर में टिका क्यों हुआ हूं। मैंने गोवा से किनारा करने की मनाही की तो स्याले ने मुझे इतना धमकाया कि मेरे पसीने छूट गए। जरूर उसने माईकल परेरा के कहने पर मुझे गोवा से किनारा करने को कहा होगा?"

"ए०सी०पी० चन्द्रकांत खांडेकर माईकल परेरा का कुत्ता है। ये माईकल की फेंकी हड्डियां चबाता है। और माईकल को पसंद न आने वाले लोगों पर गुर्राता है। ठीक कहते हो। उसने माईकल के कहने पर

Scanned by CamScanner

ही तुम्हें यहां से कूच करने को कहा होगा।"

"माईकल की मैंने कौन-सी भैंस खोल ली है, बल्कि खुद ली है, जो वो यहां से खदेड़ने के लिए अपना पालतू कुत्ता मुझ पर छोड़ रहा है।"

"माईकल से तुम किस सिलसिले में मिले थे?"

"कुछ दिनों पहले मेरा पार्टनर एक केस के सिलसिले में माईकल से मिला था। माईकल ने उसे कोई केस सौंपा था। मेरे पार्टनर को माईकल ने कौन-सा केस सौंपा था, यही जानने के लिए मैं उसके पास गया था।"

"तुम्हारे पार्टनर का हुलिया क्या था?"

इंदरजीत ने दीपक का हुलिया बताया।

"ये तो वही आदमी है" वह आंखें सिकोड़कर बोला—"जिसका मर्डर हो चुका है। जिसकी डैड बॉडी बॉथिंग स्टेशन के एक केबिन में पाई गयी थी।"

"हां। वो दीपक ही था।"

"यानी कि माईकल ने उसे ऐसा केस सौंपा, जिसने उसकी जान ले ली।"

"उसकी जान माईकल के केस की वजह से गयी है, या किसी और वजह से, यही जानने के लिए मैं गोवा में टिका हुआ हूं। इसी वजह से ए०सी०पी० खांडेकर हत्थे से उखड़ा हुआ था। इसी वजह से उसने मुझे हॉस्पिटल भेजने की धमकी दी थी।"

"ए०सी०पी० बड़ा कमीना आदमी है। उसने कहा है तो वो करके भी दिखाएगा। मेरी मानो तो तुम यहां से चले ही जाओ। ए०सी०पी० के सामने तुम्हारी दाल नहीं गल सकती। माईकल के कहने पर तो तुम्हारा एनकाउंटर भी कर सकता है। तुम अकेली जान हो। तुम ए०सी०पी० की ताकत का मुकाबला नहीं कर सकते।"

"मेरा उसूल है, मैं पत्थरों पर भागता नहीं। अगर भागता हूं तो मंजिल पर पहुंचे बिना रुकता भी नहीं। दीपक के मर्डर केस की गुत्थी सुलझाए बिना मैं यहां से नहीं जाऊंगा।"

"भले ही ए०सी०पी० तुम्हारे हाथ पांव तोड़ दे।"

"हां।"

"टूटे हाथ-पांव से तुम अपने पार्टनर के कातिल को सामने ला सकोगे?"

"क्यों नहीं! जज्बे सच्चे हों तो मंजिल मिल ही जाती है।"

तभी वेटर जाम और कबाब रखकर चला गया।

शिवराम ने जाम का घूंट भरा, कबाब चबाया, फिर समझाने वाले

Scanned by CamScanner

लहजे में बोला—"मैं तुम्हारा हमदर्द हूं। शुभचिंतक हूं। वैल विशर हूं। मैं नहीं चाहता कि तुम पर कोई मुसीबत आए। इस समय तुम्हारी हालत बत्तीस दांतों के बीच फंसी जीभ जैसी है। जिद मत करो। यहां से चले जाओ। माईकल से दुश्मनी करके बड़े बड़े तीस मारखां यहां टिक नहीं सके। फिर तुम..."

"मैं टिककर दिखाऊंगा। और अपने दोस्त के कातिल को भी सामने लाऊंगा।"

"कैसे?"

"ये मैं वक्त पर छोड़ रहा हूं।"

"वक्त आने पर भी कुछ नहीं होगा। मैं माईकल को अच्छी तरह से जानता हूं। जो इस शहर पर राज करता है। उसकी इजाजत के बिना कोई पत्ता भी नहीं हिलता। बड़े-से-बड़े नेता उसके हुक्का भरते हैं। फिर तुम उसके सामने कैसे टिक पाओगे?"

"मैंने कहा न कि मैं वक्त पर छोड़ रहा हूं।"

"ठीक है। जैसी तुम्हारी मर्जी।"

इंद्रजीत ने जाम का घूंट लगाया, कबाब का टुकड़ा चबाया फिर जाम में उंगुली डुबोते हुए बोले—"ये जो चीज हम पी रहे हैं, शराब के नाम से जानी जाती है। इसे हलक में डालने के बाद कई लोग आपे से बाहर होकर होशो हवास खो बैठते हैं। जबकि मेरे साथ उल्टा होता है। इसे पीने के बाद मेरा दिमाग तेजी से काम करने लगता है। माईकल से निपटने के इस समय मेरे दिमाग में कई प्लान हैं, लेकिन मैं उन्हें वक्त से पहले सामने नहीं लाना चाहता। तुम भी यहीं हो। मैं भी यहीं हूं। एक दिन पता चल जाएगा कि शेर भेड़ की लड़ाई में जीत किसकी हुई? शेर की या मरगिल्ली भेड़ की।"

"जीत शेर की ही होगी।"

"इस बार भेड़ जीतेगी।"

"ये बहसी मुबाहिसा का मुद्दा है। हम यहां जाम छलकाने आए हैं या बहस करने?"

"जाम छलकाने ही आए हैं।"

"फिर माईकल पुराण छोड़ो। कोई और बात करो।"

"टोनी माईकल का क्या लगता है?"

"कौन टोनी?"

"अरे, वही टोनी। जो फाईटरों की तरह दिखाई देता है। जिसे देखकर शरीफ आदमी के तिरपन कांप जाएं।"

"वो माईकल का बॉडीगार्ड है।"

"सिर्फ बॉडीगार्ड?"

Scanned by CamScanner

"नहीं। इसके अलावा वो माईकल का गैम्बलिंग शिप चलाने में मदद करता है। गैम्बलिंग शिप का हैड वो ही है। शिप से जो कमाई होती है, आधी उसकी जेब में जाती है, बाकी की माईकल की जेब में।"

"इसका मतलब वो माईकल का पार्टनर हुआ। पचास प्रतिशत की हिस्सेदारी पार्टनरों के दरम्यां होती है।"

"वो पार्टनर नहीं, मुंहलगा बॉडीगार्ड है। माईकल ने उसे सिर चढ़ा रखा है, तभी उसने उसे बहुत फैसिलिटीज दी हुई हैं। सुनने में तो ये भी आया है कि माईकल जितनी परवाह अपनी बीवी की नहीं करता, उससे ज्यादा टोनी की करता है।"

"माईकल की बीवी टीना घई नाम की एक्स मूवी स्टार है न?"

"हां। बड़ी कमीनी है वो। स्याली हमेशा मिर्चें चबाती रहती है। मीठा बोलना तो उस हरामजादी ने कतई सीखा की नहीं। सुबह से शाम तक उसका एक ही काम होता था, नौकरों को डांटना फटकारना और बंधुआ मजदूरों की तरह उनसे काम लेना। नौकरी के दौरान मेरे जी में कई बार आया था कि मैं हरामजादी का कत्ल करके अपने साथियों को उसके जुल्मो सितम से निजात दिला दूं। लेकिन मैं अकेला चना भाड़ नहीं झोंक सकता था, इसलिए मैं चुपचाप खून का घूंट पीकर उसकी जब्रो ज्यादती सहता रहा। आज मुझे सच में सकून मिला है। आज मैं महसूस कर रहा हूं, जैसे मैं एक आजाद पंछी हूं, जो पिंजरे से बाहर आकर आकाश में विचर रहा है।"

"यानी कि टीना घई नाम की माईकल की बीवी सैडिस्ट टाईप की है?"

"हां।"

"और माईकल की लड़की रवीना। उसके बारे में तुम्हारा क्या कहना है?"

"वो भी गर्म मिजाज की है, लेकिन अपनी सौतेली मां की तरह वो बात-बात पर मिर्चें नहीं चबाती। कभी-कभार वह मीठा भी बोल लेती है।"

"मां बेटी में बनती है?"

"पहले बना करती थी, अब नहीं।"

"पहले कब?"

"जब माईकल ने टीना से शादी की थी। उन्हीं दिनों रवीना की टीना से थोड़ी बहुत बनी थी। बाद में दोनों के बीच कुत्ते बिल्ली वाला बैर हो गया था।"

"क्यों?"

"एक पार्टी के दौरान पीने पिलाने के बाद दोनों के बीच किसी मुद्दे को लेकर बहस हो गयी थी। बहस बाद में झगड़े में तब्दील हो गयी थी। झगड़े के बाद बात हाथापाई तक पहुंच गयी थी। इसी वजह से रवीना माईकल से अलग हो गयी। अब वो पणजी में अकेली रह रही है।"

"माईकल ने अपनी बेटी को समझाया नहीं?"

"समझाया था। वो नहीं मानी। उसने जिद पकड़ ली थी कि माईकल या तो टीना के साथ रह ले या फिर उसके साथ। माईकल टीना को छोड़ नहीं सकता था, उसके रूप का जादू उसके सिर चढ़कर बोल रहा था। इसलिए उसने रवीना को अलग रहने की इजाजत दे दी।"

"माईकल अब भी टीना का दीवाना है?"

"नहीं। अब उसे अपने बिजनेस से ही फुर्सत नहीं है। तभी तो टीना ने अपनी बगल करने के लिए एक खूबसूरत चिकना छोकरा पाल लिया है।"

"ये चिकना छोकरा कौन है?"

"जार्ज सैविस्टियन।"

"करता क्या है?"

"मॉडलिंग करता है। अपनी खूबसूरती से धनवान औरतों को फांसता है और फिर उनके दम बूते पर ऐश करता है।"

"माईकल को इस पट्ठे की खबर नहीं?"

"मेरे ख्याल से नहीं है। टीना उस पट्ठे से कुछ इस अंदाज में मिलती है कि किसी को कानों कान खबर ही नहीं लगती।"

"फिर ये खबर तुम्हें कैसे लग गयी?"

शिवराम बड़ी धूर्तता से मुस्कराया। उसने तत्काल जाम खाली किया, कबाब के चंद टुकड़े मुंह में धकेले, फिर उन्हें अच्छी तरह से चबाते हुए बोला—"क्योंकि एक बार मैंने उस पट्ठे को टीना की बगल गरम करते उसके बैडरूम में अपनी आंखों से जो देख लिया था। तभी मुझे खबर लगी थी कि जिस जार्ज को वो अपना दूर का रिश्तेदार बताती थी, रिश्तेदार नहीं अंधेरी कोठरी का यार है।"

"इसका मतलब टीना टीना जार्ज को अपना दूर का रिश्तेदार बताती है।"

"हां। टीना उसे अपना कजिन बताती है। तभी माईकल को उस पर शक नहीं हुआ। जिस दिन उसे पता चल गया कि टीना उसकी आंखों में धूल झोंककर अपने कजिन के साथ उठा-पटक का खेल खेल रही है, देख लेना उस दिन दोनों की लाशों का भी पता नहीं लगेगा।"

Scanned by CamScanner

"जार्ज आजकल कहां है?"

"नहीं मालूम।"

"यानी कि आजकल वो माईकल के महल में नहीं रह रहा?"

"हां।"

"और रवीना पणजी में रह रही है?"

"हां।"

"उसका कोई यार वार है?"

"होगा। जरूर होगा। बड़े घर की लड़कियां यार पालना अपनी शान समझती हैं।"

"तुम उसके किसी यार को जानते हो?"

"नहीं, लेकिन मेरे सुनने में आया था कि उसका कोई यार था, जिसने उसे धोखा दे दिया था।"

"उसका नाम मालूम है?"

"नहीं।"

इंद्रजीत ने जाम खाली करके एक-एक जाम और मंगवाया।

दूसरे जाम की चुस्की लेने के बाद वह बोला—"दीपक की तस्वीर तुमने अखबार में देख चुके हो। इस लिहाज से तुम्हें क्या लगता है, वो माईकल से मिला था?"

"वो कोठी में आया तो था, लेकिन माईकल से मिला था, ये सब मैं यकीन से नहीं कह सकता।"

"कोठी में वो कब आया था?"

"पिछले मंगलवार को।"

"यकीन से कह रहे हो?"

"भई, तुम्हारी दारू पी रहा हूं। मैं झूठ क्यों बोलूंगा।"

"कितने बजे वो कोठी में आया था?"

"उस वक्त शायद तीन बज रहे थे। मैंने उसे ड्राईंगरूम में बैठा देखा था। ड्राईंगरूम में वो ही आदमी बैठता है, जो माईकल या टीना से मिलने आता है।"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि वो उस रोज टीना से मिला हो?"

"टीना तुम्हारे दोस्त से क्यों मिलने लगी? तुम्हारा दोस्त टीना का सगे वाला था या दूर का कोई रिश्तेदार?"

"दोनों में से कुछ भी नहीं था। हो सकता है टीना ने उसे कोई केस सौंपा हो। इसी वजह से वो..."

"...तुम्हारा दोस्त डिटेक्टिव था न?"

"हां।"

"तो टीना ने गोवा के किसी डिटेक्टिव को अंगेज क्यों नहीं

किया? उसने क्यों पना से तुम्हारे दोस्त को बुलाया?"

"यही बात तो मेरी समझ में नहीं आ रही। इसी बात ने मेरा भेजा घुमाया हुआ है।"

"मेरी मानो तो भेजा गलाना छोड़ो। और सीधे-सीधे यहां से कूच कर जाओ।"

"ये नामुमकिन है।"

"यानी कि तुम मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ डालकर ही दम लोगे?"

"शहद निकालकर।"

"तुमसे मैं नहीं जीत सकता। तुम्हें समझाना सच में टेढ़ी..."

इससे आगे के शब्द शिवराम के मुंह से न निकले।

उसकी आंखें एकदम से भय से फैलती चली गयीं।

इंद्रजीत ने शिवराम के चेहरे पर एकाएक उभर आए दहशत के भावों को देखा तो उसकी गर्दन घुमाने से नहीं रह सकी।

उसने गर्दन घुमायी तो उसका चेहरा भी दहशत की जद में आए बिना न रह सका।

पीछे टोनी अपने चार चमचों के साथ खड़ा था।

उस पल उसकी आंखों से चिंगारियां-सी फूट रही थीं।

लगभग फर्श को कुचलते हुए वह शिवराम के पास पहुंचा। उसने उसे गिरेबान से पकड़ा और खड़ा कर दिया।

शिवराम की घिग्गी बंध गयी। उसने फरियाद करने वाली निगाह से इंद्रजीत की तरफ देखा।

"इस भड़वे को काए को देखता है।" टोनी बोला—"इस भड़वे को मैं अभी देखता है। लेकिन उससे पहले मैं तेरे को देखना मांगता। हराम के पिल्ले! जिस थाली में खाता है, उसी में छेद करता है। जिसकी गोद में बैठता है, उसी की दाढ़ी नोंचता है। क्या बता रहा था तू इस भड़वे को?"

"क...कुछ भी नहीं।"

"तो स्याले ये यहां तेरी बारात में..."

"आलीजाह।" तभी इंद्रजीत उठा और टोनी के कंधे पर हाथ रखकर बोला—"घर बार में आप जा कर रहे हैं, टोनी नहीं कर रहे। आपको झगड़ा करना ही है तो, बाहर चलिए। क्यों घर की ऐसी तैसी करने पर तुले हुए हैं। आप अपने चमचों के साथ बाहर आइए। उसके बाद हम तसल्ली से बात करते हैं।"

Scanned by CamScanner

"स्याले भड़वे! हरामी की औलाद! तुझसे तो मैं बाद में निपटेगा। पहले मैं इस रंडी के पिल्ले को इसकी औकात याद दिला दूं।"

"इसकी औकात आप बाहर भी याद दिला सकते हैं। शराफत से कह रहा हूं। गिरेबान छोड़ दो। बाहर चलकर बात करते हैं।"

"टोनी भाई।" तभी एक चमचा बोला—"छोकरा ठीक बोल रेला है। अपुन को बाहर जाकर इनको इनकी औकात दिखाना मांगता। यहां लफड़ा करना अपुन के लिए ठीक नहीं होयेगा। पुलिस माईकल अपुन को फटका लगाए बिना नहीं रहेगा। अपुन की मानो, इन्हें बाहर ले चलो। और बाहर ले जाकर स्यालों की पिछड़ी बैक कर बरोबर कर दो।"

"ठीक है। ले के चल।"

टोनी ने शिवराम का गिरेबान तो छोड़ा, लेकिन इस अंदाज से कि वो गिरने से बाल-बाल बचा। इंद्रजीत उसे सहारा नहीं देता तो शर्तिया जमीन पर गिरा होता।

"बुजुर्गों ने कहा है।" इंद्रजीत बोला—"कि नौजवान नस्ल को बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए। सम्मान के नाम पर तुम बुढ़ौती की ओर बढ़ रहे आदमी के साथ क्या कर रहे हो, देखकर बहुत खुशी हो रही है।"

"ऐ भड़वे।" तभी चमचा गुर्राया—"चुपचाप बाहर निकल रे। अपुन के पास ज्यादती टैम नहीं है। अपुन को और भी भौत से काम हैं। चल्ल। जल्दी से बाहर निकल।"

इंद्रजीत किसी मेमने की तरह चुपचाप बॉर से बाहर पार्किंग में आ गया।

"अब बोल।" तभी चमचे ने इंद्रजीत का गिरेबान पकड़ लिया—"क्या बोलना है तेरे को? जितना बोलना मांगता, बोला। अपुन तेरे को बोलने से नई रोकेगा। अपुन तेरी जुबान को हिलने का पूरा-का-पूरा मौका देगा। बोल। क्या बोलना है तेरे को?"

"बड़े भाई।" इंद्रजीत अपने स्वर को तनिक खींचते हुए बोला—"मुझे जो बोलना होगा, मैं इत्मीनान से बोलूंगा। फिलहाल आप बताइए कि आप क्या चाहते हैं?"

"हम लोग बताने के लिए नहीं" चमचा हिंसक भाव से बोला—"कुछ दिखाने के लिए यहां आए हैं। तेरे को देखना मांगता?"

"क्यों नहीं। एक्शन फिल्में देखने का शौक मुझे शुरू..."

इंद्रजीत अपना जुमला मुकम्मल कर पाता, उससे पहले चमचे ने उसे एक झटके से परे धकेल दिया।

इंद्रजीत संभल न पाया, लिहाजा वो शिवराम के ऊपर जा गिरा।

शिवराज इंद्रजीत का भार सह न पाया। वह इंद्रजीत को लेकर जमीन पर जा गिरा। इससे पहले दोनों खड़े हो पाते, टोनी उनके पास पहुंचा और उन पर पिल पड़ा।

इंद्रजीत नौजवान था। उसका जिस्म ठोस स्टील का बना था। इसलिए टोनी की बूट की ठोकरों का उस पर कोई असर नहीं पड़ा, लेकिन शिवराम की हालत बदतर हो गयी। टोनी की बूट की ठोकरों ने उसके कमजोर जिस्म के सारे कस बल ढीले कर दिए। वह रहम की भीख मांगने लगा।

मगर!

टोनी पर उसके गिड़गिड़ाने का कोई फायदा नहीं हुआ। उसकी लातें बदस्तूर चलती रहीं।

इस बीच इंद्रजीत को संभलने का मौका मिल गया। उसने तेजी से कलाबाजियां खाईं और एक कार के नीचे घुस गया।

टोनी के चमचे कार के पास लपककर पहुंचे।

इससे पहले वो कुछ कर पाते, इंद्रजीत की बूट की ठोकरों ने उन्हें धराशाही करना शुरू कर दिया।

मौका देखकर इंद्रजीत कार के नीचे से बाहर निकला और चमचों पर पिल पड़ा।

एक चमचे को उसने उठाकर कार के ऊपर फेंक दिया।

चमचा कार की बॉडी पर गिरा और एक चीख मारकर नीचे जा गिरा।

तभी दूसरे चमचे के पेट पर इंद्रजीत ने फुर्ती से लात जमा दी।

चमचा भैंसे की तरह डकराया और पेट पकड़कर बैठ गया।

तीसरे चमचे को इंद्रजीत ने बालों से पकड़ा और उसका सिर कार की बॉडी से दे मारा। उसके सिर से खून का फव्वारा फूटा और फिर उसकी चेतना लुप्त हो गयी।

तभी चौथा चमचा इंद्रजीत पर झपटा।

इंद्रजीत सतर्क था। लिहाजा इंद्रजीत ने उसे टांगों के बीच हाथ डालकर उठा लिया। और तेजी से एक ओर फेंक दिया।

इंद्रजीत ने उसे जिस ओर फेंका था, वहां फलों की रेहड़ी खड़ी थी।

चमचा फलों की रेहड़ी पर गिरा।

फिर रेहड़ी समेत वो एक कार से टकरा गया। कार से उसका सिर टकराया था, इसलिए वो भी बेहोश हो गया।

Scanned by CamScanner

अब इंद्रजीत शिवराम को रूई की तरह धुन रहे टोनी के पास पहुंचा।

इंद्रजीत को सिर पर खड़ा देख टोनी ने शिवराम को धुनना छोड़ा और इंद्रजीत पर झपट पड़ा।

इंद्रजीत ने झुकाई देकर खुद को बचाया और चीते की फुर्ती से एक लात टोनी के चेहरे पर जड़ दी।

टोनी का मुंह एकाएक खून से लाल दिखाई देने लगा।

खून देखकर टोनी पगलाए सांड की तरह दिखाई देने लगा।

इससे पहले वो कुछ कर पाता, माहौल में पुलिस सायरन की आवाज गूंजने लगी।

टोनी और उसके चमचे पुलिस सायरन की आवाज सुनकर कांपकर रह गए।

फिर टोनी के इशारे पर उसके घायल चमचे ने अपने अनेक साथियों को एक वैन में डाला और वहां से नौ दो ग्यारह हो गए।

इंद्रजीत किसी लफड़े में नहीं पड़ना चाहता था, इसलिए उसने वहां से कूच कर जाने में ही अपनी भलाई समझी। उसने घायल शिवराम को सहारा देकर अपनी कार में बैठाया और कार एक झटके से आगे बढ़ा दी। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने रियर व्यू मिरर पर निगाह डाली।

यह देखकर उसे तसल्ली पहुंची कि पुलिस वहां नहीं पहुंची थी।

उसने कार की स्पीड बढ़ाई और साथ वाली सीट पर कराह रहे शिवराम से बोला--"तुम्हें बहुत चोटें पहुंची हैं। यहां आस-पास कोई अस्पताल है?"

"हां, आगे जाकर सीधे हाथ पर एक अस्पताल है।" शिवराम कराहते हुए बोला--"तुम मुझे उसके सामने छोड़ देना।"

"तुम बुरी तरह से घायल हो चुके हो।" इंद्रजीत बोला--"मैं तुम्हें अकेले नहीं छोड़ सकता।"

"तुम मुझे अकेला नहीं छोड़ोगे तो तुम मुसीबत में फंस जाओगे। मैं वहां का रहने वाला हूं। मैं मैनेज कर लूंगा।"

"फिर भी तुम्हें सहारे की जरूरत है।"

"मेरी चिंता छोड़ो। मैं किसी तरह से मैनेज कर लूंगा।"

"मेरी वजह से तुम्हें तकलीफ पहुंची।" इंद्रजीत खेदपूर्ण स्वर में बोला--"उसके लिए मैं माफी चाहता हूं।"

"नो सॉरी। कोई बात नहीं। जितनी जल्दी हो सके तुम यहां से चले जाओ। वरना माईकल तुम्हें किसी-न-किसी केस में फंसवा देगा। माईकल की ताकत से तुम वाकिफ हो ही चुके हो?"

"मैं माईकल की ताकत से वाकिफ हो चुका हूं लेकिन मैं चाहता हूं कि वो भी मेरी ताकत से वाकिफ हो जाए। अपनी ताकत से उसे वाकिफ कराने के बाद ही मैं इस शहर से किनारा करूंगा।"

तभी शिवराम ने एक इमारत की तरफ इशारा किया।

"इस बिल्डिंग के पीछे ही अस्पताल है।" वह बोला--"तुम मुझे इसी बिल्डिंग के सामने छोड़ दो।"

"वैसे टोनी के खिलाफ तुम रिपोर्ट दर्ज करवा सकते हो।" इंद्रजीत बोला--"उसने कई लोगों के सामने तुम पर हमला किया था।"

"मैं किसी लफड़े में नहीं पड़ना चाहता। माहौल पक्का होते ही मैं यह शहर छोड़ दूंगा। माईकल के खिलाफ बिगुल बजाने का साहस मुझमें नहीं है।"

इंद्रजीत कुछ नहीं बोला, उसने कार इमारत के सामने रोकी, शिवराम के उतरते ही उसने हाथ हिलाकर उसे विदा किया, फिर कार का रुख होटल की ओर कर दिया।

इंद्रजीत होटल पहुंचा।

पार्किंग लॉट में कार खड़ी करने के बाद उसने रिसेप्शन पर कदम रखा ही था कि उसे रिसेप्शन क्लार्क प्रकाश बर्वे कुछ कहने को उतावला दिखाई देने लगा।

इंद्रजीत उसके सामने पहुंचा तो वह इंद्रजीत के माथे पर लगी चोट की तरफ इशारा करते हुए बोला--"क्या हुआ? चोट कैसे लगी?"

"ऐसे ही।" इंद्रजीत लापरवाही से बोला--"छोटा मोटा एक्सीडेंट हो गया था।"

"कब?"

"बताना जरूरी है?"

प्रकाश बर्वे सकपकाया।

"मेरे लिए कोई मैसेज?" इंद्रजीत ने पूछा।

"मैसेज तो कोई नहीं है। अलबत्ता पुलिस वालों ने तुम्हारे दोस्त का सूटकेस मुनासिब ठिकाने पर पहुंचाने को कहा था। अपने दोस्त का ठिकाना तुम ही जानते हो, इसलिए वो सूटकेस हम आपके हवाले कर रहे हैं। आपको कोई एतराज तो नहीं?"

"नहीं। मुझे कोई एतराज नहीं। मैं सूटकेस दीपक की बीवी तक पहुंचा दूंगा।"

प्रकाश बर्वे काउंटर के पीछे बने कमरे में गया और दीपक के सूटकेस समेत लौटा।

उसने वो सूटकेस इंद्रजीत के हवाले किया।

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत ने सूटकेस उठाया, और लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

लिफ्ट में सवार होकर वह दूसरे फ्लोर पर पहुंचा।

अपने रूम का ताला खोलकर उसने भीतर कदम रखा ही था कि सहसा उसकी निगाह फर्श पर पड़े एक लिफाफे पर पड़ी।

वो लिफाफा यकीनन उसकी गैरहाजिरी में नीचे से सरकाया गया था।

सूटकेस एक ओर रखकर उसने लिफाफा उठाया, उसे उलट-पुलट कर देखा।

लिफाफे के दोनों ओर कुछ नहीं लिखा था।

इंद्रजीत ने लिफाफे में रखा कागज का पुर्जा बाहर निकाला।

उसकी तह खोलकर उसने उसे सीधा किया ही था कि उस पर खून से लिखी एक खास इबारत पढ़कर उसका खून खौलकर रह गया।

खून से लिखी इबारत कुछ यों थी—

"भेड़ियों के शहर में जब कोई कुत्ता भौंकता है तो भेड़िए उसे कच्चा चबा जाते हैं। यहां से चले जाओ। वरना बेमौत मारे जाओगे।"

'परेरा, मैं जानता हूं कि ये तेरी शरारत है।' इंद्रजीत गुस्से से बड़बड़ा उठा—'चंद दिनों में तेरी सियासत खाक में न मिलाई तो मेरा नाम इंद्रजीत नहीं।'

बड़बड़ाने के साथ ही उसने मुट्ठी को जोरों से भींचा तो कागज का पुर्जा एक गोली में तब्दील हो गया।

इंद्रजीत ने कागज की गोली एक ओर फेंक दी।

अब उसने अपनी तवज्जोह दीपक के सूटकेस की तरफ दी।

उसे उम्मीद थी कि उसके सूटकेस से उसे कोई न कोई क्लू जरूर हासिल होगा, जो उसे उसके कातिल तक ले जाएगा।

लिहाजा उसने सूटकेस पलंग पर रखा और उसे खोलकर भीतर रखा सामान बड़े ध्यान से देखने लगा।

सूटकेस का कोना खुदरा देखने के बाद भी जब उसे काम की कोई चीज नहीं दिखाई तो वह निराश दिखाई देने लगा।

वह सूटकेस बंद करने ही जा रहा था कि सहसा उसकी निगाह सूटकेस की लाईनिंग से बाहर झांकते कागज के टुकड़े पर पड़ी।

उसने लाईनिंग का जायजा लिया तो पाया कि उसकी सिलाई थोड़ी-सी उधेड़कर वह कागज भीतर सरकाया गया था।

उसने फौरन वो कागज बाहर निकाला।

कागज तयशुदा था।

इंद्रजीत ने उसकी तहें खोलीं तो उसे एक माचिस का ख़ाली खोल दिखाई दिया।

माचिस के खोल को उसने अच्छी तरह से देखा।

खोल पर परेरा हाऊस नाईट क्लब हुआ था। ऐसे माचिस के खोल वह एक नाईट क्लब में देख चुका था। नाईट क्लब की पब्लिसिटी के लिए ऐसी माचिसें तैयार करवाई जाती थीं, जिन पर नाईट क्लब का नाम छपा होता था।

तभी इंद्रजीत को होटल के डिटेक्टिव जॉनी डिसूजा की बात याद आई।

उसने बताया था कि परेरा हाऊस नाईट क्लब शहर के महंगे नाईट क्लबों में एक था। यहां वो ही आदमी जा सकता था, जिसकी महाना इनकम पचास लाख से ऊपर हो।

"दीपक परेरा हाउस नाईट क्लब में गया था?" वह बड़बड़ा उठा—"कैसे? किसी मैम्बर का गेस्ट बनकर या फिर चोरी छुपे?"

तभी दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

इंद्रजीत चौंका। उसने माचिस का खोल जेब के हवाले किया और दरवाजे की तरफ बढ़ा। उसने दरवाजा खोला।

सामने खींसे निपौरते जॉनी डिसूजा को खड़े देख उसने राहत की सांस ली।

"कैसे हो?" जॉनी डिसूजा खींसे निपौरते हुए बोला।

"बढ़िया।" इंद्रजीत बोला—"कैसे आए?"

"यहां से गुजर रहा था। तुम्हारे रूम पर नजर पड़ी। लगा, तुम भीतर हो तो दरवाजे पर दस्तक दे दी।"

"बढ़िया किया।"

"भीतर आने को नहीं कहोगे?"

"दारू होती तो जरूर कहता। आज दारू नहीं है।"

"यार, मैं दारू का प्यासा नहीं हूं। बिना दारू के भी हम मिल सकते हैं। नहीं?"

सहमति में सिर हिलाकर इंद्रजीत दरवाजे से परे हट गया।

जॉनी डिसूजा ने भीतर कदम रखा।

दरवाजा बंद करके इंद्रजीत ने जेब से माचिस का खोल निकाला।

"इसे पहचानते हो?" उसने माचिस का खोल जॉनी डिसूजा को दिखाया।

माचिस के खोल पर नजर पड़ते ही जॉनी डिसूजा की आंखें फैलती चली गयीं।

"ये तुम्हें कहां से मिला?" वह हक्कबकाया-सा बोला।

"दीपक के सूटकेस से।" इंद्रजीत बोला—"बता सकते हो, ये खोल दीपक के पास कैसे पहुंचा होगा?"

Scanned by CamScanner

"मैं दावे से कह सकता हूं" जॉनी डिसूजा बोला—"दीपक ने ये खोल वहां जाकर हासिल नहीं किया होगा, क्योंकि क्लब में जाने की उसकी हैसियत नहीं थी।"

"वहां चोरी छुपे जाया जा सकता है?"

"क्या बात कर रहे हो।" जॉनी डिसूजा व्यंग्य से बोला—"वो कोई सड़क छाप नाईट क्लब नहीं है। वो गोवा शहर का सबसे महंगा नाईट क्लब है। वहां सिक्योरिटी के इतने पुख्ता इंतजाम हैं कि कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता।"

"फिर ये खोल दीपक के पास कैसे आया होगा?"

"एक ही तरीके से आया होगा?"

"कैसे?"

"वो क्लब के किसी मैम्बर के साथ क्लब में गया होगा?"

"हां, लेकिन ऐसा नहीं हुआ होगा।"

"मतलब?"

"दीपक किसी मैम्बर के साथ क्लब में नहीं गया होगा।"

"ये बात तुम यकीन से कह रहे हो?"

"हां।"

"यकीन की वजह?"

"दीपक गोवा शहर का बाशिंदा नहीं था। क्लब के मैम्बरों को इसी शहर के रहने वाले अपने साथियों को ले जाने की परमिशन है।"

"सपोज करो। किसी मैम्बर का कोई रिश्तेदार जो गोवा से बाहर का रहने वाला हो, जो क्लब में जाने का ख्वाहिशमंद हो, वो क्लब में नहीं जा सकता?"

"जा सकता है, लेकिन इसके लिए उसे बकायदा मैनेजर से लिखित परमिशन लेनी पड़ती है, जो कि मैनेजर अपनी ओर से निश्चिंत होने के बाद ही देता है।"

"मैनेजर निश्चिंत कैसे होता है?"

"वो फोन पर जितनी इन्क्वायरी की जा सकती है, करता है। फिर निश्चिंत होने के बाद ही लिखित परमिशन देता है। उसे मैम्बर के गेस्ट के बारे में जरा-सा भी शक हो, वो परमिशन देने से मना कर देता है।"

"फिर तो ये खोल दीपक को कहीं पड़ा मिला होगा।"

"मुझे गोवा में रहते हुए तीस साल हो गए। मुझे आज तक ऐसा खोल कहीं पड़ा मिला?"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी मैम्बर ने ये खोल नाईट क्लब से बाहर निकलते ही फेंका हो और वहां दीपक खड़ा हो।"

Scanned by CamScanner

"नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि नाईट क्लब के जितने भी मैम्बर हैं, वो सोने चांदी के लाईटर रखते हैं। वहां की माचिस को हाथ लगाना भी वो अपनी तौहीन समझते हैं। अगर किसी को लाईटर की जरूरत भी पड़ती है तो वो वेटर को इशारा करता है, फिर वेटर क्लब का लाईटर उसके हुजूर में पेश करता है।"

"ऐसी बात है तो फिर ये माचिस बनवाई क्यों गयी?"

"शो शॉ के लिए।"

"जब क्लब का कोई मैम्बर माचिस को हाथ तक नहीं लगाता, फिर शो शॉ कैसे हुई?"

"इस बात का जवाब मैं कैसे दे सकता हूं।"

"इस माचिस को नाईट क्लब का स्टॉफ भी तो हासिल कर सकता है।"

"कर तो सकता है। लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"मेरे सुनने में आया था स्टॉफ को इस माचिस को नाईट क्लब से बाहर ले जाने की इजाजत नहीं है।"

"फिर भी स्टॉफ के लोग चाहें तो माचिस को बाहर ले जा सकते हैं?"

"ले तो जा सकते हैं, लेकिन इससे उन्हें फायदा क्या होगा? अलबत्ता चोरी पकड़े जाने पर उनकी नौकरी जरूर जा सकती है।"

"फिर ये माचिस दीपक के पास कैसे पहुंची?"

"एक ही तरीके से पहुंच सकती है।"

"कौन से तरीके से?"

"हो सकता है, उसे ये माचिस क्लब के धुरंधर कहे जाने वाले लोगों ने किसी विशेष मकसद से दी हो।"

"क्लब के धुरंधर लोग कौन हैं?"

"पहला खुद माईकल परेरा। दूसरा उसकी बीवी। तीसरा उसकी बीवी का कजिन कहा जाने वाला यार जार्ज सैबिस्टियन और चौथा माईकल परेरा की लड़की रवीना।"

"इसका मतलब दीपक इन्हीं चारों में से किसी एक के साथ क्लब में गया होगा?"

"मेरी अक्ल तो यही कहती है।"

"मुझे क्लब में जाना हो तो?"

"चारों में से किसी एक को पटाओ। उसके बाद ही तुम क्लब

Scanned by CamScanner

में एंट्री कर सकते हो।"

"माईकल से मेरा सांप नेवले वाला बैर है। उसकी बीवी मुझे पटती दिखाई नहीं देती। मैं उसकी लड़की को ही पटा सकता हूं।"

"बशर्ते तुम उसे पटा लो।"

"उसका पटना मुश्किल है?"

"मैं तो कहता हूं कि तुम उससे मिल लो, तुम्हारे लिए यही बहुत बड़ी बात होगी।"

"यानी कि उसे पटाया नहीं जा सकता।"

"कोशिश करके देख लो। शायद कोई बात बन जाए।"

"उसका पता ठिकाना मालूम है?"

"हां।"

"क्या है?"

जॉनी डिसूजा ने इंद्रजीत को पणजी का एक पता बताया, जिसे इंद्रजीत ने अपनी नोट बुक में उतार लिया।

तभी इंद्रजीत को एक बात और याद आई।

उसने कागज की गोली उठाई और उसे खोलकर जॉनी डिसूजा की तरफ बढ़ाते हुए बोला—"इस राईटिंग को पहचान सकते हो?"

खून से लिखी इबारत देखकर जॉनी डिसूजा की भवें सिकुड़कर रह गयीं।

उसने सीधे किए कागज को खिड़की से भीतर आ रही रोशनी के आगे किया, फिर सीटी बजाते हुए बोला—"माई डियर, ये कागज नाईट क्लब के लैटर पैड से फाड़ा गया है। इस पर नाईट क्लब की इनविजीबल (अदृश्य) मोहर लगी हुई है।"

इंद्रजीत ने खिड़की की रोशनी में कागज को देखा तो उसे उस पर 'पी एच एन सी' लिखा दिखाई दिया। कुछ इस अंदाज में जैसे पांच सौ के नोट पर महात्मा गांधी की अदृश्य तस्वीर अंकित होती है।

"इसका मतलब" वह होंठ सिकोड़कर बोला—"मुझे धमकाने वाला कोई और नहीं, माईकल परेरा ही है?"

"माई डियर, तुम बाकी के तीन धुरंधरों को भूल रहे हो। माईकल के अलावा ये काम उन धुरंधरों में से किसी एक का भी हो सकता है।"

"ठीक कहते हो। ये काम चारों में से किसी का भी हो सकता है। चारों को मुझे अपनी हिट लिस्ट में रखना चाहिए।"

जॉनी डिसूजा का सिर सहमति में हिला।

रवीना परेरा का शानदार फ्लैट 'डा० दादा वैद्य रोड' पर होटल सम्राट की बगल में एक तिमंजिला अपार्टमेंट में था।

इस अपार्टमेंट में गिनती के तीस फ्लैट थे जिनमें शहर के अमीर कहे जाने वाले लोग ही रहते थे। इंद्रजीत ने कार इसी अपार्टमेंट के विशाल प्रांगण में खड़ी की और फिर रिसेप्शन हॉल पर पहुंचा।

रिसेप्शन डेस्क के पीछे जो लड़की मौजूद थी, उसने शानदार एग्जीक्यूटिव सूट पहना हुआ था।

उसने इंद्रजीत को अजीब-सी निगाहों से देखा।

इंद्रजीत अदा से मुस्कराया, फिर अपने लहजे में मिश्री घोलते हुए बोला—"अगर मैं गलत नहीं हूं तो आप ही वो रेणुका हैं जो एकता कपूर के फेमस टी०वी० सीरियल 'क्योंकि हम सब इंसान हैं' में अमीर बाप की इकलौती लड़की का रोल अदा कर रही हैं?"

इंद्रजीत के झूठ का लड़की पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ा। वह मधुर स्वर में बोली—"आपको गलतफहमी हुई है। मैं टी०वी० सीरियल में काम नहीं करती।"

"लेकिन आपकी शक्ल तो..."

"इस दुनिया में शक्लें मिलना आम बात है।"

"लेकिन आपकी शक्ल रेणुका से इतनी मिलती है कि..."

"जनाब, मैंने कहा न कि मैं टी०वी० सीरियल में काम नहीं करती।"

"क्यों?"

लड़की हड़बड़ाई।

"आपको टी०वी० सीरियल में काम करना चाहिए। आपकी खूबसूरती दर्शकों को अपना दीवाना बना देगी। आप तो मीडिया पर छा जाएंगी।"

"इज्जत अफजाई का शुक्रिया।" लड़की खुश होते हुए बोली—"वैसे मुझे एक्टिंग करने का शौक नहीं है।"

"शौक तो पैदा भी किया जा सकता है। मैं तो कहता हूं, आप एक्टिंग का शौक पैदा कीजिए। फिर देखिए टी०वी० की दुनिया में आपके नाम की धूम कैसे मचती है।"

"ठीक है, मैं विचार करूंगी।"

"विचार नहीं। आपको ये काम डेफिनेटिली करना है।"

"अच्छा बाबा, कर लूंगी। आप असल मकसद पर आईए। आप यहां तशरीफ किस सिलसिले में लाए हैं?"

Scanned by CamScanner

"मैं मिस रवीना से मिलना चाहता हूं। मेरा नाम इंद्रजीत है।"

"मिस रवीना से आपकी मुलाकात फिक्स है?"

"नहीं, लेकिन मुझे उनसे जरूरी बात करनी है।"

"आई एम वैरी सॉरी, सर।" लड़की खेद भरे स्वर में बोली—"बिना अप्वाइंमेंट के मिस रवीना किसी से नहीं मिलती।"

"मैं जानता हूं। आप बस उन्हें इतना बता दीजिए कि मुझे उनसे मिलने के लिए उनके फादर ने कहा है।"

लड़की कशमकश में पड़ती दिखाई देने लगी।

"आप उन्हें इनफार्म तो कीजिए।" इंद्रजीत बोला—"अगर वो मुझसे मिलने को तैयार नहीं हुई तो मैं शराफत से यहां से तशरीफ ले जाऊंगा।"

"ओ०के०।" वह अपनी जगह से उठती हुई बोली—"मैं मिस रवीना तक आपका मैसेज पहुंचा देती हूं। वो आपसे मिलना चाहें तो ठीक। वरना आप खुद समझदार हैं।"

इंद्रजीत ने हामी में सिर हिलाया।

लड़की काउंटर के पीछे बने एक कमरे में चली गयी। उसके पीछे दरवाजा अपने आप बंद हो गया।

थोड़ी देर बाद वो लौटी तो उसके चेहरे पर कशमकश के भाव नहीं थे।

"मिस रवीना आपसे मिलने के लिए तैयार हैं।" वह बोली—"उनका फ्लैट सेकंड फ्लोर पर है।" उसने लिफ्ट की तरफ इशारा किया—"लिफ्ट उस ओर है।"

"उनके फ्लैट का नम्बर?" इंद्रजीत ने पूछा।

"सेवन।"

इंद्रजीत ने लड़की का शुक्रिया अदा किया और फिर लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

लिफ्ट द्वारा वो सेकंड फ्लोर पर पहुंचा।

फ्लैट नम्बर सात गैलरी के अंतिम सिरे पर था।

इंद्रजीत ने घंटी बजाई तो दरवाजा एक उम्रदराज, पहनावे से क्रिश्चियन दिखाई देने वाली औरत ने खोला।

"मिस्टर इंद्रजीत?" वह बोली।

"यस।" इंद्रजीत शिष्ट भाव से बोला।

"प्लीज, कम।"

वह एक ओर हटी तो इंद्रजीत ने भीतर कदम रखा।

फ्लैट की चकाचौंध, शानो शौकत देखकर इंद्रजीत की आंखें चुंधिया कर रह गयीं।

"दिस वे प्लीज।" औरत ने एक बड़े दरवाजे की तरफ इशारा किया।

इंद्रजीत ने भीतर कदम रखा।

यह एक काफी बड़ा हॉल था, जिसमें शानोशौकत, ऐशो आराम की तमाम चीजें मौजूद थीं। तभी इंद्रजीत को प्यानो की आवाज सुनाई दी।

उसने हॉल के एक कोने में लगे झीने पर्दे की तरफ देखा तो उसके पीछे एक लड़की प्यानो बजाती दिखाई दी।

'प्यानो!' इंद्रजीत बड़बड़ाया—'बकौल जॉनी डिसूजा दीपक को अपने साथ ले जाने वाली लड़की प्यानो बजाती थी। उस रोज दीपक को अपने साथ रवीना ले गयी थी। दीपक का कत्ल क्या रवीना ने ही किया था।'

तभी झीना पर्दा सरका और एक खूबसूरत युवती ने हॉल में कदम रखा।

वो युवती बेहद खूबसूरत थी। आकर्षक नैन नक्श। गोरा रंग। गले में मोतियों का हार। परियों जैसे सफेद कपड़े।

कई पलों तक इंद्रजीत उसे अपलक देखता रहा।

"तुम्हारा नाम ही इंद्रजीत है।" वह शुष्क स्वर में बोली।

"जी।" इंद्रजीत बोला—"मेरा नाम ही इंद्रजीत है।"

"डैडी से क्या बात हुई थी तुम्हारी?"

"बैठने की इजाजत है?"

"बैठो।"

इंद्रजीत एक गुदगुदे सोफे पर बैठ गया।

"क्या बात हुई थी डैडी से तुम्हारी?" इंद्रजीत के सामने बैठकर उसने अपना सवाल फिर से दोहराया।

"बताऊंगा। उससे पहले मैं अपने बारे में कुछ बताना चाहता हूं।"

"क्या?"

"मैं ज्वाईंट वेंचर्स डिटेक्टिव एजेंसी का हैड हूं।"

"तुम प्राइवेट डिटेक्टिव हो?"

"दैट्स राईट। मैं एक केस पर काम कर रहा हूं। मैं इस उम्मीद से तुम्हारे पास आया हूं कि तुम मुझे कोपरेट करोगी।"

"कोपरेशन से मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी।"

"मिस रवीना, कुछ दिनों पहले मेरा दोस्त और बिजनेस पार्टनर दीपक कामत एक केस के सिलसिले में गोवा आया था। केस क्या था, इस बाबत मुझे कोई जानकारी नहीं है। लेकिन मैं अंदाजा लगा

Scanned by CamScanner

सकता हूं कि यहां वो किसी खास आदमी के कहने पर तशरीफ लाया था।"

"किसके कहने पर तुम्हारा दोस्त यहां आया था?"

"बताऊंगा लेकिन उससे पहले मैं यह बताना जरूरी समझता हूं कि उसने मुझे फोन पर मैसेज दिया था कि मैं जितनी जल्दी हो सके, गोवा पहुंच जाऊं। आज मैंने गोवा में कदम रखा, मुझे पता चला कि मेरा दोस्त एक खूबसूरत लड़की के साथ बीच की तरफ गया है। मैं उसका इंतजार कर ही रहा था कि मुझे खबर मिली कि बीच के बाथिंग स्टेशन में उसकी लाश पड़ी है।"

"तुम्हारे दोस्त के मर्डर की खबर मैंने दोपहर अखबार में पढ़ी थी। तुम्हारा दोस्त किस मकसद से गोवा जाया था?"

"मैंने बताया ना कि वो यहां किसी खास आदमी के कहने पर तशरीफ लाया था?"

"वो खास आदमी कौन है?"

"नाम सुनना तुम्हें गंवारा न होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो तुम्हारा खास है।"

"मेरा खास है! नाम बताओ उसका।"

"तुम्हारे डैडी के बुलाने पर दीपक ने गोवा में कदम रखा था।"

"आर यू मैड! दिमाग तो ठीक है तुम्हारा!"

"मेरा दिमाग बिल्कुल चौकस है।"

"फिर बहकी-बहकी बातें क्यों कर रहे हो?"

"मेरे पास कुछ ऐसे सबूत हैं जो साबित करते हैं कि मेरा दोस्त तुम्हारे डैडी के काम से गोवा आया था।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।"

"मैं सच बोल रहा हूं।"

"मुझे यकीन नहीं हो रहा। गोवा में प्राइवेट डिक्स का अकाल पड़ा हुआ है, जो मेरे डैडी पूना से किसी मामूली डिक को गोवा बुलाएं। तुम्हारी बात यकीन करने वाली नहीं है।"

"मैं कहा न कि मेरे पास कुछ ऐसे सबूत हैं जो साबित करते हैं कि मेरा दोस्त..."

"लिसन मिस्टर।" रवीना इंद्रजीत की बात काटते हुए बोली—"जब तक तुम मुझे सबूतों की बाबत नहीं बताओगे, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं करूंगी। बल्कि मैं तो ये भी कहूंगी कि तुम यहां बैठकर केवल अपना वक्त बरबाद कर रहे हो।"

"दीपक का नाम लेकर, उसके केस का हवाला देकर" इंद्रजीत

नाटकीय स्वर में बोला—"आज मैं तुम्हारे डैडी से उनके घर पर मिला था। बता सकती हो, जब वो दीपक को जानते नहीं थे, फिर वो मुझसे मिलने को क्यों तैयार हो गए?"

रवीना के मुंह से बोल न फूटा। उसने बेचैनी से पहलू बदला, फिर कंधे झटकाते हुए बोली—"तुमने डैडी से मिलने के लिए रिक्वेस्ट की होगी, तभी वो तुमसे मिले।"

"मैंने उनसे मिलने की रिक्वेस्ट नहीं की थी। मैं उनसे..."

इंद्रजीत की बात पूरी होने से पहले ही वह अपने पैरों पर खड़े होते हुए बोली—"मुझे जरूरी काम से कहीं जाना है। विल यू प्लीज एक्सक्यूज मी?"

"मिस रवीना।" इंद्रजीत ने अपनी जगह छोड़ी और अनुनय भरे स्वर में बोला—"मैं दीपक की गतिविधियों को वॉच कर रहा हूं। मेरे सुनने में आया था कि वह किसी के साथ आपके डैडी के नाईट क्लब में गया था। वहां वो किससे मिला था, मैं सिर्फ यही जानना चाहता हूं। तुम क्लब की मेम्बर हो। तुम मुझे अपने साथ ले जाओ तो मुझे पता चल सकता है कि दीपक क्लब में क्यों गया था।"

रवीना ने इंद्रजीत को यूं देखा मानो वो पागल हो गया हो।

"मैं तुम्हें क्लब ले भी जाऊं," वह बोली—"तो भी तुम कोई जानकारी हासिल नहीं कर पाओगे। वहां तुम्हारे सवालों का जवाब कोई नहीं देगा।"

"क्लब में मैं आपके साथ हूंगा।" इंद्रजीत बोला—"मैं मानता हूं वहां मेरे सवालों का जवाब कोई नहीं देगा, लेकिन तुम मेरी ओर से सवाल करोगी तो कोई मना नहीं करेगा।"

"दैट इज इम्पासिबिल।" रवीना दांत भींचकर बोली— "आई एम सॉरी। मैं खामखाह के लफड़ों में नहीं पड़ना चाहती। मेरे ख्याल से अब आपको यहां से तशरीफ ले जानी चाहिए।"

"मैं आपसे पोलाइट रिक्वेस्ट कर रहा हूं। एक आदमी का कत्ल किया जा चुका है। मुझे नहीं लगता कि यहां की पुलिस उसके कातिल को ढूंढने के लिए कोई मुस्तैदी दिखाएगी। अगर ऐसा होता तो ए०सी०पी० चंद्रकांत मुझे धमकाते हुए शहर से किनारा करने को नहीं कहता। मैंने प्रण किया हुआ है कि अपने दोस्त के कातिल को कानून के हवाले करके ही मैं इस शहर से किनारा करूंगा। यहां के कुछ लोग बेशक मेरी राह में रोड़े अटकाएं, लेकिन मैं पीछे नहीं हटूंगा। मैं एक नेक काम के लिए आपको सहयोग देने के लिए कह रहा हूं। आप सहयोग नहीं देंगी तो भी मैं अपने कदम पीछे नहीं हटाऊंगा। मैं जो चाहता हूं वो..."

Scanned by CamScanner

रवीना ने इंद्रजीत की बात पूरी होने से पहले एक घंटी बजा दी।

फौरन से पेश्तर उसकी मेड सर्वेंट वहां नुमायां हुई।

"मिस्टर इंद्रजीत यहां से जा रहे हैं।" वह शुष्क स्वर में बोली—"इन्हें बाहर का रास्ता दिखा दो।"

"शुक्र है।" इंद्रजीत एक गहरी सांस छोड़कर बोला—"तुमने अपने डैडी की तरह मुझ पर टोनी नाम का अलशेसियन कुत्ता नहीं छोड़ा। थैंक्यू फॉर गिविंग मी सच्चर प्रिशियस टाईम, मिस रवीना।"

इंद्रजीत हॉल से बाहर निकल गया।

लिफ्ट द्वारा वो नीचे पहुंचा।

उसने घड़ी पर निगाह डाली तो समय साढ़े नौ बजे के आस-पास पाया।

अपनी कार में बैठकर उसने कुछ सोचा, फिर कार का रुख मीरामर बीच की तरफ कर दिया। कातिल को सामने लाने के लिए वह बाथिंग स्टेशन का जायजा लेना चाहता था।

मीरामर बीच पहुंचने पर इंद्रजीत ने पाया कि वहां चंद्रमा की रोशनी में कुछ लोग समुद्र की लहरों से खेल रहे थे।

बाथिंग स्टेशन के सामने पहुंचने पर इंद्रजीत ने उसे बंद पाया।

इंद्रजीत ने अपनी कार बाथिंग स्टेशन से परे पेड़ों के झुरमुट के पास खड़ी की और फिर पैंट की जेबों में हाथ डालकर बीच की तरफ बढ़ गया।

बीच का जायजा लेने पर इंद्रजीत को जब यकीन हुआ कि वो किसी की निगाहों का मरकज नहीं बना हुआ है तो वह चुपके से बाथिंग स्टेशन के सामने आ गया।

उसने गेट को गौर से देखा तो उसे वहां से भीतर जाना मुश्किल दिखाई दिया।

वह बाथिंग स्टेशन की साईड वाली दीवार के पास पहुंचा।

दीवार के साथ-साथ चलकर वो ऐसी जगह पर पहुंचा जहां दीवार की ऊंचाई केवल सात फुट ऊंची थी। यहां से वो दीवार फांद सकता था। उसने इधर-उधर देखा। जब उसे यकीन हुआ कि उसे कोई नहीं देख रहा है, खुद को उचका कर वह दीवार पर चढ़ गया।

कुछ पलों तक वह दीवार की मुंडेर पर लेटा भीतर का जायजा लेता रहा।

उसे डर था कि कोई पुलिसिया वहां तैनात न हो।

कुछ पल बाद जब उसे भीतर कोई नहीं दिखाई दिया तो वह धीरे से दीवार पर से उतरा और दबे पांव केबिन नम्बर पांच की तरफ बढ़ा।

केबिन नंबर पांच के सामने पहुंचने पर उसने उस पर एक ताला लगा पाया। इंद्रजीत ने जेब से रबर के दस्ताने निकाले और हाथों पर चढ़ा लिए। वह ताले खोलने में माहिर था। इसलिए वो ताला उसके सामने ज्यादा देर तक टिका न रह सका।

एक तार की सहायता से इंद्रजीत ने उसे खोला और जेब से पेंसिल टार्च निकाल ली।

उसने भीतर कदम रखा। टार्च जलाई और वहां का जायजा लेने लगा।

यहां वो स्टूल, एक मेज और उस पलंग के अलावा इंद्रजीत को कुछ दिखाई नहीं दिया, जिस पर वो दीपक की लाश देख चुका था।

इंद्रजीत ने टार्च की रोशनी केबिन के परले सिरे पर डाली तो उसे दो ड्रेसिंग रूम दिखाई दिए।

एक ड्रेसिंग रूम आदमियों के कपड़े बदलने का था तो दूसरा औरतों के द्वारा इस्तेमाल में लाया जाता था।

न जाने क्या सोचकर इंद्रजीत मर्दों के ड्रेसिंग रूम के सामने पहुंचा।

उसने उसके दरवाजे पर हौले से दबाव डाला तो वह खुल गया।

टार्च की रोशनी में इंद्रजीत ने वहां का जायजा लिया तो उसे ऐसी कोई चीज दिखाई नहीं दी जो उसके काम की साबित हो सकती थी।

एक पल को इंद्रजीत को लगा कि यहां उसे कुछ नहीं मिलने वाला। वह केवल अपना वक्त बरबाद कर रहा है।

मगर अगले ही पल अपना सिर झटककर उसने औरतों वाले ड्रेसिंग रूम में एक नजर डालने का फैसला लिया।

वो उसके सामने पहुंचा ही था कि एक भारी चीज उसके सिर पर तीव्र वेग से पड़ी; उसे फौरन सब कुछ घूमता महसूस हुआ। फिर उसकी चेतना धीरे-धीरे लुप्त होती चली गयी।

होश आने पर इंद्रजीत को अपने सिर में भयंकर पीड़ा महसूस हुई।

जैसे तैसे उसने दर्द बरदाश्त करने का हौंसला जुटाया और कलाई घड़ी पर निगाह डाली।

Scanned by CamScanner

उसे बेहोश हुए ज्यादा वक्त नहीं हुआ था।

मुश्किल से पांच-सात मिनट के लिए उसकी चेतना लुप्त हुई थी।

तभी उसे एहसास हुआ कि टार्च उसके हाथ में नहीं है।

टार्च की तलाश में उसने जेब से सिग्रेट का लाईटर निकाला।

लाईटर की रोशनी में उसे टार्च ड्रेसिंग रूम के दरवाजे के करीब पड़ी दिखाई दी।

उसने टार्च उठाई और ऑन की। फिर उसकी रोशनी में ड्रेसिंग रूम का दरवाजा धीरे से खोला। आहट लेने पर जब उसे लगा कि ड्रेसिंग रूम में हमलावर नहीं छुपा है, उसने भीतर कदम रखा।

टार्च की रोशनी उसने ड्रेसिंग रूम के एक कोने पर डाली ही थी, उसे अपने जिस्म में सनसनी-सी दौड़ती महसूस हुई।

वहां एक खूबसूरत युवती की खून में डूबी लाश पड़ी थी।

लड़की की उम्र बीस-बाईस के आस-पास थी। फिगर फैशन मॉडल्स जैसी थी। उस वक्त उसके जिस्म पर एक सफेद रंग का स्विमिंग सूट था, जो कि खून की वजह से लाल हुआ पड़ा था।

मर्डर वैपन की तलाश में इंद्रजीत ने इधर-उधर टार्च की रोशनी फेंकी तो उसे लाश के पास ही एक सुआ दिखाई दिया जो कि खून से रंगा हुआ था।

इंद्रजीत ने सरसरी निगाहों से लाश का मुआयना किया तो उसे समझते देर न लगी कि उसका कत्ल भी दीपक के कत्ल की तरह हुआ था। हत्यारे ने सुआ हत्प्राण की गर्दन में पूरी तरह उतार दिया था जोकि उसकी मौत का कारण बना था।

लाश का मुआयना करने पर इंद्रजीत ने एक बात यह भी नोट की कि वो लड़की वह लड़की नहीं थी जो दीपक को अपने साथ ले गयी थी।

तभी इंद्रजीत के कानों में पुलिस सायरन की आवाज सुनाई पड़ी।

फौरन से पेश्तर उसकी आंखों के सामने ए०सी०पी० चंद्रकांत का तमतमाता चेहरा घूम गया।

पुलिस द्वारा धर पकड़े जाने पर उसका क्या अंजाम होना था, इससे वो अच्छी तरह से वाकिफ था। इसलिए उसने मौके की नजाकत को समझा और वहां से कूच करने में ही अपनी भलाई समझी।

तेजी से वह केबिन से बाहर आया, लपककर दीवार के पास पहुंचा और उसे फांदकर पेड़ों के झुरमुट के पास खड़ी अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद उसकी कार तेजी से होटल की दिशा में दौड़ रही थी।

ग्यारह बजे के करीब इंद्रजीत होटल पहुंचा।

कार पार्किंग लॉट में खड़ी करने के बाद एक डस्टर से उसने टायरों पर लगे रेत के कण साफ किए। फिर वह होटल के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ा।

रिसेप्शन काउंटर पर उसे प्रकाश बर्वे की जगह कोई बूढ़ा-सा आदमी बैठा दिखाई दिया। उसने इंद्रजीत का अभिवादन किया और फिर रूम की चाबी उसके हवाले कर दी।

चाबी लेकर इंद्रजीत लिफ्ट की तरफ बढ़ा ही था कि उसे टेलीफोन की एकाएक बज उठी घंटी की आवाज सुनाई दी।

इससे पहले वह लिफ्ट के चैनल गेट को छू पाता, उसे बूढ़े क्लर्क की आवाज सुनाई दी।

"सुनिए, मिस्टर।" वह तेजी से बोला, "रूम नम्बर 245 में आप ही ठहरे हुए हैं।"

इंद्रजीत ठिठका।

"हां, मैं ही ठहरा हुआ हूं।" वह बोला।

"आपका नाम इंद्रजीत है।"

"हां।" इंद्रजीत ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

"आपके लिए कॉल है।" क्लर्क बोला—"आप अपने रूम में सुनना पसंद करेंगे या बूथ में?" उसने काउंटर के पास बने एक बूथ की ओर इशारा किया।

"मेरे लिए कॉल है?" इंद्रजीत उलझन में पड़ता दिखाई देने लगा।

"जी। आपका नाम इंद्रजीत है तो आपके लिए ही कॉल है।"

हैरत में पड़ते हुए इंद्रजीत ने बूथ में प्रवेश किया, रिसीवर कान से लगाया, फिर दूसरी ओर से एक स्त्री की आवाज कानों में सुनाई पड़ते ही उसके माथे पर बल पड़ते चले गये।

"मिस्टर इंद्रजीत?" स्त्री की आवाज आई।

"यस।" इंद्रजीत बोला।

"मैं रवीना बोल रही हूं।"

इंद्रजीत उछले बिना न रह सका।

उसे इस बात की सख्त हैरानी हुई कि रवीना को कैसे पता चला कि वो यहां ठहरा हुआ है।

Scanned by CamScanner

"यकीन नहीं हो रहा।" इंद्रजीत बेयकीनी से बोला—"कि मिस रवीना से फोन पर बात कर रहा हूं। कहिए, कैसे याद किया?"

"मैं परेरा हाऊस से बोल रही हूं।" रवीना बोली—"मैं विजिटर्स रजिस्टर चैक कर चुकी हूं। तुम्हारे दोस्त दीपक का नाम उसमें दर्ज नहीं है। आई थिंक, तुम्हें मुगालता हुआ होगा। मुझे नहीं लगता कि वो यहां आया होगा। वो यहां आया होता तो विजिटर्स बुक में उसका नाम जरूर दर्ज होता।"

"हो सकता है, किसी वजह से उसने कोई और नाम दर्ज किया हो।"

"इस बाबत मैंने भी सोचा था। तभी मैंने क्लब के दरबान से तुम्हारे दोस्त की बाबत पूछताछ की थी। उसकी याददाश्त बहुत अच्छी है। मैंने उसे तुम्हारे दोस्त का हुलिया बताया तो उसने स्वीकार किया कि पिछले तीन महीने से उस हुलिये के किसी आदमी ने क्लब में एंट्री नहीं की है। अगर दीपक यहां आया होता तो वो दरबान डेफिनेटिली उसे पहचान लेता।"

"इसका मतलब दीपक ने क्लब में कदम नहीं रखा।"

"राईट! रखा होता तो पता चल जाता। वैसे तुम्हें कैसे पता चला कि दीपक यहां आया था?"

"उसके सूटकेस में मुझे परेरा हाऊस नाईट क्लब की एक माचिस मिली थी। उसी से मैंने अंदाजा लगाया था।"

"उसे वो माचिस किसी मैम्बर द्वारा ही हासिल हो सकती है।"

"शायद यही बात रही होगी। ऐनी वे, ऐन वक्त पर आपने मेरी जो मदद की, उसका मैं तहेदिल से शुक्रगुजार हूं। आई एम रियली वैरी...।"

फोन कट गया।

रिसीवर कान से सटाए इंद्रजीत यही सोचता रहा कि रवीना का मन एकदम से कैसे बदल गया।

थोड़ी देर बाद अपना सिर झटककर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और फिर बूथ से बाहर निकल आया।

'दीपक परेरा हाऊस में नहीं गया।' वह बड़बड़ाया—'फिर उसके पास वहां की माचिस कैसे आ गयी? दीपक को फालतू की चीजें इकट्ठा करने का शौक नहीं था। वो काम की चीजें ही अपने पास रखता था। इसी वजह से माचिस उसने संभालकर रखी थी। क्या चक्कर है?'

लिफ्ट पर सवार होकर वह सेकेण्ड फ्लोर पर पहुंचा।

रूम में आकर उसने दीपक के सूटकेस की अच्छी तरह से तलाशी लेने का फैसला किया।

एक ब्लेड की मदद से उसने सूटकेस की सारी लाईनिंग उधेड़ दी।

लाईनिंग अलग होते ही उसे वैसी माचिस दिखाई दी, जिसका खोल उसकी जेब में महफूज था।

इंद्रजीत ने माचिस खोली तो उसे उसमें कई सावुत तीलियां सलीके से रखी दिखाई दीं। इंद्रजीत ने यह भी देखा कि हर तीली पर परेरा हाऊस नाईट क्लब छपा हुआ था।

तभी उसने माचिस की सारी तीलियां पलंग पर उलट दीं और खोल की खाली डिबिया को उलटकर देखा।

उस पर एक विज्ञापन छपा हुआ था, जो कि इस प्रकार था—

YOU SHOULD NOT MISS VISITING SCHOOL OF CERAMICS. THE TREASURE HOUSE OF ORIGINAL DESIGN. GOVERNER PESTANA RD, PANA.

(गर्वनर पेस्ताना रोड पर स्थित कांच की कलाकृतियां वाले स्कूल ऑफ सिरॉमिक को अवश्य देखें।)

विज्ञापन पढ़कर इंद्रजीत को आश्चर्य हुआ टूरिस्टों को आकर्षित करने वाला विज्ञापन एक महंगे क्लब की माचिस पर छपा हुआ था।

इंद्रजीत ने दोनों माचिसों के खोलों को पलंग पर साथ-साथ रखकर देखा तो उसे दोनों पर 451136-451160 नम्बर छपे दिखाई दिये।

वह सोचने लगा कि वो नंबर किसी टेलीफोन के थे या महज माचिस के कोड नम्बर थे।

कुछ पलों बाद जब वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाया, तो उसने माचिस के दोनों खोल एक पॉलीथीन बैग में बंद करके टायलेट की टंकी में रख दिए।

तभी दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

इंद्रजीत की नजर फौरन कलाई घड़ी पर गयी।

एक बजने वाला था।

"कौन?" वह उच्च स्वर में बोला।

"दरवाजा खोलो।" उसे सब-इंस्पेक्टर सदानंद खांडेकर की आवाज सुनाई दी।

खांडेकर की आवाज सुनकर इंद्रजीत के पसीने छूट गए।

क्या वो उसे गिरफ्तार करने आया था?

तभी दरवाजा एक बार फिर खटखटाया गया।

इंद्रजीत ने दरवाजा खोला।

Scanned by CamScanner

पुलिस की वर्दी में उसके सामने सदानंद खांडेकर ही खड़ा था।

"आप!" इंद्रजीत के मुंह से निकला—"इस वक्त।"

"ए०सी०पी० साहब ने तुम्हें याद किया है।" उसके सवाल को नजरअंदाज करके खांडेकर जल्दी से बोला—"राजी खुशी से चलोगे या मैं कोई और इंतजाम करूं।"

"ए०सी०पी० साहब मुझे सुबह भी याद कर सकते थे?"

"मैंने जो पूछा है, उसका जवाब दो। राजी खुशी चलोगे या..."

"माईबाप, पता तो चले ए०सी०पी० साहब ने खाकसार को इस वक्त क्यों याद किया?"

"मुझे नहीं पता।"

"मैं मान ही नहीं सकता कि आपको कुछ पता नहीं होगा।"

"चलो माना कि मुझे पता है, तो?"

"तो आपका फर्ज नहीं बनता कि आप मुझे बिना लाग लपेट के बताएं कि ए०सी०पी० साहब ने मुझे क्यों याद किया है?"

"तुम कोई वी०आई०पी० हो जो मैं बिना लाग लपेट के तुम्हें सारी बातें बताऊं।"

"सरकार, वी०आई०पी० तो आप हैं। हम तो आपकी प्रजा है।"

"ज्यादा बात नहीं। फटाफट चलने की तैयारी करो।"

"तुम्हारे साहब इस बार भी मेरा हवामहल बनाएंगे?"

"मतलब?"

"मेरा मतलब है कि इस बार भी तो मुझसे सख्ती से पेश आएंगे?"

"ये तुम्हें साहब से मिलने पर ही पता चलेगा।"

"वो जरूर मेरा हवामहल बनाएंगे।"

"क्यों? तुमने कोई गुनाह किया है जो वो तुमसे सख्ती से पेश आएंगे।"

"मैंने कोई गुनाह नहीं किया। आप मालिक लोग हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। आप स्याह को उजला और उजले को स्याह कर सकते हैं। आपके आगे मेरी क्या बिसात है। बेगुनाह होते हुए भी आप मुझे गुनाहगार ठहरा सकते हैं।"

"ज्यादा बातें नहीं। जो कहा जा रहा है, उस पर अमल करो। ओ०के०?"

"ओके, सरकार। चलता हूं मैं तुम्हारे साथ।"

"दैट्स लाईक ए गुड ब्वाए।"

Madan Cal Som Dcon Kutai

खांडेकर के साथ इंद्रजीत ने लिफ्ट से बाहर कदम रखा ही था कि उसकी निगाहें बरबस रिसेप्शन क्लर्क की संदेह भरी आंखों से जा टकराईं।

इंद्रजीत उसके पास से गुजरा ही था कि वो पूछ बैठा—"सर, कोई प्रॉब्लम हो तो मैं मैनेजमेंट को खबर करूं?"

"कोई प्रॉब्लम नहीं है।" इंद्रजीत बोला।

"फिर पुलिस आपको अपने साथ क्यों ले जा रही है?"

"क्योंकि मैं इनके लिए सोने का अंडा देने वाली मुर्गी जो हूं।"

"जी?"

"नहीं समझोगे! बेहतर होगा, तुम अपने काम से काम रखो।"

"सर, आपके होटल में कदम रखने के बाद पुलिस के बार बार जो चक्कर लग रहे हैं, वो मैनेजमेंट को पसंद नहीं है।"

"तो?"

"तो सर, आपकी सेहत के लिए यह ठीक नहीं है।"

"मतलब?"

"आप समझदार हैं। आप बेहतर समझ सकते हैं।"

"मैं सब समझ रहा हूं।" इंद्रजीत रूखे स्वर में बोला—"मत भूलो, गोवा शहर में और भी होटल हैं।"

"तो सर, आप किसी और होटल में शरण क्यों नहीं ले लेते?"

"ऐसा ही करूंगा। लौटकर आने दो। इस टुच्चे होटल को छोड़ने में मैं एक सेकंड भी नहीं लगाऊंगा।"

क्लर्क कुछ बोल पाता, उससे पहले खांडेकर इंद्रजीत को बाजू से पकड़कर मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गया।

बाहर आने पर इंद्रजीत की नजर एक पुलिस जिप्सी पर पड़ी, जिसकी ड्राईविंग सीट पर उस वक्त एक ड्राईवर विराजमान था।

इंद्रजीत और खांडेकर के पिछली सीट पर बैठते ही जिप्सी स्टार्ट हुई और एक झटके से आगे बढ़ गयी। कुछ पलों तक दोनों में से कोई भी कुछ नहीं बोला।

फिर खामोशी इंद्रजीत ने ही भंग की।

"इजाजत हो तो" वह बोला—"सिग्रेट पी सकता हूं?"

"बैटर नॉट।" खांडेकर रूखे स्वर में बोला—"मुझे तुम्हारे साथ सख्ती बरतने का हुक्म दिया गया था।"

"क्यों?" इंद्रजीत की आंखें सिकुड़ गयीं—"ए०सी०पी० की शान में मैंने ऐसी क्या गुस्ताखी कर दी, जो उन्होंने मेरे खिलाफ सख्ती

Scanned by CamScanner

बरतने का फरमान जारी किया?"

"मैं नहीं जानता।" खांडेकर ने रूखे स्वर में जवाब दिया और परे देखने लगा।

इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि वो अपने मुंह से कुछ फूटना नहीं चाहता था। लिहाजा उसने कोई सवाल नहीं किया और खिड़की से बाहर देखने लगा।

हालात जो रुख अख्तियार कर रहे थे, उन्हें लेकर इंद्रजीत चिंतित था।

थोड़ी देर बाद जिप्सी पुलिस हैडक्वार्टर के अहाते में जाकर रुकी।

इंद्रजीत के उतरते ही खांडेकर ने अपनी बेल्ट से हथकड़ी निकाली और फिर भावहीन स्वर में बोला—"हाथ आगे करो। ए०सी०पी० साहब तुम्हें हथकड़ियों में देखना चाहते हैं।"

"मुझे गिरफ्तार किया जा रहा है?" इंद्रजीत अप्रसन्न भाव से बोला—"जान सकता हूं, मुझे किस खुशी में गिरफ्तार किया जा रहा है?"

"ये तुम्हें ए०सी०पी० साहब से मिलने पर ही पता चलेगा।"

इंद्रजीत कुछ नहीं बोला।

हाथों में हथकड़ियां लगने के बाद वो खामोशी से खांडेकर के साथ हो लिया।

खांडेकर उसे एक हॉल में लेकर गया, जहां ए०सी०पी० चंद्रकांत, पुलिस इंस्पेक्टर गोविंद गावड़े और एक चश्माधारी युवक मौजूद था।

चश्माधारी युवक के कपड़े देखकर इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि वो कोई आला अफसर था।

खांडेकर ने ए०सी०पी० चंद्रकांत को अपनी उपस्थिति की खबर दी तो वह खिड़की से बाहर देखना छोड़कर इंद्रजीत को कुछ इस अंदाज से देखने लगा जैसे कोई शेर हिरण को देखता है।

इंस्पेक्टर गोविंद गावड़े दीवार से टेक लगाकर खड़ा हुआ था। उसकी कैप मेज पर पड़ी थी। इंद्रजीत के प्रति उसकी आंखों में सहानुभूति के भाव छुपाए नहीं छुप रहे थे।

जबकि चश्माधारी युक्क इंद्रजीत को यूं देख रहा था मानो कि वो कोई साईंटिस्ट हो और इंद्रजीत कोई बैक्टीरिया।

"इसे हथकड़ी क्यों पहनाई हुई है?" इंद्रजीत को गौर से देखने के बाद वो ए०सी०पी० से मुखातिब हुआ—"इसका जुर्म क्या है?"

"मिस्टर सुनील!" ए०सी०पी० अप्रसन्न भाव से बोला—"इस

सवाल का जवाब आप डी०एम०साब से पूछेंगे तो बेहतर होगा।"

"उनसे तो मैं पूछ ही लूंगा, फिर भी तुम इसे अरैस्ट करने की वजह बताओ।"

ए०सी०पी० कसमसाया। दो पलों के लिए उसने कुछ सोचा, फिर खांडेकर को इंद्रजीत की हथकड़ी खोलने का आदेश दे दिया।

खांडेकर तत्परता से इंद्रजीत के पास आया, उसने एक चाबी हथकड़ी के ताले में डाली, घुमाई और फिर इंद्रजीत को हथकड़ी के भार से आजाद कर दिया।

"तशरीफ रखिए, मिस्टर इंद्रजीत।" सुनील नाम का युवक नम्र स्वर में बोला—"आप मुझे लेकर जरूर हैरान हो रहे होंगे।"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

"मेरा नाम सुनील शर्मा है।" वह बोला—"मैं डी०एम० साहब का पर्सनल असिस्टेंट हूं। कुछ दिनों पहले दीपक जब उनसे मिला था, तब उसने तुम्हारा जिक्र किया था।"

"दीपक डी०एम० साहब से मिला था?" इंद्रजीत अचम्भे में पड़ते हुए बोला—"किस सिलसिले में वो डी०एम० साहब से मिला था।"

"वो किसी ड्रग रैकिट का पर्दाफाश करना चाहता था। इस सिलसिले में उसने डी०एम० साहब से मदद की मांग की थी। उस वक्त उसने यह भी बताया था कि उसका एक साथी, यानी कि तुम ड्रग रैकिट का पर्दाफाश करने में उसकी मदद करोगे।"

"दीपक ने मुझसे ऐसा कोई जिक्र नहीं किया।"

"हो सकता है, इस बावत वो तुम्हें गोवा में बुलाकर कुछ कहना चाहता हो।"

"पर आपको कैसे पता चला कि मैं ही इंद्रजीत हूं।" इंद्रजीत उलझन में पड़ते हुए बोला—"जहां तक मैं समझता हूं, दीपक के पास मेरी कोई तस्वीर नहीं थी।"

"दीपक के कातिल को सामने लाने का प्रण जिस शख्स ने किया है, वो उसके दोस्त के अलावा और कौन हो सकता है। इसी बात से मुझे पता चला था कि तुम ही इंद्रजीत हो।"

"मिस्टर सुनील, मैं अपने दोस्त के कातिल को सामने लाने के लिए हाथ-पैर मार रहा हूं तो ये कानून की निगाहों में कोई जुर्म है?"

"बिल्कुल नहीं! कौन कहता है?"

इंद्रजीत ने चंद्रकांत की तरफ इशारा किया।

सुनील शर्मा ने ए०सी०पी० को आग्नेय नेत्रों से घूरा।

"ये जो हरकतें कर रहे हैं" वह तीखे स्वर में बोला—"कानून

Scanned by CamScanner

की हद में रहकर नहीं कर रहे हैं। इनसे तो कमिश्नर साहब ही निपटेंगे। तुम इनकी चिंता मत करो। अब ये तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकते।"

एकाएक चंद्रकांत आपे से बाहर होता दिखाई देने लगा।

"मैं कमिश्नर साहब से फोन पर बात करके अभी हाजिर होता हूं।" कर्कश स्वर में कहकर वो हॉल से बाहर चला गया।

तभी सब-इंस्पेक्टर सदानंद खांडेकर चश्माधारी युवक से चिकने चुपड़े स्वर में बोला—"सुनील साब, मेरे लिए कोई हुक्म हो तो बताईए।"

"दैट्स ओके, इंस्पेक्टर।" सुनील एहसान करने वाले अंदाज में बोला—"तुम जा सकते हो।"

खांडेकर ने सुनील को सलाम ठोंका और फिर वहां से विदा हो गया।

"ए०सी०पी० चंद्रकांत इसी महीने के एंड में ट्रांसफर होकर दूसरे इलाके में जा रहा है।" सुनील बोला—"उसकी जगह गोविंद गावड़े ए०सी०पी० का काम संभालेगा। मैं समझता हूं तरक्की पाकर ए०सी०पी० के ओहदे पर बैठकर गोविंद गावड़े यकीनन तुम्हें कोपरेट करेगा।"

"इससे बढ़िया खुशी की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है।" इंद्रजीत बोला—"यहां की पुलिस कोपरेट करे तो मैं अपने दोस्त की मर्डर मिस्ट्री बेहद जल्द सॉल्व कर सकता हूं।"

"दोस्त के मर्डर के साथ-साथ तुमने उस लड़की के कातिल को भी सामने लाना है, जिसका कत्ल थोड़ी देर पहले तम्हारी उपस्थिति में बाथिंग स्टेशन में हुआ था।"

"य...ये बात आपको कैसे पता चली।" इंद्रजीत सकपकाकर बोला—"कि थोड़ी देर पहले मैं बाथिंग स्टेशन में मौजूद था?"

"इस बाबत तुम खुलासा करके बताओगे।" तभी गोविंद गावड़े कुर्सी पर बैठते हुए बोला—"कि तुम बाथिंग स्टेशन क्यों गए थे?"

"वहां जाने की कोई खास वजह नहीं थी।" इंद्रजीत तनिक संभलकर बोला—"मेरे मन में अचानक यह बात आई थी कि कातिल की खोज के लिए मैं एक बार बाथिंग स्टेशन का चक्कर लगाऊं। मैं जानता हूं कि ऐसा सोचना सरासर बेवकूफी वाला काम था, क्योंकि पुलिस आलरेडी वहां की जांच पड़ताल कर चुकी थी, लेकिन मेरा दोस्त मरा था। उसके कातिल को सामने लाने का मैंने प्रण किया हुआ था। इसलिए मैं अपनी ओर से किसी क्लू की तलाश में वहां गया था।"

"कितने बजे तुम वहां पहुंचे थे?" सुनील ने पूछा।

इंद्रजीत ने बॉथिंग स्टेशन में हुई वारदात के बारे में विस्तार सहित बताया।

पुलिस सायरन की आवाज सुनकर" गोविंद गावड़े बोला—"तुम्हें भागना नहीं चाहिए था, अगर तुम बेकसूर थे। उम्मीद करता हूं आगे से तुम ऐसी बेवकूफी हरगिज नहीं करोगे।"

इंद्रजीत ने शराफत से स्वीकार किया कि ऐसी बेवकूफी वो आईंदा नहीं करेगा।

"वैसे तुम खुशकिस्मत हो," गोविन्द गावड़े बोला—"कि तुम्हारी बेगुनाही का पुख्ता सबूत डॉक्टर की रिपोर्ट है, जो ये साबित करती है कि उस लड़की का मर्डर तुम्हारे बॉथिंग स्टेशन पहुंचने से दो घंटा पहले हो चुका था।"

"ओह!" इंद्रजीत का सिर धीरे से हिला, फिर उसने पूछा—"वैसे तुम्हें कैसे पता चला कि बॉथिंग स्टेशन में किसी लड़की की हत्या की जा चुकी है?"

"जब तुम चोरी छुपे बॉथिंग स्टेशन की दीवार फांद रहे थे, तब वहीं झाड़ियों में प्रेमालाप कर रहे एक जोड़े ने तुम्हें भीतर जाते देख लिया था। उसी के फोन करने पर हम वहां पहुंचे थे। हम समझे थे कि बाथिंग स्टेशन में प्रवेश करने वाला कातिल ही है जो किसी वजह से मौकाए वारदात पर चोरी छुपे कदम रख रहा है।"

"ओ!" इंद्रजीत का सिर समझने वाले अंदाज में हिला।

कुछ पल खामोश रहने के बाद उसने पूछा—"मरने वाली के बारे में कुछ पता चला कि वो कौन थी और वो बॉथिंग स्टेशन में क्या कर रही थी?"

गोविन्द गावड़े ने सुनील की तरफ देखा।

सुनील ने 'हां' में सिर हिलाया फिर वह धीमे स्वर में बोला—"हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि ये वो ही लड़की रही होगी जो आज सुबह तुम्हारे दोस्त को अपने साथ ले गयी थी। वो सुबह ग्यारह बजे से मरने के वक्त तक वहां छुपी, क्या करती रही, ये बात अभी हमारे हुजूर में नहीं आई है। लेकिन आएगी जरूर।"

इंद्रजीत होंठ सिकोड़कर कुछ सोचने लगा।

"क्या सोच रहे हो?" सुनील बोला।

"मैं समझता हूं वो लड़की दीपक को अपने साथ नहीं ले गयी थी।"

"ऐसा समझने की कोई पुख्ता वजह?"

"फिलहाल नहीं है। ऐनी वे, उस लड़की की पहचान हुई?"

"हां। उसका नाम हैलन है। आज दोपहर को उसकी मकान

Scanned by CamScanner

मालकिन ने उसके गायब होने की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसका कहना था कि वो रात से गायब थी। हमने उसे हैलन की लाश दिखाई तो उसने लाश फौरन पहचान ली। अब हम उस आदमी की पड़ताल और करने जा रहे हैं, जिसके यहां वो काम करती थी।"

"किसके यहां वो काम करती थी?"

"उसका नाम अभी नहीं पता लगा है, लेकिन उसके ठिकाने का पता लग गया है।"

"क्या नाम है उसके ठिकाने का?"

"स्कूल ऑफ सिरेमिक्स।"

इंद्रजीत बुरी तरह चौंका।

"स्कूल ऑफ सिरेमिक्स!" उसके मुंह से निकला—"जो पेस्ताना रोड पर स्थित है।"

"हां, वही। तुम इस स्कूल के बारे में जानते हो?"

इंद्रजीत सोचने लगा कि वो उन्हें माचिसों के बारे में बताए या नहीं। इस स्कूल का विज्ञापन उसने परेरा हाऊस की माचिसों पर ही देखा था।

कुछ पलों बाद उसने मन-ही-मन फैसला लिया कि जब तक सुनील और गावड़े उसकी विश्वास की कसौटी पर खरे उतरकर न दिखाएं, उसे दीपक के सूटकेस में से बरामद माचिसों का जिक्र हरगिज नहीं करना चहिए। कहने को गावड़े चंद्रकांत की जगह पर आने वाला था, लेकिन माईकल परेरा अपने उच्च सम्बंधों द्वारा गावड़े की जगह किसी और को बहाल करवा सकता था।

"अपनी इन्वेस्टीगेशन से" गावड़े बोला—"हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तुम्हारे दोस्त और हैलन नाम की लड़की का कत्ल उसके किसी बॉय फ्रेंड ने किया होगा। असल में उसने अपनी गर्ल फ्रेंड का तुम्हारे दोस्त के साथ बॉथिंग स्टेशन में रंगरेलियां मनाना पसंद नहीं आया होगा। इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है?"'

इंद्रजीत ने सुनील की तरफ देखा।

सुनील अपने नाखूनों को अपलक देखता न जाने किस सोच में डूबा हुआ था।

"मुझे नहीं लगता" इंद्रजीत बोला—"ऐसी कोई बात रही होगी।"

"यानी कि तुम हमारी इन्वेस्टीगेशन से मुतमईन नहीं हो?"

"सच कहें तो नहीं हूं।"

"फिर तो मुझे हैलन के बॉस से ही पूछताछ करनी पड़ेगी।" उसने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली—"थोड़ी ही देर में वे मोर्ग पहुंचने वाला है। इस बारे में मैं उससे पूछताछ करके किसी नतीजे पर पहुंचने की कोशिश करता हूं। ओके?"

"ठीक है।" सुनील बोला—"तुम हैलन के बॉस से मिलो और अपनी पूछताछ का नतीजा जल्द-से-जल्द मुझे बताओ।"

गावड़े के जगह छोड़ते ही इंद्रजीत ने उठने का उपक्रम किया तो सुनील ने उसे बैठे रहने का इशारा किया।

इंद्रजीत अपनी जगह पर फिर से बैठ गया।

गावड़े के जाने के बाद सुनील ने दरवाजा बंद किया और फिर इंद्रजीत के सामने आकर बैठ गया।

"सिग्रेट होगीं?" उसने पूछा।

जवाब में इंद्रजीत ने सिगरेट का पैकेट उसके हवाले कर दिया।

उसके साथ इंद्रजीत ने भी एक सिग्रेट सुलगाई।

कुछ पल खामोशी से कटे।

"आज सुबह तुम्हारी चंद्रकांत से बात हुई थी?" एकाएक सुनील ने पूछा।

"हां। छोटी-सी मुलाकात हुई थी।" इंद्रजीत बोला—"इस छोटी-सी मुलाकात में चंद्रकांत ने मुझे दिन में तारे दिखा दिए थे।"

"उसने माईकल परेरा का जिक्र किया था?"

"नहीं। माईकल परेरा का जिक्र मैंने किया था।"

"वैसे तुम्हें यकीन है कि तुम्हारे दोस्त को माईकल ने अपने किसी काम के लिए हायर किया था?"

"सौ फीसदी।"

सुनील ने सिग्रेट का लंबा कश लगाया।

"लेकिन" फिर वह बोला—"तुम्हारे पास इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं है।"

"दीपक ने अपने मुंह से माईकल का नाम लिया था। इससे बड़ा पुख्ता सबूत और क्या हो सकता है।"

"दीपक ने माईकल का नाम लिया था?"

"हां।"

"कब?"

इंद्रजीत ने दीपक के उस फोन के बारे में बताया, जब वो दिल्ली में मुकेश मेरठिया के ठिकाने पर था।

"हो सकता है" सुनील बोला—"तुम्हारे दोस्त ने किसी और माईकल का केस पकड़ा हो। गोवा शहर में माईकल परेरा कई हैं।"

Scanned by CamScanner

"अगर ऐसी बात होती तो माईकल परेरा मुझसे मिलने की जहमत कभी नहीं उठाता। अपनी स्पेशल मीटिंग में मिलने आए स्पेशल बंदों को बलाए ताक पर रखकर वो मुझसे मिला तो क्यों मिला? उसकी दाढ़ी में तिनका था। दामन में दाग था। तभी तो वो मुझसे मिला। जब वो दीपक को जानता नहीं था, फिर उसने मुझे भाव क्यों दिए? तो मुझे फोन पर ही रांग नम्बर कहकर बात खत्म कर सकता था।"

सुनील गहन भाव से सिग्रेट के कश लगाता रहा।

"दीपक को माईकल परेरा ने ही हायर किया था।" इंद्रजीत बोला—"अब दीपक का कत्ल किया जा चुका है। माईकल उसके कत्ल को इसलिए दबा रहा है, ताकि ये बात सामने न आ जाए कि उसने दीपक को हायर किया था।"

सुनील कुछ पलों तक सोच-विचार करता रहा।

"इसका मतलब" फिर वह बोला—"अपने दोस्त के कातिल को सामने लाए बिना तुम गोवा से किनारा नहीं करोगे?"

"ठीक समझे आप।"

"ये काम कैसे करोगे?"

"गड़े मुर्दे उखाड़ूंगा।"

"इस चक्कर में तुम्हें कुछ हो गया तो?"

"अपनी परवाह मैंने आज तक नहीं।"

"यानी कि अपने इरादों से टलने वाले नहीं हो। भले ही माईकल परेरा तुम्हारी राह में कितने ही रोड़े अटकाए।"

"भले ही माईकल के साथ-साथ पुलिस भी मेरी राह में रोड़े क्यों न अटकाए।"

"पुलिस तुम्हारी राह में रोड़े नहीं अटकाएगी। चंद्रकांत को मैं फिक्स कर दूंगा।"

"फिर तो समझो दीपक का कातिल सामने आ गया।"

"दीपक के कातिल को सामने लाने के लिए तुम्हें प्रोटेक्शन की जरूरत पड़ेगी?"

"आप चंद्रकांत को अपने कब्जे में जकड़कर रखेंगे, मेरे लिए यही बहुत बड़ी प्रोटेक्शन है।"

"माईकल के आदमियों से निपट लोगे?"

"क्यों नहीं!"

"ठीक है।" उसने कलाई घड़ी पर निगाह डाली—"अब हमें चलना चाहिए। वक्त काफी हो गया है। आमतौर पर इस समय मैं अपने बिस्तर में होता हूं।"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

सुनील अपनी जगह से उठ पाता, उससे पहले इंद्रजीत बोल पड़ा।—"एक बात समझ में नहीं आई।"

"कौन सी?"

"तुमने चंद्रकांत नाम के बिगड़ैल घोड़े की लगाम कैसे कस दी?"

"उसकी लगाम तब कसी मानी जाएगी जब हमारे डी०एम० साहब के बड़े भाई इलैक्शन में जीत जायेंगे। अभी तो मैंने फौरी तौर पर उस पर काबू पाया है।"

"यहां का पुलिस कमिश्नर डी०एम० साहब का फेवर करता है या..."

"नहीं, वो डी०एम० साहब का बिल्कुल फेवर नहीं करता। वह उसके उस हुक्म की ही तामील करता है, जो कानून की निगाह में जायज होता है। डी०एम० के किसी बेजा हुक्म को आज तक उसने नहीं बजाया।"

"इसका मतलब मैं यह मानकर चलूं कि माईकल उसे खरीद भी सकता है?"

"क्यों नहीं। बिल्कुल खरीद सकता है।"

"फिर उसके होते सोते मैं माईकल की पोल कैसे खोल सकता हूं।"

"मतलब?"

"मैं उसके सामने माईकल के खिलाफ बेस सबूत पेश करूं और वो माईकल से रिश्वत खाकर उन सबूतों को नेस्तनाबूद कर दें तो मैं दीपक के कातिल को सामने कैसे ला पाऊंगा?"

"इसके लिए तुम रत्नाकर मोरे की शरण में जाओगे तो ठीक रहेगा।"

"ये कौन है?"

"गोवा टाईम्स अखबार का चीफ एडीटर है। हमारे डी०एम० की उससे खासी बनती है। तुम उसके सामने सबूत पेश करोगे तो वो उन्हें अखबार में जरूर छापेगा। माईकल के खिलाफ जब अखबार में सबूतों की बाबत कुछ छपेगा तो माईकल कुछ नहीं कर पाएगा।"

"अगर माईकल ने रत्नाकर मोरे को खरीद लिया तो?"

"वो उसे नहीं खरीद पाएगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि माईकल की हमारे डी०एम० साहब से खटकती जो है।"

"माईकल की तुम्हारे साहब से खटकती है। रत्नाकर मोरे तुम्हारे साहब का मुलाजिम थोड़े ही है, जो वो उनका कहा मानेगा। मत भूलिए,

Scanned by CamScanner

पैसे में बहुत ताकत होती है। पैसा कुछ भी कर सकता है।"

"लेकिन मैं दावे से कहता हूं माईकल रत्नाकर को नहीं खरीद पाएगा।"

"इस पुख्ता यकीन की अहम वजह?"

"इलैक्शन में डी०एम० साहब के बड़े भाई के अपोजिशन में जिस आदमी को नेता बनाकर खड़ा किया जा रहा है, वो कोई और नहीं, माईकल ही है।"

"क्या?" इंद्रजीत चौंके बिना न रह सका—"माईकल चुनाव में खड़ा हो रहा है।"

"हां।"

"फिर तो वो कोई ऐसी हरकत करने से भी बचेगा जो कानूनन गलत होगी।"

"हां।" सुनील ने अपनी जगह छोड़ी, "लेकिन गैर-कानूनी काम करने के लिए उसके पास बंदों की कमी नहीं है।"

"अगर उसके बंदे उसके खिलाफ गवाही देने को तैयार हो जाएं तो?"

"मुश्किल है। माईकल के बंदे उसके खिलाफ कभी गवाही नहीं देंगे।"

"इसका मतलब मुझे माईकल की सियासत को ही ललकारना पड़ेगा।"

"हां, और यह काम तुम रत्नाकर मोरे की मदद से ही कर सकते हो। कलम में जो ताकत होती है, वो किसी एटम बम में नहीं होती। बात को समझ रहे हो।"

इंद्रजीत ने समझने वाले अंदाज में सिर हिलाया और अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

सुनील के जाने के बाद इंद्रजीत वहां से रवाना होने की सोच ही रहा था कि एकाएक उसे हैलन के बॉस का ध्यान आया। इस समय वो मोर्ग में था। लिहाजा उससे मिलने के लिए इंद्रजीत ने मोर्ग में जाने का फैसला किया।

उसने एक हवलदार से मोर्ग के बारे में पूछा तो उसने मोर्ग तक जाने का रास्ता बिना किसी हिचकिचाहट के बताया, लेकिन साथ-साथ उसने ये ताकीद भी की कि इंद्रजीत वहां इंस्पैक्टर गोविंद गावड़े के हुक्म जारी करने पर ही जा सकता है।

इंद्रजीत ने गोविंद गावड़े की तलाश की तो वो उसे मोर्ग में ही

खड़ा दिखाई दिया।

इंद्रजीत मोर्ग के करीब पहुंचा तो उसे स्ट्रेचर पर पड़ी एक ढकी लाश के पास एक पचास साल का आदमी और गोविंद गावड़े खड़े हुए थे। दोनों के खड़े होने के अंदाज से साफ जाहिर हो रहा था कि गावड़े आदमी से सवाल जवाब कर रहा था।

तभी गावड़े ने लाश के मुंह पर से कपड़ा उठाया और लाश का चेहरा आदमी को दिखाया।

आदमी ने लाश के चेहरे पर नजर डाली, फिर 'हां' के अंदाज में सिर हिला दिया।

इंद्रजीत ने मोर्ग में कदम रखने का सोचा, फिर न जाने क्या सोचकर वह बाहर ही ठिठका खड़ा रहा।

तभी उसे आदमी बाहर आता दिखाई दिया।

इंद्रजीत अपनी जगह से परे हटा और तेजी से झाड़ियों के पीछे सरक गया।

आदमी के जाने के बाद उसने मोर्ग में कदम रखा।

"तुम!" इंद्रजीत पर नजर पड़ते ही गोविंद गावड़े चौंककर बोला—"गए नहीं?"

"जाने की सोच रहा था।" इंद्रजीत बोला—"कि एक बात ध्यान में आ गयी।"

"क्या?"

"ये साहेबान जो अभी-अभी यहां से गए थे, क्या ये ही हैलन के बॉस हैं?"

"हां।"

"नाम क्या है उनका?"

"टॉम पास्कल।"

"मरने वाली को उन्होंने पहचाना?"

"हां। मरने वाली हैलन ही है।"

"हैलन के सम्बंध में कोई खास बात बताई उन्होंने?"

"एक ऐसी बात बताई है, जो तुम्हें घुमाकर रख देगी।"

"क्या है वो बात?"

"हैलन न केवल धार्मिक विचारों वाली युवती थी, बल्कि वो आज तक किसी आदमी के साथ कहीं बाहर नहीं गयी थी। उसका कोई बॉय फ्रेंड भी नहीं था। और वो अभी तक कुंवारी थी।"

"क्या?" इंद्रजीत बुरी तरह चौंका—"मरने वाली कुंवारी थी?"

"हां।"

"फिर ये बाथिंग स्टेशन के केबिन में कैसे पहुंच गयी? वहां तो

Scanned by CamScanner

जोड़े मौज मस्ती के लिए जाते हैं।"

"ये इनवेस्टीगेशन का मुद्दा है। तुम्हें चाहिए कि तुम इसी बात को आधार बनाकर अपनी इन्वेस्टीगेशन की शुरूआत करो।"

"अपनी इनवेस्टीगेशन तो मैं अपने हिसाब से शुरू करूंगा, लेकिन सरकार, आप भी तो कोई राय कायम कीजिए।"

"किस बाबत?"

"मरने वाली की बाबत। थोड़ी देर पहले आपका कहना था कि वो ही मेरे दोस्त को अपने साथ ले गयी थी। अब आप कह रहे हैं कि मेरे दोस्त को वो अपने साथ नहीं ले गयी थी।"

"मैंने ऐसा कब कहा?"

"आपने नहीं कहा, लेकिन आपकी बातों का लुब्बे लुबाब यही है।"

"मैं जानता हूं कि मरने वाली तुम्हारे दोस्त को अपने साथ नहीं ले गयी थी। लेकिन उसकी लाश तुम्हारे दोस्त के केबिन में पायी गयी है। इस लिहाज से उसकी और तुम्हारे दोस्त की कोई-न-कोई कंटीन्यूटि जरूर थी। कंटीन्यूटि नहीं होती, तो वो किसी भी कीमत पर उसके केबिन में नहीं पाई जाती।"

"ये भी तो हो सकता है कि कातिल ने किसी खास मकसद से मरने वाली की लाश केबिन में प्लांट की हो।"

"कातिल खामखाह इतना बड़ा रिस्क क्यों लेने लगा?"

"खामखाह नहीं, खास मकसद के तहत। और उसका खास मकसद यकीनन ये बात साबित करना रहा होगा कि मरने वाली मेरे दोस्त को अपने साथ ले गयी थी।"

"जबकि मरने वाली तुम्हारे दोस्त को अपने साथ नहीं ले गयी थी।"

"दैट्स राईट। यही कहना चाहता हूं मैं। कातिल पुलिस को गुमराह करना चाहता है। वो उस लड़की को सेफ रखना चाहता है, जो मेरे दोस्त के कत्ल की प्राईम सस्पेक्ट है।"

गोविंद गावड़े ठोड़ी खुजाकर कुछ सोचने लगा।

"तो आपका क्या कहना है?" कुछ पलों बाद इंद्रजीत गावड़े के चेहरे को एकटक देखता हुआ बोला।

"शायद तुम ठीक कहते हो।" गोविंद गावड़े आंखें सिकोड़कर बोला—"कातिल ने यकीनन पुलिस को गुमराह करने की कोशिश की है। मैं इस बात को तहकीकात करते समय ध्यान में रखूंगा।"

"एक बात और।"

"पूछो।"

"टॉम पास्कल नाम का आदमी, जो थोड़ी देर पहले तुमसे बतिया रहा था, मुझे इस पर भी शक है। तुम अपने बॉस इसके पीछे लगवाओगे तो कोई न कोई काम की बात सामने जरूर आएगी।"

"टॉम पास्कल तो मुझे सरासर निर्दोष लगा। तुम उस पर शक क्यों कर रहे हो?"

"पता नहीं क्यों? लेकिन मेरा दिल कह रहा है कि इस कत्ल में उसका हाथ जरूर है।"

"फिर ये नेक काम तुम ही क्यों नहीं करते।"

"सरकार, मेरे पास समय का बहुत तोड़ा है।"

"पुलिस के पास भी समय का बहुत तोड़ा है। जब हमें उस पर कोई शक ही नहीं है, फिर हम अपने बॉस खामखाह उसके पीछे क्यों लगाने लगे।"

"सरकार, मैंने आपको एक नेक राय दी है।"

"ये राय मुझे पसंद नहीं।"

"ठीक है, आलाहजूर।" इंद्रजीत ने एक गहरी सांस छोड़ी—"इस बाबत मैं ही कुछ करता हूं।" तभी गोविंद गावड़े ने आगे बढ़कर मोर्ग की लाईटें बुझा दीं।

इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि गोविंद गावड़े अपनी ओर से बात का समापन करना चाहता था। उसने गावड़े का अभिवादन किया और फिर मोर्ग से बाहर निकल आया।

एक टैक्सी पर सवार होकर वह होटल पहुंचा।

रिसेप्शन के पास से वह गुजर ही रहा था कि उसे क्लर्क की आवाज ने ठिठकने को मजबूर कर दिया।

"सुबह बात करना।" इंद्रजीत व्यस्त भाव से बोला—"इस समय मैं थका हुआ हूं।"

"सर, मैं यह कहना चाह रहा था कि..."

"माई डियर।" इंद्रजीत उसकी बात काटते हुए बोला—"मैंने कहा न कि सुबह बात करना। इस समय मैं बहुत थका हुआ हूं।"

क्लर्क कुछ बोल पाता, उससे पहले इंद्रजीत तेजी से लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

लिफ्ट पर सवार होकर वह सेकेंड फ्लोर पर पहुंचा।

अपना रूम खोलकर उसने भीतर कदम रखा ही था कि सहसा उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके सिर पर वजनी हथौड़ा दे मारा हो।

Scanned by CamScanner

उसके कमरे का सारा सामान अस्त-व्यस्त था।

ऐसा जान पड़ता था जैसे किसी ने वहां की जमकर तलाशी ली थी।

इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि तलाशी लेने वाला वहां से क्या हासिल करना चाहता था।

वह लपककर बाथरूम में दाखिल हुआ।

उसने वॉटर टैंक का ढक्कन हटाया तो उसे पॉलीथीन बैग में सुरक्षित रखी माचिस सही सलामत दिखाई दी।

इससे पहले वह वॉटर टैंक का ढक्कन बंद कर पाता, उसकी नजर माचिसों के खोलों पर पड़ी।

खोलों पर सीरियल नंबर मौजूद नहीं थे।

यानी कि तलाशी लेने वाला अपना काम कर चुका था।

उसने नंबर वाले खोल अपने कब्जे में किए थे और उनकी जगह दूसरे खोल रख दिए थे।

एकाएक इंद्रजीत को यकीन होने लगा कि दीपक का कत्ल इन्हीं माचिस के खोलों की वजह से हुआ था।

अब उसे माचिसों के खोलों की मिस्ट्री सॉल्व करनी थी।

अगले दिन साढ़े ग्यारह बजे के आस-पास इंद्रजीत की आंख खुली।

रात को जब उसने रिसेप्शन क्लर्क को तलाशी की बाबत बताया था, उसने फौरन से पेश्तर पुलिस को फोन कर दिया था।

तब इंद्रजीत की मुलाकात एक बार फिर सब-इंस्पेक्टर सदानंद खांडेकर से हुई थी।

खांडेकर के पूछने पर कि उसका क्या-क्या सामान चोरी हुआ था, तब इंद्रजीत ने माचिस के खोलों की बात छुपाकर साफ लफ्जों में कहा था कि उसका कोई सामान चोरी नहीं हुआ था।

इंद्रजीत के जवाब पर खांडेकर को सख्त हैरानी हुई थी।

तब उसके आदेश पर फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट को मौकाए वारदात पर बुलवाया गया था और इंद्रजीत को दूसरे रूप में शिफ्ट कर दिया गया था।

उस वक्त इंद्रजीत अच्छी तरह से जानता था कि फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट को वहां से कुछ नहीं मिलने वाला था।

आंख खुलने पर इंद्रजीत ने इंटरकाम पर मैसेज देकर अपने लिए कॉफी और टोस्ट मंगवाए। इसके बाद वो फ्रेश होने के लिए बाथरूम

में चला गया।

शेव, स्नान करने बाद वह फिर से पलंग पर आ बैठा और कॉफी का इंतजार करने लगा।

'परेरा हाऊस और स्कूल ऑफ सिरेमिक्स में कोई-न-कोई कनेक्शन जरूर है।' एकाएक वह बड़बड़ाया—'इस कनेक्शन की बाबत दीपक जान गया था, तभी उसका कत्ल किया गया।'

तभी एक वेटर कॉफी लेकर वहां उपस्थित हो गया।

वेटर के जाने के बाद इंद्रजीत काफी चुसक रहा था कि तभी फोन की घंटी बज उठी।

फोन करने वाला इंस्पेक्टर गोविंद गावड़े था।

"रात को तुम्हारे रूम की किसी ने तलाशी ली थी?" उसने पूछा।

"हां।" इंद्रजीत ने सहज भाव से जवाब दिया।

"ऐनी आईडिया। ये काम किसका हो सकता है?"

"जनाब, मुझे आईडिया होता तो मैं रात को ही खांडेकर को बता देता। जहां तक मैं समझता हूं, तलाशी लेने वाले वे ही लोग हैं, जिन्होंने दीपक के कमरे की अच्छी तरह तलाशी ली थी। उन्हीं लोगों ने किसी खास चीज के लिए मेरे कमरे पर धावा बोला था।"

"और वो खास चीज क्या हो सकती है?"

"जानता होता तो खांडेकर साहब को ही बता देता।"

"यानी कि नहीं जानते?"

"नहीं जनाब! मैं बिल्कुल नहीं जानता।" इंद्रजीत ने सफेद झूठ बोला।

"कोई और खास बात?"

"फिलहाल कोई खास बात नहीं है।"

"होगी तो बताओगे?"

"क्यों नहीं, बिल्कुल बताऊंगा।"

"इसी बीच तुम कातिल के सुए का शिकार हो गए तो?"

"तो मेरी आत्मा कातिल का नाम चीख-चीखकर सबको बताएगी।"

"मैं आत्माओं वात्माओं पर यकीन नहीं करता।"

"इसका मतलब मुझे जीते जी कातिल को सामने लाना होगा?"

"हां।"

"ठीक है। उसे सामने लाने के लिए मैं हाथ-पैर मारता हूं।"

"मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।"

"शुक्रिया।"

"मैंने फोन इसलिए किया था कि आज एक प्रैस कांफ्रेंस है,

Scanned by CamScanner

जिसमें दीपक और हेलन के कत्लों पर तबसरा किया जाएगा। टाईम मिले तो आ जाना।"

"मैं टाईम निकालकर पहुंचूंगा। तुम बस वक्त बता दो।"

गावड़े ने वक्त बताया।

इसके बाद वो जल्दी से बोला—"हेलन के मुताल्लिक हमने थोड़ा बहुत जांच पड़ताल की थी। वो सच में एक शरीफ लड़की थी। उसका कोई बॉय फ्रेंड नहीं था। वह आज तक किसी अजनबी के साथ कहीं बाहर नहीं गयी थी। और तो और, मेरे सुनने में यह भी आया था कि वह अजनबियों को मुंह ही नहीं लगाया करती थी।"

"जबकि उसने मेरे दोस्त को मुंह लगाया।"

"हां! हमने इसी मिस्ट्री को सॉल्व करना है कि उसने तुम्हारे दोस्त को मुंह क्यों लगाया? ऐसी क्या वजह थी जो वो उसके केबिन में पहुंची थी। इसके अलावा मैं आईस पिक से वार करने वालों की एक लिस्ट तयार कर रहा हूं। उम्मीद है, जल्द ही ये काम की निपट जाएगा।"

"आईस पिक के बारे में कोई कारआमद जानकारी आप मुझे देंगे?"

"जरूर।"

"थैंक्स।"

फोन कट गया।

इंद्रजीत, गोविंद गावड़े के दिए जा रहे सहयोग से मुतमईन था।

कॉफी खत्म करने के बाद इंद्रजीत ने दीपक की असिस्टेंट कम सेक्रेट्री रिया को फोन किया।

"दीपक की वाईफ कैसी है?" उसने पूछा।

"भली चंगी है।" रिया बोली।

"भली चंगी से तुम्हारा मतलब?"

"ऐसा नहीं लगता कि दीपक की मौत का उसे अफसोस रहा हो। कल शाम को मैंने उसे एक आदमी के साथ हंसते बतियाते देखा था।"

इंद्रजीत चौंका।

"कौन था वो?" उसके मुंह से निकला।

"मैं नहीं जानती।"

"तुमने संगीता से पूछा नहीं।"

"नहीं।"

"तुम्हें पूछना था।"

Scanned by CamScanner

"पूछना तो था, लेकिन उसकी नाराजगी की वजह से मैं कुछ नहीं पूछ पाई।"

"नाराजगी की वजह से! वो क्या तुम से नाराज है?"

"हां।"

"क्यों नाराज है?"

"किसी ने, पता नहीं किस कमीने ने उसके कानों में ये बात डाल दी थी कि दीपक और मैं हर शनिवार को पिकनिक मनाने लोनावाला जाते थे। एक इसी बात से उसने मुझसे बात करना बंद किया हुआ है।"

"इसका मतलब मामला गंभीर है?"

"कह सकते हैं।"

"फिर भी तुम उस आदमी के बारे में कुछ जानने की कोशिश करो।"

"ठीक है। मैं कोशिश करती हूं। उससे मुतल्लिक कोई बात सामने आएगी तो मैं फोन कर दूंगी।"

"फोन करने की जहमत मत करना। मौका मिलते ही मैं ही फोन कर लूंगा। ओके?"

"बाई।"

फोन रखकर इंद्रजीत ने समुद्र में नहाने का मन बनाया। स्विमिंग सूट एक बैग में डालकर वह कमरे से बाहर आया। लिफ्ट द्वारा वह नीचे लॉबी में पहुंचा।

इंद्रजीत रिसेप्शन क्लर्क प्रकाश बर्वे के पास से गुजर ही रहा था कि उसने इंद्रजीत को आवाज देकर अपने पास बुला लिया।

"मिस्टर इंद्रजीत," वह हिचकिचाकर बोला—"मुझे डर है कि..."

"जानता हूं। कुछ मत बोलो।" इंद्रजीत बोला—"तुम्हारे पास अचानक कई गेस्ट आ गए हैं, इसलिए तुम मेरा कमरा इस्तेमाल करना चाहते हो।" इंद्रजीत व्यंग्य से मुस्कराया—"यही कहना चाहते हो न।"

"स...सर वो बात ये है कि..."

"मैं तुम्हें दोष नहीं दे रहा। मैं किसी को दोष नहीं दे रहा। मैं बस अपनी फूटी किस्मत को दोष दे रहा हूं। डोंट वरी। तुम्हारे होटल में मैं बस आज की रात और बिताना चाहूंगा। एक रात गुजारने की इजाजत मिलेगी?"

"क्यों नहीं, सर बिल्कुल मिलेगी। लेकिन कल सुबह आपको यहां से डेफिनेटिली चैक आऊट करना होगा।"

"नो प्रॉब्लम। आई एम ग्लैड।"

Scanned by CamScanner

"सर, आपके साथ हम जो विहेव कर रहे हैं, उसके लिए हम शर्मिंदा हैं।" वह सच में शर्मिंदा दिखाई देने लगा—"हमारे होटल में महज चौबीस घंटे में पुलिस चार बार आ चुकी है। वो भी आपकी वजह से। इसलिए हमें न चाहते हुए भी..."

"आई अंडरस्टैंड।" इंद्रजीत ने उसका कंधा थपथपाया—"डोंट वरी। कल तुम्हारा रूम खाली हो जाएगा।"

"दैट्स वैरी नाईस ऑफ यू मिस्टर इंद्रजीत।"

अपने सिर को कई बार हौले से जुम्बिशें देकर इंद्रजीत होटल से बाहर निकला और अपनी मारूति कार में बैठकर बीच की तरफ उड़ चला।

मीरामर बीच पर इंद्रजीत लगभग बारह बजे के आस-पास पहुंचा।

बीच पर पर्यटकों की भीड़ थी। जगह-जगह धूप के छाते लगे हुए थें, जिनकी छाया में अर्धनग्न सुंदरियां अपने जिस्म के उभारों की नुमाइशें करने में जरा भी शर्म या झिझक महसूस नहीं कर रही थीं।

कुछ जोड़े लहरों पर खेल रहे थे। कुछ फुटबाल को पानी की लहरों पर फेंककर, तैरकर उसे फिर से लपककर आनंद ले रहे थे।

एक सुनसान जगह पर इंद्रजीत ने कपड़े बदले और अपने एथलीटों जैसे मजबूत शरीर की नुमाईश करता लहरों की तरफ बढ़ गया।

लहरों की तरफ बढ़ते वक्त इंद्रजीत के कानों में एक लड़की की मदभरी सिसकारी सुनाई पड़ी।

अपनी गर्दन को घुमाकर इंद्रजीत ने छाते के नीचे बैठी सैक्सी युवती को देखा तो लड़की फौरन एक मादक अंगड़ाई ली और आमंत्रण भरी निगाहों से इंद्रजीत को देखते हुए अपनी बाहिनी आंख दबा दी।

पहले तो इंद्रजीत सकपकाया, फिर तनिक संभलकर लंबे डग भरकर उसके करीब पहुंचा।

"हाय सैक्सी।" इंद्रजीत के करीब पहुंचते ही वो मदभरी आवाज में बोली—"मुंहजोर घोड़ी की सवारी करेंगे?"

बड़े अंदाज से इंद्रजीत उसके करीब घुटनों के बल बैठा और उसकी मदभरी आंखों में आंखें डालता हुआ बोला—"ये सरकारी सांड मुंहजोर घोड़ी की सवारी बड़े शौक से करेगा। लेकिन एक शर्त पर।"

"तुम्हें हासिल करने के लिए" लड़की आंखें मूंदकर बोली—"मैं सारी शर्तें बिना सुने मानने के लिए तैयार हूं। हुक्म करो।"

उपहास भरे अंदाज से मुस्कराकर इंद्रजीत ने लड़की के कान में कुछ कहा।

सुनने के बाद लड़की की आंखें आश्चर्य से फटती चली गयीं। वह इंद्रजीत को यूं देखने लगी मानो कि वो किसी दूसरी ग्रह का प्राणी हो।

फिर उसकी निगाहें बजाए खुद इंद्रजीत के नाजुक अंग की ओर उठ गयीं।

"तुम्हारा इंजन देखकर लगता तो नहीं" वह अविश्वास से बोली—"कि ये आठ इंच का होगा।"

"अभी इंजन ठंडा है।" इंद्रजीत बड़े अंदाज से मुस्कुराते हुए बोला—"गर्म होने पर ये अपनी करामात दिखाता है। कहो तो—मैं इसे गर्म करूं?"

"मैंने आज तक" एकाएक लड़की घबराकर बोली—"आठ इंच का इंजन गर्म होते नहीं देखा। मुझे खुशी भी है कि मेरी जरा-सी हां पर मुझे करामाती चीज देखने को मिलेगी। लेकिन...लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"वो करामती चीज मुझे नुकसान पहुंचाए बिना नहीं रहेगी।"

"हां। नुकसान तुम्हें डेफिनेटिली पहुंचेगा।" इंद्रजीत व्यंग्यभरे स्वर में बोला—"मेरे इंजन को जिस किसी लड़की ने गर्म किया है, उसकी शामत टांके लगवाने की आई है। तुम्हें टांके लगवाने का शौक है तो बता दो। मैं अभी..."

"नहीं, नहीं।" लड़की झुरझुरी लेकर बोली—"मेरी शादी होने वाली है। मेरे होने वाले पति को टांके के निशान दिख गए तो वो मुझ पर राशन पानी लेकर चढ़ जाएगा।"

"इसका मतलब मुंहजोर घोड़ी एक टाऊन बुल (सरकारी सांड) के सामने हथियार डाल रही है।"

लड़की ने अनमने ढंग से सहमति में सिर हिलाया।

"तो मुझे इजाजत है?" इंद्रजीत बोला।

"ऐसा नहीं हो सकता कि जाने से पहले तुम अपना करामाती इंजन मुझे हाथों से चलाने का मौका दे दो।"

"नो डियर, ऐसे काम मुझे पसंद नहीं।"

"मैं तुम्हें तुम्हारी फीस अदा करने के लिए तैयार हूं।"

"नो मिस! ये लक्की बॉस्टर्ड ऐसे काम फीस के बलबूते पर नहीं, बल्कि अपने इंजन की हॉर्स पावर सहने वाले कल पुर्जों की कुव्वत देखकर ही करता है। कुछ समझीं?"

लड़की का सिर बेमन से हामी से हिला।

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत ने उसके पुष्प उरोजों को अंगुलियों से ठकठकाया। फिर (वासना की आग में जलता छोड़ समुद्र की तरफ बढ़ गया।

पूरे आधे घंटे तक समुद्र में तैराकी करने के बाद वो किनारे पर आया तो उसे एक लड़की हाथ का इशारा करती दिखाई दी।

इंद्रजीत ने यह सोचकर कि वो लड़की भी सैक्स की मारी होगी, उसके हाथ हिलने पर कोई गौर नहीं किया और अपने बदन को तौलिए से पौंछने लगा।

उसने अपने शरीर को तौलिए से अच्छी तरह से पौंछा ही था कि एकाएक पीठ पर पड़े एक हाथ की धौल ने उसे चौंकाकर रख दिया।

तेजी से घूमकर उसने हाथ मारने वाले को देखा तो उसकी आंखें हैरत से फटती चली गयीं।

इंद्रजीत की पीठ पर हाथ मारने वाली कोई और नहीं माईकल की हसीन-तरीन लड़की रवीना परेरा थी।

एकबारगी इंद्रजीत को यकीन ही नहीं हुआ कि वो जो देख रहा है, सच है।

उसने अपनी आंखें मली। आंखें मलने के बाद भी उसे रवीना सामने खड़ी दिखाई तो वह बोले बिना न रह सका—"मैं कहीं सपना तो नहीं देख रहा? मेरे सामने मालिका ए हुस्न रवीना परेरा ही खड़ी है?"

जवाब में रवीना खिलखिला कर हंसी।

"तुम्हारे सामने रवीना ही है।" वह चांदी जैसे खनकते स्वर में बोली।

इंद्रजीत ने उसे सिर से पांव तक देखा।

उस घड़ी वो सफेद रंग का स्विम सूट पहने थी और निहायत ही हसीन लग रही थी।

"क्या देख रहे हो?" वो बोली।

"क...कुछ नहीं।" इंद्रजीत सकपकाया-सा बोला।

"झूठ मत बोलो। तुम्हारी नजरें ही इस बात की चुगली कर रही हैं कि तुम मेरी फिगर देख रहे हो। अपनी पैनी निगाहों से यह जानने की कोशिश कर रहे हो कि मेरी छाती, कमर और कूल्हों का माप क्या है। एम आई राईट?"

"यू आर रांग। मैं कुछ और देख रहा था।"

"क्या देख रहे थे?"

"मैं ये देख रहा था कि मेरे सामने वो ही रवीना खड़ी है, जिसने

पहले तो मेरी मदद करने से हाथ झाड़ लिए थे, फिर एकदम से मेरी मदद करने के लिए आनन-फानन परेरा हाऊस पहुंच गयी थी।"

"मेरा मदद करना बुरा लगा?"

"नहीं। अच्छा लगा। थैंक यू फॉर बीइंग हैल्पफुल लास्ट नाईट। रात तुमने मेरी खातिर जो तकलीफ उठाई, उसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।"

"इट्स ओ०के०।"

वह रेत पर बैठी तो इंद्रजीत उसके पहलू में बैठ गया।

"कल रात मेरा क्लब में अचानक जाना हुआ था।" वह बोली—"असल में हुआ कुछ यों था कि तुम्हारे जाने के बाद मैं इसी बात पर सिर धुनने लगी थी कि तुम्हारा दोस्त क्लब में कैसे पहुंचा होगा। काफी मायापच्ची के बाद भी जब मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुंची तो मैंने क्लब का वो रजिस्टर चैक करने का फैसला किया, जिसमें वहां प्रवेश करने वाले हर शख्स का नाम दर्ज किया जाता था।"

"मेरे लिए जो तकलीफ उठाई, उसके लिए एक बार और शुक्रिया।"

"इट्स माई प्लेजर।"

"तुमने आज का अखबार देखा?"

"क्यों पूछ रहे हो?"

"बताओ तो सही।"

"कहीं तुम उस लड़की के मर्डर के बारे में तो नहीं जानना चाहते जो बीच के केबिन नम्बर पांच में मरी पाई गयी थी?"

"यू आर राईट। मैं उसी के बारे में जानना चाहता हूं।"

"मुझे तो वो वही लड़की जान पड़ती है, जिसके साथ तुम्हारा दोस्त नीचे की तरफ रवाना हुआ था।"

"तुम्हारी राय में उसका मर्डर किसने किया होगा?"

"मुझे लगता है उसका मर्डर नहीं हुआ, बल्कि उसने खुदकुशी की है।"

"खुदकुशी की है।" इंद्रजीत चौंककर बोला—"उसके पास खुदकुशी की क्या वजह हो सकती थी?"

"तुम्हारा दोस्त डिटेक्टिव था। मैंने सुना था कि प्राइवेट डिटेक्टिव आमतौर पर अपने क्लाईंट्स को ब्लैकमेल भी करते हैं। हो सकता है, तुम्हारा दोस्त उस लड़की को ब्लैकमेल कर रहा हो और ब्लैकमेलिंग से निजात पाने के लिए उसने तुम्हारे दोस्त का कत्ल किया हो, फिर सजा के डर से आत्महत्या कर ली हो।"

"मुझे नहीं लगता कि ऐसा हुआ होगा।"

Scanned by CamScanner

"क्यों?"

इंद्रजीत हिचकिचाया।

"जवाब दो। ऐसा क्यों नहीं हो सकता।"

"क्योंकि मैं अपने दोस्त को अच्छी तरह से जानता हूं। वो ब्लैकमेलर नहीं था।"

"फिर लड़की ने उसका कत्ल क्यों किया?"

"छोड़ो ये किस्सा! मेरे दोस्त का कत्ल किसने किया—क्यों किया? ये बात जल्द अज जल्द सामने आ जाएगी। तुम ये बताओ कि तुम स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स के बारे में कुछ जानती हो?"

"तुम उस स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स का जिक्र तो नहीं कर रहे, जहां कांच की कलाकृतियां बिकती हैं। जो कि पेस्ताना रोड पर स्थित हैं।"

"मैं उसी स्कूल का जिक्र कर रहा हूं। कुछ जानती हो उसके बारे में?"

"ज्यादा नहीं जानती। फिर भी थोड़ा बहुत जानती हूं। टॉम पास्कल के डिजाईन किए कुछ शोपीस मुझे पसंद आए थे, उन्हीं को खरीदने के लिए मैं एक दो बार उसके स्कूल में गयी थी।"

"पिछली बार तुम उसके स्कूल में कब गयी थीं?"

"पिछले हफ्ते ही मेरा चक्कर लगा था। एक मैग्जीन में मैंने टॉम का डिजाईन किया कांच का एक शेर देखा था। उसी को खरीदने के लिए मैं वहां गयी थी।"

"जब तुम वहां गयी थीं, तुमने मरने वाली को वहां काम करते देखा था?"

"मुझे याद नहीं। वहां बहुत लड़कियां थीं।"

इंद्रजीत ने रवीना के चेहरे को जायजा लेने वाली निगाहों से देखा तो वो उसे सच बोलती दिखाई दी।

"कांच की कलाकृतियों का" इंद्रजीत बोला—"मुझे भी बहुत शौक है। बेहतर कलाकृतियां मुझे आकर्षित करती हैं। तुम मुझे वहां ले जा सकती हो?"

"क्यों नहीं! लेकिन मुझे नहीं लगता कि टॉम की बनाई कलाकृतियों को खरीदने की तुम्हारी हैसियत होगी। यू नो, उसकी कलाकृतियों की कीमत हजारों में नहीं, बल्कि लाखों-करोड़ों में होती हैं।

"करोड़ों की मेरी हैसियत नहीं है। लेकिन लाखों की हैसियत मेरी जरूर है। लाख दो लाख की कोई कलाकृति मुझे पसंद आई तो मैं उसे खरीदने से गुरेज नहीं करूंगा।"

कुछ पल खामोशी रही।

इंद्रजीत समझ नहीं पाया कि रवीना कुछ सोच रही थी या उसे अपने साथ ले जाने में हिचकिचाहट महसूस कर रही थी। आखिर वो माईकल की लड़की थी। उस माईकल की जिससे इंद्रजीत पंगा ले चुका था।

"ओके।" कुछ पलों बाद वह बोली—"अगली बार जब मैं जाऊंगी तो जाने से पहले तुम्हें इत्तला कर दूंगी। वैसे तुम अभी तक होटल मयूर में ठहरे हुए हो?"

इंद्रजीत को फौरन याद आया कि उसे कैसे पता चला कि वो होटल मयूर में ठहरा हुआ है? कल रात इसी सवाल ने उसे परेशान किया था।

"मुझे याद आया।" वह बोला—"ये बात कल रात ही मैं तुमसे पूछने वाला था। तुम्हें कैसे पता चला कि मैं होटल मयूर में ठहरा हुआ हूं?"

वह हंसी।

उसकी मुस्कान और चमकीले दांत इंद्रजीत को बेहद भाए।

"सोचो।" वह रहस्यभरे स्वर में बोली—"मुझे कैसे पता चला?"

"मैंने काफी सोचा, लेकिन याद नहीं आया। जहां तक मुझे याद है, मैंने तुम्हारे सामने इस बात का जिक्र नहीं किया था कि मैं होटल मयूर में ठहरा हुआ हूं।"

"यानी कि हार मानते हो?"

"बात ही हार मानने वाली है।"

"फिर भी दिमाग पर जोर डालो। शायद कुछ याद आ जाए।"

"कहा न मैंने कल रात बहुत भेजा गलाया था।"

"अच्छा ये बताओ—गोवा में कदम रखने के बाद तुमने इस बात का जिक्र किससे किया था कि तुम होटल मयूर में ठहरे हुए हो?"

इंद्रजीत दिमाग पर जोर डालकर सोचने लगा।

कुछ पलों बाद वह आंखें सिकोड़कर बोला—"मैंने जब तुम्हारे डैडी के घर पर फोन किया था, तब उनके बटलर से बात करने के बाद ही मैंने उसे होटल का टेलीफोन नम्बर दिया था।" एक पल रुककर इंद्रजीत फिर बोला—"इसका मतलब तुम्हें मेरे बारे में उसी से पता चला?"

"दैट्स राईट।" रवीना ने चुटकी बजाई—"कल रात ही मैंने बटलर से तुम्हारा पता ठिकाना जाना था। तुमने मुझसे डैडी से मिलने का जिक्र किया था। मुझे यकीन था कि वो तुम्हारा पता ठिकाना जरूर जानता होगा। यू नो, डैडी जब भी किसी से मिलते हैं, उसका पता

Scanned by CamScanner

ठिकाना जरूर जानना पसंद करते हैं।"

"ओह! तो ये बात है। मैं खामखाह कशमकश में डूबा रहा। कल रात मैं इसी कशमकंश में डूबा नहीं होता तो शायद होटल वालों को जरूर पटा लेता।"

"किस सिलसिले में?"

इंद्रजीत ने उसे होटल छोड़नी वाली दास्तान सुनाई।

"तो होटल छोड़ दो।" रवीना बोली—"तुम्हें होटलों की कमी है?"

"कमी तो नहीं है। लेकिन वो होटल मुझे सूट करता है। वो शायद महंगा नहीं है।"

"गोवा में और भी कई सस्ते होटल हैं।"

"ऐसे किसी सस्ते होटल के बारे में तुम जानती हो?"

"सॉरी।" वह खेदभरे स्वर में बोली—"मुझे कोई नॉलिज नहीं। वैसे तुम गोवा में कितने दिनों के लिए ठहरे हो?"

"जब तक मैं अपने दोस्त के कत्ल की मिस्ट्री सॉल्व नहीं कर लूंगा, मैं गोवा नहीं छोड़ूंगा।"

"भले ही महीना लग जाए?"

"भले ही साल लग जाए।"

"इसका मतलब मरने वाला सच में तुम्हारा खास दोस्त था?"

"दीपक मेरी जान था। उसके साथ मेरा बचपना और जवानी बीती है। कालेज के दिनों में उसने मेरी माली मदद करके मेरी पढ़ाई जारी न करवाई होती तो मैं आज की तारीख में कहीं पटरी पर भुट्टे बेच रहा होता। आज मैं जो कुछ भी हूं, उसी की बदौलत हूं। खुद को एहसान फरामोश नहीं कहलवाना चाहता, इसलिए उसके कातिल को सामने लाने के लिए मैंने सिर पर कफन बांधा हुआ है।"

"तुम्हारी दोस्ती का जज्बा मुझे अच्छा लगा।" वह तारीफ भरे स्वर में बोला—"आई लाईक युअर फ्रेंडशिप स्पिरिट! मैं ऐसे लोगों से बिल्कुल नहीं मिली—जो दोस्त की खातिर जान देने का जज्बा रखते हों—मेरा तुम्हारे लिए कुछ करने का मन कर रहा है।"

इंद्रजीत होठों ही होठों में बुदबुदाया—"फिर इसी बात पर एक पप्पी हो जाए?"

"कुछ कहा।" वह फौरन चौंककर बोली।

"न...नहीं तो।"

"कुछ तो कहा है।"

"हां, अपने आप से कुछ कहा था।"

"क्या?"

"जानना चाहती हो?"

"तभी तो पूछ रही हूं।"

"बुरा तो नहीं मानोगी?"

"मैं एक आजाद ख्याल की लड़की हूं। छोटी-मोटी बातों का मैं बुरा नहीं माना करती। खुलकर कहो। क्या कहा था तुमने अपने आप से?"

"मैंने कहा था कि...अगर मैं तुम्हें पसंद आया तो...तो...तो..."

"हां, हां...तो?"

"छोड़ो! तुम्हें बुरा लगेगा।"

"कहा न...नहीं लगेगा। अब कह भी चुको।"

"असल में बात ये है कि जो शख्स मुझे अच्छा लगता है—यानी कि जो लड़की मेरे दिल को भाती है—मेरा मन छूटते ही उसके हाथ चूमने का करता है।"

"ओह! तो तुम मेरा हाथ चूमना चाहते हो?"

"चूमना तो कुछ और चाहता हूं, लेकिन फिलहाल हाथ चूमकर ही गुजारा कर लूंगा।"

रवीना खुलकर हंसी और काफी देर तक हंसती रही।

कुछ देर बाद उसकी हंसी थमी तो इंद्रजीत उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"तो फिर क्या ख्याल है?"

रवीना एक बार फिर मुंह पकड़कर हंसी।

"क्या बात है?" इंद्रजीत शोखीभरे लहजे में बोली—"बड़ी हंसी आ रही है।"

"बात ही हंसी वाली है।" वह अपनी हंसी पर काबू पाकर बोली।

"कैसे?"

"जिस आदमी की खिदमत में चीनी का भरा बोरा रखा हो—वह उसमें से केवल एक चुटकी चीनी की मांग करे तो हंसी आएगी ही।"

"यानी कि..." इंद्रजीत की बांछें खिलीं—"मैं चीनी के बोरे में मुंह मार सकता हूं।"

"ये मैंने कब कहा?"

"अभी तो कहा।"

"नहीं कहा।"

"कहा तो था। भूल भी गयीं।"

"छोड़ो। कोई और बात करो।"

"मेमसाब, मैंने आपका कुछ पकड़ा भी है, जो छोड़ने की बात

Scanned by CamScanner

कर रही हो?"

रवीना ने बड़े प्यार से इंद्रजीत की नाक पकड़ी और बोली—"टॉप के हरामी जान पड़ते हो।"

"टॉप का नहीं—खुशकिस्मत हरामी जरूर कह सकती हो।"

"कैसे?"

"क्योंकि इस लक्की बास्टर्ड की नाक आपके हाथ में जो है।"

"यू मीन।" वह तेजी से बोली—"यू ऑर रियली ए लक्की बास्टर्ड?"

"यस माई लेडी लार्ड।"

रवीना एक बार फिर खिलखिलाकर हंसी।

"तो क्या ख्याल है?" इंद्रजीत बेसब्रेपन से बोला।

"पहले तुम अंगुली तो पकड़ो, फिर पाऊंचे तक पहुंचना।"

"य...यानी कि..." इंद्रजीत खुश होकर बोला—"मैं तुम्हारी पप्पी ले सकता हूं?"

"यहां नहीं।"

"फ...फिर कहां?"

"मेरे बंगले पर।"

"तुम्हारे बंगले पर! तुम्हारा घर तो किसी अपार्टमेंट्स में है।"

"डियर! मेरे पास एक बंगला भी है।"

"कहां?"

"डोनापोला बीच पर।"

"फिर तुम अपार्टमेन्ट में क्यों...।"

"बंगला काफी बड़ा है। वहां मुझे डर लगता है। असल में वो थोड़ी सुनसान जगह पर है, इसलिए मैंने अपार्टमेंटस में फ्लैट लिया था।

"फिर क्या वान्दा है। चलो, तुम्हारे बंगले पर चलते हैं।"

"एक काम क्यों नहीं करते?"

"हुक्म मलिका।"

"तुम अपना सामान लेकर मेरे बंगले पर रहने के लिए क्यों नहीं आ जाते।"

"मजाक कर रही हो। ऐसा भी कहीं होता है।"

"ओनेस्ट।" रवीना ने अपने गले की घंटी पकड़ी—"मैं मजाक नहीं कर रही। आई एम सीरियस।"

"ल...लेकिन..."

"तुम्हें गोवा में काफी वक्त लग सकता है। तुम किसी होटल में रहे तो तुम्हारी काफी पैसा जाया हो जाएगा। तुम मेरे बंगले पर रहे तो मैं भी कभी कभार वहां दिल बहलाने के लिए पहुंच जाऊंगी।"

इंद्रजीत का मन बल्लियों उछलने लगा।

क्यों न उछलता!

एक खूबसूरत लड़की खुद उसकी बाहों में आने को बेताब थी।

"देख लो! मुझे कोई दिक्कत नहीं।" वह बोला—"अलबत्ता तुम्हें दिक्कत जरूर हो सकती है। मत भूलो, मैं तुम्हारे लिए नितांत अजनबी हूं।"

"मुझे दिक्कत होती तो मैं तुम्हें अपने बंगले में ठहरने के लिए कभी नहीं कहती।"

"ऐसी बात है तो मैं अपना सामान लेकर अभी तुम्हारे बंगले पर..."

"अभी नहीं।" रवीना ने इंद्रजीत की बात जल्दी से काटी—"अभी वहां धूल-मिट्टी काफी तादाद में होगी। शाम को साफ सफाई होने के बाद मैं तुम्हें फोन कर दूंगी। फिर तुम अपना सामान लेकर वहां पहुंच जाना।"

"एक अजनबी के लिए इतना अपनापन! समझ में नहीं आता—तुम्हारा शुक्रिया मैं किन लफ्जों में अदा करूं?"

"कोई जरूरत नहीं। तुम जैसे नौजवानों पर मेहरबान होना मेरी पुरानी आदत है।"

"य...यानी कि," इंद्रजीत की आंखें सिकुड़ीं—"मैं तुम्हारे लिए कोई नया नहीं हूं। जो कुछ तुम मेरे लिए कर रही हो, वो तुम किसी और के लिए भी कर चुकी हो।"

"बुद्धू! नौजवानों पर मैं मेहरबान जरूर होती हूं, लेकिन किसी आम नौजवान पर नहीं। मेरे दिल को जो भा जाता है, मैं उसी पर अपना सब कुछ न्यौछावर करती हूं। ये समझ लो कि तुम मेरी जिंदगी में दूसरे नौजवान हो, जिसे मैं अपना सब कुछ सौंपने जा रही हूं।"

"पहला नौजवान कौन था?"

"था कोई बेवकूफ।" वह मुंह बिचकाकर बोली—"स्याला धोखा देकर चला गया। स्याले का नाम जुबान पर भी लाना मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं उस धोखेबाज को बिल्कुल भूल जाना चाहती हूं।"

"मेरी सौहबत में रहकर तुम उसे एक पल में भूल जाओगी।"

"ऐसा होगा तो मैं तुम्हारी उम्र भर एहसानमंद रहूंगी।" उसने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली—"मुझे चलना चाहिए। आज मैंने डैडी के साथ लंच लेना है। मैं देर से पहुंची तो वो मेरी क्लास लिए बिना नहीं रहेंगे। उन्हें इंतजार से सख्त नफरत है।"

"तुम उनसे मेरा जिक्र करोगी?"

Scanned by CamScanner

"क्या जरूरत है! कोई जरूरत है?"

"यही मैं कहना चाहता था। आज की तारीख में सबसे ज्यादा खुंदक वो मुझसे खाते होंगे। इसलिए मेरे बारे में कुछ नहीं बताना बेहतर होगा।"

"ओके। मैं नहीं बताऊंगी। अब चलें?"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

वह उठी तो इंद्रजीत भी अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

"आज मैं नौ बजे तक बिजी हूं।" वह बोली—"तुम ऐसा क्यों नहीं करते कि तुम मुझे दस बजे कहीं मिल जाओ। उसके बाद हम दोनों इकट्ठा बंगले पर चलेंगे।"

"आई हैव नो प्रॉब्लम।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"बताओ! कहां पहुंचूं?"

"डैडी के क्लब के बाहर मिलो तो कैसा रहेगा?"

"परेरा हाऊस के बाहर?"

"हां। वहीं।"

"ठीक है। मैं पहुंच जाऊंगा।"

"फिर तब तक के लिए अलविदा।"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

वह घूमी और अपने जानलेवा कूल्हे हिलाती वहां से रुखसत हो गयी।

इंद्रजीत उसे तब तक देखता रहा, जब तक वो उसकी आंखों से ओझल नहीं हो गयी।

इंद्रजीत होटल पहुंचा।

उसने अपना सामान पैक किया।

फिर उसने अटैंडेंट सखाराम को अपने रूम में बुलवाया।

एक सौ का नोट सखाराम के हवाले कर उसे कुछ पैसे और देकर उसने दीपक का सूटकेस उसके पूना के पते पर कूरियर कम्पनी द्वारा भिजवाने का हुक्म दनदनाया।

सखाराम के जाने के बाद उसने रिसेप्शन काउंटर पर जाकर होटल का हिसाब-किताब सैटल्ड किया।

इसके बाद वो हैडक्वार्टर की ओर रवाना हो गया, जहां बकौल गोविंद गावड़े, प्रेस कांफ्रेंस होनी थी।

इंद्रजीत ऐन वक्त पर पहुंचा था, इसलिए उसे गोविंद गावड़े से दो चार बातें करने का मौका मिला। प्रेस कांफ्रेंस में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। असल में वो गोविंद गावड़े से हैलन नाम की लड़की की बैकग्राउंड के बारे में कुछ जानना चाहता था।

प्रैस कांफ्रेंस में प्रैस रिपोर्टर्स के अलावा चार लोग और मौजूद थे जोकि इंद्रजीत को प्रैस रिपोर्टर्स कहीं से नहीं दिखाई दिए।

इंद्रजीत अपनी मौजूदगी की वजह जानता था। वो वहां सुनील शर्मा की वजह से था। सुनील शर्मा ने ही उसे वहां कदम रखने की परमिशन दिलवाई थी। जबकि बाकी चारों लोगों की वहां मौजूदगी की इंद्रजीत को अहम वजह समझ में नहीं आई।

चारों में एक खूबसूरत लड़की थी, जिसने बिना फ्रेम का चश्मा और एक्जीक्यूटिव कोट पैंट पहना हुआ था। वो बार-बार अपनी नाक पर सरक आया चश्मा संभाल रही थी और होठों-ही-होठों में कुछ बुदबुदा रहा था।

दूसरा आदमी एक सुनहरे बालों वाला हट्टा-कट्टा युवक था, जिसकी शक्ल ही फाईटर होने की चुगली कर रही थी।

बाकी के दोनों आदमी इंद्रजीत को किसी मल्टीनेशनल कम्पनी में काम करने वाले एक्जीक्यूटिव जान पड़े।

बड़े बेमन से इंद्रजीत ने प्रैस कांफ्रेंस अटैंड की।

प्रैस कांफ्रेंस की समाप्ति पर वो लपककर गोविंद गावड़े के पास पहुंचा और चारों की ओर इशारा करते हुए बोला—"ये प्रैस रिपोर्टर्स नहीं हैं, फिर ये यहां कैसे?"

गोविंद गावड़े ने चारों को गौर से देखा फिर धीरे से बोला—"लड़की को मैं नहीं जानता, अलबत्ता तीनों आदमियों को मैं जानता हूं। इनमें से हट्टा-कट्टा युवक स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स में काम करता है जबकि बाकी के दोनों शहर के मशहूर लॉयर एन्थॉनी के असिस्टेंट हैं।"

"ये तीनों यहां क्या कर रहे हैं?"

"क्या मालूम।" गोविंद गावड़े ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

"तुम्हें तो पता होना चाहिए।"

"क्या जरूरत है कोई जरूरत है?"

इंद्रजीत ने गावड़े से बहस करना मुनासिब न समझा। वह तत्काल मुद्दे पर आता हुआ बोला—"कोई नई बात सामने आई?"

"नहीं। अभी नहीं आई।"

"आईस पिकर्स की बाबत कुछ कारआमद जानकारी पता चली?"

"नहीं।"

"हैलन के बारे में?"

Scanned by CamScanner

"हम उसका अतीत टटोल रहे हैं। वो छुपा रुस्तम जान पड़ता है। उससे मुतल्लिक कोई कारआमद जानकारी सामने आएगी, तो मैं तुम्हें इनफार्म कर दूंगा।"

"आज शाम को मैं होटल छोड़ रहा। नई जगह पर पहुंचते ही मैं वहां का फोन नम्बर दे दूंगा। तुम मुझे वहीं इनफार्म करना।"

"कहां जा रहे हो?"

"यहीं पास में ही।"

"कौन से होटल में?"

"होटल में नहीं, एक बंगले में।"

"बंगले में!" वो चौंका—"आसपास तो एक ही बंगला है। वो भी माईकल परेरा की लड़की रवीना परेरा का।"

"मैं उसी के बंगले में जा रहा हूं।"

गावड़े ने हैरत भरी निगाहों से इंद्रजीत को देखा।

"मैंने उससे वो बंगला" इंद्रजीत बोला—"कुछ दिनों के लिए किराए पर लिया है।"

"कमाले है। माईकल की लड़की ने एक अजनबी को किराए के लालच में बंगला रहने के लिए दिया! बड़ी हैरानी की बात है।"

"हैरानी की बात तो है।" इंद्रजीत विषय बदलने की नीयत से बोला—"ए०सी०पी० चंद्रकात की तबियत कैसी है?"

"उनकी तबियत खराब कब हुई थी?" गावड़े की आंखों में उलझन के भाव उपजे—"वे तो कई दिनों से भले चंगे हैं।"

"मेरा मतलब उनके गर्म मिजाज से है। ट्रांसफर के आर्डर के बाद उनके मिजाज में कोई फर्क आया?"

जवाब देने के बजाए गोविंद गावड़े ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली, फिर व्यस्तता का प्रदर्शन करता हुआ बोला—"मुझे जरूरी काम से कहीं पहुंचना है। इस बाबत तुम बाद में..."

"ओके सर।" इंद्रजीत उसका मंतव्य समझते हुए बोला—"आप अपने काम पर पहुंचिए। मैंने बेकार का सवाल किया था। चंद्रकांत से अब मेरा क्या लेना देना। नहीं?"

गावड़े ने अपने सिर को जुम्बिश दी और फिर वहां से चला गया।

इंद्रजीत गोवा टाईम्स के दफ्तर में पहुंचा।

गोवा शहर का रोड मैप उसने अपने पास रखा हुआ था, इसलिए यहां पहुंचने में उसे ज्यादा दिक्कत का सामना न करना पड़ा।

रिसेप्शन पर बैठी जर्क वर्क लड़की को उसने अपना परिचय

दिया तो उसने फौरन इंटरकाम पर बात करके उसे एक चैम्बर का रास्ता बता दिया।

इंद्रजीत ने निर्दिष्ट चैम्बर में कदम रखा।

यह एक छोटा-सा चैम्बर था, जिसमें एक कांच की मेज के पीछे एक उम्रदराज शख्स, जो कि गोवा टाईम्स का चीफ एडीटर, रत्नाकर मोरे था, विराजमान था। उस घड़ी उसके दांतों के बीच एक सिगार फंसा हुआ था, जोकि इंद्रजीत को बुझा हुआ जान पड़ा।

इंद्रजीत ने उसका अभिवादन किया।

अभिवादन का जवाब देकर रत्नाकर मोरे ने बुझ चुका सिगार ऐश ट्रे पर रखा और इंद्रजीत को बैठने का संकेत किया।

इंद्रजीत उसके सामने पड़ी विजिटर्स चेयर में से एक पर बैठा तो वह खुद को अपनी रिवॉल्विंग चेयर पर ढीला छोड़ता हुआ बोला—"सुनील शर्मा ने तुम्हारा जिक्र किया था। तुम अपने दोस्त के कातिल को सामने लाने के लिए पुलिस से पंजा लड़ा रहे हो—इस बात की मुझे बहुत खुशी है। कहिए, मैं तुम्हारी क्या खिदमत कर सकता हूं।"

"खिदमत की बाबत" इंद्रजीत नम्र लहजे में बोला—"इस वक्त मैं आपको नहीं बता पाऊंगा। मैं आपके पास एक इल्तिजा करने आया हूं।"

"बोलो।"

"कल को मैं इस शहर की तोप कहे जाने वाले माईकल परेरा के खिलाफ पुख्ता सबूत लाऊंगा तो आप उसे अपने अखबार में छापेंगे?"

"तुम्हें अपने दोस्त के कातिल होने का शक माईकल परेरा पर है?"

"मुझे लगता है, मेरे दोस्त के कत्ल में उसका अहम रोल है।"

"उसके खिलाफ तुम पुख्ता सबूत जुटा लोगे तो फिर क्या दिक्कत है। तुम चिंता मत करो। जो तुम चाहते हो, हो जाएगा। मैंने ये कुर्सी सच को सामने लाने के लिए ही संभाली है।" वो आगे की ओर झुका और मेज पर कुहनियां रखते हुए बोला—"तुम यहां आए, मुझे बहुत खुशी है। बरखुरदार, मुझे इस बात की भी खुशी है कि तुम शहर की तोप कहे जाने वाले माईकल के काले कारनामों को सामने लाने के लिए कमर कसे बैठे हो। लेकिन बरखुरदार, उसके बरखिलाफ कुछ कदम उठाने से पहले मैं चाहता हूं कि तुम उसकी बैकग्राउंड खंगाल लो।"

"उसकी बैकग्राउंड के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता। अगर आप जानते हैं तो बताने की जहमत उठाइए।"

Scanned by CamScanner

रत्नाकर मोरे ने ऐश ट्रे पर से सिगार उठाया, उसे सुलगाया, फिर नाक-मुंह से ढेर सारा धुंआ उगलते हुए बोला—"भाईकल इस शहर पर राज करता है। उसके पास पैसा तो है ही, साथ-साथ गुंडों मवालियों की फौज भी है। वो दिखावे के लिए जो काम धंधे करता है, उसकी आड़ में सारे काले कारनामें करता है। फिर भी उसकी शहर में अच्छी-खासी पूछ है। तभी उसने डी०एम० के अपोजिट इलैक्शन में खड़े होने की हिमाकत की है। वैसे मुझे नहीं लगता कि भाईकल के आगे हमारे डी०एम० साहब टिक पायेंगे। फिर भी मैं उनकी सफलता की कामना करता हूं। मुझे इस बात की चिंता ज्यादा रहती है कि भाईकल इलैक्शन में जीत गया, तो इस शहर का क्या होगा। ये शहर सच में जुर्म के जरासीमों (कीटाणुओं) से लबालब भर जाएगा। फिर शरीफ आदमी का क्या होगा! वो इस शहर में चैन की सांस कैसे ले पाएगा?"

"आई थिंक, इस शहर को बरबाद होने से तभी बचाया जा सकता है, जब भाईकल के काले धंधे वाले अड्डों को नेस्तनाबूद कर दिया जाए।"

"उससे कुछ नहीं होगा। तुम भाईकल के बिजनेस पार्टनर क्रिस को अपने काबू में कर लोगे, तो मैं समझता हूं कि हम भाईकल के जुर्म का आधा साम्राज्य छिन्न-भिन्न करके रख देंगे।"

"ये क्रिस करता क्या है?"

"परेरा हाउस नाईट क्लब का मालिक है।"

"क्या?" इंद्रजीत चौंका—"मैंने सुना था वो परेरा हाऊस नाईट क्लब भाईकल की मिल्कियत है।"

"तुमने ठीक सुना था। परेरा हाऊस भाईकल के कब्जे में कभी था। आज की तारीख में तो क्रिस की मिल्कियत है।"

"भाईकल ने ये बात क्योंकर छुपाई?"

"आई थिंक—उसे इस बाबत क्रिस ने ही मना किया होगा।"

"वैसे अंदर की बात आपको कैसे पता चली?"

"क्रिस के ही किसी चमचे ने हमारे अखबार के रिपोर्टर फ्रैंक के सामने शराब पीने के बाद मुंह फाड़ दिया था। इसी वजह से ये बात हमारे जुबूर में आई थी।"

"ओह!"

"क्रिस के बारे में हमें इतना पता चला है कि पहले वो मुम्बई में डोप पैडलर था। वहां की पुलिस ने जब उसके सारे ठिकाने नेस्तनाबूद कर दिए थे, तब उसने गोवा में कदम रखा था। यहां कदम रखने के बाद उसने रातों रात भाईकल का नाईट क्लब कैसे अपने कब्जे में कर

लिया—ये हमारे लिए वाकई हैरत का विषय है।"

"मैं कोशिश करूंगा कि क्रिस की परेरा हाऊस अपने कब्जे में करने वाली बात हैरत का विषय न रहे।"

"बरखुदार, काम मुश्किल है। लेकिन नामुमकिन नहीं। क्यों?"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

फिर कुछ सोचकर उसने रत्नाकर मोरे को माचिसों के खोलों की बाबत विस्तार सहित बता दिया।

"जहां तक मैं समझता हूं" बताने के बाद इंद्रजीत गहन भाव से बोला—"भाईकल ने मेरे दोस्त को अपनी बीवी को वॉच करने के लिए या किसी और चीज की बखिया उधेड़ने के लिए रिटेन किया होगा। मेरे दोस्त के बखिया उधेड़ने पर जब भाईकल को लगा कि मेरा दोस्त अपनी तहकीकात के नतीजों से उसकी बखिया भी उधेड़ सकता है, तो उसने उसका मुंह हमेशा-हमेशा के लिए बंद करवा दिया।"

"तुम्हारी थ्योरी में जान तो है। लेकिन पुख्ता सबूतों के बिना ये बेजान है। तुम पुख्ता सबूत जुटाओ तो हम काफी आगे जा सकते हैं।" एक पल रुककर सिगार के चंद कश लगाकर वह आगे बोला—"हमारे अखबार का रिपोर्टर फ्रैंक, भाईकल के खिलाफ पुख्ता सबूत जुटाने में तुम्हारी काफी मदद कर सकता है। तुम चाहो तो उसकी मदद ले सकते हो।"

"मैं उससे जरूर मिलना चाहूंगा। इस वक्त मैं उससे मिल सकता हूं?"

"इस वक्त तो वो बीट पर गया है। तुम उससे कल मिल सकते हो।"

"ठीक है।" इंद्रजीत ने अपनी जगह छोड़ी—"मैं उससे कल मिल लूंगा। एक बात और।"

"पूछो।"

"तुम परेरा हाऊस के किसी मैम्बर को जानते हो?"

"मैं!" रत्नाकर मोरे हंसा—"बिल्कुल नहीं।"

"असल में मैं वहां का माहौल देखना चाहता हूं।"

"बहुत मुश्किल है। अपने आपको धोखे में मत रखो। बल्कि मैं तो यही कहूंगा कि इस बाबत तुम कुछ सोचो भी नहीं। वो एक हाई फाई जगह है—जहां मेरे तुम्हारे जैसे लोग कदम भी नहीं रख सकते।"

"आपकी सलाह पर मैं गौर करूंगा।" इंद्रजीत लापरवाही दर्शाता हुआ बोला—"फिलहाल सहयोग के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।"

Scanned by CamScanner

"बरखुरदार, सहयोग अभी मैंने दिया ही कहां है।"

"फिर भी क्रिस की बाबत आपने जो अंदर की बात बताई है—उसके लिए बहुत बहुत शुक्रिया।" इंद्रजीत ने उससे हाथ मिलाया और फिर वहां से रुखसत हो गया।

एक पब्लिक बूथ से इंद्रजीत ने होटल मयूर का नंबर डायल किया और हाऊस डिटेक्टिव जानी डिसूजा से बात करने की इच्छा जाहिर की।

जॉनी डिसूजा लाईन पर आया तो वह बोला—"इंद्रजीत बोल रहा हूं। बीयर पीने का मूड है?"

दूसरी ओर मौजूद जॉनी डिसूजा लार टपकाते हुए बोला—"नेकी कर और पूछ पूछा, कहां से बोल रहे हो?"

इंद्रजीत ने बताया।

"पूछ सकता हूं।" डिसूजा बोला—"बीयर किस खुशी में पिलाई जा रही है?"

"कुछ जानकारियां चाहिए।"

"किसके बारे में?"

"परेरा हाउस के बारे में।"

"क्या जानकारी चाहिए?"

"आने का इरादा नहीं है?"

"नहीं नहीं। मैं तो यूं ही पूछ रहा था।"

"फोन पर बात करना मुनासिब न होगा। यहां पहुंचो। उसके बाद किसी बीयर बॉर में इत्मीनान से बैठकर बातें करते हैं।"

"ठीक है। वेट करो। मैं पहुंचता हूं।"

"बाई।"

इंद्रजीत ने फोन रखा और पब्लिक बूथ से बाहर निकल आया।

उसने फोन का बिल अदा किया और एक सिग्रेट सुलगाकर अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

कार की ड्राईविंग सीट पर इत्मीनान से बैठकर इंद्रजीत ने चार सिग्रेटें पीकर खत्म की ही थीं कि उसे एक बस से जॉनी डिसूजा उतरता दिखाई दिया।

तेज कदमों से चलता वह इंद्रजीत की कार के पास पहुंचा।

"ज्यादा वेट तो नहीं करना पड़ा?" वह बोला।

"नहीं।" इंद्रजीत ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

"कहां चलना है?"

"बोलो कहां चलना है?"

"पास में ही एक बीयर बॉर है। वहां चलें?"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया।

कार का घेरा काटकर जॉनी पैसेंजर सीट पर बैठा तो इंद्रजीत ने कार आगे बढ़ा दी।

थोड़ी देर बाद!

इंद्रजीत और जॉनी डिसूजा एक बीयर बॉर के केबिन में आमने-सामने बैठे हुए थे और बीयर चुसक रहे थे। बीमार का पहला दौर खत्म होने के बाद जॉनी आस्तीन से मुंह पोंछते हुए बोला—"अब बोलो! परेरा हाऊस के बारे में क्या जानना चाहते हो?"

"सबसे पहले तो ये बताओ कि ये पाया कहा जाता है?"

"रिट्स प्लाजा होटल के ऊपर।"

"होटल के ऊपर?"

"हां! होटल का टॉप फ्लोर परेरा हाऊस नाईट क्लब के नाम से जाना जाता है।"

"मैं समझा था, ये अलग-थलग जगह पर ग्राउंड फ्लोर पर बना होगा। ऐनी वे, वहां पहुंचने का जरिया क्या है?"

"क्यों पूछ रहे हो?" जॉनी की आंखें सिकुड़ गयीं।

"बताऊंगा। पहले मेरी बात का जवाब दो।"

"पहले बताओ।"

"मैं वहां का जायजा लेना चाहता हूं।"

"य...यानी कि तुम वहां गेट क्रैश करके पहुंचने का इरादा रखते हो?"

"हां।"

जॉनी डिसूजा की आंखें आश्चर्य से फटती चली गयीं। वह इंद्रजीत को कुछ इस अंदाज से देखने लगा मानो कि इंद्रजीत पागल हो गया हो।

"परेरा हाऊस का गेट क्रैश करना" जॉनी डिसूजा उपहास भरे स्वर में बोला—"और पी०एम०हाऊस का गेट क्रैश करना एक बराबर है।"

"मुझे नहीं लगता।"

"कैसे?"

"तुमने अभी बताया था कि परेरा हाऊस रिट्ज होटल के टॉप फ्लोर पर है।"

Scanned by CamScanner

"हां-हां।"

"तो हुजूरे वाला, वहां सामान पहुंचाने का कोई-न-कोई जरिया जरूर होगा। बराये मेहरबानी अब तुम ये मत कहना कि वहां सामान हैलीकॉप्टर द्वारा पहुंचाया जाता है।"

"अच्छा दिमाग रखते हो।" जॉनी तारीफ भरे स्वर में बोला—"लेकिन इस बाबत कुछ जानने से भी तुम वहां नहीं पहुंच सकते।"

"अपने मुंह से कुछ फूटो तो सही—उसके बाद मैं देख लूंगा कि मैं वहां पहुंच सकता हूं—या नहीं।"

जॉनी ने एक सिग्रेट सुलगाई फिर नाक से ढेर सारा धुंआ छोड़ते हुए बोला—"परेरा हाऊस तक जाने का मेन रास्ता होटल की लॉबी से है। वहां एक बहुत बड़ा गलियारा है, जिसके सिरे पर एक चैनल गेट लगा है। उस गेट के आगे दो सिक्योरिटी गार्ड्स हर वक्त मौजूद रहते हैं। इनका काम क्लब में आने वाले मैम्बर्स का मैम्बरशिप कार्ड चैक करना है। और संतुष्ट होने के बाद गेट खोलना है। चैनल गेट वाला रास्ता एक लॉबी की तरफ जाता है—जहां क्लब की प्राईवेट लिफ्ट्स मौजूद हैं। इन्हीं लिफ्ट्स के जरिए ऊपर क्लब में जाया जा सकता है।" एक पल ठिठककर सिग्रेट के दो चार कश लगाकर जॉनी आगे बोला—"ये जानकारी मैं तुम्हें देने में इसलिए कामयाब हो पा रहा हूं क्योंकि किसी वक्त मैं रिट्ज होटल में वेटर का काम किया करता था।"

"आगे बताओ।" इंद्रजीत उतावले स्वर में बोला।

"सामान लाने ले जाने के लिए होटल की लिफ्ट्स इस्तेमाल में लाई जाती हैं। यहां भी गार्ड्स तैनात रहते हैं।"

"गार्ड्स हर सामान की जांच पड़ताल करते हैं?"

"नहीं! वे क्लब में काम करने वालों की वर्दियों से उन्हें पहचानते हैं। और फिर उन्हें लिफ्ट्स में जाने देते हैं।"

"इसका मतलब क्लब में वहां काम करने वालों की वर्दियां पहनकर जाया जा सकता है?"

"नहीं जाया जा सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि सारी वर्दियां लंदन से मंगवाई जाती हैं। उन पर जो ताम-झाम लगा होता है—उसे कॉपी करना किसी इंडियन के वश की बात नहीं है।"

"ऐसा भी कहीं होता है। मैं मान ही नहीं सकता। इंडियन्स नकल मारने में इतने उस्ताद होते हैं कि उनके आगे बड़े-से-बड़े नकलची पानी भरते हैं।"

"कुछ भी कहो। लेकिन गार्ड्स के बैचिज की नकल वो कोशिश करके भी नहीं कर सकते।"

"बैचिज में ऐसा क्या है—जो उसकी नकल नहीं की जा सकती?"

"वो बैचिज असल में इलेक्ट्रानिक आई कार्ड हैं, जिनमें कोड नम्बर फीड हैं। लिफ्ट में इलैक्ट्रानिक रिसेप्टर फिट है। वे कोड नम्बर सही होने पर ही काम करते हैं। यदि कोई नकली बैज लगाकर लिफ्ट में घुसता है तो इलैक्ट्रानिक रिसेप्टर लिफ्ट को ही जाम कर देते हैं।"

"और यदि कोई बिना बैचिज के घुसे तो?"

"ऐसा नहीं हो सकता। परेरा हाऊस के कर्मचारी वर्दी बाद में पहनते हैं, पहले बैकिज लगाते हैं।"

इंद्रजीत ठोड़ी खुजाकर कुछ सोचने लगा।

तभी वेटर आर्डर के लिए आ गया।

जॉनी ने उसे दो बीयर और लाने को कहा।

वेटर के जाने के बाद वो बोला—"एक तरीके से तुम परेरा हाऊस का जायजा ले सकते हो।"

"वो क्या?" इंद्रजीत उतावला दिखाई देने लगा।

"मेरा एक दोस्त, जो कभी रिट्ज होटल में बारटेंडर था, आजकल वहीं तैनात है। तो अगर कोपरेट करे तो तुम वहां कदम रख सकते हो। लेकिन इसके लिए तुम्हें कम-से-कम हजार रुपए अपनी जेब से निकालने पड़ेंगे। मेरा दोस्त लालची किस्म का है। पैसों के लिए वो अपनी मां को भी बेच सकता है।"

"कोई दिक्कत नहीं। तुम उससे बात करके देखो।"

"ये भी हो सकता है कि वो वहां नहीं हो—क्योंकि इस बात को काफी अर्सा हो गया है।"

"ओफ्फो!" इंद्रजीत तनिक झुंझलाया—"उससे बात करके तो देखो।"

"ठीक है। करता हूं।"

जॉनी केबिन से बाहर निकला और वहीं बने एक टेलीफोन बूथ की तरफ बढ़ गया।

कुछ पलों बाद वो लौटा और अपनी जगह पर पुनः बैठते हुए बोला—"मेरी हैरी से बात हो गयी है। वो दो हजार की मांग कर रहा था। एक हजार में मैंने उसे पटा लिया है। लेकिन एक बात तुम्हें मैं पहले बता दूं।"

"क्या?"

"ये हैरी कुछ चालू किस्म का है। कोई बड़ी बात नहीं—ये तुम्हारा

Scanned by CamScanner

पैसा भी हड़प ले और क्लब का जायजा भी नहीं लेने दे।"

"उसने ऐसा किया तो मैं स्साले का खून पी जाऊंगा।" एकाएक इंद्रजीत ताव खाकर बोला—"कोई मेरे साथ छक्का पंजा करता है तो मैं उसकी लाश का भी पता नहीं लगने देता।"

इंद्रजीत जोश में बोल तो गया, लेकिन अगले ही पल उसे एहसास हुआ कि जार्ज के सामने वो एक प्रोफेशन हिटमैन नहीं, बल्कि एक आम डिटेक्टिव की हैसियत से विराजमान है। इसलिए वो फौरन ही अपनी बात संभालते हुए बोला—"ऐसे आदमी से डील करने से क्या फायदा जो गुस्सा दिलवाकर मुंह से वो बातें निकलवा दे जिसे मेरा जैसा बंदा करने से परहेज करता हो।"

"मैंने हैरी की आदत बताई है। हो सकता है कि वो तुम्हारे साथ छक्का पंजा न करे। तुम रिस्क उठाकर देख लो। शायद कोई बात बन ही जाए।"

"ओ०के०। मैं रिस्क उठाने के लिए तैयार हूं। आगे?"

"मेरा एक वाकिफकार 'स्काई हाई' ब्रांडी कम्पनी में सेल्स एक्जीक्यूटिव है। पिछले महीने वो ब्रांडी का सैम्पल लेकर क्लब में गया था। वहां उसने वाईन इंचार्ज गोम्स से एप्वाइंटमेंट लेकर मुलाकात की थी और ब्रांडी का सैम्पल उसे दिया था। मैं अपने वाकिफकार से कम्पनी की वाईन का एक सैम्पल अरेंज कर दूंगा और उसके नाम का एक विजिटिंग कार्ड भी तुम्हारे हवाले कर दूंगा। इन दोनों चीजों की बदौलत तुम बड़े आराम से क्लब में एंट्री कर लोगे। लेकिन..."

"अब भी लेकिन?"

"हां। वाईन इंचार्ज मेरे वाकिफकार को जानता है, इसलिए बेहतर होगा कि तुम उसे कोई और टस्का दो।"

"टस्के की बाबत मैं सोच लूंगा। ये बताओ कि तुम्हारा बारटेंडर दोस्त मुझे क्लब का जायजा कैसे लेने देगा?"

"ठीक सात बजे वो क्लब की लिफ्ट के बाहर मौजूद होगा। तुम वहां ऐन टाईम पर पहुंच गए तो वो बड़े आराम से तुम्हें क्लब का जायजा लेने देगा।"

"सात बजे तो भीड़ भाड़ हो जाती होगी।"

"वहां गेस्ट नौ दस बजे के बीच आते हैं। सात बजे वहां उल्लू बोलते हैं।"

"फिर तो कोई वांदा नहीं।"

"एक वांदा है।"

"क्या?"

"किसी वजह से तुम्हारी पोल खुल गयी तो अंजाम जानते हो?"

"ज्यादा-से-ज्यादा मौत मुझे गले लगा लेगी।"

"मौत से तुम्हारा दोस्ताना है?"

"हां, दोस्ताना ही है। मैं उन लोगों में से हूं, जो अव्वल तो पत्थरों पर भागते नहीं—लेकिन जब भागते हैं तो पीछे मुड़कर नहीं देखते। क्या समझे?"

"समझ गया।"

"क्या समझे?"

"यही कि" जॉनी डिसूजा नाटकीय स्वर में बोला—"तुम जैसा सनकी आदमी भगवान ने यह सोचकर बनाया होगा कि हम जैसे बंदे उसे देखें और दांतों तले अंगुलियां दबा लें।"

इंद्रजीत खुलकर हंसा।

"तुम यहीं बैठो।" जॉनी उठते हुए बोला—"मैं अपने वाकिफकार से हाई फाई वाईन की बोतल और उसका विजिटिंग कार्ड लेकर आता हूं।"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया।

सात बजकर पांच मिनट बाकी थे जबकि इंद्रजीत ने रिट्स होटल की जगमगाती लॉबी में कदम रखा। उस घड़ी वो एक सेल्स एक्जीक्यूटिव के गेटअप में था। इस गेटअप में उसे देखकर कोई भी इस बात का अंदाजा तक नहीं लगा सकता था कि वो जुर्म की दुनिया का प्रोफेशनल हिटमैन है। जो एक नहीं कई कत्ल कर चुका है।

इंद्रजीत होटल के उस गलियारे में पहुंचा जहां चैनल गेट लगा हुआ था।

वह गेट के सामने पहुंचा तो वहां मौजूद गार्ड्स उसे संदिग्ध निगाहों से देखने लगे।

"आई एम एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर ऑफ स्काई हाई ब्रांडी कम्पनी।" इंद्रजीत अंग्रेजी में बोला—"आई वांट टू मीट मिस्टर गोम्स। कैन आई मीट हिम?"

"सर।" एक गार्ड तत्परता से बोला—"गोम्स साहब से आपकी अप्वाईंटमेंट फिक्स है?"

"नहीं। मेरा इधर से गुजरना हो रहा था—मैंने सोचा उनके दर्शन करता चलूं। पिछले महीने मैंने कम्पनी के सेल्स एग्जीक्यूटिव को वाईन की डील करने के लिए यहां भेजा था। इसी सिलसिले में मैं उनसे दो बातें करना चाहता हूं। तुम चाहो तो मिस्टर गोम्स से इंटरकाम पर बात कर सकते हो?"

Scanned by CamScanner

सिक्योरिटी गार्ड ने सहमति में सिर हिलाया और गेट के पास दीवार में लगे इंटरकाम से क्लब में बात की।

बात करने के बाद वह निश्चिंत दिखाई देने लगा।

फिर उसने बिना आना कानी चैनल गेट खोल दिया।

बड़ी शान से इंद्रजीत ने गेट पार किया और उस लॉबी में कदम रखा जहां क्लब की प्राईवेट लिफ्ट्स मौजूद थीं।

वो एक लिफ्ट में सवार हुआ। लिफ्ट रुकी तो उसने कलाई घड़ी पर नजर डाली। ठीक सात बजे थे। लिफ्ट का दरवाजा अपने आप खुला तो उसे सामने एक मरियल-सा युवक खड़ा दिखायी दिया।

जॉनी ने हैरी का हुलिया इंद्रजोत को बता दिया था—इसलिए इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि उसके सामने खड़ा नौजवान कोई और नहीं, हैरी ही है।

इंद्रजीत ने लिफ्ट से बाहर कदम रखा और धीरे से मुस्कराया।

"जल्दी से पैसा निकालो।" हैरी बोला—"रिसेप्शन पर बैठी लड़की को ऐन वक्त पर सीट से हटाकर गार्ड्स का मैसेज लेकर मैंने तुम्हें यहां आने का जो हुक्म दनदनाया है, वो खतरे से खाली नहीं था।"

इंद्रजीत ने एक हजार की जगह पांच सौ का नोट उसकी तरफ बढ़ाया।

हैरी का चेहरा एकदम कठोर हो गया। वह मुंह बिगाड़कर बोला—"ये क्या है। जॉनी ने हजार की बात की थी।"

"जॉनी ने ये भी कहा था" इंद्रजीत शुष्क लहजे में बोला—"कि तुम विश्वास लायक नहीं हो। इसलिए आधी रकम अभी। बाकी की रकम कम होने के बाद। अंडरस्टैंड?"

"नहीं चलेगा।" तो मुंह बिगाड़कर बोला—"बिल्कुल नहीं चलेगा। मेरे को सारा पैसा एडवांस में मांगता।"

"ठीक है, मत लो।"

इंद्रजीत ने नोट अपनी जेब के हवाले किया और जाने के लिए जैसे ही घूमा, हैरी हड़बड़ाकर बोला—"मैं तुम्हारा आधा काम कर चुका हूं। ऐसे तो मेरे पांच सौ रुपए मारे जाएंगे।"

"बिल्कुल मारे जाएंगे। इसलिए समझदारी से काम लो।"

"ठीक है। पांच सौ रुपए दो। मैं समझदारी से काम लेता हूं।"

इंद्रजीत ने बड़ी शराफत से पांच सौ का नोट उसके हवाले किया और फिर चेतावनी भरे स्वर में बोला—"छक्का पंजा करने की कोशिश की तो जानते हो—तुम्हारा क्या हश्र करूंगा।"

"मैं जानता हूं।" वह कमजोर स्वर में बोला—"मैं ऐसी वैसी कोई कोशिश नहीं करूंगा। मुझे हजार रुपयों से प्यार है।"

"दैट्स लाईक ए गुड बॉय।" इंद्रजीत ने उसका गाल थपथपाया—"अब बताओ शुरूआत कहां से करोगे?"

"नाईट क्लब दिखाने की?"

"हां।"

"बॉर से करें?"

"जैसा तुम बेहतर समझो।"

"बार से ही करते हैं।"

"एज यू विश।"

वह आगे बढ़ा तो इंद्रजीत उसके पीछे हो लिया।

हैरी के पीछे चलते-चलते इंद्रजीत ने गलियारा पार करके एक काफी बड़े हाल में कदम रखा।

यह नाईट क्लब का बॉर था। यहां की चकाचौंध देखकर इंद्रजीत की आंखें चुंधिया कर रह गयीं। तीन सौ लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। बार काउंटर अंग्रेजी के अक्षर 'एस' की शेप में बना हुआ था। और उस वक्त बॉर में गिन चुने लोग मौजूद थे।

वहीं बने एक बड़े दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए हैरी बेहद धीमें स्वर में बोला—"रेस्टोरेंट और क्लब के ऑफिस का रास्ता भी इधर से है। अब तुम क्या देखना पसंद करोगे?"

"पसंद की बात कर रहे हो।" इंद्रजीत तेजी से बोला—"तो मैं यहां मौजूद कोई भी छोटी-मोटी चीज निशानी के तौर पर अपने साथ ले जाना चाहता हूं।"

"क्यों?" हैरी ने इंद्रजीत को अजीब-सी निगाहों से देखा।

"ये जानना तुम्हारा काम नहीं।" इंद्रजीत लापरवाही दर्शाते हुए बोला।

"देखो। तुम जो कोई हो।" वो ताव खाकर बोला—"तुम ये मत समझो कि हजार रुपए मेरे हिस्से में डालकर तुम बार की कोई कीमती चीज अपने कब्जे में कर लोगे। अगर तुम ऐसा सोच रहे हो तो मैं तुम्हारे पांच सौ लौटाने के लिए तैयार हूं।"

"भाई मेरे, ताव मत खा। मुझे यहां से कोई कीमती चीज नहीं चाहिए। मुझे तो बेहद मामूली चीज चाहिए।"

"क्या?"

"यहां की वे माचिसें जो तुम ग्राहकों के सामने रखते हो।"

हैरी ने इंद्रजीत को कुछ इस अंदाज से देखा मानो कि उसे उसकी जेहनी कुव्वत को लेकर शको-शुबहा हो रहा हो।

"मामूली-सी माचिस का" वो आंखें सिकोड़कर बोला—"तुम क्या करोगे?"

Scanned by CamScanner

"अपने दोस्तों के सामने तड़ी मारूंगा कि मैं यहां एक बार आ चुका हूं।"

"महज एक माचिस से तुम्हारे दोस्त तड़ी में आ जाएंगे?"

"हां। तभी तो मैं माचिस की फरमाईश कर रहा हूं।"

"माचिस के अलावा तुम किसी और चीज की मांग तो नहीं करोगे?"

"नहीं।"

"कसम खाओ।"

"तुम्हारी कसम।"

"मेरी कसम नहीं। अपने किसी अजीज की कसम खाओ।"

"इस समय मेरे अजीज तो तुम ही हो। मैं तुम्हारी कसम..."

"नहीं। मैं तुम्हारा अजीज नहीं हूं। तुम अपने किसी अजीज की कसम खाओगे, तभी मैं तुम्हारा काम करूंगा।"

"ऐसी बात है तो मुझे शाहरूख खान की कसम है। शाहरूख खान मेरे अजीजतरीन अजीजों में एक है।"

"तुम अपने बाल बच्चों की कसम नहीं खा सकते?"

"उससे कोई फायदा नहीं होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि मेरे जितने भी बच्चे हैं, वे केवल नाम के हैं। ये समझ लो कि आज की तारीख में उन्हें इस बात की खबर भी नहीं होगी कि उनका बाप मैं हूं।"

"म...मतलब?" वह सकपकाया।

"मतलब यही है प्यारे।" इंद्रजीत ने उसका गाल थपथपाया—"आज तक मैं किसी औरत के पल्लू से नहीं बंधा हूं। यानी कि मैंने आज तक शादी नहीं की। मैं जिन बच्चों का जिक्र कर रहा हूं, वो उन औरतों के पेट से बाहर आए थे जिनके पेट मैंने उन्हीं के कहने पर फुलाए थे। कुछ समझे?"

"इसका मतलब तुम खेले खाए हो?"

"खेला खाया तो नहीं हूं। अलबत्ता मैंने घाट-घाट का पानी जरूर पीया हुआ है।"

"घाट-घाट का पानी पीकर तुम्हें एड्स नहीं हुई।"

"एड्स।" इंद्रजीत ने चौंकने का अभिनय किया—"ये क्या बला है।"

हैरी के चेहरे पर हैरानी के भाव नुमायां हुए। वह हकबकाकर बोला—"तुम सच में नहीं जानते कि एड्स क्या बला है?"

"नहीं जानता। आई स्विअर, नहीं जानता।"

"फिर तो तुम किसी दिन तड़प-तड़प कर मरोगे?"

"एड्स की वजह से?"

"हां।"

"अगर मैं कहूं" इंद्रजीत नाटकीय लहजे में बोला—"किसी लड़की का पेट फुलाने से पहले मैं अपनी पिचकारी पर बढ़िया वाला गुब्बारा लगा लेता हूं, तो भी मैं तड़प-तड़पकर मरूंगा।"

उसने इंद्रजीत को मरने-मारने वाले अंदाज में घूरा फिर मुंह बिगाड़कर बोला—"तुम आदमी हो या घनचक्कर?"

"दोनों में से कुछ नहीं हूं।"

"फिर?"

"बताऊंगा। लेकिन अभी नहीं। अभी वक्त का बहुत तोड़ा है। भगवान के लिए तुम मेरे कीमती वक्त की बाबत सोचकर जल्दी से दो तीन माचिसें लाने की जहमत उठाओ।"

"माचिस के लिए तुम्हें काउंटर के पास चलना पड़ेगा।"

"कोई पंगा तो नहीं होगा।"

"माचिस हाथ में आते ही तुम उसे जेब में डाल लोगे तो पंगे की उम्मीद कम है।"

"ठीक है। माचिस हाथ में आते ही मैं उसे अंडरग्राउंड कर दूंगा। तुम माचिस दिखाओ।"

उसने सावधान निगाहों से दायें बाएं देखा।

जब उसे लगा कि वो अपने काम को अंजाम दे सकता है, उसने इंद्रजीत को पीछे आने का इशारा किया और स्वयं काउंटर के पीछे पहुंच गया।

काउंटर की दराज से उसने तीन माचिसें निकालीं और सतर्क निगाहों से इधर-उधर देखने के बाद बंद मुट्ठी इंद्रजीत की तरफ बढ़ा दी।

इंद्रजीत ने उसकी बंद मुट्ठी में कैद माचिसें फौरन अपने कब्जे में कीं और फिर उन्हें उलट-पुलटकर देखने लगा।

"य...ये क्या कर रहे हो।" वो बुरी तरह घबराकर बोला—"मैंने तुम्हें माचिसें अंडरग्राउंड करने को कहा था।"

"मैं माचिसों के पीछे छपे सीरियल नंबर देख रहा था।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"इन माचिसों के पीछे एक भी सीरियल नम्बर नहीं है। तुम मुझे सीरियल नंबर वाली माचिस दोगे तो..."

"यहां ये ही माचिसें ग्राहकों के सामने रखी जाती हैं।" वो तनिक कठोर लहजे में बोला—"मिस्टर, तुम्हारी वजह से मेरी नौकरी पर कोई बात आई तो मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊंगा।"

Scanned by CamScanner

"अरे यार! तू तो खामख्वाह हलकान हो रहा है। मेरे होते सोते तेरा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। इत्मीनान रख। कुछ नहीं होगा। अब तू सीरियल नंबर वाली माचिसों के बारे में जरा खुलासा करके बता कि वो नाईट क्लब में कहां पाई जाती हैं।"

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है। मैंने बताया न, यहां सीरियल नंबर वाली कोई माचिस नहीं है। मुझे यहां काम करते इतना अर्सा हो गया। मैं अंधा नहीं हूं। न ही मेरी आंखें खराब हैं। यहां माचिसों के पिछली तरफ सीरियल नंबर छपे होते, तो ये बात मेरे जुहूर में नहीं आती?"

इंद्रजीत को वो सच बोलता जान पड़ा।

"वैसे तुम्हें ये बात किसने बताई" हैरी बेचैन भाव से बोला—"कि यहां की माचिसों के पीछे सीरियल नम्बर छपे होते हैं।"

"बताई थी किसी ने। उसका जिक्र करना मैं मुनासिब नहीं समझता।"

"किसी ने तुम्हारे साथ मजाक किया होगा। यहां की माचिसों के पीछे आज तक नंबर नहीं छपे। डू यू अंडरस्टैंड?"

"आई अंडरस्टैंड।"

"अब भगवान के लिए ये माचिसें या तो मेरे हवाले कर दो या फिर अपनी जेब में जल्दी से डाल लो। किसी ने ये माचिसें तुम्हारे हाथ में देख लीं तो मेरी नौकरी खड़े-खड़े छिन जाएगी।"

"मैं तुम्हारी नौकरी नहीं छिनने दूंगा।"

इंद्रजीत ने जल्दी से वे माचिसें अपने कोट की भीतरी जेब में सरका दीं।

तभी ऑफिस की तरफ वाला दरवाजा खुला और वहां एक मोटे से आदमी ने कदम रखा।

उस आदमी पर नजर पड़ते ही हैरी के हाथ-पैर कांपने लगे।

इंद्रजीत ने उस आदमी का सरसरी निगाहों से जायजा लिया तो पाया कि वो नाईट क्लब का वाईन मैनेजर गोम्स था, क्योंकि उसकी वर्दी पर उसके नाम के साथ-साथ वाईन मैनेजर भी लिखा हुआ था।

वो आदमी जैसे ही हैरी के करीब पहुंचा, हैरी इंद्रजीत से बोला—"मिस्टर, ये हमारे वाईन मैनेजर मिस्टर गोम्स हैं। आप इनसे बिना अप्वाइंटमेंट के मुलाकात नहीं कर सकते। आप यहां कैसे आ गए, मेरी समझ में नहीं आया।" फिर वो गोम्स से सम्बोधित हुआ—"सर, ये किसी ब्रांडी कम्पनी के नुमाईंदे हैं और आपसे किसी सिलसिले में बातचीत करना चाहते हैं।"

इंद्रजीत ने अपना सिर अदा से नवाकर गोम्स का अभिवादन किया।

Scanned by CamScanner

"मिस्टर गोम्स।" फिर वह बोला—"मैं स्काई हाई ब्रांडी कम्पनी का ब्रांच मैनेजर हूं।" उसने अपना फर्जी विजिटिंग कार्ड उसके हवाले किया और फिर व्यावसायिक लहजे में बोला—"कुड यू स्पेयर मी ए मोमेंट ऑफ युअर टाईम?"

गोम्स ने इंद्रजीत का दिया विजिटिंग कार्ड बड़े ध्यान से पढ़ा फिर एकाएक उसकी भवें उठती चली गयीं।

"मैंने तुम्हारी कम्पनी से कोई डील नहीं करनी।" वह विजिटिंग कार्ड इंद्रजीत को लौटाते हुए बोला—"मैंने तुम्हारे एक बंदे को मना भी किया था, फिर भी तुम मुंह उठाकर चले जाए।"

"मिस्टर गोम्स, मैं आपके लिए ब्रांडी का सैम्पल लेकर आया हूं। आप इस सैम्पल को..."

इंद्रजीत का जुमला पूरा होने से पहले ही गोम्स हैरी से बोला—"ये यहां आया कैसे?" उसके स्वर में तीखापन था।

"मुझे नहीं मालूम सर।" हैरी अनभिज्ञता जाहिर करते हुए बोला—"मैं यहां काउंटर पर काम कर रहा था, तभी मैंने इसे आपके बारे में मालूमात करते देखा था।"

"जनाबे आली।" इंद्रजीत बोला—"मैं लिफ्ट के जरिए यहां आया हूं। लिफ्ट के बाहर खड़े आपके बंदे को मैंने अपना परिचय और आने का मकसद बताया था। उसके इजाजत देने पर ही मैं यहां पहुंचा हूं। मैंने कोई गलत काम किया?"

"मैं किसी भी सेल्समैन से बिना अप्वायंटमेंट के नहीं मिला करता।" गोम्स मुंह बिगाड़कर बोला।

"आई एम सॉरी, मिस्टर गोम्स। ऐसी बात है तो आप मुझे कल की डेट दे दीजिए।" इंद्रजीत ने ब्रांडी की बोतल का पैकेट काउंटर पर रखा—"तब तक आप इस सैम्पल को टेस्ट करवा के देख लीजिए। फिर कल हम बिजनेस की बातें कर लेंगे।"

"बिजनेस की बातें हम अभी करेंगे।" तभी पीछे से आई एक सर्द आवाज वहां गूंजी।

गोम्स और हैरी उस आवाज को सुनकर पत्थर की शिला में तब्दील हो गए। एकबारगी इंद्रजीत का दिल तेजी से धड़का। दो पल बाद उसने गर्दन घुमाकर पीछे की तरफ देखा।

एक काला आदमी, जिसने टक्सयूडो सूट पहना हुआ था। जिसका मुंह बेहद पतला, नाक तोते जैसी और आंखें कंचों जैसी थीं, इंद्रजीत को खा जाने वाली निगाहों से घूरते हुए बोला—"बिजनेस की बातें अभी होंगी। आज का काम मैं कल पर नहीं छोड़ा करता।"

इंद्रजीत को समझते देर नहीं लगी कि वो काला आदमी ही नाईट

Scanned by CamScanner

क्लब का असली मालिक क्रिस है। उसकी चाल-ढाल, आवाज, पहनने ओढ़ने का ढंग साफ-साफ क्रिस होने की चुगली कर रहा था।

इंद्रजीत के देखते-देखते क्रिस उसके पास आया, उसने उसकी अंगुलियों में फंसा विजिटिंग कार्ड खींचा और उसे पढ़ने लगा।

पढ़ने के बाद उसने विजिटिंग कार्ड के दो टुकड़े किए और एक ओर फेंक दिया।

फिर उसने काउंटर पर पड़े ब्रांडी के पैकेट पर अंगुली तानी—"ये, क्या है?"

वाईन वैनेजर गोम्स के जिस्म में फौरन फुर्ती का संचार हुआ। हाथ बढ़ाकर उसने पैकेट उठाया और फिर उसे खोलकर काउंटर पर रख दिया। कुछ इस अंदाज में कि उसका 'आका' कहा जाने वाला क्रिस बोतल पर मौजूद लेबल पढ़ सके।

क्रिस ने बोतल का लेबल पढ़ा। फिर वह इंद्रजीत की ओर घूमा। उस वक्त उसकी आंखों में कठोरता की चमक उभरी हुई थी।

"इस शराब के लिए मैंने एक महीने पहले नो कह दिया था।" वह बोला—"नो का मीनिंग नहीं जानते?"

"जनाबे आली।" इंद्रजीत मीठे स्वर में बोला—"मैं नो का मीनिंग क्यों नहीं जानूंगा। नो का मीनिंग तो अनपढ़ लोग भी जानते हैं—जबकि मैं तो पढ़ा लिखा हूं।"

"फिर इसे यहां लाने का मतलब?"

"मैं आपके नजरिए को बदलने के मकसद से इसे यहां लेकर आया हूं। मुझे उम्मीद थी कि मैं आपका नजरिया बदलने में शर्तिया कामयाब हो जाऊंगा। आप इसे एक बार अपने गेस्ट्स को पिलाकर देखिए, उसके बाद आप इस ब्रांडी की शान में 'वाह' के कसीदे गढ़े बिना नहीं रह सकेंगे।"

"भले ही ये गंदे पानी की बनी हो।"

"जनाबे आली, आप भी कैसी बात कर रहे हैं। शराब भी भला कहीं पानी से बनती है। शराब तो अंगूरों और कैमिकल्स से..."

"मुझे पढ़ाने की कोशिश मत करो।" क्रिस डपटकर बोला—"पढ़ने की मेरी उम्र कब की गुजर चुकी है। अब मैं पढ़ता नहीं पढ़ाता हूं। समझे?"

"जी।"

"क्या समझे?"

"यही कि आज की तारीख में आप पढ़ाते नहीं पढ़ते हैं।"

"मिस्टर मैं पढ़ता नहीं पढ़ाता हूं।"

"ओ। सॉरी सॉरी।"

"वैसे तुम जो हो," एकाएक क्रिस आंखें तरेरकर बोला—"वो मुझे नहीं लगते। मुझे तो लगता है कि तुम कोई और हो।"

इंद्रजीत सकपकाया।

"तुम कोई और ही हो न?" क्रिस उसका गौर से जायजा लेते हुए बोला।

"म...मतलब।"

"मेरा मतलब है कि तुम कोई बहरूपिए हो।"

"बहरूपिया।"

"नहीं जानते बहरूपिया किसे कहते हैं?"

"सॉरी सर। नहीं जानता।"

"तुम कार चलाते हो?"

"कभी-कभी।"

"फिर तो तुम्हारे पास लाईसेंस भी होगा।"

"मैं लाईसेंस नहीं रखता।"

"हैरानी की बात है। कार चलाते हो और लाईसेंस नहीं रखते।"

"मैंने बताया न कि मैं कभी-कभी कार..."

इससे पहले इंद्रजीत अपना जुमला पूरा कर पाता, क्रिस का जोरदार थप्पड़ उसके गाल को लाल करता चला गया।

इंद्रजीत के मन में आया कि वो क्रिस की छाती को फाड़े और उसका सारा खून पी जाए।

इंद्रजीत पर हाथ उठाने की जुर्रत आज तक जिस किसी ने की थी—इंद्रजीत ने उसे सजा के तौर उसकी जान ही ले ली थी। अब यही हिमाकत क्रिस ने की थी।

कुछ पलों तक इंद्रजीत आंखें बंद करके, दांत भींचकर अपने गुस्से पर काबू पाता रहा।

फिर वह एक गहरी सांस छोड़कर अपने हाल पर जबरन काबू पाकर बोला—"आपका मुझ पर हाथ उठाना जाहिर करता है कि मेरा यहां आना आपको अच्छा नहीं लगा। ऐनी वे—मैं आपका ज्यादा वक्त नहीं लूंगा। मैं सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि..."

"कुछ कहने के बजाए" क्रिस घुड़कने वाले अंदाज में बोला—"तुम यहां से गैट आऊट हो जाओगे तो तुम्हारी सेहत के लिए अच्छा होगा।"

"ठीक कहते हैं, आप। मुझे यहां से गैट आऊट हो जाना चाहिए।"

इंद्रजीत ने दाहिनी तर्जनी बाये से लगाई फिर अपने लहजे में कठोरता का पुट लाते हुए बोला—"नाचीज को थप्पड़ मारकर आपने।

Scanned by CamScanner

जो इज्जत बख्शी, उसके लिए मैं कमतरीन तहे दिल से आपका शुक्रगुजार है।"

कहने के साथ ही वो घूमा और लम्बे डग भरता उस द्वार की तरफ बढ़ गया जो लिफ्ट की तरफ जाता था।

इंद्रजीत लिफ्ट के दरवाजे के सामने पहुंचा ही था कि एकाएक लिफ्ट का बंद दरवाजा खुला और तीन लोगों ने बाहर कदम रखा।

उन लोगों पर नजर पड़ते ही इंद्रजीत जड़ हो गया।

कारण!

उनमें से एक टोनी था, जिसकी उसने अच्छी खासी पिटाई की थी।

काफी देर तक इंद्रजीत और टोनी एक दूसरे को घूरते रहे। उस घड़ी टोनी के चेहरे पर जो भाव उभरे पड़े थे, उन्हें देखकर लगता था कि इंद्रजीत का हश्र उस चूहे जैसा होगा जो भयानक भूखी बिल्ली के सामने आ जाता है।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ—टोनी ने आक्रामक रुख अख्तियार नहीं किया।

"हाय हीरो!" वह अपने लहजे में जमाने भर की मिठास घोलते हुए बोला—"पहचाना?"

इंद्रजीत मुंह से कुछ नहीं बोला। उसने अपना सिर हामी में हिलाया।

"यार, तुम्हारा हाथ सच में हथौड़ा है।" टोनी ने अपना जबड़ा सहलाया—"मेरा जबड़ा अभी तक हिला हुआ है। कौन-सी चक्की का आटा खाते हो?"

इंद्रजीत कुछ नहीं बोला।

एकाएक सामने आई मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए उसका दिमाग कम्प्यूटर की तरह काम कर रहा था।

"तुमने बताया नहीं।" टोनी बोली—"कौन-सी चक्की का आटा खाते हो?"

"मैं आटा नहीं खाता।" इंद्रजीत भावहीन स्वर में बोला—"मैं रोटियां खाता हूं।"

टोनी बुक्का फाड़कर हंसा।

उसके साथ-साथ उसके गुर्गे भी हंसे।

थोड़ी देर बाद टोनी की यही हंसी थमी तो उसके गुर्गों ने भी हंसना बंद कर दिया।

"वैरी स्मार्ट।" टोनी ने इंद्रजीत के सीने पर हौले से घूंसा जमाया—"वैरी स्मार्ट गाई। मुझे अच्छे लगे तुम। आई लाईक यू। आओ जाम के दो घूंट हो जाएं।"

"मैं दिन में शराब नहीं पीता।" इंद्रजीत ने सफेद झूठ बोला।

"कोई बात नहीं। आज पी लो। आज दो दुश्मनों का मिलन हुआ है। आज दो शेरों ने एक दूसरे से हाथ मिलाया है।"

इंद्रजीत कुछ कह पाता, उससे पहले टोनी ने अपने गुर्गों को एक इशारा किया और फिर इंद्रजीत की साईड से गुजरकर बार की तरफ बढ़ गया।

गुर्गों ने इंद्रजीत को बाहों से पकड़ा और बार में ले आए।

बार में मौजूद गोम्स और क्रिस ने टोनी और उसके गुर्गों के साथ इंद्रजीत को देखा तो उनकी आंखें सिकुड़े बिना न रह सकीं।

"इसे साथ क्यों ले आए?" क्रिस बोला—"बड़ी मुश्किल से मैंने इसे यहां से दफा किया था?"

"क्रिस साहब, ये हमारा मेहमान है।" टोनी बोला—"आपने इसकी खातिर तवाजो तो की नहीं होगी। इसलिए मैं इसे अपने साथ ले आया।"

"पहेलियां मत बुझाओ। ये हमारा मेहमान कैसे हो गया? ये तो एक कम्पनी का मामूली-सा मुलाजिम है।"

"यही तो हमारे मेहमान की खासियत है। ये गोलियां देने में माहिर है।" टोनी उपहास भरे स्वर में बोला—"असल में ये जो है—वो नहीं है। जो नहीं है—वो है।"

"मतलब?" क्रिस के मुंह से बरबस निकला।

"मतलब यही है।" टोनी बनावटी स्वर में बोला—"ये ही वो खटमल है, जिसने हमारे माईकल साहब के बिस्तर में घुसकर उन्हें काटने की हिमाकत की है। ये ही वो मच्छर है, जो दीपक नाम के मच्छर का जिगरी यार है।"

क्रिस ने इंद्रजीत को खा जाने वाली निगाहों से घूरा।

फिर न जाने क्या सोचकर वह उस दरवाजे की तरफ बढ़ चला जो नाईट क्लब के ऑफिस की तरफ खुलता था। दरवाजे के पास पहुंचकर वो ठिठका, उसने टोनी की तरफ देखा फिर सरसरी लहजे में बोला—"इस मच्छर की तुमने जो खातिर तवाजो करनी है—जल्दी से कर लो। थोड़ी देर में बॉर खुलने वाला है। मैं नहीं चाहता कि इस मच्छर की वजह से क्लब का माहौल खराब हो।"

"आप चिंता मत क[illegible]र, मिस्टर क्रिस।" टोनी यकीन भरे स्वर में बोला—"इस मच्छर को मैं ऐसा इंजेक्शन लगाऊंगा कि आगे से ये

Scanned by CamScanner

किसी का खून पीने की जुर्रत नहीं करेगा।"

"वो तो ठीक है।" क्रिस जल्दी से बोला—"लेकिन यहां का माहौल।"

"माहौल बिल्कुल खराब नहीं होगा, क्रिस साहब।"

क्रिस दरवाजा खोलकर भीतर चला गया।

टोनी के खूनी इरादे देखकर इंद्रजीत ने अपना रिवॉल्वर टटोला। ये जानकर उसे थोड़ी बहुत तसल्ली हुई कि उसका रिवॉल्वर उसके कोट की जेब में महफूज था।

"हां, तो मिस्टर हीरो!" टोनी इंद्रजीत के करीब आया—"क्या खातिर की जाए?"

"जो मेहमान मेजबान को खातिर के लिए कहता है," इंद्रजीत बोला—"मेरी नजर में वो मेहमान ही नहीं होता।"

"गुड! डायलाग अच्छा मारा। डायलाग मारने में तुम काफी परफैक्ट जान पड़ते हो।"

इंद्रजीत चुप रहा।

"तुमने मेरी पिटाई अच्छी की थी।" टोनी बोला—"ऐसे धुना था तुमने मुझे जैसे मैं रूई का गोला हूं। तुमने तो मुझे इंसान समझा ही नहीं था। एक जानवर समझकर तुमने मेरी जो पिटाई की थी—उसका कर्ज मुझे चुकाना है। कहो तो तुम्हारी खातिर अपने इसी कर्ज को चुकता करके चुका दूं।"

"मैंने तुम्हारे साथ जो कुछ भी किया" इंद्रजीत बोला—"मजबूरी के तहत किया। मैं तुम्हें न रोकता तो तुम शिवराम को सीधा यमलोक पहुंचा देते। एक इंसान की जान बचाने के लिए मुझे न चाहते हुए भी तुम पर हाथ उठाना पड़ा था।"

"शिवराज तुम्हारा सगेवाला था जो तुमने उस पर तरस खाया?"

"जरूरी नहीं कि तरस अपनों पर ही खाया जाए। मैंने उस पर तरस इंसानियत की वजह से खाया था। वो बूढ़ा था। तुम उसकी जान लेने पर अमादा था। उसे तुम्हारे शिकंजे में फंसने से बचाकर मैंने एक तरह से सबाब का काम किया है।"

"डायलाग मारने में सच में तुम्हारा जवाब नहीं। डायलाग सच्चे में अच्छे मारते हो।"

"डायलाग मारने के अलावा, मैं फाईट भी अच्छी जानता हूं। यहां फाईट का मौका मिले तो मैं तुम्हें अपने जौहर एक बार फिर दिखा सकता हूं।"

"फाईट करने का मौका तुम्हें मिलेगा, लेकिन यहां नहीं। सुना नहीं क्रिस साहब ने अभी क्या कहा था। थोड़ी देर में बॉर खुलने वाला

है। वे तुम्हारी वजह से यहां का माहौल खराब करना नहीं चाहते। फाईट का मौका तुम्हें दिया जाएगा। लेकिन अभी नहीं।"

"फिर क्या बात बनी?"

"बात भी बनेगी।"

टोनी ने अपने गुर्गों को एक इशारा किया।

गुर्गों ने इंद्रजीत को बांहों से पकड़ लिया।

"इसे!" टोनी बोला—"ऊपर वाले कमरे में बंद कर दो। सुबह होने पर मैं इससे निपटूंगा। अभी माईकल साहब के काम से मुझे कहीं जाना है।"

"बाप।" एक गुर्गा बोला—"आप कहो तो स्याले का तीयापांचा अपुन ही कर दे। बड़े दिनों से अपुन ने किसी बकरे की हड्डियां न चटकाईं। इसकी हड्डियां तोड़कर अपुन को भौत सैटिसफैक्शन होगा।"

"इसकी हड्डियां चटकाने का मौका मैं तुम्हें ही दूंगा।" टोनी बोला—"लेकिन उससे पहले मैंने इसका उधार चुकता करना है। इसने जो मुझे दिया है, मैं शराफत से इसे लौटाऊंगा। फिर इसे तुम्हारे हवाले कर दूंगा। तब तुम अपने मन की मुराद पूरी कर लेना। ओके?"

गुर्गे का सिर सहमति में हिला।

फिर इंद्रजीत को न चाहते हुए भी गुर्गों के आदेश का पालन करना पड़ा।

थोड़ी देर बाद वह क्लब की छत पर बने एक छोटे से कमरे में कैद था।

उस वक्त यह सोचकर उसे तसल्ली हो रही थी कि गुर्गों ने उसकी तलाशी लेने की कोई जहमत नहीं उठाई थी।

उसका रिवॉल्वर अब भी उसके कोट की जेब में सही सलामत था।

बंद कमरे में इंद्रजीत आधे घंटे तक दीवारों को देखता रहा और वहां से बाहर निकलने की तरकीबें सोचता रहा।

कमरे में एक दरवाजा था जो कि बिल्ट-इन-लॉक था। खिड़की का नामोनिशान न था। रोशनदान जो था, उसमें जाली के साथ-साथ लोहे की सलाखें भी लगी हुई थीं।

कमरे में काठ कबाड़ के नाम पर कार्टन के कुछ डिब्बे और खाली बोरे यहां वहां पड़े थे।

बाहर निकलने के लिए इंद्रजीत को एक ही रास्ता नजर आ रहा था कि वो रिवॉल्वर निकालकर गोली से दरवाजे का बिल्ट-इन- लॉक

Scanned by CamScanner

ै, लेकिन गोली की आवाज वातावरण में गूंजकर लोगों को चौंका ती थी, टोनी के गुर्गों को चेता सकती थी—इसलिए वो रिवॉल्वर इस्तेमाल से परहेज कर रहा था। रिवॉल्वर चलाना खतरे से खाली ा था।

रिवॉल्वर चलाने के अलावा बाहर निकलने के लिए इंद्रजीत को ा कोई उपाय न सूझा, तो वह परेशान हो उठा। अपनी जगह से कर वो कमरे में चहलकदमी करने लगा।

पांच मिनट तक चहलकदमी करने के बाद वो एक कोने में दीवार ारे खड़ा हो गया। तभी सहसा उसकी नजर खाली बोरों पर पड़ी।

कुछ पलों तक वह बोरों को एकाएक देखता रहा।

फिर एकाएक उसके दिमाग में एक आईडिया आया।

उसने एक बोरे को उठाया और उसे हाथों में लेकर तौला।

वो बोरा उसे कमरे से बाहर निकलने में काफी मदद कर सकता ।

बस जरूरत थी तो उसे तरीके से इस्तेमाल करने की।

उसकी जरा-सी लापरवाही उसे इस कैद में सड़-सड़कर मरने से फिर टोनी के हाथों में तड़प-तड़पकर मरने को मजबूर कर सकती ।

उसने रिवॉल्वर कोट की जेब से निकाला—बोरा नाल पर अच्छी से लपेटा।

फिर वह दरवाजे के करीब पहुंचा।

बोरे समेत रिवॉल्वर की नाल उसने विल्ट-इन-लॉक पर टिकाई फिर अपने ईष्टदेव का नाम लेकर ट्रिगर दबा दिया।

पिट की आवाज के साथ रिवॉल्वर से गोली निकली। लॉक के च्चे उड़ गए।

बोरे ने रिवॉल्वर के लिए साईलेंसर का अच्छा खासा काम किया

लॉक टूटने पर इंद्रजीत के लिए बाहर निकलना मुश्किल काम ा।

थोड़ी देर बाद वह कमरे से बाहर होटल की छत पर मौजूद था।

छत पर यहां वहां मरकरी वैपर लैम्प लगे हुए थे—जिसकी रोशनी इंद्रजीत ने देखा कि उस वक्त छत पर कोई नहीं था।

इंद्रजीत ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली।

आठ बज चुके थे।

दस बजे उसने रवीना से मिलना था।

इंद्रजीत चिंतित हो उठा।

यहां से सही सलामत बाहर निकलना एकाएक उसे मुश्किल काम लगने लगा था।

वो छत की मुंडेर के पास पहुंचा।

वहां से उसने नीचे की ओर देखा तो उसे एक तरह से सारे गोवा शहर का नजारा हो गया। रिट्ज होटल काफी ऊंचा बना था। वो वहां से छलांग भी नहीं लगा सकता था।

कुछ सोचकर इंद्रजीत छत की दूसरी मुंडेर के पास पहुंचा।

वहां से उसने नीचे झांका तो उसे खुले एरिए में नाईट क्लब का ऑफिस दिखाई दिया। इंद्रजीत ने ऑफिसों के कमरों का जायजा लिया तो वे उसे बंद दिखाई दिए।

इंद्रजीत ने उन कमरों के पास जाने का फैसला किया।

लेकिन उन तक जाने के लिए उसे लिफ्ट का इस्तेमाल करना लाजिमी था। जबकि ऐसे वक्त में जब क्लब में चहल-पहल शुरू हो चुकी थी, उसका लिफ्ट को छत पर बुलाना टोनी के गुर्गों को सचेत कर सकता था।

अपना सिर झटककर इंद्रजीत ने लिफ्ट बुलाने का इरादा छोड़ा और मुंडेर के जरिए कमरों तक पहुंचने का फैसला किया।

अपने शरीर का अग्र भाग मुंडेर से बाहर निकालकर इंद्रजीत ने किसी सहारे की तलाश में नजरें इधर-उधर दौड़ाईं तो उसकी नजर एक वाटर कूलर पर चिपककर रह गयीं।

वाटर कूलर के जरिए वह नीचे उतर सकता था।

उसने वाटर कूलर तक पहुंचने का फैसला किया।

मुंडेर को सख्ती से पकड़कर वह बाहर की तरफ लटक गया।

उसने वाटर कूलर की तरफ देखा तो पाया कि वो उससे तीन फुट की ऊंचाई पर था।

सावधान निगाहों से इधर-उधर देखने के बाद—जब उसे यकीन हुआ कि वहां कोई नहीं है—वह वाटर कूलर पर कूद गया।

चूंकि वाटर कूलर मुंडेर के छज्जे के थोड़ा परे रखा था, इसलिए वह वॉटर कूलर पर सही सलामत नहीं पहुंच पाया। कूलर तक उसका एक ही पांव टिका। उसका संतुलन फौरन बिगड़ा, लेकिन अगले ही पल उसने खुद को संभाला और फर्श पर कूद गया।

इस उपक्रम में उसकी सांसें फूल गयी थीं।

फर्श पर आकर सांप की तरह जमीन पकड़कर उसने गहरी-गहरी सांसें लेकर खुद को सामान्य किया और फिर आहट लेने की कोशिश करने लगा।

थोड़ी देर बाद—जब उसे यकीन हुआ कि उसके गिरने की

Scanned by CamScanner

आवाज से कोई हलचल नहीं हुई है, वह सावधानी से उठा और ऑफिस के कमरों की तरफ बढ़ गया।

इससे पहले वो कमरों के करीब पहुंच पाता, उसे लिफ्ट के ऊपर आने की आवाज सुनाई दी।

निसंदेह कोई लिफ्ट के जरिए ऊपर आ रहा था।

इंद्रजीत ने खुद को छुपाने के लिए इधर-उधर निगाहें दौड़ाईं तो उसकी निगाह वाटर कूलर पर जा अटकी।

दबे पांव चलकर वह वाटर कूलर के पीछे पहुंचा और उकड़ू बैठ गया।

कुछ पलों बाद उसे लिफ्ट में से क्रिस एक नौजवान के साथ बाहर कदम रखता दिखा।

लिफ्ट से बाहर आकर वह नौजवान से बोला—"विक्टर, पांच हजार में बिल्कुल काम नहीं चलेगा। मुझे बीस हजार चाहिए।"

"बीस हजार मैं आपको अगले हफ्ते दे दूंगा।" नौजवान गिड़गिड़ाने वाले लहजे में बोला—"आप निश्चिंत रहिए, क्रिस साहब। मैं आपकी पाई-पाई चुका दूंगा। भले ही मुझे कोई गैर-कानूनी काम क्यों न करना पड़े।"

"तुम कत्ल करो। चोरी करो। डाका डालो।" क्रिस मुंह बिगाड़कर बोला—"लेकिन बीस हजार का इंतजाम जल्द-से-जल्द करो। अगले हफ्ते तक तुमने बीस हजार का इंतजाम नहीं किया, तो मैं तुम्हें एक भी माचिस नहीं दूंगा।"

"मैं बीस हजार का इंतजाम हर हाल में कर दूंगा। आप माचिस न देने की बात मत कीजिए। आपकी माचिसें मेरी जान हैं। आपकी माचिसों के बिना मैं जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता।"

"फिलहाल मैं तुम्हें एक माचिस दे रहा हूं।" क्रिस नौजवान के साथ एक कमरे के सामने ठिठककर बोला—"अगले हफ्ते तक तुमने बीस हजार का इंतजाम नहीं किया तो —तो तुम्हें एक भी माचिस नहीं मिलेगी। अंडरस्टैंड?"

कुछ कहने के बजाए नौजवान ने सहमति में सिर हिलाया।

फिर इंद्रजीत के देखते-देखते क्रिस ने कमरे का दरवाजा खोला और नौजवान के साथ भीतर दाखिल हो गया।

दोनों के भीतर समाते ही कमरे की लाईट जली और दरवाजा बंद हो गया।

इंद्रजीत सावधानी से कूलर की ओट से बाहर गया—दबे पांव चलकर कमरे की खिड़की के सामने पहुंचा।

खिड़की में भीतर की तरफ से पर्दा लगा हुआ था।

लेकिन पर्दे की एक झिर्री से भीतर का नजारा साफ-साफ दिखाई दे रहा था।

नौजवान ने अपनी पैंट की जेब से कुछ नोट निकालकर क्रिस के हवाले किए तो क्रिस ने उन नोटों को गिनकर अपने कोट की भीतरी जेब में डाला और फिर एक चाबी से कोने में पड़ी सेफ खोलने लगा।

सेफ कंबीनेशन लॉक वाली थी।

चाबी घुमाने के बाद क्रिस सेफ की आड़ में खड़ा हो गया, ताकि नौजवान उसका कंबीनेशन नंबर न जान पाए।

कंबीनेशन नंबर सैट करने के बाद उसने सेफ खोली और माचिस का एक खोल नौजवान के हवाले कर दिया।

इंद्रजीत माचिस को देखते ही चौंका।

उस माचिस पर वैसा ही सीरियल नंबर मौजूद था—जैसा कि वो दीपक के सूटकेस से बरामद माचिसों पर देख चुका था।

एकाएक इंद्रजीत के जेहन में उथल-पुथल होने लगी।

सीरियल नम्बर वाली माचिसें उसके लिए एक मिस्ट्री बन गयी थी।

तभी उसे वो नौजवान बाहर निकलने को तत्पर दिखाई देने लगा।

उसके बाहर निकलने से पहले ही इन्द्रजीत ऑफिस की साईड वाली दीवार के पीछे सरक गया।

नौजवान क्रिस के ऑफिस से बाहर आया और तेज कदमों से लिफ्ट की तरफ बढ़ गया।

लिफ्ट के वहां से जाने के बाद इंद्रजीत दीवार की ओट से बाहर आया और दबे पांवों से फिर से खिड़की के पास पहुंचा।

उसने भीतर झांका तो उसे क्रिस अपनी विशाल मेज के पीछे बैठा हिसाब-किताब करता दिखाई दिया।

कुछ देर तक इंद्रजीत यूं ही खड़ा रहा।

फिर उसके देखते-देखते क्रिस की मेज पर पड़ा इंटरकाम बजा।

क्रिस ने इंटरकाम ऑन किया तो इंटरकाम के स्पीकर से उभरी आवाज इंद्रजीत को सुनाई दी। क्रिस का कोई नुमाईंदा किसी डेविड को उसके पास भेजने की परमिशन मांग रहा था।

क्रिस ने डेविड नाम के बंदे को भेजने की परमिशन दी तो इंद्रजीत एक बार फिर दीवार की ओट में हो गया।

एक बार फिर लिफ्ट ऊपर आई और उसमें से एक हिप्पी दिखाई देने वाले नौजवान ने बाहर कदम रखा।

उस वक्त वो नशे में झूम रहा था।

Scanned by CamScanner

झूमते-झूमते वो क्रिस के दफ्तर में दाखिल हुआ तो इंद्रजीत सावधानी से खिड़की के पास सरक आया।

उसने भीतर झांका।

उसे नौजवान क्रिस के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठता दिखाई दिया।

"और डेविड!" क्रिस उस नौजवान के बैठते ही बोला—"कैसे हो?"

"माचिसों के बिना," डेविड नाम का युवक लड़खड़ाते स्वर में बोला—"डेविड कैसा हो सकता है?"

"यानी कि ठीक नहीं हो?"

"मेरे साथ-साथ मेरी मैरी भी ठीक नहीं है। आजकल वो भी परेशान है।"

"क्यों?"

"आपने माचिसें जो नहीं दीं।"

"भई, माचिसें देने के लिए मैंने कब मना किया है। कीमत सामने रखो और जितनी चाहें माचिसें साथ ले जाओ।"

"तुम्हें उधार पसंद नहीं है, इसलिए मेरी हालत कुत्ते जैसी हो गयी। मुझे दारू पसंद नहीं है, फिर भी देख लो तुम्हारी जिद की वजह से मुझे दारू पीनी पड़ रही है।"

"भई मुझे धंधा करना है। धंधे में मैं उधार बिल्कुल पसंद नहीं करता। मेरे धंधे के कुछ उसूल हैं।"

"तभी तो मैंने अपनी मां के गहने बेचकर," उसने अपनी चमड़े की जैकेट में हाथ डाला और नोटों का एक पुलंदा मेज पर रखते हुए बोला—"इसका इंतजाम किया है।"

नोटों के पुलंदे पर नजर पड़ते ही क्रिस की बांछें खिलकर रह गयीं।

उसने जैसे ही पुलंदे पर हाथ रखना चाहा, डेविड ने उसका हाथ रोक लिया—"पहले माचिस।"

क्रिस ने खींसे निपोरी—"मैं कौन-सा भागे जा रहा हूं।"

"क्रिस साहब, नोट भी कहीं नहीं भागे जा रहे। पहले माचिस। उसके बाद नोट आपके।"

"मैं देखना चाहता हूं कि नोट असली हैं या..."

"मैं आपको नकली नोट छापने वाला दिखाई दे रहा हूं।" डेविड तनतनाकर बोला—"जनाब, मैं पैड्रिक का लड़का हूं। मेरे बाप को जानते हो। वो चाहे तो सारे गोवा को खरीद सकता है। आपने ऐसा कहकर मेरी इंसल्ट की है।"

"ओके, ओके। मैं तो यूं ही कह रहा था।"

"नहीं। आप यूं ही नहीं कह रहे थे। आप मुझ पर फ्राड का इल्जाम लगा रहे थे।"

"भई, समझो। मैं यूं ही कह रहा था।"

"तो फिर सॉरी बोलो।"

"अच्छा बाबा। सॉरी। और कुछ?"

"नहीं। माचिस सामने रखो।"

क्रिस अपनी जगह से उठा। उसने एक बार फिर सेफ खो और दो माचिस निकालकर डेविड के सामने रख दीं।

डेविड ने माचिसों को खोलकर देखा।

"कमाल है, क्रिस साहब।" फिर वह बोला—"ऐसी माचि आपके क्लब में भी हैं। लेकिन इनमें और उनमें जमीन आसमान फर्क है। इसकी कीमत हजारों की है—जबकि उनकी रुपए दो की क्या तरीका निकाला है आपने हम रंगीलों को ऐश कराने का। चाहता है—आपका मुंह चूम लूं।"

क्रिस ठहाका मारकर हंसा।

फिर नोटों का पुलंदा अपने कब्जे में करते हुए बोला—"रक गिनने की जरूरत है?"

"बिल्कुल नहीं। मैंने आज तक थुकवाने वाला काम नहीं कि रकम बिल्कुल चौकस है।"

"यानी कि पूरे दस हजार हैं।"

"हां। न एक कम—न एक ज्यादा।"

"तुम कहते हो तो मान लेता हूं।"

"एक गुजारिश और है।"

"बोलो।"

"यहां आने-जाने के लिए मुझे आपके चमचों के जो तलवे रग पड़ते हैं—उसका कोई इंतजाम करो। हम तो आपके परखे ल हैं—फिर इतनी सिक्योरिटी किसलिए?"

"धंधा खतरनाक है न—इसलिए सिक्योरिटी का इंतजाम कर पड़ता है। आगे से तुम यहां आओगे तो कोई तकलीफ नहीं हो मैं कोई-न-कोई इंतजाम करके रखूंगा।"

"फिर इसी बात पर मेरा थैंक्यू कबूल फरमाईए।"

डेविड ने अपना हाथ क्रिस की तरफ बढ़ाया तो क्रिस ने दो बार हिलाने के बाद धीरे से छोड़ दिया। डेविड लड़खड़ाकर उठ माचिस अपनी जैकेट की जेब के हवाले करने के बाद उसने क्रिस अभिवादन किया और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

इससे पहले वो दरवाजे से बाहर निकल पाता, इंद्रजीत दबे प

Scanned by CamScanner

चलकर लिफ्ट के पास पहुंच गया।

उसने लिफ्ट को बुलाने का स्विच दबाया और लापरवाही से चहलकदमी करने लगा। तभी डेविड नशे में झूमता हुआ वहां आया।

"हैलो डेविड।" इंद्रजीत चहकने वाले अंदाज में बोला—"खुराक मिल गयी?"

डेविड ने आंखें मिचमिचाकर इंद्रजीत को उलझनभरी निगाहों से देखा।

इससे पहले वो कुछ पूछ पाता, लिफ्ट का दरवाजा खुल गया।

डेविड ने एक नजर लिफ्ट की ओर डाली और फिर इंद्रजीत से सम्बोधित हुआ—"मैंने आपको पहचाना नहीं।"

"डियर।" इंद्रजीत उसकी गर्दन में बांह डालते हुए बोला—"मैं तुम्हारा खासुल खास हूं। इस समय तुम सातवें आसमान पर उड़ रहे हो—इसलिए नहीं पहचान पा रहे। लिफ्ट में चलो—फिर बताता हूं कि मैं कौन हूं।"

डेविड का सिर सहमति में हिला।

फिर वह बड़ी शराफत से इंद्रजीत के साथ लिफ्ट में दाखिल हो गया।

"हूं। अब बताओ। कौन हो तुम?" एक स्विच दबाने के बाद वो बोला।

"मैं मैरी का भाई मैरा हूं।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"मैरी की सर्वंडे पार्टी में मेरी तुमसे मुलाकात हुई थी। कुछ याद आया?"

"तुम मैरी के भाई हो?"

"हां।"

"तुम्हारा नाम मैरा है?"

"हां।"

"लेकिन मैरी के भाई का नाम तो कुछ और था।"

"मैरा मेरा निक नेम है। यानी कि घर का नाम—वैसे मेरा नाम कुछ और है।"

"क्या है?"

"तुम बताओ।"

"मेरे ख्याल से तुम्हारा नाम पैरी होना चाहिए।"

"अरे यार!" इंद्रजीत ने उसके कंधे पर धौल जमाई—"मान गए! दारू पीने के बाद भी तुम्हारी याददाश्त चाक चौबंद रहती है। ठीक पहचाना। मेरा नाम पैरी ही है।"

डेविड की छाती फूलकर दूनी हो गयी।

तभी लिफ्ट ग्राउंड फ्लोर पर आकर रुक गयी।

लिफ्ट का दरवाजा खुलने से पहले इंद्रजीत ने सावधानी के तौर पर अपना चेहरा हाथ से ढांप लिया, ताकि टोनी का कोई गुर्गा—या खुद टोनी उससे टकरा न जाए।

दरवाजा खुलने पर उसे टोनी या उसका कोई गुर्गा दिखाई नहीं दिया तो उसने राहत की सांस ली। फिर डेविड से इधर-उधर की दो बातें करने के बाद वो होटल से बाहर निकल आया।

दस बजे पहुंचने का वायदा करके रवीना दस बजकर दस मिनट पर पहुंची। उस घड़ी वो हरे रंग का ईवनिंग गाउन पहने थी जो कि उसकी जांघों तक कटा हुआ था। गाउन से झांकती उसकी चिकनी टांगें इंद्रजीत का कलेजा मुंह को लाने के लिए मजबूर कर रही थीं।

जैसे तैसे इंद्रजीत ने अपने धड़कते दिल पर काबू पाया और फिर होठों पर मुस्कराहट लाकर मीठे स्वर में बोला—"किसके कत्ल का इरादा है—जो कयामत ढाने वाली ड्रेस पहनी हुई है?"

रवीना खिलखिलाकर हंसी और फिर इठलाते हुए बोली—"तुम्हें अच्छी लगी ये ड्रेस?"

"बहुत।"

"बहुत या बहुत ज्यादा?"

"बहुत बहुत बहुत ज्यादा।"

"थैंक्स। वैसे ये ड्रैस मैंने तुम्हारे लिए ही पहनी थी। मुझे खुशी है कि तुमने इसे पसंद किया।"

"वाकई लाजवाब ड्रेस है। मैंने इसे बहुत पसंद किया।"

"तारीफ का एक बार फिर शुक्रिया। तो अब चला जाए?"

"तुम यहां अपनी कार पर आई हो?"

"हां।"

"तो फिर हम दोनों अपनी अपनी कारों में..."

"नहीं! मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"तो फिर तुम्हारी कार?"

"यहीं खड़ी रहेगी। तुम बाद में मुझे यहीं ड्राप कर देना।"

इंद्रजीत ने हामी में सिर हिलाया।

फिर वह रवीना के साथ होटल की पार्किंग में खड़ी अपनी कार के पास पहुंचा। रवीना के कार में बैठने के बाद वह ड्राईविंग सीट पर बैठा।

फिर उसने कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

"आगे एक चौराहा आएगा।" रवीना बोली—"वहां से उल्टे

Scanned by CamScanner

हाथ को लेना। वो सड़क सीधा मेरे बंगले तक जाएगी।"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया।

उस वक्त आकाश में पूरा चांद चमक रहा था और ठंडी हवा चल रही थी।

चांदनी रात और हवा के ठंडे-ठंडे थपेड़े इंद्रजीत को बेहद भा रहे थे इसलिए वो कार को तेज गति से चलाने के बजाए मध्यम गति से चला रहा था।

"तुम्हारे डैडी" एकाएक इंद्रजीत बोला—"तुम्हारे नए किराएदार को पसंद करेंगे?"

"क्यों पूछ रहे हो?"

"कभी उनसे सामना हो गया तो?"

"डैडी बंगले में बिल्कुल नहीं जाते।"

"फिर भी अचानक आ गए तो—आखिर बंगला उनकी अमानत है।"

"उनके पास अपने बंगले में घूमने की फुर्सत नहीं है। फिर वो मेरे बंगले पर क्यों आने लगे?"

"उन्हें अचानक कोई काम पड़ सकता है।"

"इसके लिए वो अपने नौकरों को कहेंगे। वो खुद यहां आने की जहमत नहीं उठाएंगे।"

"इसका मतलब तुम्हारे डैडी के तुम्हारे बंगले पर पहुंचने की उम्मीद जीरो परसेंट है?"

"डबल जीरो परसेंट।"

इंद्रजीत हंसा।

"वैसे तुम्हें एक बात जरूर खटक रही होगी।" रवीना बोली।

"कौन सी?"

"यही कि मैं तुम पर इतनी मेहरबानी क्यों कर रही हूं?"

"सच पूछो तो" इंद्रजीत हिचकिचाकर बोला—"काफी देर से खटक रही है।"

"वैसे तुम अंदाजा लगा सकते हो—मैं तुम पर इतनी मेहरबान क्यों हूं?"

"हो सकता है—मैं तुम्हें पसंद आ गया हूं।"

"पसंद तो आए हो, लेकिन मैं तुम पर मेहरबानी किसी और वजह से कर रही हूं।"

"किस वजह से?"

"तुम बताओ।"

"नहीं बता सकता।"

"कोशिश तो करो।"

"जो काम मेरे वश का नहीं होता—उसके लिए मैं कोशिश भी नहीं करता। तुम बताओ क्यों तुम मुझ पर इतनी मेहरबान हो?"

"असल में—मुझे शक है कि तुम्हारे दोस्त के मर्डर में डैडी का हाथ है। मैं उनकी काली करतूतों का पर्दाफाश करने के लिए तुम्हारा साथ दे रही हूं। तुम पर मेहरबान हो रही हूं।"

"तुम्हारी बात से जाहिर होता है कि तुम्हें अपने डैडी से शदीद नफरत है?"

"नफरत तो नहीं है लेकिन प्यार भी नहीं है।"

"फिर उनका बुरा चाहने की मंशा?"

"इंसानियत की पैरवी। इंसानियत के नाते मैं चाहती हूं कि अगर वे गुनहगार हैं तो उन्हें सजा जरूर मिलनी चाहिए।"

"वैसे तुम्हारे डैडी के पास मेरे दोस्त के कत्ल की क्या वजह हो सकती है?"

"जरूर तुम्हारा दोस्त डैडी का कोई राज जान गया होगा। जिसकी वजह से उन्होंने उसे अपने रास्ते से हटाया।"

"माना कि मेरा दोस्त तुम्हारे डैडी का कोई राज जान गया था, लेकिन हैलन का कत्ल! उस का कत्ल क्यों हुआ? उसका कत्ल भी तुम्हारे डैडी ने किया या करवाया?"

"उसके कत्ल को लेकर मैं भी कशमकश में हूं। वो एक शरीफ और सीधी-सादी लड़की थी। उसके कत्ल का क्या मकसद हो सकता है?"

"क्या पता वो तुम्हारे डैडी को ब्लैकमेल कर रही हो। तभी तुम्हारे डैडी ने उसे..." इंद्रजीत ने अपना जुमला जानबूझकर अधूरा छोड़ दिया।

"मुझे नहीं लगता" रवीना हिचकिचाकर बोली—"ऐसी कोई बात रही होगी।"

"फिर उसके कत्ल का क्या मकसद हो सकता है?"

"ये भी तो हो सकता है कि उसके कत्ल का तुम्हारे दोस्त के कत्ल से कोई वास्ता ही न हो। उसका मर्डर तुम्हारे दोस्त के केबिन में होना महज एक इत्तेफाक है।"

"ये इत्तेफाक नहीं हो सकता।"

"कैसे?"

"कातिल ने हैलन को मर्डर करने के लिए ही उसे केबिन में बुलाया था और इस काम के लिए उसने केबिन के पीछे बने रास्ते का इस्तेमाल किया था, ताकि कोई हैलन और उसे केबिन में प्रवेश करते

Scanned by CamScanner

न देख सके।"

"लेकिन कातिल हैलन को वहां क्यों बुलाने लगा?"

"ताकि इस बात की तसदीक हो जाए कि मरने वाली ही मेरे दोस्त को होटल से ले गयी थी। कातिल अपना जुर्म यकीनन हैलन पर थोपना चाहता था। तभी उसने उसे केबिन में बुलाया।"

"हो सकता है—तुम्हारी बात ठीक हो, लेकिन मैं दावे से कह सकती हूं कि उसके कत्ल में उस का हाथ नहीं हो सकता।"

"मैं एक बार फिर पूछूंगा। क्यों नहीं हो सकता? जब वो मेरे दोस्त के कत्ल का सामान कर सकते हैं, फिर वो हैलन के कत्ल का सामान इकट्ठा क्यों नहीं कर सकते?"

"छोड़ो।" रवीना विषय बदलने की नीयत से बोली—"कोई और बात करो।"

"कोई और बात भी करेंगे। लेकिन इससे पहले एक बात क्लीयर करो।"

"पूछो।"

"तुम्हारी नजर में तुम्हारे डैडी मेरे दोस्त के कत्ल का सामान इकट्ठा कर सकते हैं—लेकिन हैलन का नहीं। ऐसा क्यों?"

"इस क्यों का जवाब मेरे पास नहीं है। मुझे बस लगता है कि डैडी किसी शरीफ लड़की के खून से अपने हाथ नहीं रंग सकते।"

"जबकि किसी शरीफ लड़के के खून से अपने हाथ भिगो सकते हैं।"

"तुम्हारे पास इस बात का कोई सबूत है कि तुम्हारा दोस्त एक शरीफ लड़का था?"

"सबूत तो कोई नहीं है।"

"फिर?"

इंद्रजीत से कुछ कहते न बना।

"तुम भी यार।" रवीना इंद्रजीत की गर्दन में बांह पिरोकर अनुराग भरे स्वर में बोली—"क्या बोर टॉपिक लेकर बैठ गए। मैं अपने बाप का बुरा चाहती हूं, लेकिन इतना भी नहीं कि उसे दो-दो कत्लों का कसूरवार ठहराऊं। मैं मानती हूं कि उसने तुम्हारे दोस्त का कत्ल करवाया होगा—लेकिन हैलन का कत्ल उसने नहीं करवाया।"

"तुम कहती हो तो" इंद्रजीत ने उसका गाल थपथपाया—"मान लेता हूं।"

फिर दोनों में कोई बात नहीं हुई।

इंद्रजीत खामोशी से कार ड्राइव करता रहा।

उस वक्त उसके जेहन में रवीना के अटपटे तर्कों को लेकर

उथल-पुथल मच रही थी।

रवीना का बंगला डोनापोला बीच के समीप ही एक छोटी-सी पहाड़ी पर बना था।

बंगला एक-मंजिला था और बेहद खूबसूरत था। चांदनी रात में इंद्रजीत को वो और भी खूबसूरत जान पड़ा।

रवीना के कहने पर इंद्रजीत ने अपनी कार बंगले के सामने बने पार्किंग एरिया में खड़ी की और फिर तारीफभरे स्वर में बोली—"वाकई लाजवाब बंगला है।"

"पसंद आया?" रवीना बोला।

"बहुत।"

"बस बहुत।"

"बहुत ज्यादा।"

वो खिलखिलाकर हंसी और फिर कुछ पल बाद अपनी हंसी पर जबरन काबू पाकर बोली—"तुम्हारे पास टार्च होगी।"

इंद्रजीत ने कार के ग्लोव कम्पार्टमेंट में पड़ी टार्च उसके हवाले कर दी।

रवीना ने टार्च थामी और कार से बाहर निकल गयी।

फिर उसने उसे ऑन करके बंगले का मुख्य द्वार खोला।

उसने भीतर की लाईट जलाई तो इंद्रजीत उसके पीछे बंगले में दाखिल हो गया।

उसने खुद को एक बेहद खूबसूरत लाउंज में पाया जिसमें ऐशोआराम की तमाम चीजें मौजूद थीं। मसलन कलर टी०वी०, गुदगुदे सोफे, फायर प्लेस, उम्दा दीवान, खिड़कियों पर लगे रेशमी पर्दे और दीवारों पर लगे बेशकीमती तैलीय चित्र।

"वाह! वाह!" इंद्रजीत के मुंह से निकला—"क्या बंगला है। बिल्कुल राजमहल जैसा।"

"पसंद आया?"

"बहुत बहुत ज्यादा।"

"आई एम ग्लैड।"

"यहां पीने पिलाने का भी इंतजाम है?"

"हां। उस रूम में।" वो एक कमरे की तरफ इशारा करते हुए बोली—"एक बार बना हुआ है। आओ दिखाऊं।"

इंद्रजीत उसके साथ हो लिया।

उसने रूम में कदम रखा तो उसे कमरे की दीवार में एक शो

Scanned by CamScanner

केस बना दिखाई दिया, जिसमें तरह-तरह की कीमती शराबें सहेज कर रखी हुई थीं।

"ये सारी बोतलें।" इंद्रजीत ने शोकेस में रखी बोतलों की तरफ इशारा किया—"तुम्हारी प्रापर्टी हैं या तुम्हारे डैडी की?"

"ये सारी बोतलें डैडी की हैं। मैं इन्हें उनके घर से लेकर आई थी। चार बोतलें एक बार में।" वह हंसी—"डैडी के पास सब कुछ है। बेशक मैं उनसे अलग रहती हूं—लेकिन मुझे उनका फायदा तो उठाना चाहिए। नहीं?"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

रवीना कोने में रखे एक फ्रिज के पास पहुंची। उसने उसमें से एक शैम्पेन की बोतल निकाली और फिर इंद्रजीत के करीब आकर बोली—"तुम इसे खोलो। मैं गिलास लेकर आती हूं।"

इंद्रजीत को बोतल पकड़ाकर वह कमरे से बाहर निकल गयी।

इंद्रजीत ने बोतल को उलट-पुलट कर देखा और फिर सीटी बजाते हुए कोई रोमांटिक गाना गाने लगा।

तभी रवीना एक ट्रे पर दो गिलास रखकर वापिस लौटी।

रवीना के कहने पर इंद्रजीत ने शैम्पेन की कार्क खोली और शैम्पेन दोनों गिलासों में लबालब भर दी।

"लैट्स सेलिब्रेट।" रवीना अपना गिलास उठाकर बोली।

"बाई दि वे।" इंद्रजीत अपना गिलास उठाते हुए बोला—"ये सेलिब्रेशन किस खुशी में हो रही है?"

"हमारे मिलने की खुशी में।" वह आंखें चमकाती बोली—"तुम पहले आदमी हो जो मुझे यह सोचकर नहीं मिले कि मैं अमीर हूं या गरीब।"

इंद्रजीत धीरे से मुस्कराया।

फिर दोनों ने जाम टकराकर एक साथ चियर्स बोला और शैम्पेन चुसकने लगे।

कुछ क्षण बाद रवीना जाम खाली करके बोली—"आओ तुम्हें तुम्हारा घर दिखा दूं।"

"मेरा घर।" इंद्रजीत चौंका—"घर तो तुम्हारा है।"

"फिलहाल तुम्हारा है।"

"मैं तो सिर्फ एक किराएदार..."

"यार! तुम बहस बहुत करते हो। फटाफट जाम खाली करो और अपने घर का जुगराफिया समझ लो। ओके?"

"ओके, देवी जी।"

इंद्रजीत ने जल्दी से जाम खाली किया और खाली गिलास

काउंटर पर रखते हुए बोला—"शुरूआत कहां से करोगी?"

"ये कमरा तो तुमने देख लिया। अब मैं तुम्हें बेडरूम दिखाती हूं।"

वो इंद्रजीत को एक कमरे में ले गयी, जोकि बैडरूम था।

तभी इंद्रजीत की निगाह उसकी आंखों से जा टकराई। उसे उसकी आंखों में एक अजीब सी प्यास दिखाई दी। इस प्यास का मतलब इंद्रजीत बाखूबी जानता था।

बैडरूम में डबल बैड, बार्डरोब, राइटिंग टेबल और आरामदायक कुर्सियों का इंतजाम था। फर्श मोजेक का था, जो कि आईने की तरह चमचमा रहा था। कोने में एक बाथरूम था जोकि टाईल्स से चमचमा रहा था।

"कैसा लगा?" रवीना चहकती हुई बोली—"पसंद आया?"

"बहुत।"

"बस बहुत।"

इंद्रजीत हंसा।

"लगता है" वह बोला—"बस बहुत तुम्हारा तकिया कलाम है।"

वो खिलखिलाकर हंसी—"मुझे नहीं मालूम था कि मैं बात-बात पर 'बस बहुत' बोलती हूं। ऐनी वे—तुमने इसे पसंद किया?"

"हां। वैसे ये सारे इंतजाम तुमने मेरे लिए करवाए हैं?"

"और नहीं तो क्या! मैं तो यहां रहती नहीं।"

"कॉफी अच्छा इंतजाम करवाया है। सच में मजा आ गया।"

"क्या कहा—मजा आ गया।"

"कुछ गलत कहा?" इंद्रजीत सकपकाया।

"नहीं। मेरे कहने का मतलब था कि मजा आकर चला भी गया और मुझे पता भी नहीं चला।"

इंद्रजीत मुस्कराया।

फिर वह उसके गाल पर प्यार से एक चपत जमाते हुए बोला—"तुम्हारा सेंस ऑफ ह्यूमर काफी उम्दा है। अच्छे सेंस ऑफ ह्यूमर वाले शख्स इस कमतरीन को बहुत अच्छे लगते हैं।"

"यानी कि मैं तुम्हें बहुत अच्छी लगती हूं।"

"हां।"

"इसके अलावा कुछ नहीं?" वह अपना निचला होंठ काटकर बोली—"मैं तुम्हें सैक्सी नहीं लगती।"

"ऐसे कैसे मैं तुम्हें सैक्सी करार दे सकता हूं।" इंद्रजीत खुमारभरे लहजे में बोला—"औरत सैक्सी बिना कपड़ों के ही लगती

Scanned by CamScanner

है। तुम अपने कपड़े उतारो। उसके बाद..."

"मेरे ख्याल से" वह इंद्रजीत की बात तेजी से काटते हुए बोली—"तुम्हें कार में रखा अपना सामान लेकर आना चाहिए।"

"बात पलट रही हो।"

"नहीं पलट रही। तुम सामान लेकर तो आओ।"

"आप कहती हैं तो" इंद्रजीत एक गहरी सांस छोड़कर बोला—"मैं सामान ले आता हूं।"

रवीना को अकेला छोड़कर इंद्रजीत बाहर आया।

उसने कार की डिकी में रखा अपना बैग उठाया और भीतर आ गया।

भीतर लाउंज में उसे रवीना कहीं नहीं दिखाई दी।

"रवीना!" इंद्रजीत उच्च स्वर में बोला—"कहां हो तुम?"

उसे कोई जवाब नहीं मिला।

"रवीना!" इस बार इंद्रजीत और ऊंचे स्वर में बोला—"डू यू लिसन मी?"

जवाब नदारद।

इंद्रजीत को खटका-सा लगा।

वह लपककर बॉर वाले कमरे में दाखिल हुआ।

उसे रवीना के दर्शन न हुए।

फिर वह बैडरूम में दाखिल हुआ।

तभी उसे बाथरूम से रवीना के गुनगुनाने की आवाज सुनाई दी।

"तुम बाथरूम में हो?" इंद्रजीत राहत की सांस लेता हुआ बोला।

"हां, डियर।" बाथरूम में से रवीना बोली—"मैं बाथरूम में हूं।"

"इतनी देर से मैं पागलों की तरह तुम्हें पुकार रहा हूं। तुमने जवाब क्यों नहीं दिया?"

"मैं चाहती थी कि तुम मुझे तलाश करते हुए यहां पहुंचो।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं तुम्हें एक करामाती चीज दिखाना चाहती थी।"

"क्या?"

"ऐसी करामाती चीज जिसे देखकर तुम्हारे छक्के न छूट जाएं तो मेरा नाम बदल देना।"

"करामाती चीज तो दिखाओ।" इंद्रजीत झुंझला पड़ा—"उसके बाद मैं कोई फैसला करूंगा।"

"ऐसे नहीं। पहले तुम अपना दिल थाम लो।"

"अरे बाबा! मेरा दिल पहले ही थमा हुआ है। तुम बाहर आकर जल्दी से करामाती चीज दिखाओ।"

"ठीक है। मैं बाहर आती हूं।"

तभी बाथरूम का दरवाजा धीरे से खुला और रवीना ने बाहर कदम रखा।

इंद्रजीत के जिस्म में तत्काल सनसनी दौड़ गयी।

रवीना के जिस्म पर कपड़े की एक भी धज्जी नहीं थी।

रवीना को इस हाल में देखकर इंद्रजीत खुद पर काबू न रख पाया। वह लपककर उसके पास आया और उसे बाहों में भरकर बोला—"तुम तो तपस्वियों की भी तपस्या भंग करने की कूवत रखती हो। मुझे माफ करना। मैं बिल्कुल नहीं ठहर सकता। मैं तुम्हें हर हाल में पाना चाहता हूं।"

उसने अपने होंठ ज्यों ही रवीना के होठों पर रखने चाहे, रवीना चिकनी मछली की तरह उसकी बाहों से फिसलकर अलग जा खड़ी हो गयी।

"तुम जो चाहते हो" वह कुटिल लहजे में बोली—"तुम्हें मिलेगा। लेकिन इससे पहले तुम्हें मेरे कुछ सवालों का जवाब देना पड़ेगा।"

इंद्रजीत रवीना को पाने के लिए बुरी तरह से मरा जा रहा था। फिर भी वह धीरज से बोला—"पूछो! क्या पूछना चाहती हो?"

"मेरी फिगर कैसी है?" रवीना ने कलेजा मुंह को लाने वाला पोज बनाया। इंद्रजीत उसकी फिगर को मदभरी निगाहों से देखता हुआ बोला—"बहुत अच्छी।"

"बस बहुत अच्छी।"

"बहुत बहुत बहुत अच्छी। अब मैं कुछ करूं?"

"अभी नहीं। एक सवाल का जवाब और दो।"

"सवाल जवाब बाद में नहीं हो सकते।" इंद्रजीत उतावले स्वर में बोला—"यहां थर्मामीटर का पारा हाई हो रहा है।"

"थर्मामीटर का पारा सुपर हाई हो लेने दो। उसके बाद मैं तुम्हारे करीब आऊंगी। मेरे सवाल का जवाब दो।"

"पूछो।"

"मेरे जिस्म की इमारत का ग्राउंड फ्लोर अच्छा है या फर्स्ट फ्लोर?"

इंद्रजीत ने पहले उसके जिस्म के निचले भाग को देखा, फिर ऊपरले भाग को।

"मैं तुलना नहीं कर सकता।" वह बोला—"मुझे दोनों फ्लोर पसंद हैं। तुम्हारे जिस्म का फर्स्ट फ्लोर जहां हलवाई की दुकान को

Scanned by CamScanner

गात करता है—वहीं निचला फ्लोर कसरत करने वाले जिम का मुकाबला करता है।"

"मतलब?" उसने पलकें फड़फड़ाईं।

"मतलब यही है कि तुम्हारे पास आकर आदमी को पहले फर्स्ट फ्लोर से बढ़िया-बढ़िया पकवान चखने चाहिए। उसके बाद ग्राउंड फ्लोर पर आकर कसरत करके खाया पीया पचाना चाहिए।"

"मेरी जान! मैं सदके जावां। क्या शानदार जवाब दिया है।"

"मेमसाब, ऐसे मौकों पर तारीफ से काम नहीं चला करता।"

"फिर?"

"करीब आओ! मिठाई चखाओ। खाया पीया पचाने का मौका दो।"

"मौका तो मैं तब दूंगी, जब तुम मेरी तरह कपड़ों से परहेज करोगे।"

"कपड़े उतारने में कौन-सा देर लगती है।"

इंद्रजीत ने कपड़े उतारे और फिर रवीना पर भूखे भेड़िए की तरह झपट पड़ा।

दस मिनट बाद!

इंद्रजीत रवीना के जिस्म पर से उठा तो वह बुरी तरह से हांफ रहा था।

और रवीना!

उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे किसी कुतिया को ढेर सारी जलेबियां खाने को मिल गयी हों।

गहरी-गहरी सांसें लेने के बाद इंद्रजीत थोड़ा सामान्य हुआ तो रवीना धीरे से बोली—"तुम्हारे मुर्गे ने मेरी मुर्गी की वो हालत की है कि मेरी मुर्गी दस बारह दिनों तक कुछ नहीं खा पाएगी। कहां से लाए इतना हट्टा-कट्टा मुर्गा?"

"सब कुदरत की देन है।"

"काश! कुदरत ने मुझे भी हट्टी-कट्टी मुर्गी दी होती।"

"डोंटवरी! मेरे साथ रहोगी तो तुम्हारी मुर्गी एक दिन में हट्टी-कट्टी हो जाएगी।"

रवीना धीरे से मुस्कराई—"उस दिन का, मैं बेसब्री से इंतजार करूंगी। अब मैं चलूं?"

"कहां?" इंद्रजीत हड़बड़ाया।

"अपने घर—और कहां?"

"अभी तो रात जबान हुई है। अभी तो मेरे मुर्गे ने तुम्हारी मुर्गी से चोंच लड़ाई है। कम-से-कम मेरा नहीं तो मेरे मुर्गे का ख्याल करो।

इसकी प्यास नहीं बुझी।"

"इसकी प्यास मैं बाद में बुझा दूंगी। फिलहाल मुझे चलना चाहिए। मेरी मेड सर्वेंट मेरा इंतजार कर रही होगी—मैं देर से पहुंची तो वो बात का बतंगड़ बनाए बिना नहीं रहेगी। असल में वो मेड सर्वेंट कम, डैडी की जासूस ज्यादा है। वो मेरी हर हरकत से डैडी को अगाह करती है। आई डिसलाईक हर। मेरा वश चले तो मैं उसे एक पल में घर से निकाल दूं। लेकिम डैडी के आगे मेरी जरा भी नहीं चला करती। इसलिए मुझे उसे न चाहते हुए भी बरदाश्त करना पड़ता है।"

"तुम्हारे डैड ने उसे तुम्हारी जासूसी के लिए तैनात किया है?"

"हां।"

"क्यों?"

"क्योंकि वे नहीं चाहते कि मैं किसी ऐरे-गेरे नत्थू गैरे से अपना टांका भिड़ाऊं। और फिर एक दिन उससे शादी कर लूं। डैडी मेरी शादी अपने रुतबे के हिसाब से करने के हक में हैं।"

"ओह!"

"और तो और जासूसी के मामले में डैडी ने अपनी बीवी टीना को भी नहीं बख्शा। उन्होंने उसके पीछे भी अपने जासूस लगा रखे हैं। तुम टोनी को जानते हो?"

"अच्छी तरह से।"

"वो टीना की जासूसी करता है।"

"जार्ज सैबिस्टियन को लेकर?"

उसकी आंखें फौरन सिकुड़ीं।

"तुम्हें कैसे पता" वो हकबकाई-सी बोली—"कि मेरे डैडी को जार्ज सैबिस्टियन और टीना के सम्बंधों की खबर है?"

इंद्रजीत ने शान से नाक फुलाई और फिर बड़े गर्व से बोला—"मेमसाहब, मैं एक प्राइवेट डिक हूं। प्राइवेट इनवेस्टीगेशन और गड़े मुर्दे उखाड़ने में मुझे महारत हासिल है।"

"ये काम फिर तो तुम्हारे दोस्त को भी बखूबी आता होगा?"

"बिल्कुल।"

एकाएक वो होंठ सिकोड़कर सोचने लगी।

"क्या सोच रही हो?"

"मैं सोच रही हूं।" वो विचारपूर्ण मुद्रा बनाती हुई बोली—"कहीं डैडी ने तुम्हारे दोस्त को टीना की जासूसी करने के लिए रिटेन तो नहीं किया था।"

"अभी तो तुम कह रही थीं कि तुम्हारे डैडी ने इस काम के लिए टोनी को तैनात किया हुआ है।"

Scanned by CamScanner

"वो तो किया है। लेकिन मुझे लग रहा है कि उन्होंने ये काम तुम्हारे दोस्त को भी सौंपा होगा—ताकि उन्हें हन्ड्रेड परसेंट यकीन हो जाए कि टीना और जार्ज के बीच अवैध सम्बंध हैं कि नहीं?"

"बात तो तुम्हारी ठीक है। तुम्हारे डैडी ने मेरे दोस्त को इसी काम के लिए रिटेन किया होगा।"

"और तुम्हारे दोस्त ने यकीनन टीना और जार्ज के बीच चल रहे अफेयर के पुख्ता सबूत हासिल कर लिए होंगे। तभी दोनों ने सिक्केबंद मंसूबा तैयार करके उसे अपने रास्ते से हटा दिया।"

इंद्रजीत चौंका।

"कहीं तुम" वह तेजी से बोला—"ये तो नहीं कहना चाहतीं कि जो लड़की मेरे दोस्त को अपने साथ बाथिंग स्टेशन की ओर ले गयी थी—वो टीना ही थी।"

"मैं यही कहना चाहती हूं। तुम इस बाबत टीना से पूछताछ क्यों नहीं करते?"

"मैं उससे कैसे पूछताछ कर सकता हूं। तुम्हारा बाप मुझे उससे मिलने देगा?"

"नहीं।"

"फिर?"

"तुम जार्ज से तो पूछताछ कर सकते हो?"

"हां। उससे कर सकता हूं। पाया कहां जाता है ये पट्ठा?"

"मपूसा में उसका शानदार हट हाऊस है—जो मेरी सौतेली मां की बदौलत है। मेरी सौतेली मां ने उसे ये हाउस रंगरेलियां मनाने के लिए खरीदकर दिया था।"

"यानी कि जार्ज की रिहाईश तुम्हारी सौतेली मां के लिए लवनेस्ट है। जब उसका नाम तफरीह करने का होता है—वो वहां पहुंच जाती है?"

"हां।"

"तुम्हारी मां को..."

"मेरी मां नहीं टीना बोलो।"

"अ...ओ सॉरी। हां, तो टीना को जार्ज ने फंसाया था या टीना ने उस पर डोरे डाले थे?"

"क्या करोगे जानकर?"

"मैं जार्ज को टटोलना चाहता हूं, लेकिन इससे पहले मैं उसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारियां हासिल करना चाहता हूं, ताकि ऐन वक्त पर वो मुझे कोई गच्चा न दे जाए।"

"उसे टीना ने फांसा था। ये तो तुम्हें पता ही होगा कि टीना

हिंदी फिल्मों की फ्लॉप हिरोइन है। जार्ज से उसकी जुगलबंदी उन दिनों से है जब वो हिरोइन बनने के लिए मॉडलिंग किया करता था। उन दिनों जार्ज मॉडलिंग में जमा हुआ था। ये समझ लो टीना ने जार्ज की अंगुली हिरोईन बनने के लिए पकड़ी थी।"

"वो हीरोईन जार्ज की वजह से बनी थी?"

"हां! जार्ज के फिल्मी प्रोड्यूसरों से अच्छे खासे सम्बंध थे। इसी वजह से टीना को फिल्मों में काम मिल गया था। लेकिन ये उसकी बदकिस्मती रही थी कि उसकी एक भी फिल्म नहीं चल पाई। तभी उस पर फ्लॉप हीरोईन का ठप्पा लग गया और वो घर बैठ गयी।"

"एक फ्लॉप हीरोईन से तुम्हारे बाप ने बुढ़ौती में शादी क्यों की?"

"मेरा बाप बूढ़ा नहीं है।"

"लेकिन बुढ़ापे की ओर बढ़ तो रहा है।"

"जब वो बूढ़ा होगा—तब उसे बूढ़ा कहना।"

"कमाल है! एकदम से अपने बाप की तरफदारी! तुम तो मेरी समझ से ही बाहर हो। कभी तो अपने बाप को सुलताना डाकू करार देती हो—कभी उसे शहीद भगत सिंह बना देती हो। ऐसा क्यों?"

"भई, वो मेरा बाप है। उसने मुझे जनम दिया है। उसने मुझे पाल पोसकर बड़ा किया है।"

"फिर तुम उसके खिलाफ लाफ-काफ क्यों उगलती हो?"

"गलत काम को गलत ठहराना मेरे अहम उसूलों में एक है। मेरा बाप गलत काम करेगा तो मैं उसे गलत ठहराऊंगी। वो नेक काम करेगा—तो मैं उसकी तारीफ करूंगी।"

"खैर! तुम्हारे बाप ने टीना से शादी करने से पहले तुम्हारी राय ली थी?"

"हां।"

"तुमने क्या कहा था?"

"मैंने कहा था कि वो शौक से शादी कर सकता है।"

"वैसे तुम्हारे बाप का टीना से टांका कैसे भिड़ा था?"

"टीना बेशक फ्लॉप हीरोईन थी, लेकिन मेरा बाप उसकी कोई भी फिल्म नहीं छोड़ता था। असल में टीना की सैक्सी फिगर ने ही मेरे बाप के दिलो-दिमाग में उसे पाने के लिए हलचल पैदा की थी।"

"ओह!"

"टीना फ्लॉप हीरोईन थी। मेरे बाप के पास दौलत की रेलम पेल थी—इसलिए उसने खुशी-खुशी उससे शादी की।"

"जब तुमने टीना से शादी करने की अपने बाप को परमिशन

Scanned by CamScanner

दे दी थी—फिर तुम्हारी उससे खटपट किस वजह से होती थी?"

"जार्ज की वजह से ही खटपट होती थी। मुझे कहीं से जार्ज और टीना के सम्बंधों की भनक लग गयी थी। जार्ज को अपना काजिन बुलाकर जब वो घर पर लाने लगी थी—तब मेरा उससे छत्तीस का आंकड़ा हो गया था।"

"क्यों?"

"कमाल है! वो सरेआम मेरी बाप की आंखों में धूल झोंककर अपने यार के साथ रंगरेलियां मनाए, ये बात मैं कैसे बरदाश्त कर सकती थी।"

"शायद इसी वजह से तुमने अपने बाप का घर छोड़ा था?"

"हां।"

"टीना की ऐश परस्ती की खबर तुम्हारे बाप को कब लगी?"

"मेरे घर छोड़ने के बाद लगी होगी। ऐसी बातें भला छुपी रह सकती हैं। रिमैम्बर! काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ा करती।"

"तभी इसी वजह से टीना ने जार्ज को मपूसा में हट हाऊस खरीद कर दिया?"

"हां।"

"हट हाऊस की बात तुम्हें कैसे पता चली?"

"चल गयी।"

"बताना नहीं चाहतीं।"

"अंदर की बातें बताने लायक नहीं होतीं, माई डियर।"

"खामखाह सस्पेंस क्रिएट कर रही हो।"

वो हंसी।

"सस्पेंस क्रिएट करने में" फिर वो इंद्रजीत की नाक बड़े प्यार से पकड़ते हुए बोली—"मेरी जान—मुझे बहुत मजा आता है।"

"यानी कि सस्पेंस खत्म करने का इरादा नहीं है?"

"फिलहाल नहीं। बाद की बाद में देखेंगे।"

"ओके। बाद में देख लेंगे। यह बताओ—जब तुम्हारे बाप ने टोनी को टीना की जासूसी के काम पर लगाया था, फिर उसने मेरे दोस्त को क्यों तलब किया?"

"ताकि टीना की बेवफाई पुख्ता तौर पर साबित हो सके।"

"इस काम के लिए वो गोवा के किसी जासूस को रिटेन कर सकता था।"

"नहीं कर सकता था।"

"क्यों?"

"गोवा शहर में मेरे बाप का जो रुतबा है, उसकी रु में वो गोवा

के किसी डिटेक्टिव को अंगेज करता तो ये बात स्कैंडल बने बिना नहीं रहती। मेरे बाप की नजर में प्राइवेट डिक इनवेस्टीगेटर कम... ब्लैकमेलर ज्यादा होते हैं।"

"पांचों अंगुलियां बराबर नहीं होतीं।"

"मेरे बाप को प्राइवेट डिक की पांचों अंगुलियां बराबर लगती हैं।"

"इस काम के लिए तुम्हारा बाप मुम्बई के किसी प्राइवेट डिक को अंगेज कर सकता था। फिर उसने पूना का रुख क्यों किया?"

"मेरे बाप की गोवा में जो रेपुटेशन है—वो मुम्बई में भी है। मुम्बई में उसकी कई फैक्ट्रियां और मिल हैं। मुम्बई में भी उसकी अच्छी खासी रेपुटेशन है। वो वहां के किसी प्राइवेट डिक को अंगेज करता तो कैसे करता।"

"उसने पूना का रुख क्यों किया, ये बात मेरी समझ में अभी तक नहीं आई।"

"जहां तक मुझे लगता है—इस बाबत—उसे किसी ने राय दी होगी।"

"किसने?"

"टोनी ने।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो भी पूना का रहने वाला है। इस वजह से उसकी तुम्हारे दोस्त से वाकफियत लाजिमी रही होगी।"

"मेरे ख्याल से" इंद्रजीत सोच भरी मुद्रा बनाकर बोला—"यही बात ही होगी।"

"ख्याल से नहीं—यकीनन यही बात थी।"

कुछ पल खामोशी रही।

"तो मैं चलूं?" खामोशी रवीना ने भंग की।

"अभी रुको। मैं जार्ज के बारे में कुछ जानना चाहता हूं।"

"क्या?"

"सबसे पहले उसका हुलिया बयान करो—ताकि जब मैं उससे मिलूं तो उसे आसानी से पहचान सकूं।"

"तुमने सिस्सी मैन देखा है?"

"वो क्या होता है?"

"लेडीज मैन। जनखा। आम जुबान में छक्का।"

"बहुतेरे देखे हैं। क्या जार्ज छक्का है?"

"छक्का तो नहीं है, लेकिन उसकी शक्ल सूरत छक्कों जैसी है। आज लड़कियों जैसी है। चाल ढाल और यहां तक हेयर स्टाईल भी

Scanned by CamScanner

लड़कियों वाला है। उसके बाल लड़कियों की तरह कमर तक लंबे हैं, जिनकी वो बकायदा चोटी बनाकर रखता है। कान में बूंदें डालता है। और बात भी लड़कियों की तरह इठलाकर करता है।"

"कोई और खासियत?"

"वो लाऊंज लिजर्ड है।"

"ये क्या होता है?"

"लाउंज लिजर्ड उस आदमी को कहते हैं जो अमीर औरतों की कमाई पर जीता और ऐश करता है। टीना के अलावा उसने कई और अमीर औरतें फांस रखी हैं जो उसे ऐश करने का मुकम्मल साजो सामान मुहैया करवाती हैं। वे गाहे बगाहे उसके लव नेस्ट में आती हैं और एन्जॉय करके चली जाती हैं।"

"ये बात टीना को मालूम है?"

"मालूम ही होगी।"

"वो एतराज नहीं करती?"

"किस बात का?"

"जार्ज की खातिर उसने दुनिया जहान से पंगा मोल लिया और वो और औरतों के पहलू गरम करने में मस्त है।"

"टीना ने एतराज तो जरूर किया होगा—लेकिन जार्ज ने उसे कहानियां सुनाकर समझा-बुझा दिया होगा। जार्ज गोलियां देने में माहिर है।"

"तुमने अभी कहा था कि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ा करती। तुम्हें यकीन है जार्ज की काठ की हांडी बार-बार चढ़ेगी?"

"बिल्कुल नहीं। एक दिन उसकी हांडी जरूर फूटेगी।"

"फिर उस रोज टीना क्या करेगी?"

"करना क्या!" रवीना ने बम-सा छोड़ा—"उस दिन टीना उसे कत्ल करने से बाज नहीं आएगी।"

"फिर तो तुम्हारे डैडी का पूरे तौर पर पुलंदा बंध जाएगा। अखबार में जब ये खबर छपेगी कि उसकी बीवी ने अपने कजिन का कत्ल कर दिया—वो भी इस बिना पर कि उसके साथ उसके नाजैध सम्बंध थे तो तुम्हारा बाप किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगा। उसकी जमी जमाई साख की इमारत एक पल में ताश के महल की तरह भरभराकर गिर जाएगी। ऐसी हालत में कोई बड़ी बात नहीं कि वो या तो टीना को जान से मार दे या फिर खुदकुशी कर ले।"

"वो खुदकुशी तो नहीं करेगा, अलबत्ता टीना को जान से जरूर मार देगा।"

"टीना को मारकर वो जब जेल जाएगा, तब उसकी किरकिरी

नहीं होगी।"

"नहीं होगी।"

"क्यों?" इंद्रजीत की आंखें सिकुड़ीं—"तुम्हारे बाप के पास कत्ल करने का लाईसेंस है?"

"गोवा की पुलिस यहां तक कि मिनिस्टर्स भी रिश्वत के चक्कर में मेरे बाप का आए दिन हुक्का भरते हैं...ये किसी लाईसेंस से कम है।"

"फिर भी कानून नाम की कोई चीज है।"

"कानून उस जलेबी की तरह है—जो चोट्टी कुतिया की निगरानी में आने के बाद उसके पेट में पहुंचकर ही दम तोड़ता है। जब रक्षक ही भक्षक हो तो फिर कानून क्या कर लेगा। यहां का कानून मेरा बाप अपनी दौलत के दम पर पल में तोड़-मरोड़ सकता है।"

"इसका मतलब मैं ये मानूं कि आने वाले दिनों में जार्ज खुद के घर पहुंचने वाला है।"

"ऐसा क्यों कहा?"

"भई, हालात तो इसी बात की ओर इशारा कर रहे हैं।"

"तुम्हारा सोचना कुछ हद तक ठीक भी है और नहीं भी।"

"मतलब?"

"जार्ज का कत्ल करने की हिम्मत न तो मेरे बाप में है, न टीना में। उसका कत्ल कोई कर सकता है तो वो मैं हूं।"

इंद्रजीत चौंका।

"तुम जार्ज का कत्ल कर सकती हो?"

"कर सकती नहीं—बल्कि मेरे बाप ने मुझे रिवॉल्वर का लाईसेंस दिलवा दिया होता तो बहुत पहले मैं उसका कत्ल कर देती। मेरी बदकिस्मती यही रही कि मेरे बाप ने मुझे रिवॉल्वर का लाईसेंस नहीं दिलवाया।"

"तुम उसका कत्ल क्यों कर देतीं? तुम्हारी उससे क्या दुश्मनी थी?"

"उस हरामजादे की वजह से।" एकाएक उसके चेहरे पर नफरत के भाव प्रकट हुए—"हमारे हंसते खेलते घर में जो आग लगी है, उससे हमारे घर का तो कुछ नहीं बिगड़ा—लेकिन मेरी आत्मा काफी हद तक जल चुकी है। उसी हरामजादे की वजह से आज मैं खानाबदोशों की तरह अपने घर से अलग रह रही हूं। वो हरामजादा टीना के कजिन के रूप में हमारे घर में कदम नहीं रखता तो आज मैं घर से बेघर किसी भी कीमत पर नहीं होती।"

"अब तो टीना ने उस हरामजादे को मपूसा में फ्लैट लेकर दे

Scanned by CamScanner

दिया। तुम चाहो तो अपने घर लौट सकती हो।"

"नहीं। मैं अपने घर अभी नहीं लौटूंगी। मैं उसी दिन अपने घर का रुख करूंगी जब टीना जार्ज से पूरे तौर पर अपने सम्बंध विच्छेद कर लेगी।"

"जहां तक मैं समझता हूं कि वो ताजिंदगी ऐसा नहीं करने वाली। उसके मुंह खून लग चुका है। जार्ज को वह किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगी।"

"न छोड़े!" उसने मुंह बिचकाया—"मुझे अपने घर में कोई कमी नहीं है। मैं वहीं ठीक हूं। मुझे क्या जरूरत है अपने बाप के घर का रुख करने की।"

कुछ पल खामोशी रही।

"एक बात" इंद्रजीत बोला—"काफी देर से मुझे कचोट रही है। इजाजत हो तो कह डालूं?"

"बोलो।"

"बात तुम्हारे खिलाफ है।"

"तो?"

"तुम बुरा मान जाओगी।"

"नहीं मानूंगी।"

"तुम मानोगी।"

"ओफ्फो! अब कह भी चुकरो।"

"पहले प्रॉमिस करो।"

"अच्छा बाबा, प्रामिस।"

"ऐसे नहीं। हाथ मिलाकर प्रॉमिस करो।"

"ठीक है। मैं हाथ मिलाकर प्रॉमिस करती हूं।"

रवीना ने इंद्रजीत का हाथ थामा और फिर उसके कुछ कहने की प्रतीक्षा करने लगी।

इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई, ढेर सारा धुआं नाक से छोड़ा फिर सिग्रेट रवीना की ओर बढ़ा दी।

रवीना ने उसके दो चार कश लगाए तो इंद्रजीत उसके चेहरे को गौर से देखते हुए बोला—"मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे तुम जार्ज को कुछ कुछ पसंद करने लगी हो, तभी तुम उसके खिलाफ इतना लाफ-खाफ उगल रही हो।"

रवीना के चेहरे पर तत्काल ऐसे भाव नुमायां हुए—जैसे इंद्रजीत ने उसकी चोरी पकड़ ली हो।

अगले ही पल वो मुंह बिगाड़कर बोली—"मैं उस जनखे को क्यों पसंद करने लगी। मुझे तो जनखे लोगों से ही सख्त एलर्जी है। मुझे

जनखे बिल्कुल पसंद नहीं।"

"फिर तुम्हें किस तरह के मर्द पसंद हैं?"

जवाब ने रवीना ने सिग्रेट का लम्बा कश लगाया—बड़ी अदा से ढेर सारा धुंआ नाक से छोड़ा। फिर जली हुई सिग्रेट लापरवाही से फर्श पर फेंकते हुए बोली—"मैं तुम्हारे साथ इस समय पलंग पर क्यों लेटी हूं, इस बात का जवाब है तुम्हारे पास?"

"तुम एन्जॉय करने के लिए मेरे साथ हो। इस बात को मैं कुछ इस अंदाज में भी कह सकता हूं कि तुम मेरी पीठ खुजा रही हो तो मैं तुम्हारी पीठ खुजा रहा हूं।"

"नो, माई डियर! यू आर रांग।" रवीना अपना चेहरा इंद्रजीत के होठों के करीब लाई—"मैं तुम्हारे साथ इसलिए हूं—क्योंकि मुझे मर्द लोग पसंद हैं। मुझे वो लोग पसंद हैं जो अपने साथ मूंगफली की गिरी नहीं—गन्ना लेकर घूमते हैं।" एकाएक उसने अपना निचला होंठ काटा—"गन्ने से तुम मेरा मतलब समझे?"

इंद्रजीत ने उसका चेहरा हाथों में भरा और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"जानेमन, तुमने एक बार फिर मुझे अपने गन्ने को तकलीफ देने के लिए मजबूर कर दिया है। इजाजत हो तो मैं एक बार फिर...।"

इंद्रजीत का जुमला पूरा होने से पहले ही रवीना ने हामी में सिर हिलाया और फिर अपने तपते होंठ इंद्रजीत के होठों पर रख दिए।

कमरे में एक बार फिर वासना के बादल तरह-तरह की सिसकारियां भरकर बरसने को बेताब दिखाई देने लगे।

रिट्ज होटल के सामने पहुंचकर इंद्रजीत ने अपनी कार स्टेयरिंग उसकी पार्किंग में दाखिल करने के लिए घुमाया ही था कि एकाएक रवीना जल्दी से बोली—"मुझे यहीं उतार दो। पार्किंग में तुम्हारा जाना ठीक नहीं। किसी ने हम दोनों को एक साथ देख लिया तो लफड़ा हो जाएगा।"

"मेमसाब, इस समय भी तुम मेरे साथ हो। देखने वाला तुम्हें अब नहीं देख सकता।"

"तुम्हारी कार के शीशे काले हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई हमें देख पाने में कामयाब होगा। कार यहीं रोको। मैं यहीं से अपनी कार के पास पहुंच जाऊंगी।"

"जैसी मलिका ए आलिया की इच्छा।"

इंद्रजीत ने कार पार्किंग में न ले जाकर होटल के सामने फुटपाथ

Scanned by CamScanner

किनारे रोक दी।

रवीना ने सावधान निगाहों से इधर-उधर देखा, फिर जैसे ही बाहर निकलने को हुई—इंद्रजीत जल्दी से बोला—"जाने से पहले इस खाकसार को तड़के वाली चाय तो पिला दो।"

"तड़के वाली चाय?" रवीना की आंखों में उलझन के भाव नुमायां हुए।

"मेरा मतलब" इंद्रजीत एक आंख दबाकर बोला—"एक पप्पी से है।"

"नहीं। अब कुछ नहीं मिलेगा।" रवीना बिदककर बोली—"अब दुकान का शटर गिर चुका है। जो कुछ भी चाहिए—उसके लिए कल आना।"

"मेमसाब, कल किसने देखा है। मेरी मानो तो आज ही..."

"नहीं। आज कुछ नहीं! मौका देखकर मैं कल मिलूंगी। कल कौन-सा दूर है।"

"आप कहती हैं तो," इंद्रजीत ने एक लम्बी सांस छोड़ी—"मैं मान लेता हूं।"

रवीना ने एक बार फिर सावधान निगाहों से कार में बैठे-बैठे चारों ओर देखा।

"अब मैं चलती हूं।" वह कार का दरवाजा खोलते हुए बोली—"मिलने से पहले फोन कर दूंगी। बाई।"

वो कार का दरवाजा खोलकर बाहर निकली और चेहरे को हाथ से छुपाकर होटल की पार्किंग की तरफ बढ़ गयी।

कुछ देर बाद उसकी कार पार्किंग से बाहर आई और जैट प्लेन की तरह एक ओर बढ़ गयी।

इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई और रवीना के बारे में सोचने लगा।

रवीना का उस पर इस तरह मेहरबान होना उसे बार-बार खटक रहा था।

तभी कार में गूंजी ठकठक की आवाज ने इंद्रजीत को चौंकाया।

उसने आवाज की दिशा में देखा तो उसे कार से बाहर सब-इंस्पेक्टर सदानंद खांडेकर खड़ा दिखाई दिया। उसी ने अंगुली से कार के बंद शीशे को दस्तक दी थी।

इंद्रजीत ने कार का शीशा टटोला।

"कहिए इंस्पेक्टर साहब।" वह बोला—"इस खाकसार से फिर से कोई गलती हो गयी जिसके लिए आप इसे एक बार फिर हैडक्वार्टर में ले जाना चाहते हैं।"

"ऐसी कोई बात नहीं है।" खांडेकर भावहीन स्वर में बोला—"बाहर आओ। तुमसे जरूरी बातें करनी हैं।"

"आप कार में तशरीफ...।"

"मैंने कहा न...कार से बाहर जाओ।"

इंद्रजीत ने कंधे उचकाए और कार से बाहर निकल आया।

"मेरे पीछे जाओ।" हुक्म दनदनाकर खांडेकर एक ओर बढ़ गया।

उलझन से उलझता इंद्रजीत उसके पीछे हो लिया।

खांडेकर के पीछे चलते-चलते इंद्रजीत ने सड़क पर मोड़ काटा तो उसे फुटपाथ किनारे उसकी जिप्सी खड़ी दिखाई दी।

जिप्सी के करीब पहुंचकर खांडेकर ने ड्राईवर को घूमने फिरने का आदेश दिया और फिर इंद्रजीत के साथ उसकी पिछली सीट पर बैठ गया।

"माई बाप।" इंद्रजीत सशंक भाव से बोला—"खैरियत तो है?"

खांडेकर ने कोई ज़वाब नहीं दिया। उसने एक सिग्रेट सुलगाई और पैकेट इंद्रजीत की तरफ बढ़ा दिया।

इंद्रजीत ने उसके पैकेट से एक सिग्रेट निकालकर सुलगाई और फिर धीरे से बोला—"बात क्या है जो तुम मुझे यहां लेकर आए?"

"जिस रास्ते पर तुम चल रहे हो" खांडेकर गंभीर स्वर में बोला—"उसकी कोई मंजिल नहीं है। संभल जाओ। मेरी मानो तो रास्ता बदल लो।"

"तुम किस रास्ते का जिक्र कर रहे हो।" इंद्रजीत सहज भाव से बोला—"खुलासा करके बताओगे तो शायद मैं समझ भी पाऊं।"

"नादान मत बनो। मेरा इशारा तुम्हारी और माईकल की लड़की की जुगलबंदी से है। माईकल को ये बात पता लग गयी कि तुम उसकी लड़की पर डोरे डाल रहे हो तो तुम्हारी लाश का भी पता नहीं लगने देगा।"

"उसकी लड़की पर डोरे में नहीं—बल्कि वो मुझ पर डोरे डाल रही है।"

"एक ही बात है।"

"एक बात कैसे है?"

"छूरा खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छूरे पर—दोनों सूरतों में नुकसान खरबूजे को ही पहुंचता है। तुम खरबूजा हो—इसलिए रवीना नाम की छूरी से दूर रहने में ही तुम्हारी भलाई है।"

इंद्रजीत चुप रहा।

"माईकल इलैक्शन में खड़ा हो रहा है।" खांडेकर गंभीरता से

Scanned by CamScanner

बोला—"अपनी फैमिली के लोगों को लेकर वह किसी किस्म का स्कैंडल सहन नहीं कर पाएगा। बात को समझ रहे हो?"

"ऐसी बात है तो उसे सबसे पहले अपनी बीवी की मुश्कें कसनी चाहिए। उसकी बीवी जो कर रही है—वो ठीक है?"

"उसकी बीवी क्या कर रही है?"

"तुम जानते हो।"

"नहीं जानता।"

"सच में नहीं जानते?"

"बाई गॉड! नहीं जानता।"

"मैं बताऊं तो मुझ पर कोई आंच आएगी?"

खांडेकर कसमसाया।

"यानी कि" इंद्रजीत उसके चेहरे को गौर से देखते हुए बोला—"आंच आने की उम्मीद है?"

"मैं दावे से नहीं कह सकता।"

"फिर छोड़ो।"

"नहीं। तुम बताओ।"

"सरकार, जो बात में तुम्हें बताऊंगा, वो तुम्हारे छक्के छुड़ाकर रख देगी—इसलिए मैं तुम्हारी ओर से निश्चिंत होना चाहता हूं।"

"ठीक है। मैं किसी से जिक्र नहीं करूंगा। तुम बताओ।"

"पहले प्रामिस करो।"

खांडेकर ने प्रॉमिस किया तो इंद्रजीत ने बिना लाग लपेट के उसे टीना और जार्ज के अवैध सम्बंधों के बारे में बता दिया।

"ये बात" खांडेकर बोला—"माईकल को पता है?"

"हां! तभी तो उसने मेरे दोस्त को अपनी बीवी की जासूसी के लिए रिटेन किया था।"

"इस लिहाज से तुम्हारे दोस्त का कत्ल या तो टीना ने किया होगा या फिर उसके आशिक ने। आखिर उसने दोनों की जुगलबंदी के पुख्ता सबूत जो हासिल कर लिए होंगे।"

"मुझे भी दोनों पर शक है।"

"सिर्फ शक है?"

"सबूत होता तो मैं कब का तुम्हारे ए०सी०पी० साहब के पास पहुंच जाता।"

"तो सबूत ढूंढो।"

"कैसे ढूंढूं? माईकल के घर जाकर?"

"नहीं। माईकल की बीवी जार्ज के घर पर निगाह रख के। तुम दोनों के आपत्तिजनक फोटो खींच लोगे तो गेंद तुम्हारे पाले में आ

सकती है।"

"गेंद के साथ-साथ सोने का हाथी भी मेरे पाले में आ सकता है।"

"सोने का हाथी?"

"माईकल परेरा।"

"उसे अपने पाले में लाने पर तुम्हें क्या मिलेगा?"

"सोचो क्या मिल सकता है?"

"ओह! तुम्हारा इरादा उन फोटोग्राफ्स के ऐवज में उससे मोटी रकम झाड़ने का इरादा है?"

"बशर्ते मैं ऐसे फोटोग्राफ्स खींचने में कामयाब हो गया तो।"

"कोशिश करोगे तो क्यों कामयाब नहीं होगे?"

"ठीक कह रहे हो। तो मैं चलूं?"

खांडेकर का सिर सहमति में हिला।

रवीना के बंगले का मुख्य द्वार खोलकर इंद्रजीत ने भीतर कदम रखा ही था कि उसकी निगाह एक तह किए कागज पर चिपककर रह गयी। उसने उसे उठाया और तह खोलकर पढ़ा।

लिखा था—

"मैंने तुम्हें पहले भी चेताया था—लेकिन तुमने मेरा कहा नहीं माना। अब तुम अपनी मौत के बहुत करीब हो रहे हो। जिस शार्क मछली के चंगुल में तुम फंसे हो—देख लेना वो एक दिन तुम्हें कच्चा चबा जाएगी और डकार तक नहीं लेगी। शार्क मछली से मेरा इशारा जिस शख्स से है, तुम बेहतर जानते हो। अब भी वक्त है। भाग जाओ। वरना तुम्हारी लाश के टुकड़े भी नहीं मिलेंगे।

तुम्हारा शुभचिंतक
मिस्टर एक्स।

इंद्रजीत ने कागज को कई बार पढ़ा।

फिर उसने उसे तह करके अपने पर्स में रख लिया।

कागज पढ़ने के बाद उसे वहां से कूच करने की तैयारी करनी चाहिए थी—लेकिन इंद्रजीत ने ऐसा नहीं किया। वह बॉर वाले कमरे में गया और दो पैग पीकर फिर से लाउंज में लौटा।

तनिक झूमते हुए उसने पर्स में से कागज निकाला और फिर उसे उच्च स्वर में पढ़ते हुए कमरे में चहल-कदमी करने लगा।

कुछ पल बाद वो ऊंचे स्वर में खुद से बोला—"मिस्टर एक्स, ये रुक्का भेजकर तूने [illegible] मौत के परवाने पर दस्तखत किए हैं।

Scanned by CamScanner

मैं तुझे पहचान चुका हूं। तू बहुत बड़ी चूक कर चुका है। ऐसी चूक जो तेरे को सीधा फांसी के फंदे तक ले जाएगी। अब तेरा कानून के पंजे से बचे रहना बहुत मुश्किल है। और तुझे कानून के शिकंजे में फंसाने वाला शख्स कोई और नहीं इंद्रजीत होगा। वो इंद्रजीत जिसे फंसाने का तूने पूरा मंसूबा बांधा हुआ है। अपने आप को बचा मिस्टर एक्स! अब इंद्रजीत तुझे पहचान चुका हूं।

इंद्रजीत ने कागज हवा में उड़ाया और फिर कोई गीत गुनगुनाने लगा।

तभी उसकी निगाह उस जगह पर पड़ी—जहां कागज गिरा था।

वह जगह थी एक सोफा चेयर।

कागज जिस चीज पर जाकर गिरा था उस चीज ने इंद्रजीत को और चौंकाया।

वो रवीना का हैंड बैग था—जिसे वो अपने साथ लाई थी जिसे वो भूलवश छोड़ गयी थी।

इंद्रजीत ने उसे उठाया और खोलकर देखा।

बैग में सोने का पावडर कम्पैक्ट, लिपस्टिक, रूमाल और एक सैंट की शीशी के अलावा कुछ नहीं था।

इंद्रजीत उसे बंद करने ही जा रहा था कि सहसा उसकी निगाह साईड वाली इनर पाकिट पर पड़ी।

उसने उसे खोला—उसमें रखा सामान बाहर निकाला तो उसके जेहन में मकड़ियां-सी चलने लगीं।

वो सामान था—सीरियल नम्बरों वाले माचिस के खोल जो कि उसने दीपक कामत के कब्जे में देखे थे, जिसे कि उसने थोड़ी देर पहले परेरा नाईट क्लब में क्रिस को अपनी सेफ से निकालकर कुछ लोगों को सौंपते देखा था।

कई पलों तक इंद्रजीत आंखें फाड़-फाड़कर माचिस के खोलों को देखता रहा।

वे गिनती में तेरह थे। उन पर मौजूद सीरियल नम्बर 1148 से 1160 तक था।

इंद्रजीत उन खोलों की बाबत अपने जेहन का अर्क निचोड़ ही रहा था कि एकाएक फोन की घंटी ने उसे चिहुंकने पर मजबूर कर दिया।

बैग तभी छोड़कर उसने फोन रिसीव किया।

"जान, मैं रवीना।" उसके कान में रवीना की आवाज पड़ी।

"मुझे मालूम था, तुम फोन करोगी।" इंद्रजीत अपने स्वर में मिश्री खोलते हुए बोला—"क्योंकि मेरी जान का एक कीमती सामान

यहां जो छूट गया है।"

"त...तुमने बैग खोलकर देख लिया?"

"नहीं, मेरी जान! बैग तुम्हारा है। मैं उसे क्यों खोलकर देखने लगा।"

"थैंक गॉड!"

"तुम कहो तो खोलकर देख..."

"न...नहीं। बिल्कुल मत देखना।"

"निरोध के पैकेट रखे हैं?"

"यू इडियट! मैं तुम्हें ऐसी दिखाई देती हूं।"

"फिर क्या रखा है?"

"तुम्हारे जानने लायक नहीं है।"

"फिर भी कुछ तो हिंट दो।"

"उसमें वो सामान रखा है, जो हर लेडीज के बैग में पाया जाता है।"

"फिर तो मेरा तुम्हारे बैग को छूना भी बेकार है।"

"नहीं। तुम उसे शौक से छू सकते हो। लेकिन खोलकर नहीं देख सकते।"

"आपका हुक्म सिर आंखों पर। बैग लेने के लिए आप यहां तशरीफ लाएंगी या मैं आपके दौलतखाने पर दस्तक दे दूं?"

"टाईम मिले तो आ जाना। वरना मैं आ जाऊंगी।"

"ठीक है, मेरी जाना! टाईम मिलते ही मैं तुम्हारे दौलतखाने पर पहुंच जाऊंगा। ओके०?"

"इंद्र तुम कितने अच्छे हो।"

"क्या कहा! मैं अच्छा हूं।"

"हां।"

"गलतफहमी में मत रहो। मैं बहुत बुरा हूं। इंसानियत के नाम पर मैं बदनुमा दाग हूं।"

"मजाक कर रहे हो?"

"आई एम सीरियस।"

"तुम मजाक कर रहे हो। ऐनी वे—एक राज की बात बताऊं?"

"दो बताओ।"

"मैं तुमसे प्यार करने लगी हूं। अभी मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रही थी।"

"क्या सोच रही थीं?"

"यही कि तुम मुझसे शादी करोगे या नहीं?"

"तुमने शादी का भी सोच लिया?"

Scanned by CamScanner

"प्यार के बाद तो आदमी शादी का ही सोचता है।"

"सोचने से पहले तुमने मेरी इच्छा जाने की कोशिश नहीं की?"

"तुम कौन-सा मना करने वाले हो। मैं जानती हूं। तुम भी मुझसे प्यार करते हो। एम आई राईट और रांग?"

"एब्सोल्यूटली रांग। मैं तुमसे प्यार नहीं करता।"

"क्या कहा! जरा फिर से कहना।"

"मैंने कहा।" अब की बार इंद्रजीत ऊंचे स्वर में बोला—"मैं तुमसे प्यार नहीं करता।"

"झूठ मत बोलो। तुम मुझसे प्यार करते हो।"

"कहा न मैं तुमसे प्यार नहीं करता।"

"फिर थोड़ी देर पहले तुमने मेरे साथ जो किया था, वो क्या था?"

"वो तो मैंने तुम्हारी पीठ खुजाई थी।"

"तुम इतने कमीने निकलोगे, मैं सोच भी नहीं सकती थी। रियली यू आर ए बास्टर्ड।"

"लक्की बास्टर्ड नहीं कहोगी।"

"क्यों?"

"जानेमन, तुमसे ये किसने कहा कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता।"

"तुमने ही तो अभी-अभी कहा।"

"मेरी जान, मैं यह कहना चाहता था कि मैं तुमसे प्यार नहीं करता—बल्कि बहुत-बहुत-बहुत प्यार करता हूं और तुम्हारे बिना जी नहीं सकता।"

"यू चीटर।" रवीना खुशी से चिल्ला उठी—"खूब बेवकूफ बनाया। मैं तो घबरा ही गयी थी।"

"कैसी लगी लक्की बास्टर्ड की ये हरकत?"

"बोर। मैं फोन करती हूं।"

"डार्लिंग, फोन रखने से पहले कुछ तो कहो जिससे मुझे यकीन हो कि तुम मुझे सच में प्यार करती हो।"

"क्या कहूं?" रवीना इठलाकर बोली।

"कुछ भी।"

"अगर मैं कहूं कि आई एम थिंकिंग ऑफ यू...दैन?"

"तब ये नाचीज झुककर कहेगा—आई एम थिंकिंग ऑफ यू टू।"

"अगर मैं कहूं कि आई फॉल इन लव विद यू?"

"तब मैं कहूंगा कि आई फॉल इन लव विद यू वन टू थ्री फोर।"

रवीना खिलखिलाकर हंसी।

"गुड नाईट, जाना।" फिर वो बोली—"मैं फोन रखती हूं।"

"बाई।"

इंद्रजीत ने फोन बंद किया और सोफे पर जा बैठा।

एक नजर रवीना के बैग पर डालने के बाद उसने एक सिग्रेट सुलगाई और फिर गहन भाव से कुछ सोचने लगा।

अगले दिन इंद्रजीत की सुबह ठीक दस बजे आंख खुली।

कई पलों तक वह बिस्तर पर पड़ा रहा और खिड़की के रास्ते छत पर डिजाईन बना रही सूर्य की किरणों को अपलक देखता रहा।

फिर चादर एक ओर फेंककर वो पलंग पर से उठा और फ्रैश होने के लिए बाथरूम में घुस गया।

तरोताजा होने में उसे पूरे पंद्रह मिनट लगे।

अब उसने अपना रुख किचन की तरफ किया।

दो टोस्ट और चाय बनाने के बाद वह सारा सामान एक ट्रे पर रखकर छत पर पहुंचा।

छती की मुंडेर पर उसने ट्रे रखी और वहां से गोवा शहर का नजारा करने लगा।

समुद्र वहां से ज्यादा दूर नहीं था इसलिए किनारे पर रह-रहकर दम तोड़ती लहरों को देखकर उसे सकून-सा हासिल हुआ।

फिर उसने अपना ध्यान टोस्ट की ओर दिया।

दोनों टोस्ट उदरस्थ करने के बाद उसने चाय का प्याला थामा और तृप्तिपूर्ण ढंग से उसकी चुसकियां भरने लगा।

चुस्कियां भरते-भरते वह दूसरी दिशा की ओर घूमा तो उसकी निगाह थोड़ी दूर पर स्थित एक पहाड़ी पर बनी सफेद इमारत पर पड़ी।

उसने उसके माथे पर लगे साईन बोर्ड पर निगाह डाली तो उसे समझते देर नहीं लगी कि वो इमारत उस स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स की थी—जिसका वह जायजा लेना चाहता था।

एकाएक उसने उस बिल्डिंग में जाने का फैसला किया।

जल्दी से उसने चाय पी और फिर तैयार होकर अपनी कार की तरफ बढ़ा।

कार की ड्राईविंग सीट पर बैठने के बाद उसने उसे स्टार्ट किया और फिर उसका रुख उस सड़क की ओर कर दिया जो स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स की ओर जाती थी।

पांच मिनट की ड्राइव के बाद वो एक ऐसी सड़क पर पहुंचा

Scanned by CamScanner

जो सांप की तरह घुमावदार थी और जिसके कोने पर 'स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स' की तरफ संकेत करता एक छोटा-सा साईन बोर्ड लगा हुआ था।

इंद्रजीत आगे बढ़ने ही वाला था कि उसकी निगाह एकाएक रियर व्यू मिरर पर पड़ी।

रियर व्यू मिरर में उसे एक टूरिस्ट बस पीछे आती दिखाई दी।

उसने उस बस को जाने दिया और फिर अपनी कार उसके पीछे लगा दी।

थोड़ी देर बाद बस 'स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स' की इमारत के सामने जाकर रुकी तो इंद्रजीत ने भी अपनी कार रोक दी।

एक दरबान के गेट खोलने के बाद बस इमारत के अहाते में दाखिल हुई तो इंद्रजीत भी उसके पीछे-पीछे इमारत में पहुंच गया।

तभी एक सफेद वर्दी पहने एक अटेंडेंट फुर्ती से उसके करीब आया।

"सर, कार पार्किंग उधर है।" वह अहाते के एक कोने में खड़ी चार पांच कारों की तरफ संकेत करते हुए बोला—"आप प्लीज अपनी कार उधर ही पार्क कीजिए।"

सहमति में सिर हिलाकर इंद्रजीत ने अपनी कार निर्दिष्ट स्थान पर खड़ी की और फिर कार से बाहर निकला।

तभी अटेंडेंट उसके पास आकर जेब से एक कार्ड निकालकर बोला—"सर, ये टोकन नंबर है।"

इंद्रजीत ने टोकन जेब के हवाले किया और फिर ज्यों ही आगे बढ़ा, अटेंडेंट तनिक हिचकिचाकर बोला—"सर, कार पार्किंग के चार्जेज तो देते जाईए।"

"यहां कार पार्क करने के पैसे लगते हैं।" वह हैरानी से बोला।

"यस, सर।" अटेंडेंट तत्परता से बोला।

"क्या चार्जिज हैं?" इंद्रजीत ने अपना पर्स निकला।

"बीस रुपए, सर।"

"क्या।" इंद्रजीत की आंखें फट पड़ीं—"कार पार्क करने के बीस रुपए। लूट पड़ रही है?"

अटेंडेंट चुप रहा।

"लूट ही पड़ रही है।" इंद्रजीत बोला—"कार पार्क करने के बीस रुपए। इतनी लूट तो दिल्ली में भी नहीं है। खैर, तू भी क्या याद रखेगा। ले बीस रुपए ले, और ऐश कर।"

इंद्रजीत ने एक बीस का नोट उसके हवाले किया तो उसने छूटते ही एक तगड़ा सलाम ठोंक दिया।

इंद्रजीत ने उसके सलाम का जवाब नहीं दिया और खामोशी से बस से उतर रहे टूरिस्टों के ग्रुप में शामिल हो गया।

टूरिस्टों के झुंड में ही वो स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स की इमारत में दाखिल हुआ।

यह एक कॉफी बड़ा हॉल था जिसके बीचों बीच तीन फव्वारे लगे हुए थे। चारों दीवारों के आगे शो केस लगे हुए थे जिनमें कलाकृतियों के ढेर सारे नमूने सजे हुए थे। काउंटर के पीछे जो खूबसूरत युवतियां खड़ी हुई थीं, उन्होंने सफेद रंग की स्कर्ट और कोट पहने हुए थे। फर्श पर जो कालीन था, वो ईरानी था जिस पर चलकर ऐसा महसूस हो रहा था जैसे इंसान नर्म घास पर चल रहा हो। दीवारों पर प्रसिद्ध चित्रकारों के महंगे चित्र टंगे हुए थे और यहां वहां पावरफुल लाईटें लगी हुई थीं जिनकी वजह से हॉल जगमगा रहा था।

हॉल का मुआयना करने के बाद इंद्रजीत शो केसों पर सरसरी निगाहें डालता हुआ आगे बढ़ा तो वो एक जगह पर आकर ठिठक गया।

उसके ठिठकने का कारण यही था कि वहां एक दरवाजा था जिसके आगे रेशमी पर्दा पड़ा हुआ था। दरवाजे के समीप ही एक बेहद खूबसूरत युवती एक कुर्सी पर बैठी हुई थी और बड़े इत्मीनान से एक मैगजीन पढ़ने में व्यस्त थी।

वो दरवाजा इंद्रजीत को रहस्यमय जान पड़ा।

उसकी हकीकत जानने के लिए वो एक शो केस के पास पहुंचा।

"यस सर।" उसके पास पहुंचते ही वहां खड़ी सेल्स गर्ल व्यवसायिक मुस्कान चेहरे पर लाती हुई बोली—"व्हाट कैन आई डू फॉर यू?"

इंद्रजीत ने कोई जवाब नहीं दिया। वह शहाना ढंग से शोकेस में पड़े आईटमों का जायजा लेता रहा।

कुछ पलों बाद वो मुंह बिचकाकर बोला—"यहां जितने की भी आईटम हैं, मजेदार नहीं हैं। असल में मैं अपनी मैरिज एनिवर्सिरी पर अपनी बीवी को कोई बढ़िया-सा गिफ्ट देना चाहता हूं। ऐसा गिफ्ट जिसकी कीमत हजारों में न होकर लाखों में हो। ऐसा गिफ्ट होगा तुम्हारे पास?"

"सर, ऐसा गिफ्ट आपको जरूर मिलेगा।" युवती तत्परता से बोली—"लेकिन इसके लिए आपको पॉस्कल साहब की गैलरी में जाना पड़ेगा।"

"पास्कल साहब की गैलरी! ये कहां है?"

"उस पर्दे के पीछे।" युवती ने रेशमी पर्दे की तरफ संकेत किया।

"वहां जाने की कोई फीस वगैरह है?"

Scanned by CamScanner

"मामूली सी, सर।"

"कितनी?"

"केवल सौ रुपए।"

"बस सौ रुपए।" इंद्रजीत को खुंदक तो बहुत आई मगर फिर भी वो लापरवाही का प्रदर्शन करते हुए बोला—"पॉस्कल साहब की कलाकृतियां तो पूरे गोवा में फेमस हैं। उनकी कलाकृतियों को देखने की कीमत सिर्फ सौ रुपए। सौ रुपए फीस तो बहुत कम है। आपको कम-से-कम पांच सौ रुपए फीस रखनी चाहिए।"

युवती कुछ नहीं बोली। उसने मुस्कराकर अपने चमकीले दांतों की नुमाईश की।

इंद्रजीत ने पर्स से सौ का एक नोट निकाला और युवती की तरफ बढ़ाया।

"सर, ये फीस।" युवती ने पर्दे के करीब बैठी मैगजीन पढ़ रही युवती की तरफ संकेत किया—"आप उन मैडम को दे दीजिए। वो आपको एक टोकन देंगी। जिसे लेकर आप पॉस्कल साहब की गैलरी में एंट्री कर सकते हैं।"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया और पर्दे के पास बैठी युवती के पास आ गया।

अपना गला खंखारकर उसने उसका ध्यान बंटाया तो वो इंद्रजीत को अजीब सी निगाहों में देखने लगी।

"मैं पॉस्कल साहब की गैलरी देखना चाहता हूं।" इंद्रजीत ने उसकी तरफ सौ का नोट बढ़ाया—"यहां रखे गिफ्ट बेहद सस्ते और मेरी बीवी की पसंद पर खरे उतरने वाले नहीं हैं। मैं उसे बढ़िया-सा गिफ्ट खरीदकर देना चाहता हूं।"

"मोस्ट वैलकम, सर।" वह अदब से बोली—"आपको पॉस्कल साहब की कलाकृतियों में से कोई न कोई जरूर पसंद आएगी। आप मेरे साथ आईए।"

उसने पर्दा हटाया—डोर क्लोजर लगा दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गयी।

इंद्रजीत ने फौरन उसका अनुसरण किया।

भीतर कदम रखकर इंद्रजीत ने पाया कि यह 30 गुणा 40 का एक काफी बड़ा कमरा था। यहां कई सारी मूर्तियां और सजावटी शो पीस यहां वहां शो स्टैंड्स पर सजाकर रखे हुए थे। और उन सब के आगे पॉस्कल क्रिएशन की तख्ती टंगी हुई थी।

इंद्रजीत ने सरसरी निगाहों से कलाकृतियों को देखा तो नोट किया कि वे सब चलताऊ थीं। जो कीमतें उन पर दर्ज थीं—वो उन

कीमतों के लायक हरगिज नहीं थीं। स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स कलाकृतियों के जरिए टूरिस्टों को सरासर लूट रहा था।

"इनमें से आपको कोई आईटम पसंद आई?" सहसा वो युवती बोली।

"अभी तो नहीं आई।" इंद्रजीत वहां पड़ी मूर्तियों को मुआयना करने वाली निगाहों से देखता हुआ बोला—"हो सकता है थोड़ी देर में पसंद आ जाए।"

युवती ने सहमति में सिर हिलाया और वहीं बने एक काउंटर के साथ टेक लगाकर खड़ी हो गयी।

मूर्तियों पर नजर डालते हुए इंद्रजीत आगे बढ़ा तो उसकी निगाह एक ऐसे पर्दे पर पड़ी जिसके पीछे ऐन हॉल के माफिक दरवाजा लगा हुआ था।

"इस पर्दे के पीछे क्या है?" इंद्रजीत सरसरी लहजे में बोला।

"आपके काम की चीज नहीं है।" युवती भावहीन स्वर में बोली।

"फिर भी पता तो चले कि ये दरवाजा यहां किस खुशी में लगाया गया है?"

"आप अपने काम से काम रखिए। आप यहां कोई आईटम पसंद करने आए हैं।"

"मैं अपने काम से काम रख रहा हूं, लेकिन मोहतरमा, जिज्ञासा भी तो कोई चीज होती है।"

"सॉरी, सर। इस बाबत मैं आपकी कोई सेवा नहीं कर सकती।"

"कोई बात नहीं। आप कहें तो मैं दरवाजा खोलकर देख लूं कि भीतर क्या है?"

"नहीं। ऐसी इजाजत मैं नहीं दे सकती।"

"क्यों?"

"मैं यहां महज एक मुलाजिम हूं।"

"कोई बात नहीं। आप मुझे अपने बॉस के पास ले चलिए। मैं उनसे परमिशन..."

"बॉस लोग आपको परमिशन नहीं देंगे।"

"क्यों?"

"क्योंकि ये रूम उनके खास लोगों के लिए बनाया गया है। यहां बॉस के खास लोग ही जा सकते हैं।"

"तो आप मुझे भी खास समझ लीजिए।"

"सॉरी। मैं ऐसा नहीं कर सकती।"

"मैं आपको फीस देने के लिए तैयार हूं।"

Scanned by CamScanner

"सॉरी! इस कमरे में जाने की कोई फीस नहीं है।"
"आप तो खामखाह जिद पकड़ रही हैं।"
"जिद मैं नहीं, आप पकड़ रहे हैं।"
"मैं आपके बॉस से बात करना चाहूंगा।"
"वो इस समय यहां नहीं हैं।"
"कहां हैं?"
"मुझे नहीं पता।"
"तो किसे पता है?"
"मुझे लगता है कि आप यहां खरीदारी करने नहीं—बल्कि किसी और काम से आए हैं।"
"मैं यहां खरीदारी करने ही आया हूं।"
"फिर खरीदारी क्यों नहीं कर रहे। उल जलूल बातों में अपना टाईम क्यों जाया कर रहे हैं।"
"मोहतरमा, हमने बताया न कि हम महज जिज्ञासा की वजह से..."

इंद्रजीत अपना जुमला पूरा कर पाता, उसे कमरे में एक नौजवान दम रखता दिखाई दिया।

इंद्रजीत ने उसे फौरन पहचाना।

वो विक्टर नाम का वो युवक था जिसे बीती रात को उसने क्रिस के साथ लिफ्ट से बाहर निकलकर उसके ऑफिस में जाकर मोटी रकम के ऐवज में माचिस खरीदते देखा था।

इंद्रजीत को छोड़कर युवती उस नौजवान से आकर्षित हुई।

लड़खड़ाती चाल चलकर नौजवान युवती के पास आया और अपने सूख चुके होठों पर जीभ फिराता हुआ बोला—"गैलरी में जाना है।"

"आपके पास" युवती सशंक भाव से बोली—"पास है?"

नौजवान ने तत्काल इंद्रजीत की तरफ देखा।

इंद्रजीत वहां खड़े एक स्टेचू को गौर से देखने का बहाना करने लगा।

इंद्रजीत को बेखबर जानकर नौजवान ने अपनी पैंट की जेब से एक लाल रंग की चीज निकाली और युवती को दिखा दी।

इंद्रजीत ने उस चीज को तिरछी निगाहों से देखकर फौरन पहचाना।

वह वो माचिस थी जिसे उसने दीपक के कब्जे में देखा था—जिसे हाल ही में उसने रवीना के बैग में देखा था जोकि उसके कोट की जेब में महफूज थी।

तब इंद्रजीत को अपनी अक्ल का फख्र हुआ।

रवीना के बंगले से रवाना होने से पहले उसने हैंड बैग से दो माचिस के खोल निकालकर अपने कब्जे में कर लिए थे और उसका हैंड बैग अपनी कार के ग्लोब कम्पार्टमेंट में रख लिया था।

इंद्रजीत के देखते-देखते नौजवान ने माचिस अपनी जेब में डाली और लड़खड़ाकर उस दरवाजे की तरफ बढ़ गया। उसने पर्दा हटाया और दरवाजा खोलकर भीतर चला गया।

"ये महाशय जी" इंद्रजीत युवती से सम्बोधित हुआ—"भीतर कैसे चले गए?"

"इनके पास भीतर जाने का पास था।" युवती सपाट लहजे में बोली।

"भीतर जाने के लिए पास की जरूरत पड़ती है?"

"आप अपने काम से काम क्यों नहीं रखते।" युवती तनिक झल्लाकर बोली—"आप यहां अपनी वाईफ के लिए गिफ्ट पसंद करने आए हैं—या यहां की जासूसी करने?"

"आप तो खामखाह नाराज हो रही हैं।"

"बात ही नाराज होने वाली कर रहे हैं आप। इतनी देर से आप यहां खड़े हैं—लेकिन आपने अभी तक कोई चीज पसंद नहीं की। मत भूलिए, मेरे टाईम की भी कोई कीमत है।"

"ठीक है, ठीक है। मैं आपका टाईम जाया नहीं करूंगा। आप उस स्टेचू की कीमत बताईए।" इंद्रजीत ने उस स्टेचू की तरफ इशारा किया जिसे थोड़ी देर पहले वो देखकर हटा था।

"तीन लाख रुपए।"

"बस।"

"आपको कितने तक का गिफ्ट चाहिए?"

"कम-से-कम दस लाख रुपए तक का।"

"आपको देखकर लगता तो नहीं कि आपकी हैसियत..."

"मैडम।" इंद्रजीत सख्त स्वर में बोला—"आप मेरी तौहीन कर रही हैं। आपका काम यहां आए कस्टमर्स को अटैंड करना है। उनकी इनसल्ट करना नहीं।"

"सॉरी।"

"इट्स ओके।"

युवती ने तत्काल दीवार पर टंगी एक पेंटिंग की तरफ इशारा किया और बोली—"ये पेंटिंग बारहवीं शताब्दी की है। ओरिजनल तो नहीं है लेकिन इसे पास्कल साहब ने खुद डिजाईन किया है। इसकी कीमत ग्यारह लाख है। आई थिंक, ये तुम्हारी वाईफ को पसंद

Scanned by CamScanner

आएगी।"

इंद्रजीत ने तस्वीर को सरसरी निगाहों से देखा फिर उसका सिर अपने आप इंकार में हिल गया।

"नहीं पसंद आई?"

"नहीं।"

"वजह?"

"मेरी बीवी को डुप्लीकेट नहीं—ओरिजनल चीजें पसंद हैं। कोई ओरिजनल एंटीक पीस दिखाइए जिसे देखते ही वो मेरा मुंह अपनी लिपिस्टिक से लाल कर दे।"

पल भर के लिए युवती के गालों पर सुर्खी उभरी फिर वह संभलकर बोली—"हमारे पास कुछ जेवरात भी हैं। आप कहें तो मैं वो जेवरात आपको दिखा दूं?"

"क्यों नहीं।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"आप वो जेवरात बड़े शौक से दिखा सकती हैं।"

युवती एक शो केस की तरफ बढ़ी।

तभी इंद्रजीत की निगाह पर्दा हटाकर वहां कदम रखते विक्टर नाम के नौजवान पर पड़ी।

उस पल उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे पड़े थे जैसे उसे मन मुताबिक चीज की प्राप्ति हो गयी हो। उसने इंद्रजीत को सरसरी निगाहों से देखा और फिर कमरे से बाहर निकल गया।

"ये देखिए।" तभी युवती शो केस में रखे एक हार की तरफ अंगुली करते हुए बोली—"आई थिंक, ये हार आपकी मैडम को जरूर पसंद आएगा।"

इंद्रजीत शो केस के पास पहुंचा।

उसने युवती द्वारा दिखाए हार को सरसरी निगाहों से देखा।

"असल में बात ये है।" फिर वह भेदभरे स्वर में बोला—"मैं यहां ये गिफ्ट लेने नहीं आया।"

युवती की भवें उठीं।

"मैं यहां!" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"वो गिफ्ट लेने आया हूं—जो माचिस के ऐवज में मिलता है।"

"कौन-सी माचिस?" युवती के चेहरे पर सतर्क होने के भाव आए—"मैं कुछ समझी नहीं।"

इंद्रजीत ने कोट की भीतरी जेब से रवीना के बैग से हासिल माचिस के खोल उसे दिखाए।

"मैं इस माचिस का जिक्र कर रहा हूं।" वह बोला।

युवती ने माचिस के खोलों को उलट-पुलट कर देखा।

उन पर मौजूद सीरियल नंबर देखकर उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव नुमायां हुए।

"ऐसी बात थी" वह मुंह बिगाड़कर बोली—"तो मेरा कीमती वक्त जाया क्यों किया? यहां आते ही तुम अपने असल मकसद पर नहीं जा सकते थे।"

"मैं यहां पहली बार आया हूं।" इंद्रजीत सावधान स्वर में बोला—"मैं कोई रिस्क लेना नहीं चाहता था। इसलिए मैंने अपनी ओर से सावधानी बरतना बेहतर समझा था। मेरी वजह से आपको जो तकलीफ हुई, उसके लिए मैं आपसे माफी मांगने के लिए तैयार हूं।"

"उसकी कोई जरूरत नहीं।" युवती लापरवाही से बोली—"आप भीतर जा सकते हैं।"

"शुक्रिया।"

इंद्रजीत पर्दे वाले दरवाजे के पास पहुंचा।

एक पल को उसके मन में आया वो वापिस लौट चले। पर्दे के पीछे कदम रखने पर उसकी जान सांसत में पड़ सकती थी।

फिर अपने ईष्ट देव को मन-ही-मन याद करके उसने पर्दा हटाया और दरवाजा खोल दिया।

उसे एक गैलरी के दर्शन हुए।

उसने फौरन गैलरी में कदम रखा।

गैलरी उस वक्त सूनी थी। उसके अंतिम सिरे तक कई ट्यूब लाईट्स जगमगा रही थीं। अंतिम सिरे पर सिनेमाघरों जैसी टिकट खिड़की को देखकर इंद्रजीत मन-ही-मन चौंका। उस वक्त खिड़की वाले कमरे में कोई न था।

दबे पांवों से इंद्रजीत खिड़की वाले कमरे के सामने पहुंचा।

उसने देखा, वहां एक घंटी लगी हुई थी और कमरे में पिछली तरफ एक छोटा-सा दरवाजा बना हुआ था, जो कि बंद था।

तभी उसकी निगाह कमरे में पड़े एक छोटे से बक्से पर पड़ी।

उस वक्त बक्से में वैसी माचिसों के खोल थे जो कि उसके पास थे। फर्क था तो केवल इतना था कि बक्से में मौजूद खोलों पर डाक टिकट पर लगाई जाने वाली मोहर के निशान थे।

इंद्रजीत ने वहां लगी घंटी बजाने का फैसला किया।

फिर अगले ही पल जब उसे याद आया कि वो अपना रिवॉल्वर साथ लाना भूल गया है—उसने लौटने का फैसला किया।

वह पर्दे वाले दरवाजे के पास पहुंचा।

पर्दा हटाकर उसने कमरे में कदम रखा तो उसे युवती किसी कस्टमर को वहां मौजूद गिफ्ट आईटम की नुमाईश करती दिखाई दी।

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत ने अपने सिर को कुछ इस अंदाज में जुम्बिश दी जैसे उसका काम बिना किसी विघ्न बाधा के सम्पन्न हो गया है।

जवाब में युवती ने भी अपने सिर को धीरे से जुम्बिश दी।

फिर इंद्रजीत वहां नहीं रुका।

लम्बे डग भरता वह बाहर की ओर बढ़ गया।

उस पल कई प्रश्न उसके दिमाग में हथौड़े की तरह पड़कर धमक पैदा कर रहे थे।

'बक्से में माचिस की खाली खोल क्यों मौजूद थे?'

'उन पर मोहर क्यों लगी हुई थी?'

'परेरा नाईट क्लब और स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स में क्या सम्बध था?'

'क्लब की माचिस वहां ठिकाने क्यों लगाई जाती थी?'

'माचिस के ऐवज में माचिस देने वाले को क्या दिया जाता था?'

"स्मैक चरस--या फिर कोई गैरकानूनी चीज?"

'दीपक के कत्ल में स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स के संचालक टॉम पास्कल का कोई हाथ था?'

थोड़ी देर बाद इंद्रजीत अपनी मारूति कार रवीना परेरा के अपार्टमेंट्स के मुख्य द्वार से भीतर दाखिल कर रहा था।

उसने कार पार्किंग लॉट में ले जाकर रोकी और फिर रिसेप्शन पर पहुंचा।

रिसेप्शन पर मौजूद रिसेप्शनिस्ट से उसने रवीना परेरा से मिलने की गुजारिश की तो वो इंद्रजीत को अजीब-सी निगाहों से देखकर कमरे से बाहर निकल गयी।

थोड़ी देर बाद वो वापिस लौटी तो उसके चेहरे पर शक की कोई परछाई नहीं थी।

उसने इंद्रजीत को रवीना का मैसेज देते हुए कहा कि वो पास के ही 'दि बार' नाम के रेस्टोरेंट में तशरीफ ले जाए। थोड़ी देर में मिस रवीना वहीं पहुंचेंगी।

रिसेप्शनिस्ट का शुक्रिया अदा करके इंद्रजीत पार्किंग लॉट में अपनी जानी कार के पास पहुंचा।

उसने उसके ग्लोब कम्पार्टमेंट में से रवीना का हैंड बैग हासिल किया और फिर उसे लापरवाही से झुलाता हुआ 'दि बार' नाम के रेस्टोरेंट की तरफ बढ़ गया।

रेस्टोरेंट में वो कोने की एक मेज पर बैठा।

उसने एक सिग्रेट सुलगाई और रवीना के वहां कदम रखने की प्रतीक्षा करने लगा।

दस मिनट बाद रवीना ने वहां कदम रखा तो इंद्रजीत की निगाह बरबस कलाई घड़ी की तरफ गयी।

उस वक्त साढ़े बारह बजने वाले थे।

रवीना को मिनी स्कर्ट और बस्टिरनुमा टॉप में देखकर इंद्रजीत का जी चाहा कि वो उसे वहीं लिटा दे और मनमानी कर ले।

जैसे तैसे उसने अपने मनोभावों पर काबू पाया और रवीना के सामने बैठते ही खुमार भरे स्वर में बोला—"इस ड्रेस में सैक्सी लग रही हो। किसकी जान लेने जा रही हो?"

"थैंक्स फॉर दि कम्पलीमेंट।" रवीना इठलाकर बोली—"माई डियर, मैं कोई कातिल नहीं हूं जो किसी की जान लेने की हिमाकत करूंगी, अंडरस्टैंड?"

"फिर जानलेवा हुलिया क्यों बना रखा है?"

"ये तो फैशन है।"

"ऐसा फैशन हर लड़की करे तो मजा आ जाए।"

"मैं समझी नहीं।"

"देश की आबादी इतनी तेजी से बढ़ेगी कि चीन भी हमारे सामने घुटने टेक देगा।"

"तुम्हारी बात का मतलब मैं अब भी नहीं समझी।" रवीना उलझन भरे स्वर में बोला।

इंद्रजीत ने अपना मुंह उसके चेहरे के करीब किया और फिर बेहद धीमे स्वर में बोला—"जानती हो जब तुमने यहां कदम रखा था, तब मेरा जी क्या करने का किया था?"

"क्या करने का किया था?"

"मैं तुम्हें मेज पर लेटाऊं और तुम्हारी मुर्गी को प्यार करने लगूं।"

"यू नॉटी! ये कोई वक्त है ऐसी बातें करने का। तुम्हें शर्म नहीं आती पब्लिक प्लेस पर ऐसी बातें करते हुए।"

"शर्म आ रही है तभी तो मैं अपने मुर्गे को बांग देने से जबरन रोके हुआ हूं।"

वो खिलखिलाकर हंसी। ऐसी हंसी जिसे देखकर इंद्रजीत को कुछ-कुछ होने लगा।

"मैं यहां ज्यादा देर तक नहीं रुकूंगी।" एकाएक तो अपनी हंसी पर काबू पाकर बोली—"लंच के लिए आज मुझे अपनी फ्रेंड के घर जाना है।"

Scanned by CamScanner

"कहां?"

"वास्को में।"

"किस खुशी में?"

"उसकी शादी होने वाली है।"

"शादी होने की खुशी में वो लंच के लिए इनवाईट कर रही है?"

"हां!"

"मत जाओ।"

"व...क्यों?" रवीना हड़बड़ाकर बोली।

"बुजुर्गों ने कहा है शादी बरबादी है। बरबादी मनहूसियत का दूसरा नाम है। ऐसे गमगीन मौके पर उसका परोसा खाना तुम्हारे गले से नीचे नहीं उतरेगा।"

वो हंसी।

"बातें मजेदार करते हो।" वो तारीफ भरे स्वर में बोली।

"मैं और काम भी मजेदार करता हूं।"

"जैसे?"

"मैं मुर्गियों को दाना बड़े तरीके से खिलाने में जाहिर हूं।"

"शर्म करो। शर्म करो। हम पब्लिक प्लेस में बैठे हैं।"

"तुम कहती हो तो कर लेता हूं।" इंद्रजीत बदले स्वर में बोला—"क्या पीओगी?"

"फिलहाल कुछ पीने का मूड नहीं है।"

"गंगा किनारे बैठकर ऐसी बात मत कहो। बीयर तो पीनी ही पड़ेगी।"

"पी लूंगी। एक शर्त पर।"

"हुक्म करो।"

"बिल मैं पे करूंगी।"

इंद्रजीत हिचकिचाया।

"तुम फिर किसी दिन बिल पे कर देना।"

"ठीक है। मंजूर है।"

रवीना ने चुटकी बजाकर एक वेटर को पास बुलाया और दो बीयर सर्व करने का हुक्म दनदनाया। बीयर मेज पर आने के बाद वो इंद्रजीत से सम्बोधित हुई—"मेरा बैग लाए हो?"

"हां।" इंद्रजीत बोला। उसने साईड में पड़ी कुर्सी पर पड़ा रवीना का बैग उठाया और मेज पर रख दिया।

"तुमने मेरे लिए जो तकलीफ उठाई, उसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।"

"गैरों जैसी बातें मत करो।" इंद्रजीत बनावटी नाराजगी से

बोला—"शुक्रिया शब्द गैरों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अपनों के लिए नहीं।"

"ओके, डियर। मैं अपना शुक्रिया वापिस लेती हूं।"

"लेकिन" एकाएक इंद्रजीत अपना निचला होंठ काटकर कुटिल स्वर में बोला—"इस काम के ऐवज में मैं अपना इनाम जरूर लूंगा।"

"विद ग्रेट प्लेजर। क्या चाहिए इनाम में?"

"मांसाहारी लोग तो मुर्गी चबाना ही पसंद करते हैं।"

"सही में परले दर्जे के हरामी हो।"

"परले दर्जे का नहीं—नंबर वन का हरामी हूं—जिसे तुम लक्की बास्टर्ड के नाम से नवाज सकती हो।"

"ओके। तुम्हें मुर्गी चबाने को मिल जायेगी। कुछ और?"

"बस बहुत है।"

रवीना ने बैग उठाया और लापरवाही से एक कुर्सी पर रख दिया। फिर वह बड़े इत्मीनान से बीयर चुसकने लगी।

"अपना बैग तो चैक कर लो।" बीयर के कई घूंट भरने के बाद इंद्रजीत बोला।

"क्या जरूरत है?"

"फिर भी देख लो। इसमें से कोई चीज गायब तो नहीं है।"

"सौ जूते मार लो। मगर ऐसी बात मत करो। मुझे तुम पर अपने से भी ज्यादा यकीन है।"

"वो तो ठीक है, जानां, फिर भी...।"

"मैं बैग चैक नहीं करूंगी।"

"अच्छा मत करो, लेकिन लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"मैंने तुम्हारा बैग खोलने की गुस्ताखी की थी।"

"क्या हुआ। हम दोनों एक-दूसरे के लिए गैर हैं? तुम्हें मेरा सामान देखने का पूरा हक है। यू नो, हम दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं।"

इंद्रजीत का दिल बाग बाग हो गया।

"करते हैं न हम दोनों एक-दूसरे से प्यार?"

"बहुत ज्यादा।"

"फिर?"

"रवीना, असल में बात ये है कि तुम्हारे बैग में रखी एक चीज मुझे कुछ दिनों के लिए चाहिए। मैं वायदा करता हूं कि ये चीज कुछ दिनों बाद मैं तुम्हें खैर-सलामत लौटा दूंगा।"

"मेरे बैग में ऐसा क्या है—जो तुम्हारे काम का है?" रवीना के माथे पर बल पड़े।

Scanned by CamScanner

"इसमें माचिसों के कुछ खोल हैं...जो मेरे लिए बहुत काम के हैं।"

"माचिसों के खोल और मेरे बैग में!" रवीना के चेहरे पर हैरत के भाव आए—"मेरे बैग में तो मेरा कम्पैक्ट और रूमाल वगैरह हैं?"

"नहीं। इसमें माचिसों के कुछ खोल भी हैं।"

"मैं देखती हूं।"

उसने बैग उठाया और खोलकर देखा।

कुछ पलों बाद वो माचिसों के खोल हाथ में लेती हुई बोली—"कहीं तुम इन खोलों की तो बात तो नहीं कर रहे?"

"मैं इन्हीं खोलों की बात कर रहा हूं।"

"मेरे बैग में ये कहां से आ गए?" वह उलझन भरे स्वर में बोली—"मैंने तो कभी इन्हें अपने बैग में नहीं रखा।"

"हो सकता है—गलती से किसी और ने रख दिया हो।"

"कहां?"

"नाईट क्लब में। कल रात तुम वहां गयी थीं?"

"हां, गयी थी।"

"अकेली?"

"नहीं। मेरे साथ टीना, जार्ज और मेरी एक दोस्त थी।"

"वो ही दोस्त जिसकी शादी होने वाली है।"

"हां।"

"नाम क्या है उसका?"

"डेलना।"

"करती क्या है?"

"डॉक्टरी कर रही है।"

"कहीं उसी ने तो मजाक में नहीं रखे?"

"वो क्यों रखने लगी?"

"मैंने कहा कि मजाक में न रखे हों।"

"वो ऐसे बेतुके मजाक करने वालों में से नहीं है।"

"जार्ज के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"टीना के सामने वो मुझसे नजरें नहीं मिलाता—फिर मजाक करना तो बहुत दूर की बात है।"

"फिर ये हरकत उसकी नहीं हो सकती।"

"किसी न किसी की तो है। याद करो। तुम्हारे पास कोई और शख्स आया हो।"

वो दिमाग पर जोर डालने का उपक्रम करने लगी।

इंद्रजीत ने बीयर खत्म की।

"याद आया!" उसके मुंह से निकला।

"विक्टर नाम का एक नौजवान।" कुछ पलों बाद वो बोली—"टीना के पास आकर बैठा था। वो नशे में था। हो सकता है नशे में उसने मेरे बैग को टीना का बैग समझ लिया हो।"

इंद्रजीत सतर्क हुए बिना न रह सका।

"ये काम उसी का है।" वह पुरजोर लहजे में बोला—"तुम उसे जानती हो?"

"नहीं। उसे टीना जानती है। वो टीना के दोस्तों में एक है।"

"पाया कहां जाता है?"

"नहीं मालूम।"

"पता कर सकती हो?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"टीना से मैं ज्यादा बातचीत नहीं करती।"

"फिर कल उसके साथ क्लब क्यों गयी थीं?"

"डैडी के कहने पर।"

"ओह!"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा—माचिस के खोलों में तुम्हारी क्या दिलचस्पी है?"

"ऐसे ही खोल मैंने अपने दोस्त के पास पाए थे। मैंने उन्हें छुपाकर रखा भी था, लेकिन बाद में किसी ने उनकी जगह दूसरे खोल रख दिए थे।"

"दूसरे खोल?"

"सीरियल नम्बर वाले। जो कि तुम्हारे पास हैं।"

रवीना ने खोलों को उलट-पुलट कर देखा।

"हां, इस पर नंबर तो डले हैं।" वह बोली—"लेकिन तुम इन खोलों का करोगे क्या?"

"मैं इसे ए०सी०पी० गोविंद गावड़े के हुजूर में पेश करना चाहता हूं। ऐसे खोलों का दीपक के पास पाया जाना बहुत बड़े क्लू की ओर इशारा करता है।"

"त...तुम पुलिस के पास जाओगे?"

"हां। जाना ही पड़ेगा। तभी वो इन खोलों का रहस्य सामने लाने के लिए हाथ-पैर मारेगा।"

"गोविन्द गावड़े तुमसे ये जरूर पूछेगा कि ये खोल तुमने कहां से हासिल किए?"

"जरूर पूछेगा।"

Scanned by CamScanner

"तुम मेरा नाम लोगे तो मेरा बाप मुझे जान से मार देगा। जानते हो वो मुझे किसी स्कैंडल का शिकार होते नहीं देख सकता।"

इंद्रजीत संजीदगी से सहमति में सिर हिलाने लगा।

"मेरा नाम लिए बिना" रवीना बोली—"तुम इसे ए०सी०पी० को दिखाने की कोई और सूरत नहीं निकाल सकते?"

"ठीक है। मैं कुछ सोचता हूं। तुम खोल मेरे हवाले करो।"

रवीना ने बिना किसी हिचक के सारे खोल इंद्रजीत के हवाले कर दिए।

"इन खोलों की बाबत" इंद्रजीत खोलों को जेब में डालते हुए बोला—"पहले मैं जार्ज से बात करता हूं। उसके बाद ही कुछ सोचूंगा। राईट?"

रवीना का सिर सहमति में हिला।

"प्लीज डोंट इन्वाल्व मी।" फिर वह दबे स्वर में बोली—"अखबारों में ये बात छप गयी तो...तो...तुम जानते हो क्या होगा?"

"डोंट वरी।" इंद्रजीत ने उसका हाथ थपथपाया—"मैं तुम पर कोई आंच नहीं आने दूंगा। फिर भी तुम यह जानने की कोशिश करना कि ये हरकत हकीकत में विक्टर की थी या किसी और की?"

"मैं कोशिश करूंगी।" उसने अपनी घड़ी पर निगाह डाली—"अब मैं चलूं?"

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

उसने वेटर को बुलाकर बिल अदा किया और फिर बोली—"तुम अब जार्ज के हट हाऊस जाओगे?"

"हां।"

"मैं उसके हाऊस की लोकेशन बता देती हूं। तुम्हें परेशानी नहीं होगी।"

"ठीक है, बता दो।"

इंद्रजीत को जार्ज के हट हाऊस की लोकेशन अच्छी तरह से समझाने के बाद, उसके गाल का चुम्बन लेकर रवीना वहां से रुखसत हो गयी।

पीछे इंद्रजीत अपने आपको कोसता रहा कि उसने खामखाह रवीना पर शक किया।

मपूसा में एक शांत जगह पर बनी जार्ज सैबेस्टियन की 'हट हाऊस' को तलाश करने में इंद्रजीत को खासी दिक्कत का सामना करना पड़ा।

'हट हाऊस' शहर से अलग-थलग बना था—[illegible] के बारे में वहां के लोग बाग कम ही जानते थे।

'हट हाऊस' एक छोटी सी पहाड़ी पर बना लकड़ी का खूबसूरत सा घर था। जिस पर खपरैल की छत डली हुई थी।

इंद्रजीत ने अपनी मारूति उसके सामने खड़ी की ही थी कि सहसा उसकी निगाह हट हाऊस के पार्किंग एरिए में खड़ी एक हौंडा अकार्ड कार पर पड़ी।

कार शानदार थी।

कार को देखकर इंद्रजीत इस नतीजे पर नहयीं पहुंच पाया कि वो जार्ज की मिल्कियत थी या उससे मिलने कोई शख्स वहां आया है।

उसने अपनी कार सड़क किनारे पार्क कीं और 'हट हाऊस' का छोटा-सा लकड़ी का दरवाजा ठेलकर भीतर दाखिल हो गया।

लॉन से गुजरता हुआ वह हट हाऊस के मुख्य द्वार के पास पहुंचा।

अभी वह घंटी पर अंगुली रखने जा ही रहा था कि उसे भीतर से एक औरत की आवाज सुनाई दी। जो किसी से कह रही थी—"अब बस भी करो, जार्ज। तुम बहुत पी चुके हो।"

"मेरी जान।" नौजवान, जो शायद जार्ज ही था, नशीले लहजे में बोला—"अभी तो मेरी दाढ़ को तड़का लगा है। अभी तो मैंने पीना शुरू किया है।"

"फॉर गॉड सेक। पीना बंद करो। मैं तुमसे बात करना चाहती हूं।"

"तो करो। मना किसने किसने किया है।"

"तुम पीना तो बंद करो।"

"पीना बंद नहीं हो सकता। तुम्हें प्रॉब्लम हो रही है तो तुम भी दो घूंट लगा लो।"

"देख रही हूं तुम एकाएक अक्खड़ होते जा रहे हो। तुम्हारा बिहेवियर एकदम से मेरे प्रति उपेक्षित-सा होता जा रहा है।"

"जान तुम्हें गलतफहमी हो रही है। मैं पहले जैसा ही हूं। मेरे बिहेवियर में कोई चेंज नहीं आया है। जबकि मुझे तुम्हारा बिहेवियर बदला-बदला लग रहा है। पहले तो तुम कभी राशन को लेकर मुझ पर शराब पानी लेकर नहीं चढ़ दौड़ी थीं। आज तो तुम मेरे पीछे लट्ठ लेकर पड़ी हुई हो। अब बोलो। बदला कौन है? मैं या तुम?"

"तुम बदले हो।"

"गलत! तुम बदली हो।"

Scanned by CamScanner

"मैं प्रेस करने के मूड में नहीं हूं।"

"मैं भी बहस करने के मूड में नहीं हूं।"

"तो पीना बंद करो और मुझसे बात करो।"

"बात हो तो रही है।"

"तुम नशे में हो।"

"नशे में मैं और भी अच्छी-अच्छी बातें करता हूं।"

"यानी कि तुम पीना बंद नहीं करोगे?"

"यस माई डियर। मैं पीना बंद नहीं करूंगा। बल्कि मैं तुम्हें यही राय दूंगा कि तुम भी दो घूंट लगा लो।"

"नहीं। मेरा पीने का मूड नहीं है।"

"पहले तो तुमने कभी ऐसी बात नहीं की।"

"पहले की बात और थी।"

"यानी कि कबूल कर रही हो कि तुम बदल चुकी हो।"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"बहस करना छोड़ो और किचन में रखा चिकन सूप लेकर जाओ। ये काम तो कर सकती हो?"

"लाती हूं।"

फिर इंद्रजीत को किसी शख्स के कुर्सी से उठकर चलने की आवाज सुनाई दी।

वो भीतर का नजारा करना चाहता था।

भीतर का नजारा देखने के लिए उसने इधर-उधर निगाह दौड़ाई तो उसकी निगाह एक खुले दरवाजे पर पड़ी।

दबे पांव चलकर वो दरवाजे के पास पहुंचा।

उसने उसकी झिर्री में से भीतर झांका तो उसे एक नौजवान लाऊंजिंग चेयर पर पसरा दिखाई दिया। उसके सामने कांच की मेज पर शराब की बोतल, जाम का भरा गिलास और सोडा वाटर की बोतल पड़ी हुई थी। उस पल वो एक सिग्रेट सुलगा रहा था।

तभी इंद्रजीत की निगाह उसके सामने आकर हाथ में थमी एक प्लेट कांच की मेज पर रखती औरत पर पड़ी। वो कोई तीस साल की फिल्मी तारीकाओं जैसी फिगर वाली बेहद खूबसूरत औरत थी। उस घड़ी वो जीन की टाईट पैंट और छोटी टॉप पहनी हुई थी, जिसमें उसकी फिगर गजब ढा रही थी।

इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि वो औरत माईकल परेरा की नौजवान बीवी टीना घई है।

नौजवान के हुलिए को देखते ही इंद्रजीत को यकीन हो गया था कि वो ही जार्ज सैबिस्टियन है।

इंद्रजीत के देखते-देखते जार्ज ने थोड़ा-सा सूप पिया और फिर अपने लिए एक जाम तैयार करने लगा।

"कल रात को तुम कहां थे?" तभी टीना उसके चेहरे की ओर देखते हुए बोली।

"मैं यहीं था।" जार्ज लापरवाही से बोला।

"झूठ मत बोलो। तुम यहां नहीं थे। जानते हो मैंने कल क्लब में तुम्हारा पूरे दो घंटे तक इंतजार किया था।"

"ये बात तुम पहले भी कई बार कह चुकी हो।" जार्ज मुंह बिगाड़कर बोला—"मैं तुम्हें सॉरी बोल चुका हूं। क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारे सामने नाक रगड़कर माफी मांगू।"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"लीव दिस टॉपिक। कोई और बात करो।"

"कल रात कहां थे?"

"कितनी बार पूछोगी। मैं बता तो चुका हूं कि कल मैं यहीं था और टी०वी० देख रहा था।"

"जानता हो—मैंने क्लब में तुम्हारा पूरे दो घंटे तक इंतजार किया था।"

"जानता हूं। तुम पहले भी पांच बार बोल चुकी हो। और मैं हर बार कल न पहुंचने की माफी मांग चुका हूं।"

"जबकि हमारी कल की मुलाकात फिक्स थी?"

"कहा न सॉरी। इस मुलाकात की बाबत मैं भूल गया था।"

"कल मैंने तुम्हें टेलीफोन करके याद भी दिलाया था, फिर भी तुम भूल गए?"

"हां। अगेन सॉरी।" जार्ज ने एक दर्शनी जम्हाई ली—"कोई और बात करें?"

"कल रात तुम टी०वी० नहीं देख रहे थे। मैंने फोन किया था। फोन किसी ने नहीं उठाया था। घंटी निरन्तर बज रही थी।"

"मैं कई बार फोन जानबूझकर नहीं उठाता। खासकर तब जब मैं टी०वी० पर अपना पसंदीदा प्रोग्राम देख रहा होता हूं। मैंने घंटी की आवाज सुनी थी, लेकिन फोन नहीं उठाया था।"

"मैं तुम्हें बोर लगने लगी हूं?"

"नहीं तो।"

"फिर कल की मुलाकात की बाबत भूल कैसे गए?"

"भूल गया तो भूल गया। अब मैं क्या कहूं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। कल तुम यहां नहीं थे।"

"कैसे कह सकती हो?"

Scanned by CamScanner

"मैं कल रात को यहां आई थी। तुम्हारा हाऊस अंधेरे में डूबा हुआ था और तुम्हारी कार भी गायब थी। जार्ज, मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम झूठ क्यों बोल रहे हो?"

एकाएक जार्ज का चेहरा कठोर हो गया।

"तो तुम कल यहां आई थीं।" वह कठोर स्वर में बोला—"कल तुम मेरी जासूसी करने आई थीं। पहले भी तुमने एक प्राइवेट डिटेक्टिव को मेरे पीछे लगाया था। जब उसका कत्ल हो गया तो तुम खुद मेरी जासूसी करने लगीं। तुम इतनी गिरी हुई हरकत करोगी, मैं सोच भी नहीं सकता था।"

"झूठ पकड़े जाने पर तुम्हारा बिलबिलाना लाजिमी है।"

"मैं कोई झूठ नहीं बोल रहा।" जार्ज का स्वर यकीनन कमजोर था।

"कौन थी वो?"

"कौन?"

"जिसके साथ तुम थे?"

"मेरे ख्याल से अब हमें आराम करना चाहिए। नहीं?"

"वो रवीना थी न?"

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है।"

"वो रवीना ही थी। वो तुमसे अब भी प्यार करती है। उसने तुम्हें मुझसे छीनने की जिद पकड़ी हुई है।"

"देखो टीना, खामखाह सीन क्रिएट मत करो। मेरी कहीं फिक्स अप्वायेंटमेंट है। मेरे ख्याल से अब तुम्हें चले जाना चाहिए।"

"मैं उस औरत के बारे में जाने बिना यहां से नहीं जाऊंगी।"

"मैं उस औरत के बारे में बता दूं तो तुम चली जाओगी?"

"हां।"

"तो सुनो। वो एक निम्फोमैनियॉक थी। जो कि मुझसे सहवास चाहती थी। कल मैं उसी के साथ था।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।" टीना गुर्राई—"कल तुम रवीना के साथ थे।"

"मुझे लगता है तुम्हारा यहां से जाने का इरादा नहीं है।" जार्ज ने अपनी घड़ी पर निगाह डाली—"मुझे अपना वक्त ज्यादा जाया न करते हुए यहां से चलना चाहिए। तुम यहां आराम से बैठो। मैं थोड़ी देर में आता हूं।"

"तुम कहीं नहीं जाओगे।" टीना बोली—"मेरे सवालों का जवाब दिए बिना तुम यहां से हिलोगे भी नहीं।"

"जबरदस्ती है।"

"हां।"

"तुमने मुझे समझ क्या रखा है?"

"पहले मैं तुम्हें बहुत कुछ समझती थी, लेकिन अब कुछ नहीं समझती।"

"ओह! तो ये तेवर हैं।"

"हां।"

"इसका मतलब तुम मुझसे सारे सम्बंध तोड़ लेना चाहती हो।"

"तुम सच नहीं बोलोगे तो ऐसा ही होगा। सोच लो, मुझसे अलग होकर तुम सड़क पर आ जाओगे। तुम्हारी हालत दर-दर के भिखारी जैसी हो जाएगी।"

"नहीं होगी। तुम्हारे अलावा मेरी और भी कई सहेलियां हैं। वो मुझे सड़क पर नहीं आने देंगी।"

"ये तुम्हारा आखिरी फैसला है?"

"फैसला तो तुम कर रही हो। मैं तो उस पर मोहर लगा रहा हूं।"

"जार्ज, तुम सच क्यों नहीं बोलते। क्यों तुम मुझे ऐसा डिसीजन लेने को मजबूर कर रहे हो, जो कि हम दोनों के लिए दुखदायी हो।"

"रिमैम्बर! तुम्हारी जैसी औरतें मेरे आगे-पीछे घूमती हैं। तुम्हारे किसी डिसीजन से मैं सड़क पर नहीं आने वाला—ये बात मैं दावे से कह सकता हूं। यकीनन आए तो आजमा कर देख लो।"

"तुम पछताओगे।"

"नहीं पछताऊंगा।"

"देख लेना—तुम मेरे पास ही आओगे।"

"नहीं आऊंगा।"

"ये तुम्हारा आखिरी फैसला है?"

"फैसला तुम्हारा है—मैं इस पर मोहर लगा रहा हूं।"

"तो ठीक है। मैं भी देखती हूं कि मेरे बिना तुम कैसे ऐश लूटते हो। ऐश करने के लिए तुमने मुझसे बतौर उधार जो पांच लाख रुपए लिए थे, वो इसी वक्त मेरे हवाले करो। मैं तुमसे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती।"

जार्ज धूर्तों की तरह हंसा।

"जानेमन।" फिर वह धूर्तता से बोला—"तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुमने मुझे पांच लाख रुपए उधार के तौर पर दिए थे।"

टीना के तन-बदन में आग लग गयी। उसने कड़वी बात कहने के लिए मुंह खोलना चाहा, फिर न जाने क्या सोचकर चुप हो गयी।

"कोई सबूत है?" जार्ज जले पर नमक छिड़कने वाले अंदाज

Scanned by CamScanner

से बोला।

फिर वह अपनी जगह से उठा और कमरे में चहल-कदमी करते हुए बोला—"चलो माना कि तुम्हारे पास कोई सबूत भी है—लेकिन तुमने ये कैसे सोच लिया कि तुम मुझसे पांच लाख हासिल कर लोगी। जानती हो तुम्हारा हसबैंड बिग गन (बड़ा आदमी) है। उसकी शहर में खासी पूछ है। वो इस शहर पर राज करता है। तुम्हारी बेजा कोशिशों से जब उसे पता चलेगा कि तुमने ऐश काटने के लिए अपने प्रेमी को पांच लाख रुपए उधार दिए थे तो वो तुम्हें छूटते ही डायवोर्स दे देगा। माईंड इट। डायवोर्स मिलते ही तुम्हारी हालत कटी पतंग जैसी हो जाओगी। हर कोई तुम्हें लूटने की कोशिश करेगा। कोई बड़ी बात नहीं...डायवोर्स मिलते ही तुम दर-दर की भिखारिन बन जाओ। समझदारी से काम लो। तुमने मेरे लिए जो किया, उसके ऐवज में मैंने तुम्हारे लिए भी बहुत कुछ किया है। मैंने तुम्हें वो चीज दी है जो तुम्हारा थका हुआ खाविंद न दे सका।"

"जार्ज।" टीना नफरत भरे स्वर में बोली—"तुम सच में कमीने हो। आई हेट यू।"

जार्ज ने एक अट्टहास लगाया फिर अपने लहजे को बेहद कोमल बनाते हुए बोला—"टीना, अब वक्त है कि तुम समझदार बनके दिखाओ। मुझमें कोई सुर्खाब के पर नहीं लगे हैं। मैं एक इंसान हूं। आम इंसान। तुम्हें मेरे जैसे बहुतेरे लड़के मिल जाएंगे जो तुम्हारी शारीरिक जरूरतों को पूरा करने में पीछे नहीं हटेंगे। तुम नौजवान हो। सैक्सी हो। तुम्हें मेरे जैसे हजारों लड़के मिलेंगे। तुम मुझसे लिखवा लो—बढ़िया-सा कोई लड़का मिलते ही तुम मुझे तीन दिनों में भूल जाओगी।"

"इसका मतलब तुमने मुझसे अलग होने का पक्का फैसला कर लिया है।"

"कर तो लिया है।"

"जान सकती हूं, क्यों?"

"तुम्हारी इस क्यों का जवाब मेरे पास नहीं है।"

"तुम्हें रवीना मिल गयी है न?"

"मैं तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं देना चाहता। बेहतर होगा कि तुम..."

"मैं यहां से जरूर जाऊंगी। लेकिन मैं यहां से ऐसे नहीं जाऊंगी।" टीना सर्द स्वर में बोली।

"मतलब?"

"मैं तुमसे अपना सारा हिसाब चुकता करके जाऊंगी।"

"देखो। अगर तुम पांच लाख रुपए की फिराक में हो तो भूल जाओ। मेरे पास एक फूटी कौड़ी नहीं है। तुम्हारा पैसा मैं कब का जुंए-शराब में उड़ा चुका हूं।"

"मेरा इशारा अपनी रकम की तरफ नहीं था।"

"फिर?"

"तुमने वो कहावत सुनी है—बिल्ली खाएगी नहीं तो लुढ़का देगी।"

"सुनी है। तो?"

"तो ये।"

टीना ने अपने बैग से एक रिवॉल्वर निकाला और जार्ज पर तान दिया।

रिवॉल्वर पर नजर पड़ते ही जार्ज के छक्के छूट गए।

"द...देखो टीना...।" वह बुरी तरह से हकलाकर बोला—"तुम ऐसा नहीं कर सकतीं। तुम मुझसे प्यार करती हो। सच्चा प्यार। तुम मुझे शूट नहीं कर सकतीं। तुम्हारी दुनिया मुझसे शुरू होकर मुझी पर खत्म होती है।"

"इसी गलतफहमी में मैं अब तक जी रही थी कि मेरी दुनिया तुम से शुरू होकर तुम्हीं पर खत्म होती है। लेकिन आज मेरा भ्रम टूट गया। जार्ज, तुम प्यार करने लायक नहीं हो। तुम वो जहरीले सांप हो—जिसे मारने में ही सबका भला है। मेरा भला है। तुम्हें मारने का फैसला मैंने सोच समझ कर लिया है।"

"म...मुझे मारकर तुम नहीं बच सकतीं।" जार्ज अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरता हुआ बोला—"पुलिस तुम्हें गिरफ्तार कर लेगी।"

"मैंने सिर पर मौत का कफन बांधा है, जार्ज।" टीना भर्राए स्वर में बोली—"अब मुझे किसी का डर नहीं है। पुलिस का भी नहीं। जानते हो क्यों?"

"क...क्यों?"

"क्योंकि तुम्हें शूट करने के बाद मैं खुद को भी शूट कर लूंगी।"

"त...तुम सच में पागल हो गयी हो।"

"हां, मैं पागल हो गयी हूं। पूरी तरह से पागल हो गयी हूं। लेकिन जार्ज मैं एकदम से पागल नहीं हुई हूं। तुम्हारी बेवफाई—मतलब परस्ती ने मुझे पागल होने पर मजबूर किया है। अब तुम ठाट से अपनी नई गर्ल फ्रेंड के साथ नरक में ऐश लूटना।"

"ट...टीना, मैं कहता हूं—रिवॉल्वर नीचे कर लो। मैं मजाक

Scanned by CamScanner

कर रहा था। मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूं। तुमने मुझसे सच्चा प्यार किया है—तो मैंने भी तुमसे सच्चा प्यार किया है। मेरे मजाक को तुम इतना सीरियस ले लोगी—ये तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। आई स्वियर, मैं मजाक कर रहा था। आई वॉज जस्ट जॉकिंग। बाई यू। आई वाज जाकिंग।"

"पागल किसी और को बनाना।" टीना कहर भरे स्वर में बोली—"तू इसी सजा के लायक है। अपनी मौत सामने देखकर गिरगिट की तरह रंग मत बदल। तू वो बहशी दरिंदा है—जो गोद में बैठकर आंख में उंगुली करता है। गले लगाकर पीठ में छुरा घोंपता है। तेरी इन मीठी बातों में मैं अब नहीं आने वाली। मैंने सिर पर मौत का कफन बांध लिया है। अब गिड़गिड़ाने या माफी मांगने से कुछ नहीं होने वाला। अब तुझे कोई नहीं बचा सकता। तेरा भगवान भी नहीं।"

"ट...टीना, तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।" जार्ज के माथे पर पसीना उभर आया—चेहरे पर मौत नाचने लगी—वह धीरे-धीरे पीछे हटते हुए बोला—"मुझे मारकर तुम्हें कुछ नहीं मिलने वाला। अलबत्ता तुम्हारी बेवकूफी की वजह से तुम्हारे खाबिंद की अच्छी खासी रेपुटेशन खाक में मिल जाएगी। लोगों को जब पता चलेगा कि उसकी जवान बीवी ने अपने आशिक को गोली मारकर खुद को गोली मार ली है तो सब माईकल पर हंसेंगे कि उसकी बेशुमार दौलत उसकी बीवी को काबू में नहीं रख पाई। फॉर गॉड सेक। मेरा कहा मानो और रिवॉल्वर फेंक दो। मैं कसम खाता हूं। आगे से मैं ऐसी कोई भी हरकत नहीं करूंगा जिससे तुम्हें तकलीफ होगी। म...मैं तुम्हें सिर आंखों पर बिठाकर रखूंगा।"

"नहीं, जार्ज। अब मैं अपने कदम पीछे नहीं हटा सकती। मरने के लिए तैयार हो जाओ।"

जार्ज के हाथ स्वतः ऊपर उठ गए और उसकी हालत बद से बदतर हो गयी।

टीना ने रिवॉल्वर का कुत्ता खींचा और ट्रिगर पर उंगुली का दबाव बढ़ाने लगी।

इससे पहले वो ट्रिगर पूरी तरह से दबा पाती, इंद्रजीत दबे पांव चलकर उसके पीछे पहुंच गया।

इंद्रजीत पर नजर पड़ते ही जार्ज की आंखों में जीवन ज्योति जगमगाने लगी।

टीना की पीठ इंद्रजीत की तरफ थी इसलिए वो मात खा गयी।

गोली चलने से पहले ही इंद्रजीत ने उसका रिवॉल्वर वाला हाथ

तेजी से पकड़कर नीचे कर दिया।

टीना कुछ न समझ पाई।

फौरन एक गोली चली और कालीन में धंस गयी।

इंद्रजीत ने फुर्ती से उसके हाथ से रिवॉल्वर छीनी और कठोर स्वर में बोला—"मिसेज परेरा, आपे से बाहर होना आपको शोभा नहीं देता। जानती हैं आप क्या करने जा रही थीं?"

टीना ने हकबकाई नजरों से इंद्रजीत को देखा।

बाजी पलटते देख के वह इंद्रजीत से यह नहीं पूछ पाई कि वो कौन है?

उसने अपना हैंड बैग उठाया, और लगभग भागती हुई वहां से बाहर चली गयी।

पीछे जार्ज ने एक लम्बी सांस छोड़ी और कुर्सी पर बैठ गया।

इंद्रजीत ने रिवॉल्वर अपनी जेब के हवाले की और टीना वाली कुर्सी पर बैठ गया।

तभी उसे एक कार के वहां से जाने की आवाज सुनाई दी।

कुछ पलों तक खामोशी रही।

"वो तुम्हें सिर्फ धमका रही थी।" अंत में खामोशी इंद्रजीत ने भंग की—"वो तुम्हें नहीं मारती।"

"वो मार सकती थी।" जार्ज क्षीण स्वर में बोला—"वो पागल हो गयी है। पागल लोग कुछ भी कर सकते हैं।"

"फिर तुमने उसे पागल बनाया ही क्यों?"

"मैंने उसे पागल नहीं बनाया।" जार्ज विरोध भरे स्वर में बोला—"उसकी हरकतों ने उसे पागल बनाया है।"

"कौन-सी हरकतों ने?"

एकाएक जार्ज चौंका—उसने इंद्रजीत को सवालिया निगाहों से देखा—फिर आंखें सिकोड़कर बोला—"तुम हो कौन और यहां कैसे आए?"

"आया तो मैं अपने पैरों पर चलकर हूं।" इंद्रजीत लापरवाही से बोला—"रही बात मेरे परिचय की तो मैं एक प्राइवेट इनवेस्टीगेटर हूं। देसी जुबान में कहा जाए तो निजी जासूस, जो निजी मामलों को निजी रखकर ही अपने क्लायंट्स के कहने पर जासूसी का काम करता है।"

"समझा! तुम टीना के कहने पर मेरी जासूसी कर रहे थे?"

"मैं भला ऐसा क्यों करूंगा?"

"टीना ने ही कहा होगा।"

"नहीं। टीना ने मुझे ऐसा करने को नहीं कहा।"

Scanned by CamScanner

"फिर तुम यहां क्योंकर आए?"

"मैं अपने जासूस दोस्त के कत्ल के सिलसिले में तुमसे पूछताछ करने के इरादे से यहां आया था। तुमने शायद मेरे दोस्त का नाम सुना हो। उसका नाम दीपक कामत था।"

"ये नौजवान वो तो नहीं है—जो एक दिन पहले बॉथिंग स्टेशन पर मरा पाया गया था?"

"हां।"

"तुम्हें यकीन है—उसके कत्ल में गोवा के किसी बंदे का हाथ है?"

"सौ फीसदी।"

"फिर तो तुम्हें किसी पर शक भी होगा?"

"हां?"

"किस पर?"

"एक दो लोग हैं मेरी निगाहों में।"

"कौन?"

"बताऊंगा। पहले तुम ये बताओ कि टीना जिस जासूस का जिक्र कर रही थी—वो मेरा दोस्त ही था न?"

जार्ज के चेहरे पर तत्काल हिचकिचाहट के भाव प्रकट हुए।

"मैं पुलिस वाला नहीं हूं।" इंद्रजीत आत्मीयता से बोला—"मैं एक प्राइवेट जासूस हूं। तुम जो कुछ भी बताओगे—उसे मैं अपने तक ही सीमित रखूंगा।"

"वायदा कर रहे हो?"

"हां।"

"वो तुम्हारा दोस्त ही था।"

"टीना ने उसे तुम्हारी जासूसी करने के लिए रिटेन किया था?"

"हां।"

"क्यों?"

"उसे शक था कि मैं रवीना के पीछे भाग रहा हूं।"

"वैसे भाग रहे थे?"

"नो। नैवर।"

"किसी न किसी की तो तुमसे आशनाई थी?"

उसने बेचैनी से पहलू बदला।

"मैं सच बोल रहा हूं न?"

"ये राज की बात है—जिसे मैं जगजाहिर नहीं करना चाहता।"

"राज की बात की तह तक मैं पहुंच सकता हूं—बल्कि ये कहो कि पहुंच भी चुका हूं तो कोई बड़ी बात नहीं है।"

"तुम उसे जानते हो?"

"अच्छी तरह से।"

"कौन है वो?"

"है नहीं। थी।"

"थी?"

"हां, आजकल वो इस दुनिया में नहीं है।"

"किसका जिक्र कर रहे हो?"

"हैलन का—और किसका!"

जार्ज यूं उछला जैसे बिच्छु ने काट खाया हो।

"ठीक कह रहा हूं न मैं?" इंद्रजीत उसके चेहरे को गौर से देखते हुए बोला—"तुम्हारी आशनाई हैलन से थी न?"

जार्ज ख़ामोश रहा।

"तुम्हारी खामोशी जाहिर कर रही है कि मैं ठीक ट्रैक पर चल रहा हूं।"

"शायद।"

"शायद नहीं—यकीनन। कबूल करो। तुम्हारी हैलन से आशनाई थी।"

"ओके। वो हैलन ही थी। अब खुश?"

"हैलन के बारे में मैंने सुना था कि उसका किसी के साथ कोई अफेयर नहीं था। वो किसी गैर मर्द के साथ चलना तक पसंद नहीं करती थी। फिर उसकी तुम्हारे से आशनाई क्योंकर हो गयी?"

"लोग जो कहते हैं वो हमेशा ठीक नहीं होता। कभी गलत भी हो सकता है। लोगों की कही बात भला पत्थर की लकीर होती है। हम दोनों का अफेयर था। लेकिन इतना भयंकर नहीं था। वैसे मेरी पुरजोर कोशिशें रही थीं कि हमारा अफेयर भयंकर स्टेज तक पहुंचे। तुम्हारा दोस्त अचानक हमारे बीच में नहीं आता तो शायद मैं उसे शादी से पहले हासिल करने में कामयाब हो जाता। ऐन वक्त पर तुम्हारे दोस्त ने एंट्री मारकर सारे किए कराये पर पानी फेर दिया था।"

"हैलन को तुम कहां मिले थे?"

"स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स में। एक बार टीना वहां मुझे अपने साथ ले गयी थी। उसने छोटी-मोटी खरीदारी करनी थी। वहीं मेरी हैलन से पहली मुलाकात हुई थी। और पहली मुलाकात में मैं उसे पसंद आ गया था। जब कोई लड़की मुझे पसंद करती है, फिर मैं उसे निराश नहीं करता। मैं उसकी भावनाओं का पूरा ख्याल करता हूं।"

"तुमने कैसे जाना कि दीपक तुम दोनों को वॉच कर रहा था?"

"हैलन ने बताया था। एक रोज उसने मुझे अपने घर

Scanned by CamScanner

बुलाकर—दीपक की चोरी छुपे शक्ल दिखाकर बताया था कि वो कई दिनों से उसके घर पर निगाह रखे हुए है। तब मैंने हैलन को कुछ दिनों तक न मिलने की सलाह दी थी। मैंने उसे बताया था कि ये बंदा टीना ने ही हम दोनों की जासूसी के लिए रिटेन किया होगा।"

"फिर?"

"फिर हम दोनों ने मिलना जुलना बिल्कुल बंद कर दिया था। हम केवल फोन पर ही एक दूसरे के हालचाल पूछ लेते थे।"

"दीपक और हैलन का कत्ल किसने किया? इस बाबत कुछ जानते हो?"

"नहीं। मुझे खुद हैरानी हो रही है कि वो तुम्हारे दोस्त को बाथिंग स्टेशन क्यों लेकर गयी। वो इस किस्म की लड़की हरगिज नहीं थी।"

"इसका मतलब तुम्हें दोनों के कातिल के बारे में कोई आईडिया नहीं है।"

वो हिचकिचाया।

"मेरे ख्याल से है।" इंद्रजीत उसके चेहरे के भावों को गौर से देखते हुए बोला।

"चैल—इस बारे में मैंने सोचा था। मुझे लगता है कि कातिल तुम्हारे दोस्त का कत्ल नहीं करना चाहता था। वो हैलन को मारने का ख्वाहिशमंद था। तुम्हारा दोस्त उसे बचाने के चक्कर में मारा गया होगा। तभी हैलन आनन-फानन कपड़े केबिन में छोड़कर भाग खड़ी हुई थी।"

"इस घटना का जिक्र उसने पुलिस से क्यों नहीं किया?"

"समझदार हो। समझो।"

"तुम बताओ।"

"दिमाग पर जोर डालना नहीं चाहते?"

"दिमाग हो तो जोर भी डालूं! अपने पास दिमाग नहीं भेजा है—वो भी किसी काम का नहीं है।"

"ठीक है, मैं बताता हूं।" वह बोला—"हैलन एक शरीफ लड़की थी। वो पुलिस के आगे इस बात का जिक्र करती तो यह बात सबके सामने आ जाती। वह बदनामी से डरती थी। इसलिए उसने इस घटना का जिक्र पुलिस से नहीं किया।"

"लेकिन वो मेरे दोस्त के साथ बाथिंग स्टेशन क्यों गयी थी? ये सवाल अभी भी वहीं का वहीं है।"

"कोई जरूरी तो नहीं कि वो उसके साथ बाथिंग स्टेशन गयी हो।"

"मतलब?"

"हो सकता है वो उसके साथ बीच की तरफ गयी हो।"

"क्यों?"

"उससे गुजारिश करने कि वो उसका पीछा करना छोड़ दे। वो हम दोनों की जासूसी करना बंद कर दे।"

"चलो, माना। ये बात रही होगी। लेकिन मेरे दोस्त का कत्ल?"

"मैंने बताया न कि तुम्हारे दोस्त का कत्ल किसी और चक्कर में हुआ होगा। कातिल का मकसद हैलन को मारना था।"

"कातिल के पास हैलन को मारने का क्या मकसद हो सकता है?"

"जाहिर है ईर्ष्या, जलन, डाह, जेलेसी, हसद।"

"समझा। कहीं तुम ये तो नहीं कहना चाहते कि मेरे दोस्त और हैलन का कत्ल टीना ने किया था?"

"मैं ये नहीं कह रहा। मैं केवल अपनी राय जाहिर कर रहा हूं।"

"लेकिन तुम्हारा इशारा साफ-साफ टीना की ओर है।"

"नहीं है। वो ये काम किसी और से भी करवा सकती है।"

"किससे?"

"इस काम के लिए वो कोई बंदा भी हायर कर सकती थी। या टोनी को भी राजी कर सकती थी। आखिर टोनी उसके हसबैंड का हुक्का भरता था।"

"मुझे नहीं लगता कि उसने टोनी को इस काम के लिए राजी किया होगा।"

"फिर तो उसने डेफिनेटिली किसी बंदे को हायर किया होगा।"

"इस बाबत मैं और कुछ नहीं कहना चाहता। मैं केवल इतना जानता हूं कि वो अब पागल हो गयी है। मैं यहां सेफ नहीं हूं। मुझे यहां से जल्द-से-जल्द किनारा कर लेना चाहिए।"

"मतलब?"

"मैं ये शहर छोड़ने के मूड में हूं। टीना ने आज जो हरकत की है, वो दुबारा भी कर सकती है। इससे पहले वो ऐसी हरकत करे, मैं खुद को सेफ कर लेना चाहता हूं।"

"यानी कि चोरी छुपे फरार होना चाहते हो।"

"क्या मतलब?"

"क...कुछ नहीं।"

"अगर तुम समझ रहे हो कि तुम्हारे दोस्त का कत्ल मैंने किया है तो मुगालते में मत रहो। मैं उसका कातिल नहीं हूं। मेरे पास उसके कत्ल की कोई वजह नहीं है।

"एक वजह है, जो सकता हूं।"

Scanned by CamScanner

"क्या?"

"हैलन और दीपक तुम्हारा कोई राज जान गए होंगे--जो सामने आने पर तुम्हें बरबाद कर सकता था।"

जार्ज भौंचक्का-सा इंद्रजीत का मुंह देखता रहा।

"ठीक वजह बयान की न मैंने?" इंद्रजीत बोला।

"गलत। मेरा कोई राज नहीं था।" वह कमजोर स्वर में बोला--"तुम मुझ पर बेवजह शक कर रहे हो।"

"बुजुर्गों ने कहा है, कई बार बेवजह किया गया शक भी यकीन में तब्दील हो जाता है।"

"तुमने मुझ पर एहसान किया है। तुमने मेरी जान बचाई है--इसलिए मैं तुम्हें कोई कड़वी बात नहीं कह सकता। तुम्हारी जगह ये बात किसी ने और ने कही होती तो मैं उसके दांत तोड़ देता।"

"यानी कि मैंने तुम्हारी जान नहीं बचाई होती तो तुम मेरे दांत तोड़ देते?"

वो चुप रहा।

"जवाब दो, भई।"

"मेरा जवाब तुम सुन चुके हो।"

"यानी कि तोड़ देते?"

"हां।"

"कैसे?"

"मतलब?"

"तुम्हारे हाथ लड़कियों जैसे कोमल हैं। और लड़कियां दांत तोड़ने का काम नहीं कर सकतीं।"

उसका चेहरा कानों तक लाल हो गया।

"ऐनी वे।" इंद्रजीत उठते हुए बोला--"सहयोग के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।"

इंद्रजीत कमरे से बाहर निकल आया।

उसने ड्राईव वे पर कदम रखा तो लॉन की ओर से एक बिल्ली लकड़ी के गेट के पास आई और ठिठककर इंद्रजीत को देखने लगी।

इंद्रजीत ने उसे पुचकारा तो वह भागकर वहीं उगी झाड़ियों में गायब हो गयी।

तभी इंद्रजीत ने कनखियों से हट हाऊस की ओर देखा।

उसे जार्ज कमरे की खिड़की से झांकता दिखाई दिया। इंद्रजीत ने लापरवाही से गर्दन को झटका और सीटी बजाता अपनी कार की तरफ बढ़ गया।

कार स्टार्ट करके उसने उसका रुख पणजी की ओर कर दिया।

ड्राईविंग करते-करते उसका दिमाग कुछ सवालों के जवाब ढूंढने में व्यस्त हो गया।

जार्ज के अनुसार दीपक गलती से मारा गया था। यह बात काबिले यकीन थी। जार्ज पर रिवॉल्वर तानते वक्त उसने उसके चेहरे पर जो खतरनाक भाव देखे थे, उनकी रू में वो कुछ भी कर सकती थी। किराए के कातिल की मदद भी ले सकती थी।

अब इंद्रजीत को दो गुत्थियां सुलझानी थीं।

पहली, दीपक के कत्ल की और दूसरी, नाईट क्लब की माचिसों की।

एकाएक उसने टीना से मिलने का फैसला किया।

थोड़ी देर बाद वह माईकल परेरा के अजीमुश्शान महल के सामने विराजमान था।

कार सड़क किनारे खड़ी करके वह गेट पर पहुंचा तो वहां खड़े सिक्योरिटी गार्ड ने उसे कुछ इन निगाहों से देखा मानो कि इंद्रजीत वहां चंदा मांगने आया हो।

"मिसेज टीना से मिलना है।" इंद्रजीत बिना किसी भूमिका के बोला--"जरूरी काम है।"

"मैडम से अप्वायंटमेंट ली है?" गार्ड रूखे स्वर में बोला।

"नहीं।"

"बिना अप्वायंटमेंट के मैडम किसी से नहीं मिलतीं?"

"अपने दोस्तों से भी?"

"तुम मैडम के दोस्त हो?"

"नहीं, दुश्मन हूं।"

गार्ड सकपकाया।

"अबे अक्ल बेचकर बंदूक थामने वाले! मैं मैडम का दुश्मन होता तो यहां होता?"

गार्ड का सिर इंकार में हिला।

"तो मुंडी मत हिला और मैडम को खबर कर।"

"आपका नाम?"

"काला चोर।"

गार्ड एक बार फिर सकपकाया।

"मेरा नाम इंद्रजीत है।"

"आप करते क्या हैं?" गार्ड ने तनिक झिझककर पूछा।

"मैं काले को सफेद और सफेद को काला करता हूं।"

Scanned by CamScanner

"आप रंगरेज हैं।"

"मैं तुझे रंगरेज दिखाई दे रहा हूं।" इंद्रजीत आंखें निकालता बोला।

"अ...अभी तो आपने..."

"अबे बेवकूफ, मैं रिपोर्टर हूं। मैं गोवा टाईम्स के लिए काम करता हूं।"

"ओह!"

"कोई शक?"

"नहीं?"

"कोई शुबहा?"

"नहीं।"

"फिर मैडम को फटाफट इत्तला कर।"

वह तत्परता से गेट के पास बने एक केबिन में घुस गया।

थोड़ी देर बाद वो वापिस लौटा।

"मैडम का कहना है।" वह रुखाई से बोला—"इंद्रजीत नाम का उनका कोई दोस्त नहीं है।"

"तेरी मैडम से बात हुई थी?"

"नहीं। उनकी सेक्रटरी से।"

"वो पागल हो गयी है।"

"जी?"

"वो सनका गई है। मेरी बात करा उससे।"

"नहीं करा सकता।"

"क्या?"

"आपकी उनसे बात नहीं हो सकती।"

"मोहन प्यारे, तुझे अपनी नौकरी प्यारी है?"

"क्यों पूछ रहे हो?"

"पहले मेरे सवाल का वाजिब दे।"

"प्यारी है।"

"तो एक बार मैडम की सेक्रटरी को इतना बोल दे कि टीना मैडम से वो इंद्रजीत मिलना चाहता है, जिसने थोड़ी देर पहले उनके हाथों से एक मच्छर को मरने से बचाया था।"

"जी?"

"तेरे मुंह में 'जी' की कैसेट लगी हुई है।"

गार्ड हड़बड़ाकर संभला।

"मेरा मुंह मत देख।" इंद्रजीत जल्दी से बोला— 'और जो मैंने कहा है—जाकर अपनी मैडम को बोल।"

"वो नाराज हो गयी तो?"

"नहीं होगी। तू बोल के तो आ।"

गार्ड अनमने भाव से सिर हिलाकर गार्ड केबिन में घुस गया।

कुछ पलों बाद वो लौटा तो उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव थे।

"मैडम आपसे मिलने के लिए तैयार हैं।" वह गेट खोलते हुए बोला।

"मैंने क्या कहा था।" इंद्रजीत बोला—"तेरी मैडम मुझसे मिलने को जरूर तैयार होगी।"

"आपने मैडम के हाथों से एक मच्छर को मरने से बचाया—इसी बात से मैडम मिलने को तैयार हो गयीं। हमें तो बहुत हैरानी हो रही है।"

"प्यारे तेरी नौकरी बच गयी।"

इंद्रजीत ने उसके गाल को थपथपाया और लापरवाही से आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद वो मुख्य द्वार की घंटी बजा रहा था।

दरवाजा बटलर ने खोला।

इंद्रजीत को उसने अजीब-सी निगाहों से देखा।

"तुम फिर से आ गए।" वह मुंह बिगाड़कर बोला—"तुम्हें भीतर किसने आने दिया?"

"हुजूर, मैं माईकल साहब से नहीं उनकी शरीके हयात से मिलने आया हूं।"

"करीशे हयात्! ये क्या होता है?"

"करीशे नहीं—शरीके हयात्। यानी कि उनकी धर्मपत्नी टीना मैडम से मिलने आया हूं।"

"क्यों?"

"क्यों का जवाब मेरे पास नहीं—मैडम के पास है। उन्हीं से जाकर पूछो।"

"सच बोल रहे हो?"

"नहीं। झूठ बोल रहा हूं। सच बोलना तो मैंने सीखा ही नहीं है।"

"मैं मैडम से पूछकर आता हूं।" रूखे स्वर में कहकर बटलर भीतर चला गया।

इंद्रजीत द्वार पर ही खड़ा रहा और सीटी बजाकर इधर-उधर देखता रहा।

थोड़ी देर बाद वो वापिस लौटा।

"हो गयी तसल्ली?" इंद्रजीत व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला।

Scanned by CamScanner

बटलर ने कोई जवाब नहीं दिया और इंद्रजीत को पीछे आने का इशारा किया।

इंद्रजीत चुपचाप उसके पीछे हो लिया।

एक हॉल से गुजरकर वो एक कमरे के सामने पहुंचा और फिर बोला—"यहां मैडम की सेक्रटरी है। मैडम से तुम्हारी मुलाकात वो ही कराएगी।"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया और बटलर के जाने के बाद निर्दिष्ट कमरे में कदम रखा।

एक बड़ी मेज के पीछे बैठी खूबसूरत युवती को देखकर वो चौंके बिना न रह सका।

ये वो ही युवती थी जो प्रेस कांफ्रेंस के दौरान दर्शक दीर्घा में बैठी थी।

"तो तुम हो मिसेज टीना की सेक्रटरी?" इंद्रजीत उसके करीब जाकर बोला।

"तशरीफ रखिए।" युवती इंद्रजीत की बात का कोई जवाब न देकर व्यस्त भाव से बोली—"मैडम अभी बिजी हैं। आपको वेट करना पड़ेगा।"

"वेट करने की जरूरत नहीं है। मुझे अपना वेट मालूम है।"

"जी?"

"मेरा वेट 80 किलोग्राम है।"

"मैंने वो वाला वेट नहीं, दूसरा वेट बोला था। इंतजार वाला। तुम्हें इंतजार करना पड़ेगा।"

"मैंने आज तक अपनी ट्रेन का इंतजार नहीं किया, फिर मैडम का इंतजार क्यों करने लगा। आप उनसे कहिए कि मैं इंतजार नहीं कर सकता। उन्हें इसी वक्त मुझसे मिलना पड़ेगा।"

"मैडम बिजी हैं।"

"फ्री होने में कौन-सा वक्त लगता है। उनसे कहो तो सही।"

"सॉरी। मैडम ने इंतजार करने को कहा था।"

"ठीक है। फिर नमस्ते।"

इंद्रजीत जाने के लिए घूमा, युवती हड़बड़ाकर बोली—"म...मैं मैडम से बात करती हूं।"

इंद्रजीत थमककर खड़ा हो गया।

युवती ने इंटरकाम पर जल्दी से बात की।

फिर उसने इंद्रजीत को एक कमरे में दाखिल होने की इजाजत दे दी। इंद्रजीत ने दरवाजा ठेलकर कमरे में कदम रखा।

उसे टीना एक खिड़की से बाहर झांकती दिखाई दी।

उस घड़ी उसने एग्जीक्यूटिव सूट पहना हुआ था, जिसकी वजह से वो एक अमीर आदमी की रौबीली बीवी जान पड़ रही थी।

"मेरे पास तुम्हारे लिए ज्यादा वक्त नहीं है।" इंद्रजीत को उपेक्षा भरी निगाहों से देखते हुए वो बोली—"इसलिए जो कहना है, जल्दी कहो।"

कुछ न कहकर इंद्रजीत लापरवाही से चलता हुआ एक सोफे में धंस गया।

टीना की भवें तनीं।

"मैंने तुम्हें बैठने के लिए कहा?" वह तीखे स्वर में बोली।

"नहीं कहा।" इंद्रजीत एक दर्शनी जम्हाई लेते हुए बोला—"असल में मैं बेहद थका हुआ हूं। सुबह से भाग-दौड़ करते-करते मेरी टांगें टूट चुकी हैं और कमर चटकने वाली है। अपनी कमर को चटकने से बचाने के लिए मैंने ये गुस्ताखी की है।"

टीना के होंठ भिंचे।

"क्या चाहते हो?" फिर वह सख्ती से बोली।

"शाहरुख खान बनना चाहता था, लेकिन अब जमाना रितिक रोशन का है। इसलिए रितिक रोशन ही बनना चाहता हूं।"

"बकवास मत करो। मैंने जो पूछा है—उसका सीधा-सीधा जवाब दो।"

"मैंने सीधा ही जवाब दिया है। तुम्हें सीधा जवाब पसंद नहीं आया—इसलिए टेढ़ा जवाब देता हूं। मैं तुम्हें तुम्हारी अमानत लौटाने आया हूं।"

"कौन-सी अमानत?"

इंद्रजीत ने कोट की जेब से उसकी रिवॉल्वर निकाली, चैम्बर खोलकर गोलियां अपने कब्जे में कीं, फिर उसे मेज पर रखते हुए बोला—"इसे तुम जार्ज के घर भूल आई थीं। कुछ याद आया?"

वो हिचकिचाई फिर अपने रिवॉल्वर अपने कब्जे में कर ली।

"शुक्रिया तो बोल दो।"

"शुक्रिया बोलने से तुम टल जाते तो मैं जरूर बोलती।" टीना सपाट लहजे में बोली—"साफ-साफ कहो कितनी रकम चाहिए?"

"मेरे पास रकम का तोड़ा नहीं है। मुझे कुछ और चाहिए।"

"क्या?"

"तुम्हारे होठों की एक पप्पी।"

टीना के दांत सख्ती से भिंच गए। उसके चेहरे पर ऐसे भाव आए जैसे वो इंद्रजीत पर अभी झपट पड़ेगी।

"जानते हो किससे बात कर रहे हो।" फिर वो दांत

Scanned by CamScanner

किटकिटाकर बोली।

"एक्स मूवी स्टार टीना घई से बात कर रहा हूं।"

"इस समय मैं माईकल परेरा की बीवी हूं।"

"ये तो और भी अच्छी बात है।"

"मतलब?"

"जब उन्हें पता चलेगा कि थोड़ी देर पहले उनकी धर्मपत्नी अपने आशिक का कत्ल करने उसके घर गयी थी, तो वे खुशी से फूले नहीं समाएंगे। और तुम्हें गोद में उठाकर ढेरों चक्कर खिला देंगे।"

"तुम मुझे ब्लैकमेल करने आए हो?"

"गलत! व्हाईटमेल करने आया हूं।"

"मतलब?"

"इत्मीनान से बैठो! फिर बताता हूं।"

बड़े बेमन से टीना इंद्रजीत के सामने बैठ गयी।

"मुझे कुछ जानकारियां चाहिए।" इंद्रजीत बोला।

"जानकारियां!" उसकी आंखें सिकुड़ गयीं—"कैसी जानकारियां?"

"तुमने मेरे दोस्त दीपक कामत को अपने किसी काम के लिए रिटेन किया था?"

"मैं किसी दीपक को नहीं जानती।"

"सोच समझकर जवाब दो। मुझे कोई जल्दी नहीं है। बराए मेहरबानी झूठ मत बोलना।"

"अरे, मैंने कहा न—मैं किसी दीपक को नहीं जानती।"

"मुझे कहीं से पुख्ता जानकारी मिली है कि तुमने दीपक को रिटेन किया था।"

"अगर तुम्हें ये जानकारी जार्ज से हासिल हुई है तो वो सरासर झूठ बोल रहा है।"

"वो झूठ क्यों बोलेगा?"

"क्योंकि वो नम्बर एक का झूठा है।"

"उसका कहना था कि तुमने हैलन और उसकी निगरानी के लिए दीपक को रिटेन किया था।"

सहसा टीना का चेहरा सफेद पड़ गया।

"अब बोलो।" इंद्रजीत बोला—"क्या बोलती हो?"

"वो सरासर झूठ बोल रहा है।" वो क्षीण स्वर में बोली।

"यानी कि तुमने हैलन को जार्ज से दूर रहने की चेतावनी नहीं दी थी?"

"मैं ये नाम पहली बार सुन रही हूं।"

"ये वही लड़की है जो उसी दिन मरी पाई गयी थी—जिस रोज

मेरे दोस्त दीपक कामत का कत्ल हुआ था। उस लड़की की तस्वीर अखबारों में भी छपी थी।

"मैंने कहा न मैं हैलन नाम की किसी लड़की को नहीं जानती।"

इंद्रजीत ने टीना को जायजा लेने वाली निगाहों से देखा।

"जार्ज ने मुझे जो बताया" फिर वो अपने शब्दों को अच्छी तरह से चबाते हुए बोला—"मैं वो सब पुलिस को बता दूं तो तुम्हें ऑब्जेक्शन होगा।"

वो कसमसाई।

"तुमने दीपक को रिटेन नहीं किया था और तुम हैलन के बाबत भी कुछ नहीं जानती हो तो मेरे ख्याल से तुम्हें कोई ऑब्जेक्शन नहीं होना चाहिए।"

"तुम जा सकते हो।"

इंद्रजीत हड़बड़ाया।

"क्या कहा?" उसके मुंह से निकला।

"ऊंचा सुनते हो।" वो तीखे स्वर में बोली—"आई से गैट आऊट।"

"मैं गेट हाऊट होने के लिए ही आया हूं। मैं यहां धूनी रमाकर नहीं बैठने वाला। लेकिन गैट आऊट होने से पहले मैं आपको एक चीज दिखाना चाहूंगा। आई थिंक वो चीज देखकर आप मुझे गेट आऊट होने को न कहें।"

इंद्रजीत ने जेब से रवीना के बैग से हासिल परेरा नाईट क्लब की माचिस निकाली और उसे टीना के आगे लहराते हुए बोला—"ये माचिस आपकी है?"

तभी इंद्रजीत ने नोट किया कि उसके चेहरे पर न तो आश्चर्य के भाव उभरे हुए थे और न ही विचलित होने के।

"आई डोंट नो वॉट यू मीन।" वह भावहीन स्वर में बोली।

"मेरे कहने का मतलब है" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"ये माचिस शायद आपकी है और इसकी आपको जरूरत है।"

उसने इंद्रजीत को कुछ इस अंदाज से देखा मानो इंद्रजीत के दिमाग के पेंच ढीले हो गए हों।

"आई थिंक।" वह कठोर स्वर में बोली—"तुम्हें यहां से चले जाना चाहिए। इसी में तुम्हारी भलाई है।"

कहने के साथ ही अपने मेज पर पड़ी रिमोट बेल बजा दी।

तत्काल उसकी सेक्रेटरी वहां नमूदार हुई।

"आपसे मुलाकात करके अच्छा लगा।" इंद्रजीत उठते हुए बोला—"इतना अच्छा लगा कि मैं बयान नहीं कर सकता। दुआ करता

Scanned by CamScanner

हूं कि ऐसी एक मुलाकात हमारी और भी हो। गुड डे, मिसेज टीना।"

इंद्रजीत ने उंगुली से पेशानी को छुआ और कमरे से बाहर आ गया।

वो जैसे ही सेन्ट्रल हॉल में पहुंचा, वहां एक कुर्सी पर बैठा बटलर अदब से खड़ा हो गया।

"मिस्टर इंद्रजीत।" उसने आवाज दी।

इंद्रजीत ठिठका।

"कुछ कहा?" उसके मुंह से निकला।

"परेरा साहब आपसे मिलना चाहते हैं।"

इंद्रजीत बुरी तरह चौंका।

"क्या कहा?" वह हकबकाकर बोला—"माईकल साहब मुझसे मिलना चाहते हैं।"

"जी।"

"मेरे ख्याल से तुम्हें गलतफहमी हो रही है। माईकल साहब तो मेरे नाम से ही खार खाते हैं। उन्होंने किसी और का नाम लिया होगा।"

"आपका नाम इंद्रजीत है?"

"निसंदेह।"

"फिर तो साहब आपको ही याद कर रहे हैं।"

"यकीन नहीं हो रहा।"

"मेरे साथ आइए। आपको यकीन हो जाएगा।"

कशमकश में पड़ता इंद्रजीत बटलर के साथ हो लिया।

बटलर इंद्रजीत को एक हॉल में लेकर गया। वहां बने कमरे के दरवाजे के सामने पहुंचकर वो ठिठका। उसने दरवाजे पर धीरे से दस्तक दी, हैंडल घुमाया और दरवाजा खोल दिया।

"मिस्टर इंद्रजीत, सर।" कहकर वो एक तरफ हट गया।

इंद्रजीत ने कमरे में कदम रखा।

उसकी निगाह एक बड़ी मेज के पीछे बैठे माईकल पर पड़ी। उस पल उसके चेहरे पर अजीब से भाव मौजूद थे।

उसने इंद्रजीत को बैठने का संकेत किया तो इंद्रजीत बड़ी शराफत से उसके सामने बैठ गया।

फिर माईकल ने एक सिगार सुलगाया और उसके लम्बे-लम्बे कश लगाने लगा।

कुछ पलों तक जब वो कुछ नहीं बोला तो इंद्रजीत उकता कर बोला—"मेरी शक्ल अच्छी तरह से देख ली हो तो कुछ अर्ज कीजिए। खामोशी मुझे अच्छी नहीं लगती। खामोशी मुझे बहुत अखरती है।"

"फिर तो तुम हमेशा-हमेशा के लिए खामोश होना हरगिज पसंद नहीं करोगे।"

"हुजूर जो कहना चाहते हैं, साफ-साफ कहें तो बेहतर होगा।"

"यहां क्यों आए थे?"

"टीना मैडम के ऑटोग्राफ लेने। मैं उनका बड़ी हद तक फैन हूं। उनकी सारी फिल्में मैंने सिनेमा हॉल में दस-दस बार आंखें बंद करके देखी हैं। कमाल की अदाकारा हैं वो।"

"मुझे बकवास बिल्कुल पसंद नहीं है।" माईकल सख्त स्वर में बोला—"क्यों मिलने आए थे मेरी बीवी से?"

"अपनी बीवी के मुंह से सुनोगे तो बेहतर होगा।"

"मैं तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूं।"

इंद्रजीत के मन में आया कि वो टीना और जार्ज की जुगलबंदी का किस्सा बयान कर दे, लेकिन अगले ही पल उसने चुप्पी साधने का फैसला किया और सहज भाव से बोला—"अपने दोस्त के कत्ल की तहकीकात के सिलसिले में मैं उनसे मिला था।"

"क्यों?"

"इस क्यों का मेरे पास कोई जवाब नहीं है।"

"पुलिस जब अपना काम कर रही है, तो तुम क्यों अपना वक्त जाया कर रहे हो।"

"यहां कि पुलिस पर मुझे भरोसा होता तो मैं कभी भी अपना वक्त जाया नहीं करता। यहां की पुलिस को मैं उस कुत्ते का दर्जा देता हूं जो अपने आका के अलावा किसी ऐरे गैरे नत्थु खैरे के हड्डी फेंकने पर न केवल दुम हिलाता है—बल्कि हड्डी फेंकने वाले के कदमों में भी लोट जाता है। यहां की पुलिस पुलिस नहीं, बाजार की वो मिठाई है जिसे खरीदने की, चखने की कूवत अमीरों में ही है। गरीब आदमी इस मिठाई को देख सकता है, सूंघ सकता है, लेकिन चखकर नहीं देख सकता। क्योंकि चखने के लिए उसके पास दमड़ी जो नहीं है।"

"इसका मतलब तुम अपनी इनवेस्टीगेशन पर फुल स्टॉप नहीं लगाओगे?"

"लगाऊंगा, लेकिन अपने दोस्त के कातिल को बेनकाब करने के बाद। उसे उसके किए की सजा मुकर्रर करने के बाद।"

"भले ही इस काम को अंजाम देने में तुम्हारी अपनी जान चली जाए?"

"सिर पर मौत का कफन बांधने वाले अपनी जान की परवाह नहीं करते। जान का क्या है—वो तो बैठे-बैठे निकल सकती है। सड़क पर चलते वक्त निकल सकती है। जान का मोह कम-से-कम मुझ में

Scanned by CamScanner

नहीं है।'

"ग्रेट। जवाब अच्छा लगा। आई लाईक युअर डायलॉग। फिल्मों में काम क्यों नहीं करते?

इंद्रजीत के होंठ भिंच गये।

"ऐनी वे।" माईकल ने सिगार का तगड़ा कश लगाया—"मेरा मानना रहा है कि हर आदमी की कीमत होती है। किसी की कम किसी की ज्यादा। बशर्ते कीमत अदा करने वाला होना चाहिए। इस दुनिया में आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं पैदा हुआ जिसकी कीमत न हो। सब बिकते हैं—बशर्ते खरीदार होना चाहिए।"

"आप मुझे खरीदना चाहते हैं?"

"हां! अपनी कीमत बोलो। पांच मिनट के अंदर अंदर तुम्हारा मुंहमांगा पैसा तुम्हारे सामने होगा।"

"मैं अपनी कीमत दो आने लगाता हूं। पांच मिनट के अन्दर आप दो आने मेरे सामने रख सकते हैं।"

माईकल सकपकाया।

"नहीं रख सकते।" इंद्रजीत व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला—"अब आप अपनी कीमत बोलिए।"

"मैं तुम्हें दस करोड़ की ऑफर करता हूं।" माईकल बोला—"अपनी इन्वेस्टीगेशन बंद कर दो। दस करोड़ कम लगे तो मैं दस अरब दे सकता हूं। बोलो, क्या बोलते हो?"

"मैं आपको दस हजार अरब दूंगा—आप बस मेरे दोस्त को जिंदा कर दीजिए।"

माईकल से कुछ कहते न बना।

"माईकल साहब।" इंद्रजीत अपने शब्दों को अच्छी तरह से चबाते हुए बोला—"आप हमेशा नोटों से खेले हो। नोटों के बिस्तर पर सोए हो। नोटों के ढेर पर बैठकर आपने बड़े-से-बड़े फैसले किए हैं। आप बहुत कुछ कर सकते हैं। आप स्याह को उजला और उजले को स्याह कर सकते हैं। लेकिन आप अपने नोटों के दम पर सच्ची खुशी हासिल नहीं कर सकते। क्योंकि आपकी दौलत आपको नर्म बिस्तर दे सकती है—चैन की नींद नहीं। आपकी दौलत मंदिर मस्जिद बना सकती है मगर ईमान नहीं। आपकी दौलत तमाम ऐश मुहय्या करा सकती है—मगर तंदुरुस्ती नहीं। आपकी दौलत मशीनरी खरीद सकती है—मगर अक्ल नहीं। आपकी दौलत किसी का नाम बदल सकती है, किसी की किस्मत नहीं।" कहने के साथ ही इंद्रजीत आपकी जगह से उठ खड़ा हुआ और मेज पर दोनों हाथ टिकाकर बोला—"मैं अपने आप पर भरोसा करता हूं। मुझे अपने दिमाग पर, बाजुओं की

ताकत पर यकीन है। कोई भी नेक काम करने से पहले मैं खुद से केवल इतना कहता हूं—खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले—खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।" इंद्रजीत ने एक अंगुली पेशानी से लगाई—"अब बंदा इजाजत चाहता है। देख लेना। देर-सवेर ये अपने मकसद में सौ फीसदी कामयाब होकर दिखाएगा। गुड डे मिस्टर माईकल साहब।"

कहने के बाद इंद्रजीत वहां नहीं रुका।

वह लंबे डग भरता वहां से रुखसत हो गया।

पीछे माईकल मुंह बाए उस दरवाजे को देखता रहा जिसमें से इंद्रजीत गुजरकर गायब हुआ था।

इंद्रजीत रवीना के बंगले पर पहुंचा।

उसने अपनी कार गैरेज में खड़ी की और बंगले का मुख्य द्वार खोलकर बैडरूम में पहुंचा। उसने अपने कपड़े उतारे और तौलिया उठाकर समुद्र में तैराकी करने के मन से समुद्र की तरफ बढ़ गया।

बीस मिनट तक समुद्र की लहरों से खेलने के बाद वह बंगले में दुबारा पहुंचा। कपड़े बदलकर वह एक आरामदायक कुर्सी पर बैठा और एक सिग्रेट सुलगाकर कुछ सोचने में व्यस्त हो गया।

टीना उससे झूठ बोल रही थी, इस बात का उसे यकीन हो गया था। जार्ज द्वारा बताई गयी बातों पर उसे फिर भी यकीन था।

क्लब की माचिसों की बारे में वह इस नतीजे पर पहुंचा था कि टीना का उनसे कोई लेना-देना नहीं था।

एकाएक उसे अपनी इस भूल का एहसास हुआ कि उसे माचिसों के बारे में जार्ज से अवश्य पूछताछ करनी चाहिए थी। जार्ज शायद माचिसों के बारे में कुछ बता सकता था।

उसने कलाई घड़ी पर निगाह डाली।

तभी उसे ध्यान आया कि जार्ज की किसी के साथ अप्वायंटमेंट थी। इसलिए उसका अपने घर में मौजूद होना मुश्किल था। उसने उससे रात में मिलने का फैसला किया। उसने सिग्रेट पीकर बुझाई ही थी कि एकाएक टेलीफोन की घंटी बज उठी।

अपनी जगह से उठकर वो टेलीफोन के पास पहुंचा।

उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया ही था कि उसे रवीना की मदमाती आवाज सुनाई दी—"जान, मैं रवीना बोल रही हूं।"

"आवाज सुनते ही मुझे पता चल गया था कि तुम रवीना बोल रही हो।" इंद्रजीत का लहजा एकाएक शोख हो उठा था।

Scanned by CamScanner

"मेरी आवाज इतनी सैक्सी है।"
"किसने कहा?"
"तुमने।"
"मैंने कब कहा?"
"अभी-अभी नहीं कहा?"
"नहीं तो।"
"झूठ मत बोलो।"
"मैं झूठ नहीं बोला करता।"
"इसका मतलब मेरी आवाज बहुत बुरी है?"
"किसने कहा?"
"तुम सच में मेरी समझ से बाहर हो। साफ-साफ बोलो मेरी आवाज कैसी है?"
"बहुत-बहुत सैक्सी।"
"और मैं?"
"तुम तो महा सैक्सी हो।"
"सच में खुश कर दिया।"
"तो इसी बात पर देवी के दर्शन करने आ जाऊं?"
"आ जाओ।"
"मैं सच में पहुंच जाऊंगा।"
"कोई दिक्कत नहीं।"
"तुम्हारी मेड सर्वेंट ने देख लिया तो?"
"तो तुम उसे अपना मुर्गा दिखा देना। तुम्हारा मुर्गा देखते ही वो गायब हो जाएगी।"
"बड़े मूड में हो?"
"हूं तो सही।"
"तो फिर मैं पहुंचूं?"
"नहीं। मैं मजाक कर रही थी।"
"फोन कैसे किया?"
"मैं माचिसों के बारे में सोच रही थी। मुझे एक बात याद आई—इसलिए फोन कर दिया।"
"बताओ क्या बात याद आई?"
"इंद्र, मुझे सौ फीसदी यकीन है कि मेरे बैग में माचिसों के खोल डालने वाला कोई और नहीं, जार्ज ही है।"
"ऐसा यकीन कैसे हुआ?"
"मुझे याद है कि कल वो क्लब में मेरे साथ ही बैठा था। बीच में जब मैं टायलेट की ओर गई थी—तब मैंने अपना बैग अपनी सीट

पर रख दिया था। टायलेट से लौटकर जब मैं वापिस अपनी जगह पर आई थी तब मैंने अपने हैंडबैग की पोजिशन में थोड़ा बदलाव पाया था। उसे यकीनन जार्ज ने उठाया था।"
"यानी कि जार्ज ने माचिस के खोल तुम्हारे बैग में डाले थे?"
"हां।"
"क्यों?"
"होगी कोई वजह!"
"बिना वजह कोई भी काम नहीं होता।"
"ये तो मैं भी जानती हूं कि बिना वजह कोई भी काम नहीं होता।"
"फिर?"
"लेकिन इंद्र, कोई-न-कोई वजह तो है।"
"माई डियर, वजह ही तो मैं जानना चाहता हूं।"
"तुम जार्ज से मिले थे?"
"मिला था।"
"उसे माचिस दिखाई?"
"नहीं। मैं जब वहां पहुंचा था—मामला कुछ और था। इसलिए उसे माचिस दिखाने की बात मेरे जेहन से उतर गयी थी।"
"मामला क्या था?"
"तुम्हारी सौतेली मां जार्ज को शूट करने जा रही थी।"
"ओह नो।"
"ओह यस!"
"क्यों?"
"उसे शक था कि जार्ज और तुम्हारा चक्कर चल रहा था। वो जार्ज को उसकी बेवफाई की सजा देना चाहती थी।"
"टीना पागल हो गयी है। उसका दिमाग चल गया है। जार्ज से मैं सख्त खार खाती हूं—फिर उसने कैसे सोच लिया कि मेरा उसके साथ चक्कर चल रहा है। इस बात की खबर तुमने पुलिस को नहीं दी?"
"नहीं।"
"क्यों?"
"ये खबर जार्ज करता तो ठीक रहता। मैं टीना से पंगा लेने के मूड में नहीं था।"
"ठीक किया। ये काम जार्ज को ही करना चाहिए था लेकिन मैं जानती हूं कि वो पुलिस के पास कभी नहीं जाएगा। क्योंकि उसकी दाढ़ी में तिनका जो है।"

Scanned by CamScanner

"ठीक कह रही हो। अब तुम ये बताओ कि तुम्हें इस बात की खबर थी कि टीना के पास कोई रिवॉल्वर है?"

"क्यों पूछ रहे हो?"

"बताओ तो सही।"

"नहीं! मुझे रिवॉल्वर की कोई खबर नहीं थी। वैसे जान, तुम यह सब पूछ रहे हो तो किसी विशेष मकसद से पूछ रहे होगे। एम आई राईट?"

"एब्सोल्यूटली राईट।"

"अपने मकसद के बारे में मुझे नहीं बताओगे?"

"क्यों नहीं। जरूर बताऊंगा। लेकिन वक्त आने पर।"

"अभी क्यों नहीं?"

"क्योंकि अभी मैं किसी पुख्ता नतीजे पर नहीं पहुंच पाया हूं।"

"यानी कि तुम यह जान गए हो कि तुम्हारे दोस्त का कातिल कौन हो सकता है?"

"हां।"

"कौन है तुम्हारे दोस्त का कातिल?"

"बात अपने तक ही रखोगी?"

"आई प्रॉमिस।"

"तो सुनो—मुझे टीना पर शक है। बकौल जार्ज, उसी ने मेरे दोस्त को जार्ज की निगरानी के लिए रिटेन किया था।"

"हो सकता है—जार्ज झूठ बोल रहा हो। इस बारे में तुमने टीना से बात की?"

"आज दोपहर को मैं उससे मिला था।"

"उसने कबूल किया कि उसने तुम्हारे दोस्त को रिटेन किया था?"

"नहीं। उसने छूटते ही कहा कि जार्ज झूठ बोल रहा है।"

"फिर क्या बात बनी?"

"बात बनेगी। जरूर बनेगी।"

"कैसे?"

"जब पुलिस इस राज से वाकिफ होगी।"

"पुलिस कुछ भी नहीं करेगी। जो कुछ करना है—तुम्हें ही करना है। तुम उसके खिलाफ पुख्ता सबूत इकट्ठा क्यों नहीं करते?"

"कोशिश तो मैं कर रहा हूं। इसी सिलसिले में मैंने रात को जार्ज से मिलने का फैसला किया है। एक बात बताओ।"

"पूछो।"

"जार्ज वहां अकेला रहता है?"

"नहीं। उसके साथ फिलीपीनो नाम का आदमी भी रहता है—जो कि उसका सर्वेंट है।"

"फिलीपीनो रात को भी वहीं रहता है?"

"नहीं। वो सुबह नौ बजे के आस-पास आता है और रात को आठ बजे से पहले चला जाता है।"

"इसका मतलब जार्ज से मिलने के लिए मेरा आठ बजे के बाद ही जाना ठीक रहेगा?"

"हां। तब तुम उससे खुलकर बात कर सकते हो।"

"जान, एक बात का जवाब दोगी?"

"पूछो।"

"तुम्हें यह सब कैसे पता चला?"

"मतलब?"

"यही कि जार्ज के यहां फिलीपीनो नाम का सर्वेंट काम करता है—जो सुबह नौ बजे आता है और शाम को आठ बजे जाता है।"

"त...तुम कहना क्या चाहते हो?"

"कहना नहीं अर्ज करना चाहता हूं।"

"क...क्या?"

"यही कि टीना का सोचना काफी हद तक ठीक है। तुम्हारा जार्ज के साथ चक्कर चल रहा है।"

"इंद्र, तुम मुझ पर भी शक करोगे, मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी। ये बात मुझे जार्ज ने ही बताई थी। मत भूलो, वह क्लब में कभी-कभार मुझसे मिल लिया करता था।"

"ओह!"

"सॉरी बोलो।"

"सॉरी।"

"कान पकड़कर बोलो।"

"कान पकड़कर सॉरी, बाबा।"

"अब तो तुम मुझ पर शक नहीं करोगे?"

"बिल्कुल नहीं।"

"आई लव यू, इंद्र।"

"आई आलसो लव यू स्वीट हार्ट।"

"फिर कब मिल रहे हो?"

"बोलो। कब मिलना है?"

"जार्ज से मिलकर तुम कितने बजे लौटोगे?"

"दस बजे तक मैं बंगले पर पहुंच जाऊंगा।"

"ठीक है। दस बजे के बाद मैं बंगले पर पहुंच जाऊंगी।"

Scanned by CamScanner

"तुम्हारी मुर्गी की तबियत कैसी है?"

"मुर्गी?"

"भूल गयीं?"

"ओह! वो मुर्गी! ठीक है।"

"मेरे मुर्गे से चोंच लड़ा लेगी न?"

"क्यों नहीं?"

"ठीक है! दस बजे के बाद चोंच लड़ाते हैं।"

"बाई।"

"बाई।"

इंद्रजीत ने फोन रखा और चहल-कदमी करते हुए कुछ सोचने लगा।

थोड़ी देर बाद वो फिर से फोन के पास पहुंचा।

उसने गोविंद गावड़े का नम्बर मिलाया।

गोविंद, गावड़े लाईन पर आया तो वो चहकते हुए बोला—"जहांपनाह को इंद्रजीत मुरादाबादी का सिर झुकाकर आदाब पहुंचे।"

"तुम!" उसे गावड़े का सख्त स्वर सुनाई दिया।

"हां, जहांपनाह, मैं।"

"तुम अभी तक गोवा में ही हो?"

"हुजूर, कैसा सवाल कर रहे हो। गोवा से किनारा करते वक्त मैं आपको इत्तला नहीं करता।"

"फोन कैसे किया?"

"आईस पिक के बारे में कुछ पता चला?"

"अभी नहीं।"

"कमाल है! आप अभी तक ये नहीं पता लगा पाए कि घटनास्थल से बरामद सुआ किसका था?"

"हमारे पास कोई जादू की छड़ी नहीं है जिसे घुमाते ही काम हो जाए। ऐसे सुए शहर में हर रोज सैकड़ों की तादाद में बिकते हैं।"

"यानी कि अभी कोई तरक्की नहीं हुई?"

"ठीक समझे। वैसे तुम्हारी इनवेस्टीगेशन कहां तक पहुंची?"

"मैं इस नतीजे पर पहुंच चुका हूं कि मेरे दोस्त को माईकल ने रिटेन नहीं किया था।"

"फिर किसने किया था?"

"उसकी बीवी टीना ने।"

"कैसा जाना?"

"बताऊंगा, लेकिन वक्त आने पर।"

"और वो वक्त कब आएगा?"

"बहुत जल्द। तुम्हारी मदद मिलेगी तो शायद एक दो दिन में ये मिस्ट्री सॉल्व हो जाएगी।"

"कैसी मदद चाहिए?"

"टीना के नाम पर आपके डिपार्टमेंट ने कोई रिवॉल्वर इशु किया था?"

"किया होगा! वो बड़े आदमी की बीवी है। बड़े आदमियों की बीवी के पास रिवॉल्वर होना आम बात है।"

"उस रिवॉल्वर के सीरियल नम्बर का पता लग सकता है। इट्स रादर अर्जेंट।"

"मैं पता करता हूं। दस मिनट बाद फोन करो।"

"ठीक है। मैं दस मिनट बाद फोन करता हूं।"

इंद्रजीत ने फोन बंद किया और एक सिग्रेट सुलगा ली।

दस मिनट उसने सिग्रेट के कश लगाकर और चहल-कदमी करते हुए बिताए।

दस मिनट बाद उसने फोन किया तो गोविन्द गावड़े बोला—"टीना के नाम स्मिथ एंड वैसन का .32 का रिवॉल्वर एक साल पहले इशु किया गया था—जिसका सीरियल नम्बर है 4557993।"

इंद्रजीत ने नंबर नोट किया।

"लाईसेंस की मियाद कितने सालों की है?" उसने पूछा।

"दो साल।"

"एक बात और।"

"बोलो।"

"हैलन के बारे में मैं कुछ जानना चाहता हूं।"

"क्या जानना चाहते हो?"

"उसकी बैकग्राउंड के बारे में। मसलन वो कहां रहती थी—उसके संगी साथी कौन-कौन थे वगैरह! वगैरह।"

"कोई फायदा नहीं होगा। हम उसकी बैकग्राउंड के बारे जानने की कोशिश कर चुके हैं। बैक ग्राउंड जानकर तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा।"

"फिर भी मैं जानना चाहूंगा।"

"मैं तुम्हें उसका पता बताता हूं। वहां जाकर तुम उसकी बैकग्राउंड के बारे में काफी कुछ जान सकते हो।"

"ठीक है, बताओ।"

"नोट करो। मैरीलैंड रोड, ओल्ड गोवा सिटी। फ्लैट नम्बर 370।"

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत ने तत्काल पता नोट किया और उसका शुक्रिया अदा करके फोन बंद कर दिया।

अपनी कार पर सवार होकर इंद्रजीत ओल्ड गोवा सिटी पहुंचा।

मेरीलैंड रोड पर स्थित फ्लैट नम्बर 370 तलाशने में उसे खास दिक्कत का सामना न करना पड़ा। वहां उसे मालूम हुआ कि हैलन मिसेज मारग्रेट के यहां बतौर पेईंग गेस्ट रहती थी।

इंद्रजीत मिसेज मारग्रेट से मिला।

वो कोई पचास-पचपन साल की विधवा औरत थी जो कि इंद्रजीत को मिलनसार जान पड़ी।

इंद्रजीत ने उसे अपना परिचय गोवा टाईम्स के रिपोर्टर के रूप में दिया तो वह स्वागतभरे स्वर में बोली—"हमको खुशी है कि हमारे रेजीडेंस पर कोई अखबार वाला आया। हमको अखबार वालों से बात करना बहुत अच्छा लगता। गॉड ने हमारा बरसों पुराना डिजायर पूरा किया। इसके लिए हम गॉड का भौत थैंकफुल है।"

उसने इंद्रजीत को एक सजे धजे कमरे में बिठाया और स्वयं चाय बनाने के लिए किचन में चली गयी।

इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई और उसके लौटने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ पलों बाद वो चाय की ट्रे समेत वापिस लौटी और ट्रे एक मेज पर रखते हुए बोली—"बोलो, मैन, हम तुम्हारे किसी काम आने को सकता।"

"मैं यहां हैलन के बारे में कुछ जानने आया हूं।" सिग्रेट का बचाखुचा टुकड़ा अपने बूट से कुचलने के बाद इंद्रजीत बोला—"आई थिंक, आप मुझे उसके बारे में जितना जानती हैं, बिना किसी संकोच के बताएंगी।"

"हमको जो मालूम होयेगा—हम तुमको विद प्लेजर बताएगा। हैलन के बारे में तुम क्या जानने को सकता।"

"उसका कोई बॉय फ्रेंड था?" चाय का प्याला उठाने के बाद इंद्रजीत ने पूछा।

"मैन, तुम्हारे सवाल का जवाब देने से पहले हम एक बात पूछने का सकता?"

"पूछो।"

"तुम हैलन के बारे में काए कू जानना मांगता?"

"मैं उसके मर्डर पर एक आर्टीकल तैयार कर रहा हूं।" इंद्रजीत

बात बनाते हुए बोला—"पुलिस उसके मर्डर की इनवेस्टीगेशन में कोताही बरत रही है। अपने आर्टीकल से मैं पुलिस की लापरवाही से हाई अथारटीज को अगाह करना चाहता हूं। पुलिस की जब खिंचाई होती है वो तभी लाईन पर आती है।"

"ये बात तो है। हम तुम्हारा बात से हन्ड्रेड परसेंट एग्री है।"

"तो मैं कुछ पूछूं?"

"पूछो। क्या पूछना मांगता?"

"पहले पहल यही बताईए कि उसका कोई बॉय फ्रेंड था?"

"नो, मैन। उसका कोई बॉय फ्रेंड नहीं था। एक पुलिस वाला आज मार्निंग में हमसे ये सवाल किया था, उसको भी हमने यही आंसर दिया था। हैलन का कोई बॉय फ्रैंड नहीं था।"

"कोई ढका छुपा बॉय फ्रेंड? जिसकी कि आपको खबर न हो?"

"नो, मैन। हैलन हमारा पेईंग गेस्ट था। वो हमसे कोई बात नहीं छुपाता था। वो हमको अपना एक एक बात बताता था। उसका कोई सीक्रेट बॉय फ्रेंड होता तो वो हमको ये बात डेफीनेटिली बताता। यू नो, वो हमको अपना मदर के माफिक मानता था।"

"वो रहने वाली कहां की थी?"

"मुम्बई की।"

"उसके पेरेंट्स? आई मीन उसके मां बाप कहां हैं?"

"वो अब इस दुनिया में नहीं हैं। एक एक्सीडेंट में दोनों का दोनों एक्सपायर हो गया था।"

"फिर हैलन आपके पास कैसे आई थी?"

"उसका मदर हमारा फ्रैंड था। मरने से पैले उसने हैलन का जिम्मेदारी हमारे ऊपर छोड़ा था।"

"हैलन कब से आपके साथ रह रही थी?"

"पांच साल से। हम उसको अपना डाटर के माफिक समझता या। फिर भी वो हमको यहां रैने का किराया देता था। हम उसको मना भी करता था, लेकिन वो नहीं मानता था।"

"यानी कि वो खुद्दार किस्म की लड़की थी?"

"खुद्दार? ये क्या होता है?"

"मेरा मतलब है कि वो किसी के एहसान तले रहना पसंद नहीं करती थी।"

"ठीक बोला तुम। हम उसका मदर के माफिक होने को सकता था। फिर भी वो हमको यहां रैने का रैंट पे करता था।"

"तो आप उसे पांच सालों से जानती थीं?"

"हां।"

Scanned by CamScanner

"वो स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स में जॉब करती थी न?"

"हां।"

"कितने सालों से?"

"तीन सालों से?"

"अपने काम पर जाने के लिए वो कितने बजे घर से निकलती थी?"

"साढ़े आठ बजे।"

"और लौटती कब थी?"

"शाम को पांच बजे।"

"काम से वो सीधा घर आती थी?"

"हां, लेकिन फ्राईडे वो थोड़ा लेट हो जाया करती थी।"

"क्यों?"

"वो चर्च जाती थी, फादर मैथ्युज को हैल्प करती थी। वो मौत रिलीजियस थी। वो गॉड में भौत फेथ करता था।"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि वो फ्राईडे वाले रोज चर्च न जाकर कहीं और जाती हो? अपने किसी बॉय फ्रेंड के पास?"

"नो, मैंने।" मिसेज मारग्रेट के चेहरे पर बुरा मानने के भाव नुमायां हुए—"हैलन ऐसा लड़की नहीं था। वो लड़कों को बिल्कुल पसंद नहीं करता था। यहां तक कि वो आस पड़ोस में रैने वाले लड़कों की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखता था।"

"उसके दोस्तों के बारे में आप कुछ जानती हैं?"

"हमने बोला न उसका कोई फ्रेंड नहीं था।"

"मेरा मतलब उसकी किसी गर्ल फ्रेंड से है। ऐसी कोई लड़की है जिससे उसकी काफी बनती हो? जिससे वो अपने दिल की बातें शेयर करती रही हो?"

"हां। चर्च में काम करने वाली मार्था से वो तकरीबन सारी बातें शेयर करता था।"

"वो यहां आती थी?"

"हां! सम टाईम आता था।"

"उसका कोई बॉय फ्रेंड था?"

"नो।"

"मार्था के अलावा कोई और लड़की हैलन की फ्रेंड थी?"

"नहीं।"

"मैं एक लेडी का हुलिया बयान करूंगा। उसके बारे में बताना कि वो हैलन से मिलने कभी यहां आई थी?"

"बोलो।"

इंद्रजीत ने टीना का हुलिया बयान किया और आशा भरी निगाहों से मिसेज मारग्रेट के चेहरे की तरफ देखा।

"नो, मैन।" मिसेज मारग्रेट इंकार में सिर हिलाकर बोली—"ऐसा कोई लेडी इदर कब्बी नई आया।"

"आर यू श्योर?"

"डैड श्योर, मैन।"

"अच्छा, हैलन के लिए किसी आदमी का फोन आया करता था?"

"हम तुमको बताया कि हैलन आदमी लोगों से बात करना पसंद नहीं करता, फिर किसी आदमी का फोन काए को आने लगा।"

"मैं आपसे यह सवाल इसलिए कर रहा हूं—क्योंकि एक आदमी ने मुझे बताया था कि उसकी हैलन से गाहे-बगाहे फोन पर बात होती थी और वो एक बार यहां भी आया था।"

"वो मैन तुमको हन्ड्रेड परसेंट झूठ बोला। इदर न तो किसी आदमी का फोन आया और न ही कोई आदमी इधर आया।"

"हो सकता है वो आदमी आपकी गैर-हाजिरी में..."

"इट्स इम्पासिबल। हम अक्खा टाईम इदर ही रहता है।"

"मैं एक आदमी का हुलिया बयान करूंगा। उसके बारे में सोचकर बताना कि वो यहां आता था या नहीं?"

"मैन, हम तुमको बोला न..."

"प्लीज। इसके बाद मैं आपसे कोई और सवाल नहीं करूंगा।"

"ठीक है। बोलो।"

इंद्रजीत ने दीपक कामत का हुलिया बयान किया और आशापूर्ण नेत्रों से मिसेज मारग्रेट की तरफ देखा।

मिसजे मारग्रेट का सिर दृढ़ता से इंकार में हिला।

"नो, मैन। ऐसा कोई मैन इदर कब्बी नई आया।"

"जिस रोज हैलन का मर्डर हुआ था, उस रोज उसके लिए कोई फोन, किसी का मैसेज या कोई लैटर वगैरहा आया था?"

"नो।"

"आर यू श्योर?"

"डैड श्योर।"

फिर इंद्रजीत ने कोई सवाल नहीं किया।

उसने नीम खामोशी से चाय उदरस्थ की और उठ खड़ा हुआ।

"हमने तुम्हारे टेर सारे सवालों का जवाब दिया।" मिसेज मारग्रेट बोली—"इससे तुमको कोई बेनीफिट हुआ?"

"न के बराबर।" इंद्रजीत हताश भाव से बोला।

Scanned by CamScanner

"इसका मतलब हैलन का किलर पकड़ाए में नहीं आयेगा?"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"यानी कि आएगा?"

"हां।"

"कब?"

"शायद एक दो दिन में।"

"मैन, तुम उसको जब पकड़े तो हमको जरूर बोलना। हम उसका गला पकड़कर जरूर पूछेगा कि उसने हमारा डॉल जैसा हैलन को काए को मारा। हैलन से उसका क्या दुश्मनी था जो उसने बड़ी बेरहमी से उसका कत्ल किया।"

"ठीक है। जैसा आपने कहा—वैसा मैं करने की कोशिश करूंगा।"

इंद्रजीत ने उसका शुक्रिया अदा किया और फिर वहां से रुखसत हो गया।

नौ बजे के करीब इंद्रजीत ने अपनी मारूति कार जार्ज के हट हाऊस से थोड़ा परे रोकी। कार लॉक करके वो पैदल ही 'हट हाऊस' की तरफ बढ़ा।

हट हाऊस के सामने पहुंचकर उसने उसका लकड़ी का दरवाजा धीरे से खोला और भीतर कदम रखा।

भीतर अंधेरा था।

इंद्रजीत अपने साथ एक टार्च और कुछ औजार लाया था।

कुछ पलों तक वह लॉन के बजरी वाले रास्ते पर खड़ा रहा और भीतर का जायजा लेता रहा।

फिर जब उसे लगा कि भीतर कोई नहीं है—टॉर्च ऑन करके वो बड़ी सावधानी से आगे बढ़ा।

तभी उसकी निगाह एक शेड के नीचे खड़ी मारूति एस्टीम कार पर पड़ी।

वो उसके पास पहुंचा।

उसने उसके बोनट पर हाथ रखा तो उसे ठंडा पाया।

निसंदेह कार वहां से हिली नहीं थी।

कार के पास से हटकर इंद्रजीत 'हट हाऊस' के मुख्य द्वार पर पहुंचा।

उसने घंटी बजाई।

द्वार खोलने कोई न आया।

कुछ पलों बाद उसने फिर घंटी बजाई।

इस बार भी द्वार खोलने कोई न आया।

तनिक झिझककर इंद्रजीत ने दरवाजे पर हाथ का दबाव डाला। दरवाजा चर्र की आवाज के साथ खुल गया।

भीतर अंधेरा था। कहीं कोई रोशनी नहीं थी।

एकाएक इंद्रजीत के मन में संदेह के बादल उमड़ने लगे।

"जार्ज!" वह तनिक उच्च स्वर में बोला—"भीतर हो क्या?"

कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

इंद्रजीत ने टार्च ऑन की और उसकी रोशनी में कमरे का जायजा लेने लगा।

ये वो ही कमरा था जिसमें दोपहर को वो आया था—जिसमें टीना ने जार्ज पर रिवॉल्वर तानी थी। टार्च की रोशनी उसने कमरे के चारों ओर डाली मगर उसे कोई दिखाई नहीं दिया।

'कार बाहर खड़ी है।', वह बुदबुदाया—'दरवाजा खुला है। क्या चक्कर है?'

उसने एक बार फिर जार्ज को पुकारा।

कोई जवाब न मिला।

तनिक झिझककर वो एक कमरे में बने एक दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसके सामने पहुंचकर उसने उसे धकेला तो वह बड़े आराम से खुल गया।

टॉर्च की रोशनी में इंद्रजीत ने देखा वो दरवाजा 'हट हाऊस' के पिछवाड़े की ओर खुलता था।

कुछ पलों तक वह कुछ सोचता रहा, फिर उसने अपना सिर किसी नतीजे पर पहुंचने वाले अंदाज में झटका और दरवाजे से बाहर निकल आया।

बाहर आकर उसने खुद को एक छोटे से लॉन में पाया।

टार्च की रोशनी इधर-उधर डालकर जब उसे कोई संदिग्ध चीज नहीं दिखाई दी तो वह निश्चिंत होकर लॉन के कोने में बने एक स्टोरनुमा कमरे की तरफ बढ़ा।

उसके सामने पहुंचकर उसने उसके दरवाजे पर निगाह डाली तो उसने दरवाजा भिड़ा हुआ पाया।

कुछ पलों तक वह अपनी जगह पर ठिठक की खड़ा रहा और आहट लेने की कोशिश करता रहा।

कुछ देर बाद जब उसे यकीन हुआ कि भीतर कोई हलचल नहीं

Scanned by CamScanner

है, उसने धीरे से दरवाजा खोला और टार्च की रोशनी में भीतर कदम रखा।

कमरा छोटा-सा था। उसमें यहां वहां बागवानी में काम आने औजार रखे हुए थे।

उसने टार्च की रोशनी एक कोने में डाली।

यह देखकर वो बुरी तरह चौंक गया कि वहां एक आदमी उकड़ू होकर बैठा था।

इंद्रजीत फुर्ती से बाहर निकला, उसने जेब से अपना रिवॉल्वर निकाला और रिवॉल्वर की नाल कमरे की तरफ करते हुए बोला—"तुम जो कोई भी हो जल्दी से बाहर निकलो। मेरे हाथ में रिवॉल्वर है। तुमने जरा-सी भी चालाकी की तो..."

तभी उसके पैरों में कोई चीज आकर लिपटी।

इंद्रजीत बुरी तरह हड़बड़ाया और रिवॉल्वर के ट्रिगर पर उसकी उंगुली दब गयी।

नतीजतन!

एक फायर हुआ और गोली कमरे की भीतर की दीवार में धंसकर फना हो गयी।

इंद्रजीत ने पैर में लिपटी चीज की ओर ध्यान दिया तो उसे दोपहर को लकड़ी के दरवाजे पर मिली बिल्ली तेजी से एक ओर भागती दिखाई दी।

इंद्रजीत ने राहत की सांस ली।

तभी उसने नोट किया कि गोली चलने की आवाज से स्टोर की ओर से न तो कोई आवाज आई थी और न ही कोई हलचल हुई थी।

उसे स्पष्ट लगा कि स्टोर में मौजूद व्यक्ति कोई प्रतिक्रिया करने में असमर्थ था।

एक हाथ से टार्च और दूसरे हाथ में रिवॉल्वर सख्ती से पकड़कर उसने स्टोर में कदम रखा।

उसने टार्च का फोकस उकड़ूं बैठे व्यक्ति पर डाला तो उसकी रीढ़ की हड्डी में सनसनी-सी दौड़ती चली गयी।

क्योंकि वो उकड़ू व्यक्ति जिंदा नहीं था—बल्कि वो एक लाश में तब्दील था।

उसकी छाती में एक गोली का सूराख बना हुआ था। जिसमें खून के थक्के जमे हुए थे।

इंद्रजीत ने उस व्यक्ति की शक्ल को गौर से देखा तो वो उसे जार्ज का सर्वेंट जान पड़ा।

कुछ पल ठिठककर इंद्रजीत लाश के पास आया।

उसने उसका जायजा लिया तो पाया कि उसे मरे हुए चार-पांच घंटे हो चुके थे।

यानी कि उसका कत्ल दोपहर को किया गया था।

'किसने किया था उसका कत्ल?'

एक यही सवाल उसके जेहन में हथौड़े की तरह बजने लगा।

'क्या जार्ज भी इसी हाल में पहुंचाया जा चुका है?'

वह स्टोर से बाहर आया और तेज कदमों से इमारत की ओर बढ़ चला।

ड्राईंग रूम में आकर उसने जार्ज का बेडरूम तलाश किया।

बेडरूम का दरवाजा भिड़ा हुआ था।

इंद्रजीत ने सावधानी से दरवाजा खोला और टार्च की रोशनी वहां पड़े पलंग पर डाली।

उसे एक आदमी पलंग पर पीठ के बल लेटा दिखाई दिया।

"जार्ज।" वो धीमे स्वर में बोला—"आर यू लिसनिंग मी?"

कोई जवाब न मिला।

इंद्रजीत को अपना शक यकीन में तब्दील होता दिखाई दिया।

उसने कमरे में कदम रखा।

टार्च की रोशनी में स्विच बोर्ड तलाश किया और स्विच आन कर दिए।

फौरन एक ट्यूब लाईट लपलपाकर रोशन हुई।

कमरे में रोशनी फैलते ही इंद्रजीत को जार्ज की खून में डूबी लाश दिखाई दी।

एक गोली का सूराख उसकी छाती में बना हुआ था जिसमें से खून निकलकर उसके कपड़ों को और चादर को लाल कर चुका था।

तभी इंद्रजीत का ध्यान कमरे की अन्य चीजों पर गया।

वहां अस्तव्यस्तता का बोलबाला था।

वार्डरोब खुली हुई थी और उसका सामान यहां वहां बिखरा हुआ था।

यही हाल मेज का भी था।

उसकी तमाम दराजें खुली हुई थीं और उसका सामान मेज पर बिखरा हुआ था।

लगता था—कातिल को किसी खास चीज की तलाश थी—जिसे हासिल करने के उद्देश्य से उसने दो लोगों को शूट करने की जुर्रत की थी।

जार्ज की लाश का जायजा लेने के लिए इंद्रजीत ज्यों ही पलंग के पास पहुंचा, एक ठोस चीज उसके पैरों से टकराई और फर्श पर

Scanned by CamScanner

रगड़ खाती पलंग के नीचे चली गयी।

तनिक झुककर इंद्रजीत ने टार्च की रोशनी पलंग के नीचे डाली तो उसे एक रिवॉल्वर दिखाई दी।

अपना रूमाल निकालकर इंद्रजीत ने वो रिवॉल्वर पलंग के नीचे से निकाली और रूमाल में लपेटकर उसका मुआयना किया।

वो टीना की रिवॉल्वर थी—जिसे उसने दोपहर को उसके हवाले किया था।

उसने उसका सीरियल नंबर देखा।

नंबर वो ही था जो उसे गोविंद गावड़े ने बताया था—4557993।

इंद्रजीत ने रिवॉल्वर का चैम्बर खोलकर देखा—उसमें दो गोलियां मौजूद थीं।

यानी कि रिवॉल्वर से चार फायर किए गए थे।

कुछ पलों तक इंद्रजीत अपनी जगह पर खड़ा रहा और कुछ सोचता रहा।

एक बात उसे बुरी तरह खटक रही थी—कातिल अगर टीना थी तो उसने अपना रिवॉल्वर घटना स्थल पर क्यों छोड़ा? पुलिस उसे पाती तो शर्तिया शक की सुई टीना की ओर घूम जाती। उसने टीना से बात करने का फैसला किया।

उसने रिवॉल्वर कोट की जेब में डाला और कमरे की लाईट ऑफ करके बाहर आ गया।

वो लाउंज में एक मेज पर पड़े फोन के पास पहुंचा।

उसने माईकल के बंगले का नंबर मिलाया।

फोन तत्काल उठाया गया और बटलर का अदब से भरा स्वर इंद्रजीत के कानों में पड़ा—"दिस इज माईकल परेरा'स रेजीडेंस।"

"टीना मैडम से बात कराओ।" इंद्रजीत तेजी से बोला।

"आप कौन?"

"ये जानना तुम्हारा काम नहीं।"

"ऐसे मैडम से बात नहीं हो सकती। आपको अपना नाम बताना पड़ेगा।"

"मैं शाहरूख खान बोल रहा हूं।"

"क्या! शाहरूख खान जो फिल्मों में..."

"मैं वो शाहरूख खान नहीं हूं—मैं रियल लाईफ का शाहरूख खान हूं। मैडम को फोन दो...वरना वो कहीं की नहीं रहेंगी।"

"मैं आपकी बात उनकी सेक्रेटरी से करवा देता हूं।"

इंद्रजीत कुछ कह पाता, बटलर की आवाज आनी बंद हो गयी।

कुछ पलों बाद उसे टीना की सेक्रटरी की आवाज सुनाई दी—"हू

इज कालिंग?"

"मैं इंद्रजीत बोल रहा हूं।" इंद्रजीत धैर्यपूर्ण स्वर में बोला—"टीना मैडम से बात हो सकती है, इट्स रादर अर्जेंट।"

"सॉरी, सर। उनसे बात नहीं हो सकती।"

"क्यों?"

"पौने दस बज चुके हैं। नौ बजे के बाद वो सोने के लिए अपने बैडरूम में चली जाती हैं। आप मार्निंग में फोन..."

"सुबह होने तक तुम्हारी मैडम के हाथों में हथकड़ियां पड़ चुकी होंगी। उनसे कहो कि अगर वो अपनी आन-शान पर कोई आंच नहीं आने देना चाहती हैं तो फौरन-फौरन से पेश्तर मुझसे बात करें।"

"आप थोड़ी देर के लिए होल्ड करेंगे?"

"करता हूं।"

थोड़ी देर बाद सेक्रटरी लाईन पर आई और खेदभरे स्वर में बोली—"आई एम सॉरी सर! मैडम ने बोला है कि वो आपसे कोई बात नहीं करना चाहतीं।"

"उन्हें बात करनी ही पड़ेगी।" इंद्रजीत ताव खाकर बोला—"उनसे कहिए कि उनका एक जिगरी यार—जो आदमी कम औरत ज्यादा लगता है—मारा जा चुका है। किसी ने उसे शूट किया है। मैडम ने मुझसे बात नहीं की तो पुलिस कभी भी उन्हें गिरफ्तार करने के लिए वहां पहुंच सकती है।"

"क...क्या कहा! पुलिस यहां आ सकती है?"

"हां। वो भी तुम्हारी मैडम को हथकड़ियां पहनाने।"

"म...मैं मैडम से एक बार फिर पूछती हूं।"

"पूछती नहीं। उन्हें समझाओ कि बेवकूफी न करें और फौरन से पेश्तर मुझसे बात करें। एक मैं ही वो शख्स हूं जो उन्हें इस आल जंजाल से निजात दिला सकता हूं। अंडरस्टैंड?"

"मैं मैडम को अब्बी जाकर बोलती हूं।"

थोड़ी देर बाद इंद्रजीत को टीना का सख्त स्वर सुनाई दिया—"देखो इंद्रजीत, तुमने फिर से मेरे लिए कोई मुसीबत खड़ी की तो मैं तुम्हारे बारे में अपने हजबैंड को सब कुछ बता दूंगी।"

"मोहतरमा, ये तो और भी अच्छा होगा। आप अपने पतिदेव को सब कुछ बतायेंगी, तभी आपको आपकी दुश्वारियों से निजात मिलेगी।"

"कौन-सी दुश्वारियों से?"

"ये तो आपको पता ही होगा कि आपका लेडीज मैन हलाक किया जा चुका है?"

Scanned by CamScanner

"मेरी सैक्रेटरी ने अभी-अभी बताया। ये सच है?"

"सौ फीसदी।"

"त...तुम।" एकाएक टीना का स्वर कांपता चला गया—"सच बोल रहे हो?"

"बाई यू।"

"मुझसे बात करने के लिए तुम झूठ का सहारा तो नहीं ले रहे?"

"मेरे लिए आप कोई वी०आई०पी० नहीं हैं—जिससे बात करने के लिए मैं तिकड़में लगाऊंगा। मैंने फोन तुम्हारे भले के लिए किया है।"

"मेरे भले के लिए?"

"हां।"

"कैसे?"

"जिस रिवॉल्वर से जार्ज और उसके सर्वेंट का कत्ल किया गया है—वो तुम्हारा है।"

"ओह नो।" टीना के मुंह से दहशतनाक सिसकारी निकली।

"यस मैडम। वो रिवॉल्वर तुम्हारा ही है। मुझे उस रिवॉल्वर की अच्छी पहचान है। क्योंकि आज दोपहर को ही वो रिवॉल्वर मैंने तुम्हारे हवाले किया था।"

"त...तुम झूठ बोल रहे हो। वो रिवॉल्वर मेरे पास है।"

"कहां?"

"मैंने उसे अपनी मेज के दराज में रखा था।"

"चैक करके बताओ। रिवॉल्वर वहां है या नहीं?"

कुछ पलों बाद इंद्रजीत को टीना की बुरी तरह घबराई आवाज सुनाई दी—"इंद्र, रिवॉल्वर यहां नहीं है।"

"मैं फारसी बोल रहा था।"

"मेरा रिवॉल्वर तुम्हारे पास कैसे पहुंच गया?"

"उड़कर। रिवॉल्वर के दोनों तरफ कबूतर के पंख लगे थे।"

"मजाक मत करो।"

"तुमने सवाल ही मजाक करने वाला किया है। जाहिर है—कातिल ने तुम्हारा रिवॉल्वर तुम्हारी मेज के दराज से हासिल किया था। उसने उस रिवॉल्वर से जार्ज और उसके सर्वेंट को हलाक किया और फिर तुम्हारा रिवॉल्वर पीका-ए वारदात पर फेंक दिया—ताकि तुम्हारा पुलंदा बंध जाए।"

"ये काम किसने किया होगा?"

"मुझसे पूछ रही हो?"

"तुम जासूस हो। तुम अंदाजा लगा सकता हो।"

"लगा तो सकता हूं।"

"फिर बताओ। रिवॉल्वर किसने पार किया?"

"पहले मेरे कुछ सवालों का जवाब दो।"

"पूछो।"

"आज शाम को पांच से लेकर छः बजे के दरम्यां तुम कहां थी?"

"मैं अपने कमरे में थी।"

"क्या कर रही थीं?"

"टी०वी० पर मूवी देख रही थी।"

"उस दौरान तुम्हारे साथ कोई था?"

"नहीं।"

"कोई सर्वेंट चाय वगैरह देने आया हो?"

"नहीं। मैं जब फिल्म देखती हूं तो कोई डिस्टरबेंस पसंद नहीं करती। इसलिए इस दौरान कोई नौकर मेरे पास भी नहीं फटकता।"

"तुम्हारी दुमछल्ली कहां थी?"

"दुमछल्ली?"

"तुम्हारी सैक्रेटरी।"

"वो किसी काम से बाहर गयी हुई थी।"

"तुम्हारी सैक्रेटरी को इस बात की खबर थी कि तुम अपना रिवॉल्वर कहां रखती हो?"

"हां।"

"उसके अलावा किसी और को?"

"माईकल को खबर थी।"

"फिर तो समझ लो—तुम्हारा बेड़ा पार हो गया।"

"मतलब?"

"इतना भी नहीं समझीं कि तुम्हारे खाविंद को तुम्हारी जार्ज के साथ बिस्तर पर खेली जाने वाली कबड्डी की खबर थी। वो तुम्हें डायवोर्स देता तो उसे अपने पल्ले से तुम्हें काफी कुछ देना पड़ता। अब तो वो ठंडे-ठंडे तुम्हें जेल जाते देखेगा और अपनी कारगुजारियों पर फख्र करेगा कि उसने एक तीर से दो शिकार किए हैं।"

"त...तुम्हारा मतलब जार्ज का मर्डर माईकल ने किया है?"

"मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"फिर?"

"वो यह काम अपने टोनी नाम के चमचे से बड़ी सहूलियत से करवा सकता है।"

"य...यानी कि जार्ज का मर्डर टोनी ने किया है?"

"शायद।"

Scanned by CamScanner

"शायद?"

"मैं यकीन से नहीं कह सकता। ये हरकत तुम्हारी सेक्रेटरी की भी हो सकती है। मत भूलो—पांच और छः बजे के बीच वो गायब थी।"

"व...वो उसका कत्ल क्यों करने लगी?"

"ये तुम उससे पूछो।"

"वो उसका कत्ल नहीं कर सकती।"

"तो फिर ये काला कारनामा तुम्हारे खाविंद का होगा।"

"इंद्र, तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते?"

"क्या करवाना चाहती हो?"

"मुझे इस झंझट से निजात दिलाओ।"

"कैसे?"

"रिवॉल्वर गायब कर दो।"

"बदले में मुझे क्या मिलेगा?"

"जो तुम मांगोगे।"

"सोच लो। मैं नम्बर एक का मंगता हूं। मैं दमड़ी तो मांगता ही हूं—साथ-साथ चमड़ी भी नहीं छोड़ता।"

"मतलब?"

"मतलब यही है मेरी जान तुम्हें दमड़ी तो देनी ही पड़ेगी, साथ-साथ एक रात के लिए इस लक्की बास्टर्ड का पहलू भी गर्म करना पड़ेगा।"

"मुझे मंजूर है।"

"टस्का तो नहीं दे रहीं?"

"नहीं।"

"ठीक है। मैं रिवॉल्वर गायब कर देता हूं। इस समय तुम्हारे पास मुझे देने के लिए क्या-क्या है?"

"कुछ कैश है और कुछ ज्वैलरी।"

"दोनों को मिलाकर कितनी रकम खड़ी होती है।"

"दस बारह लाख।"

"ठीक है। तुम ये दोनों चीजें एक ब्रीफकेस में रखवाकर अपनी सौतेली बेटी के बंगले के लॉन में फिंकवा दो। उसके बाद मैं तुम पर कोई आंच नहीं आने दूंगा।"

"पक्का?"

"महा पक्का।"

"कहीं ऐसा न हो कि तुम मुझे दस बारह लाख का चूना भी लगा दो और मैं..."

"मैं ब्रीफकेस की राह देखूंगा।"

इंद्रजीत ने फोन काट दिया।

उसने यहां वहां मौजूद अपनी अंगुलियों के निशान मिटाए और फिर वहां से रुखसत हो गया।

सवा दस बजे के आस-पास इंद्रजीत रवीना के बंगले पर आकर लगा।

बंगले के बाहर एक नई नकोर होंडा अकार्ड कार देखकर उसके माथे पर बल पड़ गए।

वो रवीना की कार से भली भांति परिचित था। उसके पास मारूति एस्टीम थी।

अपनी मारूति से उतरकर वो कार के पास पहुंचा।

स्ट्रीट लाईट की रोशनी में उसने कार के भीतर झांका तो उसे उसकी पिछली सीट पर एक पोर्टेबल सिंथेसाईजर (एक प्रकार का प्यानो) रखा दिखाई दिया।

वह बंगले के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गया।

मुख्य द्वार पर पहुंचकर उसने जेब से चाबी निकाली।

चाबी ताले में डाली तो उसे महसूस हुआ कि वो पहले से खुला हुआ था।

यानी कि भीतर कोई था।

कारवाला या रवीना?

रवीना ने साढ़े दस बजे आना था—क्या वो पहले आ गयी थी?

या टीना बंगले के भीतर थी?

अगर टीना वहां आई थी तो उसे रवीना के बंगले की चाबी कैसे उपलब्ध हुई थी? इंद्रजीत ने अपना रिवॉल्वर हाथ में लिया और सावधानी से दरवाजे के हैंडल को घुमाया। हैंडल घूमा तो उसने दरवाजे को इंच-इंच करके ठेला।

उसे भीतर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दिया।

कुछ पलों तक वह द्वार पर ठिठका रहा और आहट लेने की कोशिश करता रहा।

थोड़ी देर बाद उसने दरवाजा इतना खोला कि वो उसमें समा जाए। उसने भीतर झांका।

उसे कोई नहीं दिखाई दिया।

बड़ी सावधानी से उसने भीतर लाउंज में कदम रखा।

Scanned by CamScanner

तब उसे बार वाले कमरे के दरवाजे से रोशनी फूटती दिखाई दी।

रिवॉल्वर हाथ में सख्ती से थामे बड़ी सावधानी से वो बार वाले कमरे के सामने पहुंचा। तनिक रुककर उसने की-होल में झांका तो उसे रवीना एक स्टूल पर बैठी शराब चुसकती दिखाई दी। इंद्रजीत ने राहत की सांस ली।

उसने दरवाजा ठेला तो वह खुल गया।

आहट होते ही रवीना चौंकी—फिर इंद्रजीत पर निगाह पड़ते ही वो बोली—"मैं तो डर ही गयी थी। मैं समझी पता नहीं कौन आया है? तुमने घंटी क्यों नहीं बजाई?"

"मैं समझा यहां कोई और है।" इंद्रजीत एक गहरी सांस छोड़ते हुए बोला—"तुम साढ़े दस बजे आने वाली थीं। दरवाजा खुला पाकर शक के कीड़े ने मुझे काटना शुरू कर दिया था।"

"तो तुम डर गये थे?"

"डर नहीं, चौकन्ना हो गया था। तभी रिवॉल्वर मेरे हाथ में है।" इंद्रजीत ने रिवॉल्वर वाला हाथ लहराया।

रवीना ने डरने की बनावटी एक्टिंग की।

"मेरी जगह कोई और होता तो तुम उसे शूट कर देते?" फिर वह सवालिया लहजे में बोली।

"आत्मरक्षा के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं।" इंद्रजीत दृढ़ता से बोला।

"भले ही कोई लड़की तुम पर हमला करे?"

"हां।"

"तुम लड़कियों पर भी हाथ उठा देते हो?"

"लड़कियां फूल होती हैं?"

"नहीं। फूल जैसी नाजुक होती हैं न। इसलिए बाज लोग उन्हें कुचलना पसंद नहीं करते।"

"मैं बाज लोगों में से नहीं हूं।"

"इसका मतलब कुछ भी कर गुजरते?"

"हां।"

"क्या रहा?"

"बैठने तो दो। दो सांसें लेने दो। टाइम से पहले आकर तुमने मुझे वैसे ही चक्कर में डाल दिया। थोड़ा रिलैक्स हो लूं?"

रवीना का सिर सहमति में हिला।

"एक पैग बनाओगी?"

"क्यों नहीं!"

रवीना पैग बनाने की तैयारी करने लगी।

रवीना के पीठ करते ही इंद्रजीत ने दोनों रिवॉल्वर बॉल यूनिट के दराज में रखे और कोट उतारकर एक ओर फेंक दिया।

फिर वो काउंटर के पास पड़े एक स्टूल पर जा बैठा।

रवीना ने उसके लिए पैग तैयार किया और फिर उसके सामने बैठ गयी। उस घड़ी उसने स्किन टाईट मिनी ड्रेस पहनी हुई थी, जो उसके जिस्म पर चमड़ी की तरह मढ़ी जान पड़ रही थी। उसके उभार पहाड़ की चोटियों की तरह तने हुए थे।

इंद्रजीत की आंखों के सामने रह-रहकर जार्ज का मुर्दा चेहरा लहरा रहा था, इसलिए वो हाल फिलहाल मौज के मूड में नहीं था।

"हां, क्या रहा?" रवीना उतावले स्वर में बोली।

इंद्रजीत ने शराब की चुसकियों के दौरान सारा किस्सा कह सुनाया।

सुनते हीं रवीना के चेहरे पर चिंता के पुरजोर भाव उभरते चले गए। वह उलझन भरे स्वर में बोली—"इसका मतलब जार्ज और उसके सर्वेंट का कत्ल टीना ने किया है?"

इंद्रजीत ने इंकार में सिर हिलाया।

"टीना ने कत्ल नहीं किए?" रवीना तनिक चिहुंककर बोली।

"नहीं।"

"लेकिन मौकाए वारदात पर पाई गयी उसकी रिवॉल्वर?"

"वो हत्यारे द्वारा प्लांट की गयी हो सकती है। कोई भी शख्स इतना बेवकूफ नहीं होता कि अपने हथियार से कत्ल करके हथियार घटना स्थल पर फेंक दे। और वो भी ऐसा हथियार जिससे उसे आसानी से ट्रेस किया जा सके। ये कत्ल किसी और ने टीना के रिवॉल्वर से किया है।"

"इसका मतलब हत्यारे की माईकल के घर में घुसपैठ है?"

"हां।"

"कौन हो सकता है घुसपैठिया?"

"तुम बताओ। वहां के हालात के बारे में तुम बेहतर जानती हो।"

"टोनी! टोनी कर सकता है ये काम।"

"टोनी ये काम तब कर सकता है जबकि तुम्हारे बाप ने उसे यह काम करने को कहा हो।"

"मैंने सुना था, हर कत्ल की कोई-न-कोई वजह होती है। मेरे डैडी के पास जार्ज का कत्ल करने की क्या वजह हो सकती है।"

"मत भूलो। जार्ज तुम्हारे डैडी की बीवी का यार था। पहलू गर्म

Scanned by CamScanner

करने वाला मुस्टंडा था। बॉडी की मसाज करने वाला मसाजर था।"

"फिर तो उन्हें टीना का कत्ल करना चाहिए था।"

"वो ऐसा करते तो शक के दायरे में आते। अब उन्होंने जो खेल खेला है, उसके दोनों पाले में उन्हीं की गेंद हैं। पुलिस टीना को गिरफ्तार कर लेगी तो टीना जैसी हर्राफा और बेवफा बीवी से छुटकारा खुद-ब-खुद मिल जाएगा।"

"डैडी ऐसा कर सकते हैं।" उसके चेहरे पर बेयकीनी के भाव आए—"मैं सपने में भी नहीं सोच सकती। तुम्हें मुगालता तो नहीं हुआ?"

"हो भी सकता है।"

"यानी कि तुम केवल डैडी पर शक कर रहे हो?"

"हालात के लिहाज से मुझे नहीं लगता कि वे टीना को फंसाने का मंसूबा अभी बांधेंगे। वे इलैक्शन में खड़े हो रहे हैं। इलैक्शन में खड़ा होने वाला कैन्डीडेट हर तरह के स्कैंडल से दूर रहना पसंद करता है। तुम्हारे डैडी ने ये काम करना होता तो बहुत पहले कर गुजर गए होते या फिर इलैक्शन के बाद करते। मैं क्या कहना चाह रहा हूं—समझ रही हो न?"

"फिर तो जार्ज का कत्ल टीना की सैक्रेटरी ने किया होगा।"

"क्यों?"

"होगी कोई वजह! क्या पता वो जार्ज को पसंद करती हो।"

"मैं उससे मिल चुका हूं। मुझे नहीं लगता कि वो छिपकली जैसी लड़की दो-दो कत्ल करने का हौंसला कर सकती है।"

"फिर कातिल कौन है?"

इंद्रजीत ने असहाय भाव से बालों में अंगुलियों फिराईं, एक झटके से पैग खत्म किया और फिर गिलास काउंटर पर रखते हुए बोला—"क्रिस के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"क्रिस! परेरा नाईट क्लब का मालिक?"

"हां, वही। वो जार्ज का कातिल हो सकता है?"

"कत्ल की वजह?"

"तुम सोचो। तुम क्लब में जाती रहती हो। जार्ज के साथ-साथ टीना भी वहां जाती है। कत्ल की वजह तुम बेहतर बता सकती हो।"

शराब की चुसकियां लेती वह सोचने लगी।

कुछ पल बाद उसने गिलास खाली करके काउंटर पर रखा और एक सिगरेट सुलगाई।

सिगरेट का पैकेट उसने इंद्रजीत की तरफ बढ़ाया।

इंद्रजीत ने एक सिगरेट सुलगाई, नाक से ढेर सारा धुंआ छोड़ा,

फिर होंठ सिकोड़ते हुए बोला—"परेरा नाईट क्लब पहले तुम्हारे डैडी के कब्जे में था न?"

"हां।"

"और उसे कुछ दिनों पहले क्रिस ने खरीदा था?"

"हां।"

"क्यों?"

"ये कोई सवाल हुआ? उसने अपने बिजनेस की खातिर उसे खरीदा होगा।"

"कौन से बिजनेस की खातिर?"

"अरे, क्लब से उसे अच्छी खासी कमाई होती है।"

"वो तो मुझे भी मालूम है। लेकिन अहम सवाल ये है कि क्लब को तुम्हारे डैडी ने क्यों बेचा? उन्हें पैसे का कोई तोड़ा नहीं है। अपना सामान बेचने का काम वो ही शख्स करता है जिसे पैसे का तोड़ा हो। तुम्हारे डैडी के पास दौलत का अंबार लगा हुआ है, फिर उन्होंने क्लब क्रिस को क्यों बेचा?"

"मेरे डैडी बिजनेसमैन हैं। उन्हें क्लब की अच्छी कीमत मिली होगी। तभी उन्होंने क्लब उसे क्यों बेचा।"

"चलो माना कि अच्छी कीमत की वजह से उन्होंने क्लब बेचा होगा—लेकिन क्रिस उसे खरीदने के लिए ढेर सारा पैसा कहां से लाया?"

"अरे, कहीं से भी लाया। तुम क्यों अपना दिमाग खराब कर रहे हो। तुम ये सोचो कि उसके पास जार्ज के कत्ल की क्या वजह हो सकती है?"

"मुझे यकीन है जार्ज का कातिल वो ही है जिसने मेरे दोस्त के साथ-साथ हैलन का भी कत्ल किया है। क्रिस के पास मेरे दोस्त का कत्ल करने की क्या वजह हो सकती है?"

"तुम तो यार!" एकाएक रवीना उकताकर बोली—"क्या बोर टॉपिक लेकर बैठ गए। कोई और बात करो। मौज मेले की बात करो। मैं यहां बोर होने के लिए नहीं आई। मैं यहां" उसने अश्लील ढंग से अपना निचला होंठ मुचलाया—"अपनी मुर्गी को उसकी खुराक दिलाने के लिए आई हूं।"

"खुराक भी मिल जाएगी तुम्हारी मुर्गी को।" इंद्रजीत उसकी इच्छा को नजरअंदाज करते हुए बोला—"असल में मेरा ध्यान कहीं और है। मैं अपने दोस्त के कातिल..."

तभी माहौल पुलिस सायरन की तेज आवाज से गूंजता चला गया।

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत के जिस्म में फौरन फुर्ती आई।

वह कमरे से बाहर निकला और लाउंज की खिड़की की तरफ लपका।

उसने खिड़की से बाहर झांका।

उसे एक पुलिस जिप्सी तेजी से बंगले की तरफ आती दिखाई दी।

वह घूमा और एकाएक पीछे आ खड़ी हुई रवीना से मुखातिब हुआ—"पुलिस आ रही है। वो यकीनन जार्ज के कातिल के सम्बंध में मुझसे पूछताछ करने आ रही है। तुम यहीं रहना। मैं बाहर जाकर उनसे बात करता हूं।"

"लेकिन इंद्र, उन्होंने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया, तो?"

"मुझे गिरफ्तार करने की उनके पास क्या वजह हो सकती है?"

रवीना को कोई जवाब न सूझा।

"मैं बाहर जा रहा हूं।" इंद्रजीत तेजी से बोला—"मैं उनके जहूर में ये बात नहीं आने दूंगा कि तुम यहां हो। उन्होंने तुम्हें यहां देख लिया तो बहुत बड़ी गड़बड़ हो जाएगी। समझीं?"

"समझ गयी। लेकिन वो यहां आ गए तो?"

"नहीं आएंगे।"

"फिर भी किसी बहाने से आ गए तो?"

"तो कहीं छुप जाना।"

"मुझे उनके सामने नहीं आना?"

"किसी भी कीमत पर नहीं। समझीं?"

"समझ गयी।"

"मैं चलता हूं।" इंद्रजीत ने खिड़की से बाहर झांका—"वे लोग पहुंचने ही वाले हैं। ओके?"

रवीना का सिर सहमति में हिला।

इंद्रजीत तत्काल बाहर आ गया।

उसे एक पुलिस जिप्सी सायरन बजाती पास आती दिखाई दी।

उसके देखते-देखते जिप्सी बंगले के बाहर आकर रुकी और उसका सायरन बजना बंद हो गया।

पुलिस जिप्सी की अगली सीट से उतरे गोविंद गावड़े को देखकर इंद्रजीत के माथे पर बल पड़ गए।

उस वक्त उसके जिस्म पर इंस्पेक्टर की वर्दी थी। पिछली बार जब वो उससे मिला था, तब बकौल सुनील शर्मा, उसे पता चला था

कि ए०सी०पी० चंद्रकांत का ट्रांसफर हो जाएगा और उसकी जगह गोविंद गावड़े को ए०सी०पी० बनाया जाएगा।

इंद्रजीत को दाल में कुछ काला दिखाई दिया।

तभी उसे जिप्सी के पिछले दरवाजे से सब-इंस्पेक्टर सदानंद खांडेकर बाहर कदम रखता दिखा।

इंद्रजीत उनके करीब पहुंचा तो गोविंद गावड़े फोर्ड एस्काई कॉर की तरफ इशारा करते हुए बोला—"ये कार जानी पहचानी लग रही है। किसकी है?"

"मेरे किसी खास की।" इंद्रजीत जल्दी से बोला—"वो भीतर है। हम यहीं बात करें तो कैसा रहेगा?"

"वो खास कौन है?" गोविंद गावड़े उत्सुकता से बोला।

"है कोई। आप क्या करेंगे जानकर? आप ये बताईये कि आपके जिस्म पर ये वर्दी कैसे आ गयी? आपको तो ए०सी०पी० होना चाहिए था?"

"होना चाहिए था—लेकिन मेरी बुरी किस्मत को इसी वर्दी से प्यार था। इसलिए ये मेरे जिस्म पर फिर से आ गयी।"

"चक्कर क्या है, आलीजाह?"

"तुम्हारे जानने लायक नहीं है। वैसे तुम इस वक्त कहां से आ रहे हो?"

"म...मैं।" इंद्रजीत हकलाया—"मैं कहीं से नहीं आ रहा। मैं दोपहर से ही यहीं हूं।"

"झूठ मत बोलो।" गोविंद गावड़े सख्त स्वर में बोला—"हमें मालूम है तुम कहां से आ रहे हो?"

"क...कहां से आ रहा हूं?"

"जार्ज के हट हाऊस से।"

इंद्रजीत को जैसे सांप सूंघ गया।

"हम तुम्हें लेने आए हैं।" गोविंद गावड़े व्यस्तता का प्रदर्शन करते हुए बोला—"तुम्हें हमारे साथ फिर से हट हाउस पर चलना है। इसलिए चुपचाप जिप्सी में जाकर बैठ जाओ।"

"अभी?"

"हां।"

"मेरा कोई खास मिलने आया हुआ है। मैं इस वक्त तुम्हारे साथ कैसे..."

"अपने खास को भी साथ ले लो।"

"न...नहीं। मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

"ये की न आज्ञाकारी बालकों वाली बात।"

Scanned by CamScanner

गोविंद गावड़े ने नारा-सा लगाया और सदानंद खांडेकर को जिप्सी की अगली सीट पर बैठने का इशारा किया।

खांडेकर ने तत्काल आदेश का पालन किया।

वो जिप्सी की अगली सीट पर बैठ गया।

इंद्रजीत गोविंद गावड़े के साथ जिप्सी की पिछली सीट पर बैठा।

फिर गावड़े के कहने पर वर्दीधारी ड्राईवर ने जिप्सी स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

"मैं हट हाऊस से आ रहा हूं," रास्ते में इंद्रजीत अचकचाकर बोला—"ये बात आप लोग साबित नहीं कर सकते।"

"शायद कर सकते हों। मत भूलो पुलिस के हाथ बहुत लम्बे होते हैं।"

"पुलिस या कानून के?"

"एक ही बात है। पुलिस कानून से कौन-सा जुदा है। वाई द वे तुम्हारा रिवॉल्वर कहां है?"

"म...मेरा रिवॉल्वर!"

"हां, हां तुम्हारा रिवॉल्वर।"

"आप क्या करेंगे उसका?"

"उसकी नाल अपनी कनपटी पर लगाऊंगा और खुद को शूट करूंगा।"

"मजाक कर रहे हैं।"

"मजाक ही कर रहा हूं। मजाक करने की मेरी पुरानी आदत है। मजाक किए बिना मुझे खाना हजम नहीं होता। रिवॉल्वर कहां है?"

गोविंद गावड़े के लहजे में एकाएक घुल आई तल्खी की वजह से इंद्रजीत ने उससे उलझना ठीक न समझा।

"रिवॉल्वर बंगले में है।" वह बड़ी शराफत से बोला—"जरूरत होने पर मैं उसे पेश कर दूंगा।"

"ड्राईवर, गाड़ी बंगले की तरफ ले चलो।" गावड़े ने तत्काल ड्राईवर को जिप्सी वापिस ले जाने का हुक्म दनदनाया।

"रिवॉल्वर कहीं भागा नहीं जा रहा है।" इंद्रजीत विरोधभरे स्वर में बोला—"मैंने कहा न कि मैं..."

"ड्राईवर, गाड़ी घुमाओ।" गोविंद गावड़े आदेश भरे लहजे में घुड़घुड़ाया।

ड्राईवर ने तत्काल जिप्सी की रफ्तार धीमी की और उसका रुख बंगले की तरफ कर दिया।

बंगले के सामने जिप्सी के रुकने पर, गोविंद गावड़े, सदानंद से बोला—"तुम इसके साथ जाओ। आई वांट हिज रिवॉल्वर। अंडरस्टैंड?"

सदानंद खांडेकर ने तत्परता से सिर हिलाया और फिर जिप्सी से बाहर निकल गया।

इंद्रजीत भी जिप्सी से बाहर निकला।

दोनों बंगले के मुख्य द्वार पर पहुंचे।

इंद्रजीत ने अपनी चाबी से दरवाजा खोला।

"तुम्हारे खास के पास" तभी सदानंद बोला—"इस बंगले की डुप्लीकेट चाबी है।"

"हां।"

"फिर तो मैं बेधड़क बता सकता हूं कि तुम्हारा वो खास कौन है?"

"कौन है?" इंद्रजीत के मुंह से निकला।

जवाब देने के बजाए खांडेकर विद्रूपपूर्ण ढंग से हंसा और बोला—"जाने दो।"

इंद्रजीत ने लापरवाही से कंधे उचकाए, दरवाजा खोलकर भीतर कदम रखा और जानबूझकर खांसा।

उसके खांसने का मकसद यही था कि वो रवीना को चेताना चाहता था।

भीतर कदम रखकर उसने सारी लाईटें जलाईं और सदानंद को अपने साथ बार वाले कमरे में ले गया।

कमरे में कदम रखते ही सदानंद ने नाक फुलाकर गहरी-गहरी सांसें लीं, फिर व्यंग्य भरे स्वर में बोला—"लेडीज सैंट है। इसका मतलब मैं जो सोच रहा हूं, ठीक सोच रहा हूं।"

"क्या सोच रहे हो?"

"जाने दो।"

इंद्रजीत ने मुंह बिचकाया, फिर जैसे ही वो वाल यूनिट के दराज के सामने पहुंचा, सदानंद उसके आगे आता हुआ बोला—"ये तकलीफ मुझे उठाने दो। जानते नहीं अभी मेरे अफसर ने तुम्हारे सामने मुझे क्या हुक्म दिया था।"

इंद्रजीत ने बुरा-सा मुंह बनाया और एक कदम पीछे हट गया।

सदानंद ने दराज खोलकर एक रूमाल की सहायता से एक रिवॉल्वर बाहर निकाला।

"ये ही रिवॉल्वर है न?" उसने रिवॉल्वर इंद्रजीत के आगे लहराया।

इंद्रजीत का सिर सहमति में हिला।

खांडेकर दराज बंद करने को हुआ, इंद्रजीत जल्दी से

Scanned by CamScanner

बोला—"दराज में एक चाबी भी होगी। उसे भी निकाल लो।"

"दराज खाली है। इसमें कुछ नहीं है।"

"ऐसा कैसे हो सकता है।"

इंद्रजीत ने एक कदम आगे बढ़कर दराज खोली।

वो खाली थी। उसमें टीना का रिवॉल्वर नहीं था।

इंद्रजीत को अपनी रीढ़ की हड्डी सनसनाती महसूस हुई।

बाहर आकर सदानंद ने इंद्रजीत की रिवॉल्वर गोविंद गावड़े के हवाले की तो गोविंद गावड़े ने उसे नाक के पास ले जाकर सूंघा।

"हूं।" फिर एक लम्बी हुंकार भरकर वो इंद्रजीत की तरफ आकर्षित हुआ—"तुम तो कह रहे थे तुम यहां कोई हंगामा नहीं करोगे। अब एक कत्ल भी कर दिया।"

"मैंने कोई कत्ल नहीं किया।" इंद्रजीत विरोधभरे स्वर में बोला—"आपको गलतफहमी हो रही है।"

"रिवॉल्वर की नाल से बारूद की गंध आ रही है।" गावड़े कड़े स्वर में बोला—"इससे शर्तिया गोली चलाई गयी है।"

"मैं एक्सप्लेन कर दूंगा कि इससे गोली बेशक चली है, लेकिन कत्ल कोई नहीं हुआ।"

"इससे जार्ज का कत्ल हुआ है। हमने तुम्हें खुद उसकी हट में भीतर जाते और बाहर जाते देखा था।"

इंद्रजीत चौंका।

"फिर तुमने" उसके मुंह से निकला—"मुझे उसी वक्त गिरफ्तार क्यों नहीं किया?"

"क्योंकि उस वक्त हमें तुम्हें गिरफ्तार करने के आर्डर जो नहीं मिले थे।"

"किसके आर्डर?"

"ए०सी०पी० चंद्रकांत साहब के।"

"यानी कि चंद्रकांत साहब फिर से मेरा बाजा बजाने के लिए अपनी कुर्सी पर लौट आए।"

"ठीक समझे।"

"क्या चक्कर है जहांपनाह?"

"गाड़ी में बैठो। बताता हूं।"

इंद्रजीत शराफत से गोविंद गावड़े के पहलू में बैठ गया।

खांडेकर के आगे बैठते ही ड्राईवर ने जिप्सी आगे बढ़ा दी।

"तुमने वो कहावत सुनी है।" गोविंद गावड़े बोला—"थैली

बनाए हवेली। जिसकी लाठी उसी की भैंस?"

"सुनी है।" इंद्रजीत धीरे से बोला।

"माईकल की थैली ने वो कर दिखाया है जिसकी कि न तो मुझे उम्मीद थी और न की सुनील साब को।"

"मतलब?"

"उसने डी०एम० साहब के बड़े भाई को खरीद लिया है। अब डी०एम० साहब के बड़े भाई इलैक्शन में नहीं खड़े हो रहे।"

"यानी कि अब माईकल निश्चित रूप से जीतेगा?"

"जाहिर है।"

"तभी तुम्हारे जिस्म पर फिर से इंस्पेक्टर की वर्दी आ गयी?"

"हां।"

"और चंद्रकांत अपनी कुर्सी पर?"

"हां।"

एकाएक इंद्रजीत चिंतित दिखाई देता।

चंद्रकांत और माईकल से उसका छत्तीस का आंकड़ा था। अब बाजी उनके हाथों में थी। अब वे कुछ भी कर सकते थे। बेकसूर होते हुए भी इंद्रजीत को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचा सकते थे।

जिप्सी जार्ज के हट हाऊस के सामने रुकी।

गोविंद गावड़े के इशारे पर इंद्रजीत जिप्सी में से उतरा और एक ओर खड़ा हो गया।

तभी गावड़े सदानंद से मुखातिब हुआ—"वापिस बंगले में जाओ। अपने साथ जैक्सन को भी ले जाओ। वहां की अच्छी तरह से तलाशी लो और जो भी संदिग्ध चीज दिखाई दे, उसे फौरन लेकर जाओ।"

सदानंद के चेहरे पर उलझन के भाव आए।

लेकिन उसने कोई सवाल नहीं किया। वह चुपचाप जैक्सन नाम के पुलिस कर्मचारी को अपने साथ ले जाने के लिए एक ओर बढ़ गया।

"कम ऑन।" गावड़े इंद्रजीत से बोला—"हम ए०सी०पी० साहब को ज्यादा इंतजार में नहीं रख सकते। उनके सामने कोई गड़बड़ मत करना। तुमने गड़बड़ी की तो...तो बाद में मुझे दोष मत देना कि मैंने तुम्हें चेताया नहीं।"

इंद्रजीत का सिर समझने वाले अंदाज में हिला।

दोनों हट हाऊस की तरफ बढ़े।

हट हाऊस की सारी लाईटें ऑन थीं। कुछ पुलसिए लॉन में चहल-कदमी कर रहे थे।

इंद्रजीत ने गोविंद गावड़े के साथ लाउंज में कदम रखा।

Scanned by CamScanner

वहां फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट और फोटोग्राफर अपना अपना काम करने में व्यस्त थे।

"साहब कहां हैं?" गावड़े ने वहां खड़े एक सिपाही से पूछा।

"ऊपर बैठे हैं।" सिपाही ने तत्परता से जवाब दिया।

दोनों हॉल की तरफ बढ़े।

तभी उन्हें हॉल के दरवाजे से दो अर्दली एक स्ट्रेचर उठाए वहां आते दिखाई दिए। इंद्रजीत ने स्ट्रेचर पर पड़ी लाश को फौरन पहचाना। वह फिलीपीनो की लाश थी।

स्टेचर के वहां से जाने के बाद वे हॉल की सीढ़ियों के पास पहुंचे।

"यू फर्स्ट।" गोविंद गावड़े ने इंद्रजीत को आगे बढ़ने का इशारा किया।

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया और सीढ़ियां चढ़कर जार्ज के बेडरूम के सामने पहुंचकर ठिठक गया। उसे बैडरूम में ए०सी०पी० चंद्रकांत खाडेकर दो आदमियों के साथ बतियाता दिखाई दिया।

तभी गोविंद गावड़े वहां आया और इंद्रजीत पर एक नजर डालकर कमरे में चला गया। उसने चंद्रकांत के सामने पहुंचकर सैल्यूट मारा और इंद्रजीत को साथ लाने की खबर दी।

चंद्रकांत के चेहरे पर फौरन शिकारी भेड़िए के से भाव नुमायां हो गए। उसने फौरन गावड़े को इंद्रजीत को भीतर लाने का हुक्म दनदनाया।

कुछ पल बाद इंद्रजीत ने बेडरूम में कदम रखा।

जार्ज के मुर्दा जिस्म पर एक सरसरी निगाह डालने के बाद वो पलंग के पास खड़ा हो गया।

चंद्रकांत ने अपने साथ खड़े आदमियों को बाहर जाने का इशारा किया।

फिर उनके वहां से जाने के बाद उसने एक सिगार सुलगाया।

कुछ पलों तक वो इंद्रजीत को खा जाने वाली नजरों से घूरता रहा, फिर वो गावड़े से सम्बोधित हुआ—"इसका रिवॉल्वर?"

गावड़े ने रूमाल में लिपटा इंद्रजीत का रिवॉल्वर चंद्रकांत के हाथ पर रख दिया।

चंद्रकांत ने रिवॉल्वर की नाल को सूंघा, चैम्बर खोलकर देखा, फिर उसने रिवॉल्वर गावड़े की ओर बढ़ा दिया।

गावड़े ने बड़ी तत्परता से रिवॉल्वर थामा और अदब से खड़ा हो गया।

"तो हमारे सुपर हीरो ने" चंद्रकांत इंद्रजीत के करीब आया और मुंह से ढेर सारा धुआं उसके चेहरे पर छोड़ते हुए बोला—"आनन-फानन

बिना सोचे समझे दो कत्ल कर दिए।"

इंद्रजीत ने कुछ कहना चाहा, फिर न जाने क्या सोचकर उसने होंठ भींच लिए।

"इसे हथकड़ियां लगा दो।" चंद्रकांत गोविंद गावड़े की ओर घूमा।

इंद्रजीत ने गोविंद गावड़े के चेहरे पर हिचकिचाहट के पुरजोर भाव देखे।

"नो, सर।" गोविंद गावड़े हिम्मत करके बोला।

"क्यों?" चंद्रकांत की भवें तनीं।

"मैं नहीं समझता कि इसे हथकड़ियों की जरूरत है।"

"तुम्हें समझने के लिए तंखाह नहीं दी जाती।" चंद्रकांत दहाड़ा—"मैं जो कह रहा हूं, वो करो। जल्दी से इसके हाथों में हथकड़ियां फिक्स करो।"

तनिक कसमसाकर गोविंद गावड़े आगे बढ़ा।

अपनी बैल्ट से हथकड़ी निकालकर उसने इंद्रजीत के दोनों हाथों में फिक्स की।

फिर वो हाथ बांधकर एक ओर खड़ा हो गया।

तब चंद्रकांत इंद्रजीत के सामने आया, उसने सिगार का तगड़ा कश लगाया और ढेर सारा धुंआ इंद्रजीत के चेहरे की तरफ उगलते हुए बोला—"तुम क्या समझते थे तुम बच जाओगे? सुनील नाम का खटमल मेरे हाथों से तुम्हारी गर्दन तोड़ने से बचा लेगा। अब मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम कितना गलत समझते थे।" सिगार का एक कश लगाकर, धुंआ फिर से इंद्रजीत के चेहरे पर छोड़कर वो आगे बोला—"बच्चे, मैं कई दिनों से इस दिन का इंतजार कर रहा था। मुझे उम्मीद थी, ये दिन जरूर आएगा। मेरा गॉड मुझे तुम्हारे हाथ पैर तोड़ने का गोल्डन चांस जरूर देगा। अब देखना मैं तुम्हें डबल मर्डर के चार्ज में कैसे फिक्स करके दिखाता हूं।"

"तुम जानते हो कि मैंने जार्ज और फिलीपीनो के कत्ल नहीं किए।" इंद्रजीत निर्भीक स्वर में बोला—"उन्हें मरे हुए कम-से-कम छः सात घंटे..."

इससे आगे इंद्रजीत अपना जुमला मुकम्मल नहीं कर पाया।

बिजली की तेजी से चंद्रकांत का घूंसा उसके पेट में आकर लगा।

इंद्रजीत के मुंह से दर्दभरी चीख खारिज हुई और वो पेट पकड़कर दोहरा हो गया।

चंद्रकांत ने बड़ी बेरहमी से उसे बालों से पकड़ा और उसकी आंखों में आंखें डालकर गुर्राया—"हरामजादे! जुबान लड़ाता है। वो

Scanned by CamScanner

भी अपने बाप से। अब जुबान लड़ाएगा?"

इंद्रजीत ने अपनी पीड़ा पर जबरन जब्त पाया।

"जवाब दे हरामजादे।"

इंद्रजीत ने कोई जवाब नहीं दिया।

"इसे लॉकअप में बंद कर दो।" चंद्रकांत ने इंद्रजीत के बाल झटके से छोड़े—"वहां ये बड़ी शराफत से कबूल करेगा कि इसने दो नहीं चार कत्ल किए हैं। अपने दोस्त का—हैलन नाम की लड़की का और जार्ज और फिलीपीनो का।"

गोविंद गावड़े धीरे से इंद्रजीत के पास आया और उसे कंधे से पकड़कर बोला—"चलो।"

इंद्रजीत जाने के लिए आगे बढ़ा ही था कि चंद्रकांत ने अपनी तर्जनी अंगुली उसकी छाती में गड़ाकर रुकने का इशारा किया।

इंद्रजीत ठिठककर खड़ा हो गया।

"जहां तुम जा रहे हो" चंद्रकांत मुंह बिगाड़कर बोला—"वहां से तुम जिंदा नहीं मुर्दा निकलोगे। इसलिए अपनी कोई आखिरी ख्वाहिश हो तो बता दो।"

"मेरी आखिरी ख्वाहिश" इंद्रजीत रुक-रुककर बड़े अंदाज में बोला—"आप पूरी नहीं कर पायेंगे।"

"फिर भी बोलो।"

"मैं अपने हाथों से तुम्हें मारना चाहता हूं।"

चंद्रकांत ठहाका मारकर हंसा और फिर काफी देर तक हंसता रहा।

थोड़ी देर बाद उसने अपनी हंसी पर जबरन काबू पाया और इंद्रजीत को अंगारे बरसाने वाली निगाहों से घूरते हुए बोला—"हरामजादे! होश में आकर बात कर। जानता है तू क्या कह रहा है?"

"मैंने जो कहना था, कह दिया।" इंद्रजीत बड़े धीरज के साथ बोला—"अब आपके ऊपर मुनहसर है कि आप मेरी ख्वाहिश पूरी करते..."

इंद्रजीत का जुमला पूरा होने से पहले ही चंद्रकांत दहाड़ उठा—"गैट दि पंक आऊट ऑफ माई साईट।"

गोविंद गावड़े ने तत्काल इंद्रजीत को कंधे से पकड़ा और उसे कमरे से बाहर ले आया।

सीढ़ियों से उतरकर वे नीचे पहुंचे, फिर उस जगह पर पहुंचे जहां पुलिस की जिप्सी खड़ी हुई थी।

तभी एक जिप्सी झटके से वहां आकर रुकी।

इंद्रजीत ने जिप्सी में बैठे पुलसिए को देखा।

वो सदानंद खांडेकर था जो थोड़ी देर पहले बंगले की तलाशी लेने गया था।

उसके जिप्सी से उतरते ही गोविंद गावड़े उतावले स्वर में बोला—"कुछ मिला?"

"हां।" सदानंद खांडेकर तत्परता से बोला—"एक और रिवॉल्वर। जिससे चार गोलियां हाल ही में चलाई गयी हैं।"

उसने जेब से रूमाल में लिपटा टीना का रिवॉल्वर निकाला और गोविंद गावड़े को सौंप दिया। गोविंद गावड़े ने रिवॉल्वर का चैम्बर खोलकर देखा, नाल सूंघी फिर तेज लहजे में पूछा—"ये तुम्हें कहां से मिला?"

सदानंद खांडेकर ने तीखी निगाहों से इंद्रजीत की ओर देखा और बोला—"जहां इसने उसे छुपाकर रखा हुआ था। यानी कि पलंग के नीचे।"

"मैंने इसे वहां नहीं रखा।" इंद्रजीत ने तत्काल प्रतिवाद किया—"तुम लोग मेरी बात का यकीन नहीं करोगे। फिर भी मैं सच बोल रहा हूं।"

"मैं इसे हैडक्वार्टर ले जा रहा हूं।" गोविंद गावड़े सदानंद से बोला—"रिवॉल्वर मैं चैक कर लूंगा। कुछ और मिला?"

"नहीं।"

"ठीक है। तुम अपनी ड्यूटी ऑफ करके घर जा सकते हो।" गोविंद गावड़े बोला—"ए०सी०पी० साहब को जितने मातहत चाहिए, वो यहां हैं।"

"ओके, सर! इसे आप अकेले ले जाएंगे!" इंद्रजीत की ओर इशारा करते हुए सदानंद बोला।

"हां।"

तभी इंद्रजीत ने महसूस किया जैसे सदानंद खांडेकर ने अपनी बाहिनी आंख दबाकर गावड़े को कोई गुप्त इशारा किया है, लेकिन अगले ही पल उसे लगा कि उसे वहम हुआ है। सदानंद गोविंद गावड़े को आंख मारकर इशारा क्यों करता? वह उसे अलग ले जाकर अपने दिल की बात कह सकता था।

गोविंद गावड़े इंद्रजीत को एक जिप्सी के पास लेकर आया।

"बैठो।" वह आदेशपूर्ण स्वर में बोला।

इंद्रजीत पैसेंजर सीट की तरफ जैसे ही बढ़ा, गावड़े ने बोला—"वहां नहीं—ड्राईविंग सीट पर।"

"मतलब?" इंद्रजीत उलझन भरे लहजे में बोला।

"जिप्सी तुम ड्राईव करोगे।"

Scanned by CamScanner

"मैं।" इंद्रजीत हैरान हुए बिना न रह सका—"मैं पुलिस कार ड्राईव करूंगा?"

"हां।"

"क्यों?"

"पता चल जाएगा। ड्राईविंग सीट पर बैठो।"

"लेकिन इस हथकड़ी के होते" इंद्रजीत ने दोनों हाथ उठाकर हथकड़ी की नुमाईश की—"मैं कार कैसे ड्राईव कर सकता हूं?"

गोविंद गावड़े ने अपनी वर्दी की जेब से चाबी निकाली और हथकड़ी खोल दी।

इंद्रजीत को एकबारगी यकीन ही नहीं हुआ कि एक पुलिस ऑफिसर ने बजाए हुए उसकी हथकड़ी खोली है।

"म...मेरी समझ में" वह उलझे लहजे में बोला—"सच में कुछ नहीं..."

"बैठो। सब समझ आ जाएगा।"

इंद्रजीत ड्राईविंग सीट पर बैठा और उसने इंजन स्टार्ट कर दिया।

गोविंद गावड़े उसके पहलू में बैठा। उसने सिगरेट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट सुलगाई और फिर इंद्रजीत को जिप्सी आगे बढ़ाने का इशारा कर दिया।

इंद्रजीत ने खामोशी से जिप्सी आगे बढ़ाई।

कुछ पल खामोशी रही।

"इस रिवॉल्वर को हिफाजत से रखना।" खामोशी इंद्रजीत ने भंग की—"ये टीना की लाईसेंस शुदा रिवॉल्वर है।"

"डोंट वरी, रिवॉल्वर हिफाजत से रहेगी।"

"वैसे मुझे इस तरीके से हवालात में ले जाने का क्या उद्देश्य है?" इंद्रजीत ने अचकचाकर पूछा—"जहां तक मैं समझता हूं कि ये एक रिकार्ड ही होगा कि एक कैदी खुद गाड़ी चलाकर एक सिगरेट पीते पुलिस ऑफिसर के साथ हवालात की ओर जा रहा है।"

"मैं तुम्हें हवालात नहीं ले जा रहा।"

"मतलब?" इंद्रजीत चौंके बिना न रह सका—"फिर कहां ले जा रहे हो?"

"चंद्रकांत ने तुम्हारे साथ जो कुछ भी किया था, वो तुम्हें डराने के लिए किया था। वो तुम्हें डरा धमकाकर इस शहर से भगाना चाहता था। उसी के कहने पर मैं तुम्हें यहां से भागने का मौका दे रहा हूं। तुम इसी वक्त ये शहर छोड़ रहे हो।"

इंद्रजीत के दिमाग की रगें तनने लगीं।

कुछ पल तक वह कुछ नहीं बोला।

फिर एकाएक वो हंसा।

गोविंद गावड़े ने तनिक चौंककर इंद्रजीत की तरफ देखा, फिर पूछा—"हंसे क्यों?"

"बात ही हंसने वाली है।" इंद्रजीत बड़े इत्मीनान से बोला—"मुझे रास्ते से हटाने का तुमने कितना बढ़िया मंसूबा तैयार किया। जहांपनाह, मैं अपनी पीठ में गोली खाने का रिस्क नहीं उठाना चाहता। मैं अच्छी तरह से जानता हूं—ताकि मैं भागूं और तुम मुझे शूट करके सारा किस्सा ही खत्म कर दो।"

"ऐसी बात नहीं है।" गावड़े खोखले स्वर में बोला—"तुम गलत सोच रहे हो।"

"वैसे तुम लोगों को कैसे पता चला कि मैं जार्ज से मिलने उसकी हट हाऊस में गया था? क्या तुम मेरी निगरानी कर रहे थे?"

"नहीं। माईकल ने अपने कुछ बंदों को वहां तैनात किया हुआ था। उन्हीं की वजह से माईकल को पता चला था कि तुम वहां गए थे।"

"फिर तो साफ जाहिर होता है कि माईकल के कहने पर ही मेरे साथ ये सलूक किया जा रहा है। तुम मुझे हवालात ले जाने के बजाए गोली से..."

"माईकल ने चंद्रकांत को केवल इतना कहा था कि वो किसी तरीके से तुम्हें शहर से बाहर कर दे।"

"यानी कि वो मेरी जान लेने के फेवर में नहीं है।"

"माईकल खून खराबा कम ही पसंद करता है। वो तुम्हारी जान लेने के फेवर में होता तो तुम अब तक जिंदा नहीं होते।"

"ठीक कहते हो। तो माईकल चाहता है मैं यह शहर छोड़ दूं?"

"हां।"

"क्यों?"

"मैं नहीं जानता।"

"खैर। माईकल के बंदों ने कातिल को जार्ज के घर में जाते और बाहर निकलते नहीं देखा?"

"नहीं। वे रात को जार्ज के हट हाउस पर आए थे। कातिल के कत्ल करके जा चुकने के बाद।"

"हूं।"

तभी गोविंद गावड़े ने टीना का रिवॉल्वर हाथ में लिया और बोला—"तो ये है वो रिवॉल्वर जिससे जार्ज का कत्ल किया गया है?"

"हां।" इंद्रजीत हामी में सिर हिलाता हुआ बोला—"इसी रिवॉल्वर से जार्ज और उसके सर्वेंट का कत्ल किया गया है।"

Scanned by CamScanner

"इसका मतलब दोनों का कत्ल किसी और ने नहीं—टीना ने किया है?"

"तुम्हारे इस सवाल का जवाब टीना ही बेहतर दे सकती है।"

"हमें अपनी नौकरी प्यारी है। हम उससे सवाल-जवाब नहीं कर सकते।"

"मानना पड़ेगा। माईकल का गोवा शहर में अच्छा खासा दबदबा है। अपोजिशन पार्टी के लीडर को ही खरीद लिया। ये बात अखबारों में छपेगी?"

"ऐसी बातें अखबारों में नहीं छपा करतीं।" एकाएक गोविंद गावड़े बदले स्वर में बोला—"कार का रुख बंगले की तरफ कर दो।"

"क्यों?"

"वहां से तुम अपना सामान कार में रखना और यहां से नौ दो ग्यारह हो जाना।"

"नहीं। मैं अभी नहीं जाऊंगा।" इंद्रजीत कार का रुख बंगले की तरफ करते हुए बोला—"अपने दोस्त के कातिल का राजफाश करके ही मैं यहां से जाने की सोचूंगा।"

"कसम खा रखी है?"

"प्रतिज्ञा ली हुई है। जिसे तोड़ना मैं खुद की शान में गुस्ताखी करार देता हूं।"

"अक्ल से काम लो। आज रात को तुम्हारा यहां से चुपचाप खिसक जाना ठीक रहेगा। अगर आज की रात तुम यहां रुक गये तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाएगी।"

"मैंने मुसीबतों से डरना सीखा होता तो बहुत पहले मैं गोवा शहर छोड़ चुका होता। मैं जलते अंगारों पर पैर रखता हूं तो अंगारे ठंडे होने पर ही आगे बढ़ता हूं।"

"तुम सही में पागल हो।"

"पागल नहीं—साइकिक।"

"बात को समझो। तुम आज यहां से नहीं गए तो चंद्रकांत के खास मातहत ऐसा एक्सीडेंट स्टेज करेंगे, जिसमें तुम्हारी हड्डी पसली भी नहीं बचेगी।"

"मुझे चंद्रकांत की परवाह नहीं।" इंद्रजीत लापरवाही से बोला—"फिर मैं उसके मातहतों की परवाह क्यों करने लगा।"

"इंद्रजीत।" एकाएक गोविंद गावड़े आत्मीयता से बोला—"अपनी जुबान के पक्के लोग मुझे बेहद पसंद आते हैं। उनकी दिल से इज्जत करता हूं। तुम अपनी जुबान के पक्के हो। तुम जो कहते हो, उस पर अमल भी करते हो। इसलिए मैं नहीं चाहता कि जानते बूझते अंधे

Scanned by CamScanner

कुएं में गिरो। चंद्रकांत के अंडर में कई ऐसी गश्ती कारें हैं जो तुम्हें कुचलने में एक पल न लगाएंगी। तुम चंद्रकांत का मुकाबला नहीं कर सकते। उसके बंदे ऐसे कामों में परफैक्ट हैं।"

"गावड़े साहब।" इंद्रजीत संजीदगी से बोला—"मेरे प्रति आपने जो अपने उद्‌गार प्रस्तुत किए हैं, मैं उन पर अमल करूंगा, तभी आपकी निगाहों में अजीम शख्स कहलाऊंगा। आज तक किसी भी पुलिस वाले ने मुझे सम्मान की निगाहों से नहीं देखा। आज आपने देखा तो मैं इस सम्मान का सच्चा हकदार बनकर दिखाऊंगा। बस आप से एक छोटी-सी गुजारिश है।"

"बोलो।"

"टीना की रिवॉल्वर आप मेरे हवाले कर दीजिए।"

"टीना की रिवॉल्वर का तुम क्या करोगे?" गोविंद गावड़े तनिक चिहुंककर बोला।

"कातिल का टीना की रिवॉल्वर से गहरा रिश्ता है। इसके जरिए ही मैं कातिल को सामने लाऊंगा।"

"तुम जानते हो इस रिवॉल्वर की खबर सदानंद को है। उसने ये बात चंद्रकांत के कानों में डाल दी तो वो मेरे ऊपर राशन पानी लेकर चढ़ जाएगा। कोई बड़ी बात नहीं—इस चक्कर में मैं सस्पेंड भी हो जाऊं।"

"मैं जानता हूं—सदानंद आपसे बाहर नहीं जाएगा। वक्त रहते मैं आपको ये रिवॉल्वर लौटा दूंगा। मैं जुबान देता हूं।"

"तुमने जुबान दी है, फिर तो ये रिवॉल्वर मुझे तुम्हारे हवाले करनी ही पड़ेगी। लेकिन तुम इसका मिसयूज नहीं करना।"

"आपका हुक्म सिर आंखों पर।"

गोविंद गावड़े ने बड़ी शराफत से टीना की रिवॉल्वर इंद्रजीत के हवाले कर दी।

तभी उनकी कार बंगले के सामने पहुंच गयी।

इंद्रजीत कार से उतरकर गोविंद गावड़े के पास आया और उससे हाथ मिलाते हुए बोला—"आपने जो सहयोग दिया गावड़े साहब, मैं उसे ताजिंदगी नहीं भूलूंगा। मैं वायदा करता हूं एक दो दिन में कातिल सबके सामने होगा।"

"ऐसा हो गया तो मुझे दिली खुशी होगी। नाओ, बैस्ट ऑफ लक।"

इंद्रजीत ने बड़ी गर्मजोशी से गावड़े से हाथ हिलाया और फिर एक तरफ हट गया।

गावड़े ने इंद्रजीत को जीत का अंगूठा दिखाया और फिर कार

Scanned by CamScanner

की ड्राईविंग सीट पर सरक गया।

अगले पल उसकी कार ढेर सारी धूल उड़ाकर वहां से गायब हो गयी।

इंद्रजीत बंगले की ओर बढ़ा ही था कि सहसा उसकी निगाह एक ओर से जाती कार की हैड लाईट्स पर पड़ी।

आंखों में असमंजस के भाव लाकर वो कार के पास आने का इंतजार करने लगा। कार पास आई। वो एक मर्सडीज कार थी।

तभी उसका दरवाजा खुला और टीना ने बाहर कदम रखा। उस घड़ी वो जीन की टाईट पैंट और एक जैकेट पहनी थी, जिसमें वो बेहद सैक्सी दिखाई दे रही थी।

"रिवॉल्वर कहां है?" इंद्रजीत के करीब आकर वो उतावले स्वर में बोली।

"मेरे पास है।" इंद्रजीत बड़े सब्र से बोला।

"दिखाओ।"

"पहले तुम तो अपना माल दिखाओ।"

"कौन-सा चमड़ी वाला...या दमड़ी वाला?"

"दमड़ी वाला।"

टीना कार के पास गयी और सीट पर पड़ा एक सूटकेस उठाकर वापिस आई।

"इसमें दो लाख कैश हैं।" वह वो सूटकेस इंद्रजीत की तरफ बढ़ाते हुए बोली—"बाकी सात-आठ की ज्वैलरी है।"

इंद्रजीत ने सूटकेस पकड़ा और उसे हथेली पर रखकर तौला।

टीना का कहना सौ फीसदी ठीक था। उसने सूटकेस बंद करके अपनी बगल में दबाया और जेब से रूमाल में लिपटा रिवॉल्वर बाहर निकाला।

"तुम्हारा रिवॉल्वर यही है न?" उसने रिवॉल्वर वाला हाथ टीना की ओर बढ़ाया।

टीना जैसे ही रिवॉल्वर छूने को हुई, इंद्रजीत जल्दी से बोला—"छूना मत। इस पर कातिल की अंगुलियों के निशान मौजूद हैं।"

टीना ठिठक गयी।

"यानी कि..." फिर वो जल्दी से बोली—"ये रिवॉल्वर फिलहाल तुम मुझे वापिस नहीं कर रहे।"

"ठीक समझीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि इसके जरिए से मैं असली कातिल का राजफाश जो करने जा रहा हूं।"

"लेकिन रिवॉल्वर तो मेरा है। ये किसी के नोटिस में आ गया तो मेरी जान सांसत में पड़ जाएगी।"

"नहीं आएगा। मैं इसे हिफाजत से रखूंगा।"

"क्या गारंटी है।"

"किस बात की?"

"रिवॉल्वर को हिफाजत से रखने की?"

"ये लोहे का बना है। मैं इसे उबालकर नहीं खा सकता। ये किसी और चीज का बना होता तो मैं कोई गारंटी नहीं देता।"

"इसके तुम्हारे पास होने से मुझ पर कोई आंच तो नहीं आएगी?"

"कैसे आएगी?"

"तुम बताओ।"

"तुम्हीं बताओ।"

"इसे तुमने पुलिस वालों के हवाले कर दिया तो?"

"तभी तो तुम अपनी मुसीबत से निजात हासिल कर पाओगी। ये रिवॉल्वर कातिल ने चुराया है।"

"कोई गड़बड़ हो गयी तो?"

"नहीं होगी।"

"हो गयी तो?"

"अरे बाबा, कहा न नहीं होगी।"

"ठीक है। मान लेती हूं। भीतर चलें?"

"क्यों?"

"दमड़ी तो मैंने तुम्हें दे दी—अब चमड़ी भी..."

"एक बात का जवाब सच्चे दिल से देना।"

"पूछो।"

"दमड़ी की तुम्हारे पास रेलम पेल है—इसलिए तुमने बिना हिचक के मेरे हवाले कर दी। चमड़ी तुम्हारे पास एक ही है। इसे तुम मेरे हवाले खुशी-खुशी करोगी या अपनी मजबूरी के तहत...मन मारकर?"

"मन मारकर।" टीना तीखे स्वर में बोली—"मैंने अपनी चमड़ी किसी ऐरे गैरे नत्थू खैरे को आज तक नहीं दिखाई। तुम्हें मैं इसलिए

Scanned by CamScanner

दिखा रही हूं, क्योंकि मैं मजबूर हूं।"

"ऐसी बात है तो तुम जा सकती हो।"

"कहां?" टीना हकबकाई-सी बोली।

"अपने घर।"

"लेकिन तुमने तो मेरी चमड़ी का सौदा..."

"मजाक में किया था। मजाक करने की मेरी पुरानी आदत है।"

"तुमने मजाक किया था?"

"हां।"

"म...मैं तो सच समझ बैठी थी। मैंने तो तुम्हें मन-ही-मन हजार गालियां दे डाली थीं। मुझे पता होता कि तुम मजाक कर रहे हो तो शायद..."

"तुम मुझे गालियां नहीं देतीं। राईट?"

"राईट।"

"तुम जा सकती हो।"

"त...तुम कोई चाल तो नहीं चल रहे।" एकाएक टीना सन्दिग्ध भाव से बोली—"कहीं ऐसा न हो कि तुम मुझे फिर से किसी..."

"यकीन करो। मैं कोई चाल नहीं चल रहा। मैं जो कुछ भी कर रहा हूं—तुम्हारे भले के लिए कर रहा हूं। कातिल ने बहुत खूबसूरती से तुम्हें अपनी साजिश का मोहरा बनाया है। एक दो दिन में जब मैं कातिल के चेहरे पर पड़ी नकाब हटाऊंगा तो तुम्हें खुद-ब-खुद यकीन हो जाएगा कि मैंने तुम्हारे भले के लिए कातिल को अपनी साजिश का शिकार बनाया है।"

"तुम तो अच्छे आदमी निकले यार।" एकाएक टीना तारीफ भरे स्वर में बोली—"तुम मुझे पहले क्यों नहीं मिले?"

"उससे क्या होता?"

"मैं तुमसे दोस्ती जरूर करती।"

"रात गयी, बात गयी। कल बीत गया। अब हमारी दोस्ती कैसे हो सकती है। मेरे ख्याल से नहीं हो सकती। क्यों ठीक कहा न मैंने?"

"हमारी दोस्ती आने वाले वक्त में..."

"मुश्किल है। कातिल को बेनकाब करने के बाद मैं यह शहर छोड़ दूंगा।"

"ओह!"

टीना ने इंद्रजीत से हाथ मिलाया, उसके गाल पर एक प्यार भरा चुंबन अंकित किया।

फिर वह अपनी कार पर सवार। कार वहां से चली गयी।

बंगले में आकर इंद्रजीत ने अपने लिए एक पैग तैयार किया और फिर सिगरेट सुलगाकर कुछ सोचने लगा।

तभी उसके कानों में एक कार के इंजन की आवाज सुनाई पड़ी। कार उसी की तरफ आ रही थी।

वह तत्काल अपनी जगह से उठा और उस खिड़की के पास पहुंचा, जहां से वह कार, और उसमें सवार शख्स को बड़ी सहूलियत से देख सकता था।

बंगले के सामने रुकने वाली कार मारूति थी, और उसमें से जिस युवक ने बाहर कदम रखा था—वो इंद्रजीत के लिए बिल्कुल अनजान था। उस घड़ी उसके कंधे पर फोटोग्राफरों वाला बैग मौजूद था। लंबे डग भरकर वह मुख्य द्वार पर पहुंचने ही वाला था कि इंद्रजीत खिड़की के पास से हटा और मुख्य द्वार पर पहुंच गया।

इधर घंटी बजी, उधर इंद्रजीत ने दरवाजा खोला।

आगंतुक लगभग पच्चीस साल का, शक्ल सूरत से जहीन दिखाई देने वाला एक मरियल-सा युवक था।

"मिस्टर इंद्रजीत?" इंद्रजीत पर नजर पड़ते ही वो बोला।

"यस।" इंद्रजीत बोला।

"मैं गोवा टाईम्स का चीफ रिपोर्टर फ्रैंक हूं।" उसने अपना दाहिना हाथ इंद्रजीत की तरफ बढ़ाया—"मिस्टर रत्नाकर मोरे ने मेरा जिक्र आपसे जरूर किया होगा।"

इंद्रजीत को तत्काल ध्यान आया कि आगंतुक कौन था।

उसने फ्रैंक से हाथ मिलाया और उसे भीतर ले आया।

उसके एक सोफे पर बैठने के बाद इंद्रजीत उत्सुकता से बोला—"तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहां ठहरा हुआ हूं।"

"आज दोपहर को मैं इंस्पेक्टर गोविंद गावड़े से मिला था। उन्हीं की वजह से मुझे पता चला था कि तुम यहां ठहरे हुए हो।"

"ओह!"

"आई हैव गॉट समथिंग फॉर यू। कुछ खास जानकारियां हैं मेरे पास जो तुम्हारे लिए फायदेमंद साबित हो सकती हैं।"

"क्या हैं जानकारियां?"

"पहले एक सिगरेट पिलाओ।"

"सिगरेट से पहले एक पैग चलेगा?"

"बिल्कुल चलेगा।"

इंद्रजीत बॉर रूम में आया। उसने दो पैग बनाए और फिर फ्रैंक

Scanned by CamScanner

के सामने इत्मीनान से बैठ गया।

फ्रैंक ने गिलास टकराकर चीयर्स कहा और फिर पैग का एक घूंट भरने के बाद बोला—"मोरे साहब ने मुझे टॉम पास्कल की बैक ग्राउंड टटोलने का काम सौंपा था। उसके बारे में मैंने जो जानकारियां इकट्ठा की हैं, वो सच में बम विस्फोट करने वाली हैं।"

"क्या जानकारियां हासिल की हैं तुमने उसके मुतल्लिक?"

"बताऊंगा। पहले मैं तुम्हें अपने एक कारनामे के बारे में बताता हूं। कुछ दिनों पहले मैं पॉस्कल का इंटरव्यू लेने उसके पास गया था। इंटरव्यू देने के लिए वो छूटते ही तैयार हो गया। वो फ्री की पब्लिसिटी का भूखा है। इंटरव्यू के दौरान मैंने उसे मिट्टी की एक मूर्ति बनाने को कहा। उसने जो मूर्ति बनायी—मैंने उसे बड़ी सावधानी से अपने कब्जे में कर लिया। जानते हो मैंने उससे मूर्ति क्यों बनवाई थी?"

इंद्रजीत का सिर नकारात्मक ढंग से हिला।

"मूर्ति के बहाने" फ्रैंक विजयपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए बोला—"मैंने उस पर उसकी अंगुलियों के निशान लिए थे। आज जब मैं वो मूर्ति लेकर सी०आई०डी० के हैडक्वार्टर में लेकर गया तो एक सनसनीपूर्ण बात पता चली।"

"क्या?"

"पास्कल कोई और नहीं" एकाएक फ्रैंक बम छोड़ते हुए बोला—"नटॉरियस ड्रग स्मगलर जैक है। उसका असली नाम पास्कल नहीं—जैक है। वो सालों से इस धंधे में है। सन् 1995 में वो पकड़ा भी गया था। तब उसे दो साल की सजा हुई थी और उसने ये सजा मुम्बई जेल में काटी थी। सन् 1997 में जेल से बाहर उसने फिर से ये धंधा शुरू कर दिया था, लेकिन इस बार वो बहुत सावधानी से ड्रग सप्लाई करता था, लेकिन उसकी सावधानी किसी काम न आई। वो दिल्ली में हेरोईन समेत पकड़ा गया। वहां उसकी मुलाकात क्रिस से हुई, जो कि उसी की तरह ड्रग के धंधे में था।"

"ये क्रिस वो ही क्रिस तो नहीं है—जो आजकल परेरा नाईट क्लब का मालिक बना बैठा है?"

"हां, ये क्रिस वो ही क्रिस है।"

"फिर?"

"तिहाड़ जेल से दोनों की खलासी सन् 2000 में हुई थी। तब ये दिल्ली से गोवा में आए थे। कुछ दिनों तक ये शांत रहे—फिर इन्होंने अपने धंधे को एक नए तरीके से चलाने का प्लान तैयार किया। क्रिस ने माईकल परेरा से जुगलबंदी करके उसका क्लब अपने नाम करवाया और पॉस्कल को स्कूल ऑफ सिरॉमिक्स खरीदवा दिया।"

"इन कामों के लिए दोनों पैसा कहां से लाए?" जाम का एक घूंट भरकर इंद्रजीत ने पूछा।

"इन कामों के लिए उन्हें जरूर माईकल से माली इमदाद हासिल हुई होगी।"

"इस बात का कोई सबूत है?"

"सबूत ही तो नहीं है।" फ्रैंक असहाय भाव से बोला—"सबूत होता तो ये लोग छुट्टे घूम रहे होते?"

"हूं।"

दोनों ने खामोशी से जाम उदस्थ किए फिर एक सिगरेट सुलगा ली।

"डी०एम०साहब के बड़े भाई की इलैक्शन से कदम पीछे हटाने वाली बात तुम्हारे जहूर में तो आ गयी होगी?" सिगरेट का तगड़ा कश लगाने के बाद इंद्रजीत ने पूछा।

"बिल्कुल आई है। वो बिक चुका है। उसे माईकल ने खरीद लिया है। तभी उसने अपने कदम पीछे हटाए हैं।"

"ये बात तुम अपने अखबार में छापोगे?"

"बिना किसी ठोस सबूत के हम ये बात कैसे छाप सकते हैं।"

"हट हाऊस में हुए कत्लों की बाबत तुम्हें कुछ पता चला?"

"ज्यादा नहीं।"

"इन कत्लों में क्रिस और पास्कल का हाथ हो सकता है?"

"क्या कह सकते हैं। हो भी सकता है और नहीं भी।"

"अच्छा तुम्हारे दफ्तर में कोई बढ़िया-सी सेफ है?"

"हां, है। कोई काम है?"

"मेरे पास एक खास चीज है जिसे मैं हिफाजत से रखवाना चाहता हूं।" इंद्रजीत ने रूमाल में लिपटी टीना की रिवॉल्वर फ्रैंक की तरफ बढ़ाई—"इस रिवॉल्वर को तुम तब तक अपनी सेफ में रख लोगे, जब तक मैं इसे बाहर निकालने को न कहूं?"

"श्योर।"

फ्रैंक ने रूमाल समेत रिवॉल्वर उठाई, उसकी नाल पोंछी, फिर आंखें सिकोड़कर बोला—"ये कहीं वो रिवॉल्वर तो नहीं है जिससे जार्ज और उसके सर्वेंट का कत्ल किया गया है?"

"ये वो ही रिवॉल्वर है?"

"इसका मालिक कौन है?"

"उसका जिक्र करना फिलहाल ठीक न होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि कत्ल उसने नहीं—किसी और ने किए हैं।"

Scanned by CamScanner

"किसने?"

"दो तीन लोग हैं मेरी निगाहों में। कातिल का राजफाश करने से पहले मैं उसके खिलाफ पुख्ता सबूत जुटा लेना बेहतर समझता हूं। इसलिए मैं यह रिवॉल्वर तुम्हें सुरक्षित रखने के लिए दे रहा हूं।"

"ये मेरे दफ्तर की सेफ में सेफ रहेगी और तुम्हारे कहने पर ही बाहर आएगी। कोई और काम?"

"कल सारे दिन अपने दफ्तर में ही रहना। मुझे तुम्हारी कभी भी जरूरत पड़ सकती है।"

फ्रैंक की आंखों में अजीब से भाव नुमाया हुए।

अगले पल वह चिंतित भाव से बोला—"कातिल के बारे में तुम काफी कुछ जानते हो। इस लिहाज से खतरा तुम्हारे सिर पर मंडरा रहा है। ऐसा नहीं हो सकता कि कातिल की बात तुम मुझसे शेयर कर लो। उसके बाद हम दोनों उसका पर्दाफाश... ।"

"कातिल कौन है—अभी मैं यकीन से नहीं कह सकता। अभी मेरे पास केवल कुछ थ्योरियां हैं। जब तक उसके खिलाफ पुख्ता सबूत हासिल नहीं हो जाते, मैं उसका राजफाश नहीं होने देना चाहता।"

"ठीक है। तुम मुझे थ्योरी बता दो। जरा सोचो। कातिल को बेनकाब करने से पहले तुम किसी मुसीबत में फंस गए तो उसका राजफाश कौन करेगा?"

"डोंट वरी।" इंद्रजीत लापरवाही से बोला—"मुझे कुछ नहीं होगा। मैं आबेहयात् पीया हुआ है।"

"आबेहयात्?"

"यानी कि अमृत पिया हुआ है। कोई मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकता। तुम निश्चिंत रहो। मैं तुम्हें कल बुलाऊंगा।"

"ठीक है। लेकिन मेरी एक बात मानोगे?"

"बोलो।"

"ये जगह शहर से दूर है, और सुनसान भी है। बेहतर होगा कि आज की रात तुम मेरे घर पर सो जाओ।"

"माई फ्रेंड, मेरी चिंता मत करो। मैं यहां ठीक हूं।"

फ्रैंक ने कंधे उचकाए।

"वैल, ओके।" फिर वो सिग्रेट का बचा हुआ टुकड़ा ऐश ट्रे में मसलते हुए बोला—"खतरों से खेलने के तुम परफैक्ट खिलाड़ी जान पड़ते हो। एनी_वे," उसने अपना विजिटिंग कार्ड इंद्रजीत के हवाले किया—"इस पर मेरे घर और दफ्तर के फोन नम्बर दर्ज हैं। आठ बजे से पहले मैं अपने घर पर मिलूंगा। उसके बाद दफ्तर में। ओके।"

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया।

फ्रैंक अपनी जगह से उठा।

"रिवॉल्वर का ख्याल रखना।" इंद्रजीत बोला।

"इसकी तुम चिंता मत करो।" फ्रैंक बोला—"इसे मैं सेफ में रखने के बाद ही अपने घर जाऊंगा।"

उसने इंद्रजीत से हाथ मिलाया और बाहर की तरफ बढ़ गया।

इंद्रजीत उसे छोड़ने बाहर तक आया।

वो बरामदे में तब तक खड़ा रहा जब तक उसकी कार की टेल लाईट उसकी आंखों से ओझल नहीं हो गयी।

भीतर आकर इंद्रजीत ने एक सिग्रेट सुलगाई और सोफे पर बैठ गया एकाएक वह अकेलापन महसूस करने लगा था। उसे फैंक के साथ चला जाना चाहिए था।

उसका कहना काफी हद तक ठीक था—इस सुनसान जगह में कातिल अपने खूनी इरादों में यकीनन कामयाब हो सकता था।

तभी एक आहट हुई।

इंद्रजीत चौंके बिना न रह सका।

उसे तत्काल एहसास हुआ कि इस बंगले में वो अकेला नहीं था।

वहां उसके अलावा कोई और भी था।

कौन था?

दीपक का कातिल?

कई पलों तक इंद्रजीत सुन्न-सा बैठा रहा फिर उसका हाथ धीरे से कोट की भीतरी जेब की तरफ गया।

तभी उसे ध्यान आया कि उसका रिवॉल्वर गोविंद गावड़े के पास था और टीना का रिवॉल्वर उसने फ्रैंक के हवाले कर दिया था।

अब वो निहत्था था।

उसने अब जो कुछ भी करना, अपने बलबूते पर करना था।

तभी आहट एक बार फिर हुई।

आहट सुनते ही इंद्रजीत को समझते देर न लगी कि आहट बैडरूम की ओर से हुई थी।

वो धीरे से अपनी जगह से उठा और लाईट ऑफ करके दीवार के साथ चिपक गया।

खिड़की से भीतर आ रही चांद की रोशनी में वह काफी कुछ देख सकता था।

तभी उसे एक दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी।

"तुम जो भी हो—वहीं खड़े रहो।" इंद्रजीत बुलंद स्वर में

Scanned by CamScanner

बोला—"मेरे हाथ में गन है। तुमने होशियारी दिखाने की कोशिश की तो मैं इसकी सारी गोलियां तुम्हारे जिस्म में पेवस्त कर दूंगा।"

कहने के साथ ही इंद्रजीत अपनी जगह से थोड़ा परे हो गया। ताकि उसका हमलावर आवाज की दिशा में गोली चलाता तो उसका निशाना चूक जाता।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। कोई फायर नहीं हुआ। कोई अप्रिय घटना नहीं घटी।

सिर्फ इंद्रजीत को एक जनाना आवाज सुनाई दी—"इंद्रजीत।"

"कौन हो तुम?" इंद्रजीत उच्च स्वर में बोला—"तुम्हारी आवाज साफ नहीं सुनाई दे रही।"

"इंद्रजीत, मैं रवीना हूं।" अब की बार इंद्रजीत को रवीना की साफ आवाज सुनाई दी।

"ओह! तुम हो।" इंद्रजीत ने एक गहरी सांस छोड़ी।

फिर उसने तनिक आगे बढ़कर लाईटें ऑन कर दीं।

रवीना लाउंज के कोने में खड़ी थी। वह परेशान और सहमी दिखाई दे रही थी। उसने एक झीनी-सी नाईटी पहनी हुई थी, जिसमें वो बहुत दिलकश जान पड़ रही थी।

इंद्रजीत पर नजर पड़ते ही रवीना ने राहत की सांस ली।

"तुमने तो मार ही डाला था।" वह राहत भरी सांस लेती हुई बोली—"जानते हो, मेरा दिल इतने जोर से धड़का था कि मुझे लगने लगा था कि मेरा हार्ट अभी फेल हो जाएगा।"

"जानेमन, मेरी हालत भी कुछ-कुछ ऐसी हो गयी थी।" इंद्रजीत तेजी से बोला—"तुम ये बताओ कि तुम यहां कैसे? तुम तो चली गयी थीं?"

"मैं वापिस आ गयी थी। जान, मुझे तुम्हारी चिंता सता रही थी। मैं नहीं जानती थी कि मुझे क्या करना चाहिए? मैं अपनी कार ड्राईव करके प्रॉमिनेड (समुद्र के किनारे बनी सड़क) पर गयी और यूं ही चहल-कदमी करने लग गयी। वहां मुझे ठंड लगने लगी तो मैं वापिस आ गयी। मेरे वापिस आते ही पुलिस वाले आ गए। उन्होंने यहां की तलाशी ली और चले गए। फिर मैं तुम्हारे इंतजार में बैडरूम में जाकर सो गयी। मैं बस अभी उठी हूं।"

इंद्रजीत ने जेब से रूमाल निकाला और चेहरा पोंछा।

"सॉरी। मैंने तुम्हें डरा दिया।" वह बोला—"लेकिन तुमने भी तो मेरे होश उड़ा दिये थे। मैं समझा था कि मेरा आखिरी वक्त आ गया है।"

"आई एम सॉरी, जान। मैं अभी-अभी नींद से उठी थी। मैं ये

देखने के लिए बाहर आई थी कि लाईटें किसने ऑफ की थीं। मैंने सोचा भी था कि लाईटें तुमने ऑफ की होंगी, लेकिन बाद में मैं डर के मारे दरवाजे के पीछे दुबक गयी थी। जब तुम लगभग चीख कर बोले थे—तब तो मैं बुरी तरह डर गयी थी।"

"अगेन सॉरी।" इंद्रजीत धीमे स्वर में बोला।

रवीना इंद्रजीत के करीब आई और उसने अपनी बाहें उसकी गर्दन में डाल दीं।

रवीना के नर्मो-नाजुक खुशबू से महकते जिस्म की गरमी पाकर इंद्रजीत मदहोश-सा होने लगा।

उसने उसे अपने आगोश में लिया और उसके जिस्म की गोलाईयों पर तेजी से हाथ फेरने लगा।

"किस मी, इंद्र।" तभी रवीना मदमस्त स्वर में बोली।

इंद्रजीत ने उसका तगड़ा चुंबन लिया।

"बैडरूम में चलें?" रवीना फुसफुसाई।

इंद्रजीत ने सहमति में सिर हिलाया और उसे बाहों में उठा लिया।

वो उसे बैडरूम में लेकर आया। उसने उसे धीरे से लिटाया और उसके ऊपर लेट गया।

"अभी नहीं।" रवीना बोली।

"क्यों?" इंद्रजीत बोला।

"मैं कुछ जानना चाहती हूं।"

"क्या जानना चाहती हो?"

"तुम मुझसे सच में शादी करोगे या सिर्फ टस्का दे रहे हो?"

इंद्रजीत खामोश रहा।

"जवाब दो।"

"सच कहूंगा तो तुम बुरा मान जाओगी।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं जो सच कहूंगा, उसे सुनना तुम्हें गंवारा न होगा।"

"ज्यादा से ज्यादा तुम यही कहोगे न कि तुम मुझसे शादी करने के हक में नहीं हो।"

"बात शादी की नहीं, किसी और की है।"

"किसकी?"

"मेरी कसमों की?"

"तुम्हारी कसमों की?"

"हां। मैंने कभी शादी न करने की कसम खाई हुई है। जिसे मैं अपने जीते जी टूटने नहीं दूंगा।"

Scanned by CamScanner

"ऐसी वाहियात कसम क्यों खाई तुमने? किसी ने धोखा दे दिया था?"

"हां।"

"पांचों अंगुलियां बराबर तो नहीं होतीं।"

"मेरी नजर में औरत जात की पांचों अंगुलियां बराबर होती हैं।"

"मेरी पांचों अंगुलियां बराबर नहीं हैं। चाहो तो आजमाकर देख लो।"

"मुश्किल है।"

"कैसे?"

"यहां की पुलिस से मुझे शहर छोड़ने की धमकी मिल चुकी है। मुझे एक दो दिन में यहां से कूच करना पड़ेगा।"

"पुलिस ने धमकी क्यों दी?"

"यहां की पुलिस नहीं चाहती कि मैं अपने दोस्त के कातिल को बेनकाब करूं।"

रवीना के चेहरे पर दुख के भाव आए। वह इंद्रजीत का चेहरा दोनों हाथों में भरते हुए बोली—"तुम सच में चले जाओगे?"

"हां।" इंद्रजीत बोला—"जाना ही पड़ेगा। मेरा यहां रुकना मेरे लिए ठीक नहीं है। लेकिन जाने से पहले मैं कम-से-कम एक ऐसे धंधे को बंद जरूर कर दूंगा, जो खुलेआम मौत बेचता है।"

"मैं कुछ समझी नहीं।"

इंद्रजीत ने रवीना के हाथ हाथों में लिए और बोला—"माचिस के जो खोल तुम्हारे बैग में जार्ज ने रखे थे, मैं उनकी मिस्ट्री सॉल्व कर चुका हूं। वे माचिस मात्र माचिस न होकर ड्रग बाऊचर्स थे।"

"ड्रग बाऊचर्स! क्या मतलब हुआ इसका?"

रवीना ने उलझन भरी निगाहों से इंद्रजीत को देखा।

"बताता हूं।" एक पल ठिठककर इंद्रजीत बोला—"असल में क्रिस और टॉम पास्कल डोप पैडलर्स हैं। वे दोनों नॉरकॉटिक्स विभाग के लिए जाने पहचाने लोग हैं। ड्रग स्मगलिंग के इल्जाम में वो कई सालों की सजा काट चुके हैं। यहां उन्होंने पार्टनरशिप करके ड्रग के धंधे को बड़े खूबसूरत ढंग से अंजाम दिया था—ताकि किसी को कानों कान उनके धंधे की भनक तक न लगे।"

"दोनों डोप पैडलर्स हैं तो वे अभी तक पकड़े क्यों नहीं गए?"

"क्योंकि उनकी गेम बहुत तेज थी। यहां आकर दोनों ने अपने आपको ऐसे धंधों में ढाल दिया जो कि जायज था। क्रिस ने जहां तुम्हारे बाप से नाईट क्लब खरीद लिया था, वहां पॉस्कल ने सिरैथिक्स का सामान बेचने के लिए एक दुकान खरीद ली थी। नारकॉटिक्स विभाग

ने उनके बुरे रिकॉर्ड को मद्देनजर रखते हुए जांच पड़ताल की तो उन्हें उनके धंधों में कोई खोट नहीं दिखाई दिया। इसलिए उन्होंने क्रिस और पास्कल को वॉच करना छोड़ दिया।"

"जबकि दोनों किसी तरीके से ड्रग सप्लाई कर रहे थे?"

"हां।"

"किस तरीके से?"

"क्रिस क्लब में आने वाले मालदार चरसियों से रकम लेकर एक स्पेशल माचिस देता था, जिस पर एक सीरियल नंबर छपा होता था। चरसी वो माचिस लेकर पास्कल के स्कूल में जाता था, जहां उसे माचिस के एवज में ड्रग दे दी जाती थी। बाद में क्रिस को माचिसें लौटाता था और अपना हिस्सा ले लेता था।"

"इट्स फैन्टास्टिक।"

"नॉट ऑल दैट फैन्टास्टिक!" इंद्रजीत बोला—"ड्रग सप्लाई करना आसान काम नहीं है। ड्रग ऑपरेटिंग रफ रैकेट है, रवीना। इसी रैकेट की वजह से मेरे दोस्त का कत्ल हुआ था। क्योंकि नंबरों वाली माचिसें मैंने उसके पास देखी थीं जोकि मैंने अपने कब्जे में की थीं। लेकिन बाद में कातिल ने उन्हें बिना नंबरों की माचिसों से बड़ी खूबसूरती से बदल दिया था।"

"फिर तो तुम्हारे दोस्त के कातिल क्रिस और पास्कल हैं। उन्होंने ही अपने धंधे को बचाने के लिए उसका कत्ल या तो किया होगा या फिर किसी प्रोफेशनल किलर से करवाया होगा।"

"मेरे पास वक्त होता तो मैं अपने दोस्त के कातिल को सामने जरूर लाता। मेरे पास वक्त नहीं है इसलिए मैं नॉरकॉटिक्स डिपार्टमेंट को इस धंधे की असलियत से वाकिफ करूंगा और यहां से चला जाऊंगा। और असलियत सामने आएगी इस खोल की वजह से!" इंद्रजीत ने हिप पॉकेट से माचिस का खोल निकाला और फिर वापिस पाकेट में रख दिया।

"कहां जाओगे?" रवीना व्यग्र भाव से बोली।

"कहीं भी। दुनिया बहुत बड़ी है। कहीं भी चला जाऊंगा।"

"फिर भी पता तो चले?"

"शायद मुम्बई जाऊं।"

"वहां क्यों?"

"क्योंकि मेरे यार दोस्त मुम्बई में ही हैं। तुम भी मेरे साथ चलो।"

"म...मैं?"

Scanned by CamScanner

"हां। कोई दिक्कत है?"

"दिक्कत तो कोई नहीं है। लेकिन डैडी नहीं जाने देंगे।"

"मैं तुम्हारी प्रॉब्लम जानता हूं। तुम ऐशो आराम में पली बढ़ी हो। उनके बिना तुम जीने की सोच भी नहीं सकतीं? ठीक कहा न।"

रवीना ने बेचैनी से पहलू बदला।

"अगर तुम अपने डैडी की दौलत पर लात मारकर अपने दम पर कुछ कमाओगी तो तुम्हें बहुत खुशी होगी।"

रवीना धीरे से पलंग पर लेट गयी और हाथों का तकिया बनाकर सोचने लगी।

"तुम सोचो।" इंद्रजीत बोला—"मैं जरा फ्रैश होकर आता हूं।"

रवीना ने अपना सिर धीरे से हिलाया।

इंद्रजीत ने अपने कपड़े उतारे और उन्हें वहीं पड़ी कुर्सी पर फेंककर बाथरूम में चला गया।

बाथरूम में आकर उसने दरवाजा बंद किया, शॉवर चलाया और फिर दरवाजे के पास आकर खड़ा हो गया। उस पल उसका दिल एकाएक तेजी से धड़कने लगा था।

दस सेकेंड तक इंद्रजीत उसी पोज में खड़ा रहा।

फिर उसने दरवाजे को हैंडल से पकड़कर थोड़ा-सा खोला।

दरवाजे की झिर्री में से उसने बैडरूम में झांका तो उसे रवीना उसके कपड़ों को तेजी से टटोलती दिखाई दी।

इंद्रजीत के देखते-देखते उसने उसकी पैंट की हिप पॉकेट से माचिस का फोल्डर निकाला और अपने कब्जे में कर लिया।

उस पल उसके चेहरे पर राहत के जो भाव एकाएक उभर आए थे, उन्हें देख इंद्रजीत चौकन्ना हुए बिना न रह सका।

दरवाजा बंद करके उसने शॉवर बंद किया।

फिर कुछ पलों बाद उसने दरवाजा खोलकर बैडरूम में कदम रखा।

इंद्रजीत के अप्रत्याशित आगमन से रवीना उछल पड़ी और उसकी आंखें फैलती चली गयीं।

इंद्रजीत ने रवीना की ओर कोई ध्यान न दिया।

वह सीधा पलंग के पास पहुंचा।

उसने उसके सिरहाने पर रखा तकिया उठाया और उसे तेजी से फर्श पर फेंक दिया।

तकिये के नीचे एक आईस पिक (बर्फ काटने वाला सुआ) पड़ा था जो कि एक लकड़ी के हैंडल में अच्छी तरह फिक्स था।

बैडरूम में एकाएक ऐसा सन्नाटा व्याप्त हो गया था कि पिन भी गिरती तो बम की सी आवाज करती।

रवीना की काटो तो खून नहीं जैसी हालत थी।

वो पत्थर की शिला में तब्दील खाली खाली निगाहों से आईस पिक को देख रही थी।

इंद्रजीत ने लापरवाही से आईस पिक उठाया और उसकी नोक पर अंगुली रखते हुए बोला—"तुमने ठीक सोचा था रवीना। मेरी जगह कोई और होता तो तुम्हारा सोचा हकीकत में तब्दील होता और उसकी लाश यहीं बिस्तर पर पड़ी होती।"

रवीना खामोश रही।

"तुम होशियार तो निकलीं, लेकिन ज्यादा नहीं।" इंद्रजीत बोला—"तुमने जो अभिनय किया, उसकी तारीफ करता हूं, लेकिन तुम झूठ बोलने में सफल नहीं हो सकीं। तुम झूठ बोलने में कामयाबी हासिल कर लेतीं तो शायद आज मैं यहां मरा पड़ा होता।"

"मैंने कौन-सा झूठ बोला?" रवीना कठिन स्वर में बोली—"मेरा कौन-सा झूठ तुमने पकड़ा?"

"तुमने मुझे बताया था कि माचिसों के खोल तुम्हारे बैग में जार्ज ने रखे थे। वो भी उस दौरान जब तुम नाईट क्लब में बैठे थे। मेमसाब, फॉर युअर काईंड इनफॉरमेशन, उस दिन जार्ज और टीना क्लब गए ही नहीं थे। उस रोज जार्ज किसी और लड़की के साथ था—जिसकी वजह से उसका टीना से झगड़ा हुआ था। तुम्हारे इसी झूठ ने मुझे वक्त रहते चौकन्ना कर दिया था। अगर मैं चौकन्ना नहीं होता, तो तुम आज मुझे हलाक कर ही चुकी होतीं।" एक पल ठिठककर इंद्रजीत आगे बोला—"जब तुमने मुझे अपना बंगला रहने के लिए दिया था—तब मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था—और मेरे दिल में तुम्हारी बहुत अच्छी छवि बनी थी। लेकिन आज मुझे सौ फीसदी यकीन हो रहा है कि मुझे ये बंगला तुमने अपने स्वार्थ के लिए जान-बूझकर दिया था ताकि मैं तुम्हारा चेहरा बेनकाब न कर सकूं और अगर करने भी लगूं तो तुम मेरे दोस्त की तरह मुझे सीधा भगवान के पास पहुंचा दो। ये एक शांत और सुनसान जगह है। जहां तुम मेरा कत्ल बड़ी सहूलियत से कर सकती थीं। एम आई राईट?"

रवीना ने बड़ी मुश्किल से अपना सफेद चेहरा उठाया और इंद्रजीत की तरफ देखा।

इस बार इंद्रजीत को उसके चेहरे पर मासूमियत की जगह

Scanned by CamScanner

कठोरता दिखाई दी।

"तुमने जिस तरीके से आईस पिक तकिए के नीचे रखा हुआ था" इंद्रजीत बोला—"उसे देखकर अब मैं इस नतीजे पर पहुंच चुका हूं कि तुमने मेरे दोस्त का कत्ल कैसे किया होगा। रवीना, जब भी कोई मर्द किसी औरत की बाहों में होता है तो वह सब कुछ भूल जाता है। वो ये भी भूल जाता है कि वो जिसकी बाहों में है, वो उसे मारने का खतरनाक मंसूबा भी बांध सकती है। तुमने मेरे दोस्त को किसी तरह फुसलाया और उसे बॉथिंग स्टेशन के केबिन में ले गयीं। जहां तुमने उसे प्यार करने का आमंत्रण दिया और जब उसने तुम्हारे आमंत्रण को स्वीकार किया, तुमने तकिए के नीचे छुपाया आईस पिक निकाला और उसकी गर्दन में घोंप दिया। एम आई राईट?"

"तुम मुझे गलत समझ रहे हो।" रवीना धीरे से बोली—"मेरा तुम्हारे दोस्त को मारने का कोई इरादा नहीं था। अपनी मौत उसने खुद बुलाई थी। वो मुझे ब्लैकमेल कर रहा था। उसने किसी तरह से मेरे माचिस के फोल्डर चुरा लिए थे। उसका कहना था कि जब तक मैं उसे खुश नहीं करूंगी, वो मेरे फोल्डर नहीं लौटाएगा। मैंने उसे यूं ही नहीं मारा। मैंने उसे अपने बचाव के लिए मारा। मैं उससे हमेशा-हमेशा के लिए छुटकारा पाना चाहती थी। मैं उसके जाल में भुंगे की तरह फंसी नहीं रहना चाहती थी।"

"तुम अब भी झूठ बोल रही हो।" इंद्रजीत शुष्क स्वर में बोला—"मैं मानता हूं कि मेरे दोस्त में कई कमियां थीं लेकिन वो ब्लैकमेलर हरगिज नहीं था। वो ब्लैकमेलिंग को बहुत गिरा हुआ काम मानता था। उसने कई लोगों से दुश्मनी इसी वजह से की थी क्योंकि वे ब्लैकमेलिंग जैसा नीच काम कर रहे थे। तुमने उसे कत्ल क्यों किया इसकी वजह मैं बताता हूं।"

इंद्रजीत ने एक सिगरेट सुलगाया और फिर कमरे में चहल कदमी करते हुए बोला—"असल में तुम जार्ज से प्यार करती थीं और वो टीना की आंखों में धूल झोंककर तुमसे प्रेम की पींगें बढ़ा रहा था। वो टीना से जो पैसा ऐंठता था—तुम पर खर्च करता था, लेकिन टीना बेवकूफ नहीं थी। उसे तुम दोनों की कारगुजारियों पर शक हो गया था। तभी उसने अपने खासुलखास बटलर की मदद से मेरे दोस्त दीपक को तुम्हारी कारगुजारियों का पुख्ता सबूत जुटाने के लिए रिटेन किया था। दीपक के लिए ये एक मामूली काम था। उसने कुछ ही दिनों में तुम्हारे खिलाफ पुख्ता सबूत हासिल कर लिए होंगे। तब तुमने उसके सामने गुजारिश की होगी कि वो जार्ज की मिस्ट्रेस के तौर पर उसका नाम न ले। तुमने इस काम की उजरत उसे अपने आपको पेश करने की

Scanned by CamScanner

रखी होगी। इसी दौरान उसके हाथ में तुम्हारे माचिस के खोल लग गए होंगे जिनकी तुम पहले ही क्रिस को पेमेंट कर चुकी थीं। तुम्हें जब लगा कि उन खोलों की वजह से तुम ड्रग हासिल नहीं कर पाओगी, तुमने उसका कत्ल कर दिया।"

"नहीं। ऐसा कुछ नहीं हुआ था।" रवीना होंठ भींचकर बोली—"उसने मुझ पर हमला किया था।"

"और उसके हमले का जवाब तुमने आईस पिक से दिया था जोकि तुम पहले ही अपने तकिए के नीचे रख चुकी थीं।" इंद्रजीत उपहास भरे स्वर में बोला—"पागल किसी और को बनाना। मैं पागल बनने वाला नहीं।"

"तुम मेरी बात का यकीन करो। मैं उसका कत्ल इरादतन नहीं किया। उसके कत्ल की नौबत उसके हाथ उठाने पर आई थी।"

"ऐसी बात है तो तुम्हारे पास इस बात का जवाब है कि तुम वेश बदलकर उसके होटल में क्यों गयी थीं?"

रवीना के मुंह से बोल न फूटा। वो बेचैनी से पहलू बदलने लगी।

"तुमने अपना वेश इसलिए बदला था।" इंद्रजीत बोला—"क्योंकि तुम्हारे मन में चोर था—दाढ़ी में तिनका था। तुम नहीं चाहती थीं कि कोई तुम्हें दीपक के साथ देख सके। दीपक के कत्ल का मंसूबा तुमने पहले ही बांध लिया था—इसलिए तुमने ये सावधानी बरती थी, लेकिन होटल के हाउस डिटेक्टिव ने तुम्हारी एक हरकत को नोट कर लिया था—जिसकी वजह से मुझे यकीन हुआ था कि कातिल तुम ही हो।"

"क्या नोट किया था उसने?"

"जब तुम काऊंटर के पास खड़ी दीपक के आने का इंतजार कर रही थीं तब तुम्हारी अंगुलियां काउंटर पर प्यानो वाले अंदाज में चल रही थीं। जब मैं तुम्हारे घर गया था, तुम मुझे प्यानो बजाते हुए ही दिखाई दी थीं। उस वक्त तो मैं तुम पर शक नहीं कर सका था, लेकिन बाद में धीरे-धीरे लगने लगा था कि कातिल तुम ही हो।"

"इंद्रजीत, ये ठीक है—मैंने तुम्हारे दोस्त का आत्मरक्षा के तहत कत्ल किया था लेकिन बाकी के कत्ल मैंने नहीं किए।"

"झूठ बोलने से कोई फायदा नहीं रवीना।" इंद्रजीत शांत भाव से बोला—"बाकी के कत्ल भी तुमने किए हैं। कैसे किए हैं, मैं बताता हूं। तुम ये बात जान चुकी थीं कि जार्ज की दिलचस्पी तुम में कम होती जा रही थी और वो हैलन में दिलचस्पी लेने लगा था। तुम पास्कल की शॉप में इसके चक्कर में जाती रहती थीं—इसलिए तुम्हारी हैलन से जान पहचान हो गयी थी। जिस पास्कल की शॉप में ड्रग्स के चक्कर में जाती रहती थीं—उसी रोज तुम हैलन को किसी बहाने से जार्ज के

Scanned by CamScanner

बारे में ही कुछ बताने के बहाने से बीच पर ले गयीं। बीच पर एक रास्ता ऐसा भी है जहां से बॉथिंग स्टेशन में चोरी छुपे जाया जा सकता है। तुम हैलन को उस रास्ते से उस केबिन में ले गयीं जहां तुमने दीपक का कत्ल किया था। वहां पहुंचते ही हैलन वहां से जाने की जिद करने लगी तो तुमने उसे सुए से हलाक कर दिया!"

"य...ये झूठ है।"

"ये सच है। हैलन को मारकर तुम्हारा मकसद पुलिस के जहूर में ये बात लाना था कि दीपक को जो लड़की अपने साथ ले गयी थी—वो हैलन ही थी। हैलन का कत्ल करने के बाद तुम आराम से बैठी ही थीं कि तुम्हें आईस पिक का ख्याल आया जो तुम उसकी लाश के पास छोड़ आई थीं। तुम भागी-भागी वहां पहुंचीं। वहां तुम्हें मैं दिखाई दिया। तुमने मेरे सिर पर किसी चीज से हमला किया और सुए के हैंडल पर अपनी अंगुलियों के निशान मिटाकर चली गयीं। अब बोलो क्या बोलती हो?"

रवीना खामोश रही।

"अब मैं जार्ज के कत्ल के बारे में बताता हूं।" इंद्रजीत बोला—"मेरे द्वारा तुम्हें ये बात पता ही चल गयी थी कि जार्ज का आजकल किसी और लड़की के साथ चक्कर चल रहा था, जिसकी वज़ह से टीना उसे जान से मारने उसके घर पहुंची थी। तुमने इस बात का तत्काल फायदा उठाया। तुमने टीना की रिवॉल्वर चुराई और जार्ज के साथ-साथ उसके सर्वेंट का कत्ल करके रिवॉल्वर वहां फेंक दी—ताकि कत्ल का इल्जाम टीना पर जाए। ठीक कहा न मैंने?"

"नहीं। झूठ कहा है। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।"

"तुमने ऐसा ही किया है। लेकिन, तुम कबूल नहीं कर रहीं। मैं तुम्हें कुछ और बातें भी बताता हूं जोकि शायद तुम कबूल न करो। दीपक के कमरे की तलाशी लेने वाला कोई और नहीं तुम थीं। दीपक का कत्ल करने के बाद तुम उसकी चाबी लेकर होटल के पिछवाड़े से छुपते-छुपाते उसके कमरे में गयी थीं और वहां तुमने माचिसों के खोल तलाशने के लिए सोफे तक उधेड़ डाले थे। अफसोस की बात ये रही कि तुम्हें वो खोल कहीं नहीं मिले। फिर मैं जब तुम्हारे डैडी से मिला और मैंने उन्हें अपने मकसद की बाबत बताया तो तुम्हें लगा कि मैं दीपक के काम को अंजाम न दे दूं। इसलिए तुमने आनन-फानन नाईट क्लब के लैटर पैड पर खून से एक धमकी भरी चिट्ठी लिखी और कमरे में सरका दी—ताकि मैं डर कर गोवा से भाग जाऊं।"

इंद्रजीत ने रवीना की तरफ देखा—"कबूल करती हो—तुमने खून से चिट्ठी लिखकर मुझे भेजी थी।"

Scanned by CamScanner

"तुम साबित कुछ नहीं कर सकते।" एकाएक रवीना बदले स्वर में बोली—"तुमने जो कुछ भी कहा, वो काफी हद तक ठीक है। मैंने ही तुम्हारे दोस्त का कत्ल किया था। उसके कत्ल की नौबत यूं आई थी कि उसे कहीं से माचिसों की डीलिंग के बारे में पता चल गया था। तभी उसने मेरी माचिस चुरा ली थी। वो उस माचिस के जरिए क्रिस और पॉस्कल का धंधा बंद करवाना चाहता था। वो ड्रग का धंधा बंद करवा देता तो मैं तड़प-तड़प कर मर जाती। गोवा में एक ये ही लोग हैं—जिनसे ड्रग्स हासिल करने में मुझे आसानी रहती है और मेरी हकीकत भी किसी के सामने नहीं आती। मैं कहीं और से ड्रग लेती और ये बात डैडी को पता चल जाती तो वे शर्तिया अपने हाथों से मेरा गला घोंट देते। तुम्हारा दोस्त जिद पर अड़ गया था, इसलिए मैंने उसे कत्ल किया। हैलन का कत्ल मैंने इसलिए किया था ताकि पुलिस गुमराह हो जाए। वो ये समझे कि दीपक को अपने साथ ले जाने वाली लड़की हैलन ही थी। जार्ज का कत्ल मैंने इसलिए किया क्योंकि वो मेरे साथ बेवफाई करने पर उतारू हो गया था। जार्ज किसी और लड़की के चक्कर में नहीं पड़ता तो मैं उसे कभी नहीं मारती।"

"कमाल है! तुमने तो एक ही सांस में सब कुछ सच बोल दिया।"

"एक सच बोलना और बाकी रह गया है।"

"क्या?"

"जिस रोज तुम मुझे छोड़ने के लिए क्लब जा रहे थे—तब बंगला मैंने ही बंद किया था। बंगला बंद करने से पहले मैंने एक धमकी भरी चिट्ठी वहां इसलिए रख दी थी कि ताकि तुम डर जाओ और गोवा से किनारा कर लो।"

"लेकिन मैं नहीं गया। मैं ठीठ बना रहा और अपने दोस्त के कातिल को सामने लाने के लिए हाथ-पैर मारता रहा। आज मुझे सच में बहुत खुशी हो रही है कि मैं अपने दोस्त के कातिल को सामने ले आया।"

"खुश तो तुम्हें होना ही चाहिए, इंद्र।" रवीना धीमी चाल चलकर वॉट यूनिट के पास पहुंची और उसके आगे खड़ी होकर बोली—"बिस्तर में मैंने तुम्हारे साथ जो कलाबाजियां खाई थीं, वो कलाबाजियां तुम सात जन्मों में भी नहीं खा सकते थे। पूरा गोवा मेरी शक्ल देखने को तरसता है। पूरे गोवा में मैं फेमस हूं। मेरे डैडी मेरी शादी जहां करेंगे, देख लेना वो कोई टाटा, बिरला या अंबानी जैसा ही फिल्दी रिच होगा। उस वक्त तुम सपने लेना कि तुमने इतने बड़े आदमी की बीवी के होठों का रस पीकर उसके साथ बिस्तर में

Scanned by CamScanner

कलाबाजियां खाई हैं।"

"मुझे ऐसी बातों से कोई खुशी नहीं होती। ऐसी बातें..."

तभी इंद्रजीत की नजर रवीना पर पड़ी।

उस पल उसके हाथ में एक छोटी-सी रिवॉल्वर थी। जिसे उसने इंद्रजीत की बेध्यानी का फायदा उठाकर वाल यूनिट के दराज से निकाल लिया था।

"बोलो, बोलो, चुप क्यों हो गए।" रवीना वो रिवॉल्वर इंद्रजीत की ओर तानकर बोली—"तुम नहीं बोलोगे तो तुम्हारी बोलने की आखिरी ख्वाहिश कैसे पूरी होगी।"

"तो ये इंतजाम भी किया हुआ है।" इंद्रजीत व्यंग्य भरे स्वर में बोला—"तुम औरत नहीं नागिन हो। जिसके फन में नहीं, पूंछ में भी जहर होता है।"

"तुम कुछ भी कह सकते हो। तुम्हें मारने से पहले मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे मन में कोई बात रह जाए।"

"तुम मुझे नहीं मार सकतीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम मुझसे प्यार करती हो। ये बात तुम अपनी जुबान से कबूल चुकी हो।"

"मैं तुमसे प्यार करती थी—लेकिन अब नहीं। अब तुम मेरे लिए वो जहरीले सांप हो—जिसे कुचलने में ही मेरी भलाई है।"

"मुझे कुचलकर तुम भी जिंदा नहीं बचोगी।" इंद्रजीत पासा फेंकते हुए बोला—"मैं ऐसा इंतजाम कर चुका हूं कि मेरे मरते ही ये बात जगजाहिर हो जाएगी कि कातिल कौन है? तब तुम्हारे साथ-साथ माईकल की भी इतनी किरकिरी होगी कि वो मारे शर्म के मुंह छुपाता फिरेगा कि वो एक कातिल का बाप है। तब इलैक्शन में वो ऐसी पछाड़ खाएगा कि तमाम उम्र इलैक्शन में खड़ा होने की नहीं सोचेगा।"

रवीना के चेहरे पर चिंता के भाव उभरे।

"त...तुम झूठ बोल रहे हो।" वो हकलाई-सी बोली—"तुमने ऐसा कोई इंतजाम नहीं किया हुआ। तुम कोई चाल चल रहे हो।"

"ठीक है। मैं चाल चल रहा हूं। मुझे गोली मारो और किस्सा खत्म करो।"

"क्या इंतजाम किया हुआ है तुमने?"

"गोली चलाओ। उसके बाद बताता हूं।"

"तुमने कोई इंतजाम नहीं किया। तुम हवा में तीर छोड़ रहे हो।"

"ठीक है। फिर गोली चला दो।"

रवीना कशमकश में पड़ती दिखाई देने लगी।

Scanned by CamScanner

"अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है।" इंद्रजीत लापरवाही से बोला—"मेरे दोस्त की कातिल तुम हो—ये बात सिर्फ मैं और मेरा खास आदमी जानता है। इसके अलावा ये बात कोई और नहीं जानता। अक्ल से काम लो और मेरे साथ चलो। हम इसी वक्त गोवा छोड़ देंगे और मुम्बई के लिए रवाना हो जाएंगे। वहां पहुंचकर हम एक नई जिंदगी की शुरूआत करेंगे।"

रवीना सोच में पड़ती दिखाई देने लगी।

इंद्रजीत धीरे से चलकर उसके करीब आया।

उसने उसके कंधों पर हाथ रखे और आंखों में झांकते हुए बोला—"जान, मेरी बात मानने में तुम्हारी भलाई है। तुम कातिल हो—ये बात तुम्हारे बाप को पता चल गयी तो वो तुम्हें मारने से पीछे नहीं हटेगा। वो इलैक्शन में खड़ा हो रहा है। वो पॉलीटिशियन बनने जा रहा है। पॉलीटिशियन सब कुछ बरदाश्त कर सकते हैं—लेकिन अपनी बदनामी नहीं।"

"ये ठीक कह रहा है।"

तभी दरवाजे की ओर से माहौल में गूंजे एक पुरुष स्वर ने दोनों को चौंकाकर रख दिया।

दोनों की निगाहें स्वतः दरवाजे की ओर गयीं तो उन्हें माईकल खड़ा दिखाई दिया।

उस वक्त उसके हाथ में एक गन थी और चेहरे पर जमाने भर की क्रूरता।

माईकल पर नजर पड़ते ही रवीना पत्ते की तरह कांपने लगी।

अचानक सामने आई माईकल नाम की मुसीबत से निजात पाने के लिए इंद्रजीत का जेहन तेजी से दौड़ने लगा।

माईकल दोनों के पास आया।

"ये गन दो।" उसने एक हाथ रवीना की तरफ बढ़ाया।

रवीना ने बड़ी शराफत से हाथ में थमी गन उसके हवाले कर दी।

"कुछ कपड़े पहन लो।" गन हाथ में आते ही माईकल मुंह बिगाड़कर बोला—"इन कपड़ों में तुम जिस्म बेचने वाली जान पड़ रही हो।"

रवीना ने सिर झुकाया और बैडरूम की ओर बढ़ गयी।

उसके बैडरूम में समाते ही माईकल इंद्रजीत की ओर घूमा।

"तुम भी अपने कपड़े पहन लो।"

वह बोला—"मेरे कपड़े बैडरूम में हैं।" इंद्रजीत बोला—"रवीना के बाहर आते ही..."

Scanned by CamScanner

उसने अपना वाक्य जानबूझकर अधूरा छोड़ दिया।

तभी रवीना कपड़े पहनकर वापिस लौटी।

माईकल ने इंद्रजीत को एक इशारा किया तो वह बैडरूम की ओर चला गया।

थोड़ी देर बाद वो अपने पूरे कपड़ों में दोनों के सामने था।

माईकल ने दोनों को बैठने को कहा तो दोनों शराफत से बैठ गए।

माईकल वहां चहलकदमी करने लगा।

कुछ पलों तक वह चहलकदमी करता रहा, फिर खरखराती आवाज में बोला—"टीना ने मुझे बताया था कि तुम यहां एक आदमी के साथ हो। मैं यहां उस आदमी को देखने आया था। वो आदमी ये होगा।" उसने इंद्रजीत की तरफ इशारा किया—"मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। रवीना, तुमने मुझे बहुत निराश किया है। ज्यादातर बच्चे अपने मां बाप को निराश ही करते हैं, लेकिन मैं और आदमियों जैसा नहीं हूं। मैंने अपनी बदचलन बीवी को कहां तो यह सोचकर सहा कि मेरी लड़की पाक है। वो उसके जैसी बदचलन नहीं है, लेकिन आज मुझे पता चल गया कि मेरी बीवी और बेटी में कोई फर्क नहीं है। दोनों ही हद से गिरी हुई हैं।"

रवीना ने कुछ कहना चाहा फिर न जाने क्या सोचकर होंठ भींच लिए।

"मैंने जो कुछ यहां आकर सुना" माईकल बोला—"वो सच है?"

"अ...आपने क्या सुना?" रवीना के मुंह से निकला।

"वही जो सच है। तुमने इसके दोस्त का कत्ल किया है?"

"ये झूठ है।" रवीना दांत भींचकर बोली—"मैंने कोई कत्ल नहीं किया। ये झूठ बोल रहा है।"

"मैं झूठ नहीं बोल रहा।" इंद्रजीत ने तत्काल प्रतिवाद किया—"मैं सौ फीसद सच बोल रहा हूं—इस बात का सबूत ये सुआ है।" उसने कोट की भीतरी जेब से रूमाल में लिपटा आईस पिक निकाला, जिसे वो बैडरूम से अपने साथ ले आया था—"इस सुए पर आपकी लड़की की फिंगर प्रिंट्स मौजूद हैं। आप इस बात की तसदीक कर सकते हैं। आप अपनी लड़की से ये पूछिये कि ये आईस पिक इसके पास किस खुशी में था। ये इससे क्या बर्फ काटकर बेचती थी?"

रवीना का चेहरा बुझता चला गया।

"ये सुआ तुम्हारे पास क्यों था?" माईकल बोला—"इस सवाल का जवाब तुम्हारे पास नहीं होगा। क्यों नहीं होगा—ये बात भी मैं

Scanned by CamScanner

जानता हूं। इसलिए झूठ मत बोलना।"

"ड...डैडी वो बात ये है कि..."

"कुछ मत बोलो। मैं तुम्हारे मुंह से झूठ नहीं सुनना चाहता। जो हुआ सो हुआ। अब तुम मेरी बात कान खोलकर सुनो। मैं इस शहर पर राज करता हूं। यहां की पुलिस वही करेगी जो मैं कहूंगा। ये छोकरा कुछ नहीं कर सकता। मेरे सामने इसकी हैसियत एक मच्छर जैसी है, जिसे मैं जब चाहे कुचल सकता हूं। तुम्हें इससे डरने की जरूरत नहीं। मैं केवल सच जानना चाहता हूं। तुमने इसके दोस्त का कत्ल किया था?"

रवीना ने माईकल की तरफ देखा, फिर धीरे से हामी में सिर हिला दिया।

"क्यों किया?" माईकल ने पूछा। उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव उभर आए थे।

"वो क्रिस और पॉस्कल के रैकेट का पर्दाफाश करने पर उतारू हो गया था। उसे पता नहीं कहां से माचिसों के बारे में पता चल गया था। मेरी माचिसें हाथ लगते ही वो पुलिस के पास जाने का इरादा कर बैठा था। इसलिए मैंने वक्त रहते ही उसे..."

रवीना ने अपना वाक्य जानबूझकर अधूरा छोड़ दिया।

"क्रिस और पॉस्कल के रैकट के पर्दाफाश होने से तुम्हें क्या फर्क पड़ता था।" माईकल आंखें सिकोड़कर बोला—"जो तुमने उसे मारा?"

"इन्हें ये फर्क पड़ता था" तभी इंद्रजीत बोल उठा—"कि इन्हें ड्रग्स नहीं मिलती। माईकल साहब, आपको जानकर बहुत खुशी होगी कि आपकी लड़की ड्रग एडिक्ट है। ड्रग्स न मिलने के डर ने इसने मेरे दोस्त का कत्ल बेवजह करवाया।"

माईकल के चेहरे पर जमाने भर की पीड़ा के भाव नुमायां हुए।

"ये सच कह रहा है?" उसने आहत भाव से रवीना की तरफ देखा।

रवीना का सिर धीरे से हामी में हिला।

माईकल उस शख्स की तरह दिखाई देने लगा—जिसे भरे बाजार में नंगा कर दिया गया हो।

"बाकी के कत्ल!" वह पीड़ा भरे स्वर में बोला—"बाकी के कत्ल भी तुमने किए?"

रवीना ने चुपचाप हामी भर दी।

"तुमने मुझे जो खुशी दी है" माईकल व्यंग्य भरे स्वर में बोला—"मैं उम्र भर नहीं भूल सकता। तुमने तो मेरे खून का कर्ज चुका

Scanned by CamScanner

दिया। तुमने जो किया है, मुझे उस पर नाज है।"

रवीना खामोश रही।

"खैर, कोई बात नहीं।" माईकल धीरे से बोला—"हर कोई अपनी जिंदगी जीने के लिए आजाद है। तुमने जो जिंदगी पकड़ी वो यकीनन जिल्लत भरी है, फिर भी मैं तुम्हें इससे निजात दिलाऊंगा। मैं तुम्हें ऐसी जगह पहुंचाऊंगा—जहां से तुम अपने जुर्मों के बारे में सोचना छोड़ दोगी।"

"अ...आप मुझे जेल भेजेंगे?" रवीना कम्पित स्वर में बोली।

"नहीं। मैं तुम्हें जेल नहीं भेजूंगा। मैं तुम्हें कहीं और भेजूंगा। ऐसी जगह जहां तुम अपने गुनाहों की सजा भुगत सको।"

"म...मतलब?"

"मतलब यही है तुम इसी वक्त यह शहर छोड़ रही हो।" उसने अपने बटुए से नोटों का पुलंदा निकाला और रवीना की तरफ उछाल दिया—"मुम्बई में तुम्हारी जो आंटी है—तुम अभी इसी वक्त उसके पास जा रही हो। ये पैसे रख लो। इनकी तुम्हें जरूरत पड़ेगी।"

रवीना ने शराफत से पैसे रख लिए।

"तुम्हें वहां तब तक रहना है" माईकल बोला—"जब तक मैं आने के लिए न कहूं। समझीं?"

"जी।"

"इस घटना का जिक्र तुमने किसी से नहीं करना है। अपनी आंटी से भी नहीं।"

"जी।"

"अब आज्ञाकारी बच्चों की तरह उठो और इंद्रजीत की कार में बैठकर मुम्बई के लिए रवाना हो जाओ।"

"इंद्रजीत की कार में?"

"जो कह रहा हूं—उस पर अमल करो। तुम्हारे पास ज्यादा वक्त नहीं है।"

"जी।"

"इसे अपनी कार की चाबी दो।" माईकल इंद्रजीत की ओर घूमा।

"आपके पास कारों की कमी नहीं है।" इंद्रजीत उलझे लहजे में बोला—"फिर आप मेरी कार..."

"पता चल जाएगा। चाबी दो।"

"लेकिन वो कार मेरी नहीं मेरे दोस्त...।"

"तुम्हें उसकी कीमत मिल जाएगी।"

"लेकिन..."

Scanned by CamScanner

"मैं जो कह रहा हूं" माईकल कठोर स्वर में बोला—"लगता है तुम्हें समझ में नहीं आ रहा।"

"समझ में आ रहा है। आप मुझसे मेरे दोस्त की कार की चाबी मांग रहे हैं।"

"फिर?"

इंद्रजीत ने चुपचाप मारूति कार की चाबी रवीना को थमा दी।

"वहां पहुंचते ही खबर करना।" माईकल बोला—"और किसी चीज की जरूरत पड़े तो बताना।"

रवीना माईकल के पास आई और सिर झुकाकर बोली—"डैडी आप सच में गॉड में हैं। आप मेरे लिए जो कर रहे हैं वो सच में..."

"मां-बाप औलाद पर कोई एहसान नहीं करते। भावुक मत बनो और मैंने जो कहा है...उस पर अमल करो।"

रवीना ने माईकल का चुम्बन लिया और फिर वहां से रुखसत हो गयी।

पीछे कई पलों तक खामोशी रही।

"मेरी कार में रवीना को भेजने का मकसद?" अंत में खामोशी इंद्रजीत ने भंग की।

"मैं उसे उसके किए की सजा देना चाहता हूं।" माईकल कठोर स्वर में बोला—"तुम्हारी कार में वो कभी मुम्बई नहीं पहुंच पाएगी। तुम्हारी कार के यहां से निकलते ही पुलिस की पैट्रोल कारें उसके पीछे लग जाएंगी और एक खाई में गिरा देंगी।"

इंद्रजीत की आंखें भय से फट पड़ीं।

"य...यानी कि..." उसके मुंह से निकला—"तुम अपनी बेटी की सजा उसकी जान लेकर दे रहे हो।"

"हां। उसने मेरे माथे पर ऐसा दाग लगाया है जिसे मैं उम्र भर नहीं धो सकता। मैंने पहले ही ए०सी०पी० को कहा हुआ है कि वो तुम्हारी कार दिखाई देते ही एक्सीडेंट स्टेज करवा कर तुम्हें खत्म कर दे। मैंने तुम्हारी कार में अपनी बेटी को इसलिए भेजा ताकि मुझे उसके खून से अपने हाथ रंगने न पड़ें। वो एक्सीडेंट में मारी जाएगी। सभी यही समझेंगे कि एक्सीडेंट उसी की ग़लती से हुआ था। मैं उसे सजा देता तो सब मुझ पर अंगुलियां उठाते। मैं इलैक्शन में खड़ा होने जा रहा हूं। मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता।"

"लेकिन वो तुम्हारी बेटी..."

"मेरी बेटी ऐसी निकलेगी, मुझे पता होता तो मैं उसके पैदा होते ही उसका गला घोंट देता। खड़ी में नाक कटवा के रख दी है उसने मेरी।"

Scanned by CamScanner

इंद्रजीत खामोश रहा।

माईकल ने थोड़ी देर चहलकदमी की फिर ठिठकते हुए बोला—"अब तुम गोवा छोड़ोगे या पुलिस को रवीना की कारगुजारियों के बारे में बताओगे?"

"पुलिस के पास जाने का कोई फायदा नहीं।" इंद्रजीत बोला—"मैं गोवा छोड़ना चाहता हूं। आप मुझे जाने की इजाजत दें तो। आप मेरे जाने में कोई रोड़ा नहीं अटकाएं तो।"

"मैं कोई रोड़ा नहीं अटकाऊंगा। तुम जा सकते हो।"

"ऐसे हालात में मुझे एक गन की जरूरत पड़ेगी—अगर आप मुझे कोई गन..."

माईकल ने रवीना की गन इंद्रजीत की तरफ उछाल दी।

"कुछ और?" फिर वह बोला।

"मैं ए०सी०पी० से मिलना चाहता हूं।" इंद्रजीत बोला—"आप उनसे मेरी मुलाकात का कोई इंतजाम..."

"मैं उसे फोन कर दूंगा।"

"आप ये नहीं पूछेंगे कि मैं उससे क्यों मिलना चाहता हूं?"

"तुमने जरूर अपना उधार चुकता करना होगा। तुम कुछ भी करो। लेकिन इस शहर से चले जाओ। मैं इलैक्शन में खड़ा हो रहा हूं। मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता। समझे।"

"ठीक है। फिर खाकसार को इजाजत दीजिए।"

अपना तामझाम समेट कर इंद्रजीत एक टैक्सी में सवार हुआ।

सबसे पहले वो फ्रैंक के फ्लैट पर पहुंचा। फ्रैंक को उसने तमाम घटनाओं से वाकिफ कराया और वे सारे सबूत दे दिए जो माईकल को डुबाने के लिए काफी थे। इन सबूतों के नुमायां होते ही माईकल ने चारों खाने चित्त हो जाना था।

फिर इंद्रजीत ने अपना रुख ए०सी०पी० चंद्रकांत बांदेकर की कोठी की तरफ किया।

इंद्रजीत के कहने पर टैक्सी ड्राईवर ने टैक्सी ए०सी०पी० चंद्रकांत बांदेकर की सरकारी कोठी से थोड़ा परे रोकी।

"मैं अभी आया।" इंद्रजीत टैक्सी से बाहर निकला और की तरफ बढ़ गया।

गेट पर तैनात संतरियों ने इंद्रजीत को संदिग्ध निगाहों से देखा।

"क्या काम है?" एक संतरी ने कर्कश स्वर में पूछा।

"बांदेकर साहब से मिलना है।" इंद्रजीत सहज स्वर में

Scanned by CamScanner

बोला—"उनसे कहिए कि इंद्रजीत आया है।"

"साहब से मिलने का टाईम लिया हुआ है?" संतरी बोला।

"नहीं।"

"फिर साहब नहीं मिल सकते। साहब उसी से मिलते हैं जो टाईम लेकर आता है।"

"मेरा उनसे मिलना बहुत जरूरी है।"

"हर कोई यही कहता है। साहब ने हमें सख्त हिदायत दी हुई है कि हम किसी भी शख्स को जिसने उनसे मिलने का समय नहीं लिया—भीतर न जाने दें।"

"अरे भई, मुझे सच में बहुत जरूरी काम है।"

"कल आना।"

"मैं आज रात को ही गोवा छोड़ रहा हूं। मैं कल नहीं जा सकता।"

संतरी ने दूसरे संतरी की तरफ देखा।

"मैं फोन पर बात करता हूं।" दूसरा संतरी वहीं बने केबिन में घुस गया।

कुछ पल बाद वह लौटा तो उसके हाथ में कार्डलैस फोन था।

उसने गेट का छोटे दरवाजा खोला और हाथ बढ़ाकर फोन इंद्रजीत को थमा दिया।

इंद्रजीत ने फोन कान से लगाया और बोला—"ए०सी०पी० साहब, मैं जानता हूं कि आप मुझसे मिलने के ख्वाहिशमंद नहीं हैं, लेकिन आप यह जानने के जरूर ख्वाहिशमंद होंगे कि आपके शहर के अजीमुश्शान कहे जाने वाले क्रिस और टॉम पास्कल किस तरह ड्रग सप्लाई करते हैं। मेरे पास कुछ ऐसे सबूत हैं जो उनके कारनामों का भंडाफोड़ कर सकते हैं। ये सबूत मैं तुम्हें इसलिए देना चाहता हूं क्योंकि मैं इसी वक्त गोवा छोड़ रहा हूं। इन सबूतों की बदौलत तुम न केवल ड्रग्स स्मगलरों को पकड़ोगे, बल्कि तरक्की का एक फुंदा और वर्दी में लगा लोगे। तुम्हें यकीन है तो संतरियों को कहो कि वे मुझे आने दें। यकीन नहीं है तो मैं अपना रुख गोवा टाइम्स के दफ्तर की तरफ करता हूं।"

इंद्रजीत ने कार्डलैस फोन संतरी को पकड़ाया और लापरवाही से सीटी बजाने लगा।

संतरी ने फोन पर ए०सी०पी० का आदेश सुना और इंद्रजीत को भीतर कदम रखने की परमिशन दे दी।

इंद्रजीत ने भीतर कदम रखा तो पहला संतरी उसके पास आया और उसके कूल्हों, छाती, पीठ वगैरह पर हाथ फेरकर तसल्ली करने

Scanned by CamScanner

लगा कि कहीं वो हथियारबंद तो नहीं है।

संतरी को जब कुछ नहीं मिला तो इंद्रजीत व्यंग्य भरे स्वर में बोला—"जूते खोलूं?"

संतरी हड़बड़ाया।

"न...नहीं। आप जा सकते हैं।" उसके मुंह से जल्दी से निकला।

बजरी वाली राहदारी पर चलकर इंद्रजीत एक बरामदे में पहुंचा।

वहां उसे दाहिने हाथ पर बने एक कमरे से रोशनी बाहर झांकती दिखाई दी।

वह उस कमरे की तरफ बढ़ा।

कमरे के पास पहुंचने पर उसने महसूस किया कि भीतर टी०वी० चल रहा है।

इंद्रजीत ने दरवाजे पर दस्तक दी।

"खुला है।" जवाब मिला।

इंद्रजीत ने दरवाजा धीरे से खोला और भीतर कदम रखा।

ए०सी०पी० चंद्रकांत एक आरामदायक कुर्सी पर विराजमान था। उसके सामने एक छोटी-सी मेज पड़ी थी—जिस पर शराब और खाने-पीने का सामान रखा हुआ था।

ए०सी०पी० के संकेत करने पर इंद्रजीत उसके करीब पड़े सोफे पर बैठा और बोला—"बाज लोगों का कहना है कि अकेले शराब पीना शराब की तौहीन करना होता है।"

"काम की बात करो।" ए०सी०पी० घुड़ककर बोला—"माईकल साहब ने तुम्हारी बाबत फोन न किया होता तो मैं तुम्हें यहां घुसने ही नहीं देता।"

"यानी कि आप ड्रग्स स्मगलरों को पकड़वाकर वाहवाही लूटने के मूड में नहीं हैं?"

"जिन बंदों को तुमने ड्रग्स स्मगलर कहा है—वे माईकल साहब के आदमी हैं। माईकल साहब के खिलाफ मैं नहीं जा सकता।"

"फिर माईकल साहब के क्या कहने पर तुम मुझसे मिलने को तैयार हुए?"

"उन्होंने कहा था कि तुम गोवा छोड़ रहे हो। अगर तुम मुझसे कुछ कहना सुनना चाहो तो मैं चुपचाप सुन लूं।"

"लेकिन मैं तो कुछ कहने नहीं आया।"

"मतलब?" ए०सी०पी० की भवें उठीं।

"मैं कुछ करने आया हूं।"

"करने आए हो?"

Scanned by CamScanner

"हां।"

"क्या?"

"बताता हूं।"

इंद्रजीत ने जुराब में फंसी गन निकाली और एक झटके से ए०सी०पी० की तरफ तान दी।

ए०सी०पी० के छक्के छूट गए।

"अपनी जगह से उठो।" फिर इंद्रजीत रिवॉल्वर की नाल उसकी कनपटी पर रखते हुए बोला—"और आज्ञाकारी बच्चों की तरह कागज कलम लेकर आओ।"

ए०सी०पी० ने तत्काल आदेश का पालन किया।

इंद्रजीत के साथ-साथ वह एक कमरे में गया और लैटर पैड और कलम लेकर वापिस ड्राईंगरूम में आ गया।

इंद्रजीत ने रिमोट उठाकर टी०वी० की आवाज बढ़ाई और फिर सर्द स्वर में बोला—"लिख! पुलिस वालों को अमीरों का कुत्ता नहीं होना चाहिए। पुलिस वालों को उनकी फेंकी हड्डियां नहीं चबानी चाहिएं।"

मरता क्या न करता!

ए०सी०पी० ने तत्काल वही लिखा जो इंद्रजीत ने कहा।

"अब लिख।" इंद्रजीत बोला—"पुलिस का काम जनता के जान-माल और उन्हें दिए गए अधिकारों की हिफाजत करना है। जो पुलिस वाला जनता की पीठ में छुरा घोंपकर अमीरों के दर पर नाक रगड़े, उसे बद से बदतर सजा देनी चाहिए।"

ए०सी०पी० ने छूटते ही लिखा। फिर उसने आंखों में रहम के भाव लाकर इंद्रजीत की तरफ देखा।

"चिंता नहीं, जनाबे अली।" इंद्रजीत बड़े सब्र से बोला—"मैं आपके साथ ऐसा वैसा कुछ नहीं करूंगा। मैं गोवा छोड़ रहा हूं। इसलिए थोड़ी-सी नसीहत दी है मैंने।"

इंद्रजीत ने वहीं दीवान पर पड़ा तकिया उठाया और उसे ए०सी०पी० की पीठ पीछे रिवॉल्वर की नाल से लगा लिया।

"टी०वी० पर प्रोग्राम अच्छा आ रहा है न?" वह बोला।

ए०सी०पी० का सिर धीरे से सहमति में हिला।

"सरकार ने फैशन टी०वी० पर रोक न लगाकर तुम्हारे जैसे बूढ़े बैलों को खुराक लेने लायक बनाया है। ठीक कहा न?"

ए०सी०पी० का सिर एक बार फिर सहमति में हिला।

तभी इंद्रजीत ने अपना बायां हाथ ए०सी०पी० के मुंह पर रखा। दूसरे हाथ से तकिया उसकी गर्दन के पीछे टिकाया, फिर उस

Scanned by CamScanner

पर रिवॉल्वर की नाल सटाकर फायर कर दिया।

ए०सी०पी० के मुंह से घुटी-घुटी चीख निकली।

तकिए की वजह से गोली चलने की ज्यादा आवाज नहीं हुई।

थोड़ी बहुत जो आवाज हुई थी—वो टी०वी० की आवाज में दब गयी थी।

ए०सी०पी० कुछ पलों तक तड़पा फिर वो एक लाश में तब्दील होकर फर्श पर गिर पड़ा।

इंद्रजीत ने रिवॉल्वर की नाल मुंह के पास लाकर एक फूंक मारी फिर उसे जेब के हवाले करने के बाद बाहर की ओर चल पड़ा।

"साहब सो गए हैं।" गेट पर खड़े संतरियों से वो बोला—"उनका कहना है कि उन्हें सुबह तक डिस्टर्ब न किया जाए।"

"ल...लेकिन टी०वी० तो चल रहा है।" संतरी बोला।

"साहब ने टाईमर फिक्स किया हुआ है। एक दो घंटे बाद टी०वी० अपने आप बंद हो जाएगा।"

संतरी समझता दिखाई देने लगा।

उसने गेट खोल दिया।

इंद्रजीत टैक्सी में आकर बैठा और ड्राईवर से बोला—"सीधा मुम्बई। फुल स्पीड। कहीं नहीं रुकना। समझे?"

"समझा साहब।" ड्राईवर तत्परता से बोला।

उसने टैक्सी आगे बढ़ाई और उसे रफ्तार देनी शुरू कर दी।

इंद्रजीत ने एक गहरी सांस छोड़ी और फिर धीरे से बुदबुदा उठा—'सच में लक्की बास्टर्ड हूं मैं।'

—समाप्त—

Scanned by CamScanner